219
संजीवनी सीरीज

पं० शशि मोहन बहल

भारतीय वास्तुशास्त्र

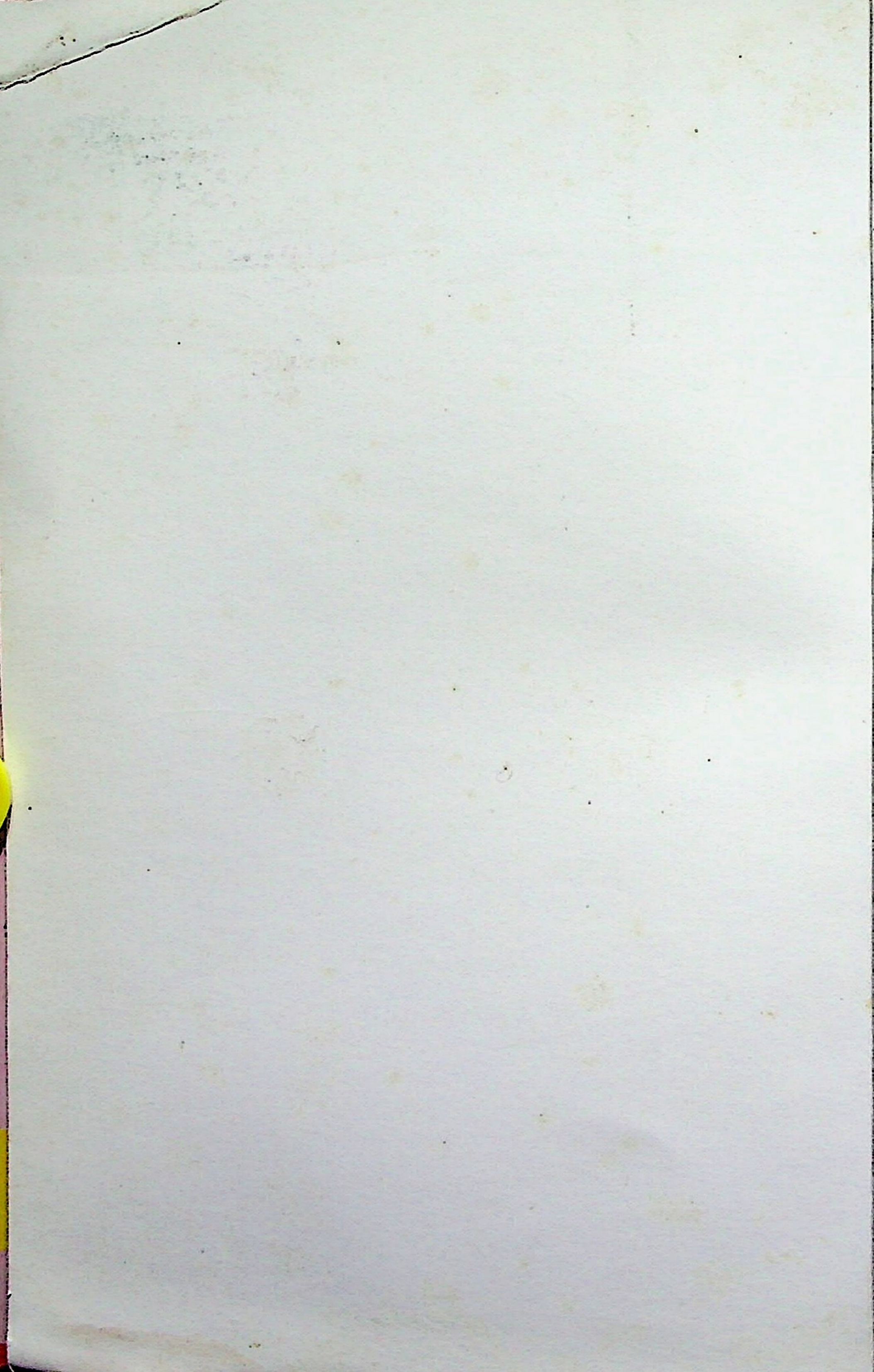
सूत्र एवं सिद्धांत








प्रस्तुत पुस्तक में वास्तुशास्त्र के प्रभावशाली सूत्रों और सिद्धांतों के साथ आधुनिक वास्तुशास्त्र की नवीन विधाओं को भी सम्मिलित किया गया है।



7.2

भारतीय वास्तुशास्त्र सूत्र एवं सिद्धान्त

—पं० शशि मोहन बहल

- भारतीय वास्तुशास्त्र के सागर को गागर में भरने जैसी जानकारियां देने वाली पुस्तक।
- वास्तु के समस्त विषयों की जानकारियां—भूमि, आकार, दिशा, कोण से सम्बन्धित समस्त जानकारियां।
- वास्तु के महत्त्वपूर्ण सूत्र जिनको अपनाकर आप अपने गृह-भवन को बगैर किसी तोड़-फोड़ के शुभदायी एवं फलदायी बना सकते हैं।
- प्राचीन वास्तुशास्त्र के विधिसम्मत सिद्धान्त की महत्त्वपूर्ण जानकारियां।
- आवासीय भवन के अलावा व्यावसायिक वास्तु विधि-विधान की समस्त जानकारियां पुस्तक में समाहित की गयी हैं।
- पं० शशि मोहन बहल की एक और शानदार प्रस्तुति।

प्रकाशक :
राधा पॉकेट बुक्स
मेरठ-250 002

भारतीय वास्तुशास्त्र
सूत्र एवं सिद्धान्त

प्रस्तुति :
पं० शशि मोहन बहल
वास्तुशास्त्र के अनुभवी लेखक

प्रकाशक :
साधना पॉकेट बुक्स
मेरठ-250 002

प्रकाशकीय....

आज के युग में घर को बनाना ही महत्त्वपूर्ण बात नहीं रह गयी है, बल्कि महत्त्वपूर्ण यह बात रह गयी है कि घर ऐसा बनाना चाहिए जो हर प्रकार से शुभ फलदायी और सुखदायी साबित हो। जीवन की बढ़ती आवश्यकताओं, सुख-सुविधाओं की बढ़ती महत्त्वाकांक्षाओं के कारण आज इन्सान घर मात्र इसलिए नहीं बनाता जिसमें वह विश्राम कर सके, रह सके, धर्म-कर्म और पूजा पद्धति के नियमों का आचरण कर सके। इन सबके साथ ही आगे बढ़कर इन्सान इस बात की चाह भी करने लगा है कि घर अधिक-से-अधिक सुविधा-सम्पन्न हो। इसके लिए गृह-निर्माण में इन्सान बड़ी-से-बड़ी पूंजी लगाने लगा है।

ऐसे बहुत ही कम लोग होते हैं जिन्हें अपने जीवन में एक से अधिक बार भवन-निर्माण का अवसर मिलता हो। किसी भी मनुष्य में अपने जीवन में गृह-निर्माण करना काफी बड़े सौभाग्य की बात होती है। गृह-निर्माण के इस कार्य में वह अपने जीवन की समस्त संचित पूंजी लगा देता है। अपने सपनों को साकार करने के लिए उसे अधिक-से-अधिक सुख-सुविधा सम्पन्न, सजावटी और दिखावटी बनाता है। इतना होने पर भी अगर आपका घर फलदायी और सुखदायी न रह जाए तो सोचिए, किस तरह आपके सपनों का संसार बिखर जाएगा!

सुख और समृद्धिदायक अवस्था के लिए ही इन्सान का झुकाव वास्तुशास्त्र की ओर हुआ। आज लोग भवन बनवाने के लिए जहां आर्चीटेक्ट का सहारा लेते हैं वहीं वास्तुशास्त्री की अनिवार्यता को भी नहीं भूलते। आर्चीटेक्ट का तो काम ही है जो भूमि का प्लॉट आपने उसके सामने रखा, उसके अनुरूप अच्छे-से-अच्छा आधुनिक-से-आधुनिक नक्शा आपके भावी भवन के लिए तैयार करके दे दे। उससे पूर्व और बाद का काम वास्तुशास्त्र या वास्तुशास्त्री का होता है। वास्तुशास्त्र इस बात को देखता है कि जिस भूमि पर आप भवन बनवाने जा रहे हैं उसकी दशा, दिशा, कोण कैसी है, वह शुभदायक है या नहीं? यदि नहीं है तो वास्तुशास्त्री उसमें तनिक से हेरफेर की वास्तु सम्मत विधियां बताकर उसे आपके लिए शुभ और फलदायी कर देता है। भवन बनने के बाद भी दिशा दोष रह जाने पर कुछ सूत्र ऐसे अपनाये जाते हैं जो बगैर तोड़-फोड़ के दोष निवारण का कार्य पूरा कर देते हैं।

इस पुस्तक में प्राचीन वास्तुशास्त्र के शुभकारी सूत्रों और सिद्धान्तों को तो समाहित किया ही गया है, साथ ही आधुनिक और आधुनिकतम वास्तुशास्त्र की समस्त विधाओं को भी समेटा गया है। पुस्तक में वास्तुशास्त्र से सम्बन्धित सभी विषयों को लिया गया है। इस पुस्तक के माध्यम से आप अपने घर को न सिर्फ शुभकारी बल्कि फलदायी भी बना सकते हैं। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पुस्तक हर प्रकार से आपके लिए उपयोगी साबित होगी। शुभकामनाओं सहित!

–प्रकाशक

■ *पुस्तक :* भारतीय वास्तुशास्त्र सूत्र एवं सिद्धान्त

■ *प्रस्तुति :* पं० शशि मोहन बहल

■ *प्रकाशक :* राधा पॉकेट बुक्स,
ए-152, देवलोक कॉलोनी, (स्पोर्ट्स कॉम्पलैक्स)
दिल्ली रोड, मेरठ-250 002 (यू०पी०)
फोन : (0121) 2518734, 2525386

■ *कम्प्यूटरीकृत पृष्ठसज्जा : सैन्ट्रो ग्राफिक्स, मेरठ।*

■ *मुद्रक : न्यू रिषभ ऑफसैट प्रिन्टर्स, मेरठ।*

लेखक की ओर से

प्रिय पाठकों! वास्तुशास्त्र, फेंगशुई, पिरामिड पर अनेक पुस्तकें लिखने के उपरान्त मुझे "भारतीय वास्तुशास्त्र सूत्र एवं सिद्धान्त" प्रस्तुत करने की क्या आवश्यकता थी? वास्तव में वास्तुशास्त्र इतना रोचक और विशाल विषय है; इस पर जितना भी लिखा जाए कम है। वास्तुशास्त्र प्रकृति और ज्योतिष से जुड़ा शास्त्र है। आइए तनिक जानें प्रकृति क्या है?

प्रकृति में कल्याण दिखायी पड़ता है, यह एक तथ्य है, परन्तु यह भी एक तथ्य है कि प्रकृति का दर्शन शास्त्र में होता है। मनुष्य-ज्ञान सर्वोच्च ज्ञान है और केवल मनुष्य-ज्ञान द्वारा ही हम विज्ञान को जान सकते हैं। यह भी एक तथ्य है कि प्रकृति का ज्ञान सर्वोच्च ज्ञान है और केवल इस ज्ञान से ही हम सभी ज्ञानों को जान सकते हैं। मनुष्य को प्रकृति की आवश्यकता है। समस्त विश्व नानात्व में एकत्व तथा एकत्व में नानात्व का खेल है। प्रकृति के अनुसार बने भवन सदैव शुभ फलों को प्रदान करते हैं। वास्तुशास्त्र के गर्भ में प्रकृति के ही सिद्धान्त छिपे हैं।

प्रायः हर बार पूछा जाता है कि आखिर यह वास्तुशास्त्र है क्या? पिछले कुछ वर्षों से ही इसका प्रचार-प्रसार अधिक हुआ है। अगर यह शास्त्र प्राचीन है तो पहले इसका ज्ञान लोगों को था या नहीं, आदि। मैं उनसे एक ही बात कहता हूं कि अगर आपने भवन बनाया है अथवा आपके किसी अन्य परिचित ने बनाया है तो आपने देखा होगा कि वहां पांच पत्थरों को निश्चित दिशा में पूजा-अर्चना के साथ लगाया जाता है। इन्हीं पत्थरों के स्थान का चयन ही वास्तुशास्त्र है।

यह कुछ वर्षों से ही नहीं अपितु वैदिक काल से ही उपस्थित था। आज की खुदाई से उनका आंकलन कर देखें तो सभी वास्तु सिद्धान्तों पर आधारित हैं। पुराने भवन, किले, महल, वास्तु समस्त ही होते हैं।

वास्तुशास्त्र के द्वारा धरती का शुद्धिकरण होता है। वास्तु विज्ञानी इसे भूमि की चुम्बकीय नाप-जोख से संबोधित करते हैं। "वास्तु" से तात्पर्य है कि जो दिखाई देता है वही वास्तु है और इसका ज्ञान करने वाला शास्त्र "वास्तुशास्त्र" कहलाता है। अनेकानेक विद्वान वास्तुशास्त्र को केवल भवन-निर्माण तक ही सीमित मानते हैं जबकि वास्तु की सही स्थिति तो भवन से स्पष्ट होती है।

वास्तुपुरुष के विषय में लिखा है कि वह लालिमायुक्त स्वर्ण आभा लिए हुए है। शान्त, सोम्य, हाथों में दण्ड किन्तु सबको अभय दान की मुद्रा में आश्रयदाता के रूप में दिखलाए गए हैं। भवन-निर्माण से पूर्व जो उनकी पूजा करता है वह धन-धान्य, सुख-सौभाग्य से परिपूर्ण हो जाता है। हमारे धर्म में सभी देवताओं का कार्य-विभाजन हुआ है। जैसे निर्माण का कार्य ब्रह्मा, पालन का कार्य विष्णु तथा विनाश का कार्य भगवान रूद्र का है, उसी प्रकार मान्यता है कि वास्तुपुरुष भूमि के देवता हैं। वे प्रत्येक भूखण्ड में निवास करते हैं। मत्स्य पुराण में भगवान शंकर और अंधकटिहर के युद्ध का विवरण है। इसी युद्ध में भगवान आशुतोष के पसीने से एक दैत्य का जन्म हुआ, जिसे देखकर सभी देवता व राक्षस भयभीत हो निर्माण के प्रतीक ब्रह्मा से प्रार्थना करने लगे। तब ब्रह्माजी ने उस विशाल दैत्य को सिर के बल पृथ्वी पर फेंक दिया। दैत्य ने ब्रह्मा से पूछा, प्रभु! मेरा क्या अपराध है जो मुझे यह दण्ड दिया जा रहा है? ब्रह्मा ने उसे कहा, अब से तुम्हारा नाम वास्तुपुरुष होगा। इस सृष्टि में जो भी मनुष्य भवन का निर्माण करेगा वह पहले तुम्हारा पूजन करेगा अन्यथा वह ना-ना प्रकार के कष्टों को प्राप्त होगा।

वास्तुपुरुष के सिर की विपरीत दिशा में उसके पांव हैं। जब किसी भवन की नींव खोदी जाती है तो वास्तुपुरुष के पांवों की दिशा से ही खोदी जाती है। वास्तु चक्र के अनुसार, वास्तुपुरुष प्रत्येक माह अपनी दिशा बदलता है। निर्माण से पूर्व वास्तुपुरुष की पूजा-अर्चना कर उस भूखण्ड को पवित्र कियां जाता है।

इन दिनों हर तरफ वास्तुशास्त्र की चर्चा है। वास्तुशास्त्र प्राचीन है और यह पूर्णरूपेण वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित शास्त्र है। यह प्राकृतिक स्रोतों, जैसे—सौर ऊर्जा, प्रकाश, वायु, जल, पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र इत्यादि तत्वों का भवन-निर्माण में लाभ प्राप्त करने का विज्ञान है, जिससे कि भवन में इन स्रोतों से प्राप्त ऊर्जाओं से स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण बना रहे। आज की परिस्थितियों में जब हमें मनचाहा भूखण्ड या भवन चयन करने का अवसर नहीं है, इस शास्त्र के नियमों का महत्त्व और भी बढ़ गया है। वास्तुशास्त्र केवल दिशाओं का विज्ञान नहीं है। कोई भी दिशा अशुभ नहीं होती है। वास्तुशास्त्र के नियमों को लागू करते समय मुख्य बात यह ध्यान में रखनी चाहिए कि कौन-सी दिशा किस ऊर्जा का स्रोत है एवं उसका भवन में प्रवेश किस प्रकार कराया जाए?

वास्तु विज्ञान का पहला नियम यह है कि भूखण्ड भवन के चारों ओर खुला स्थान हो, जिससे सभी दिशाओं से प्राकृतिक ऊर्जा प्राप्त हो, परन्तु आज की परिस्थितियों में जब चारों ओर बहुमंजिले भवन हों या भूखण्ड छोटे हों या मात्र एक तरफ ही खुली जगह हो, तब वास्तुनियमों को कैसे लागू किया जाए, यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। वास्तुशास्त्र का क्षेत्र बहुत विशाल व्यापक है। वास्तु नियमों का बहुत सोच-समझकर उपयोग किया जाए, तो प्रत्येक भवन में ऊर्जा का अधिकतम उपयोग

किया जा सकता है। प्राचीन काल में भी सभी भवन पूर्व या उत्तरमुखी नहीं होते थे, परन्तु आजकल कोई पश्चिम तो कोई दक्षिणमुखी भवन को अशुभ बता रहा है, जबकि वास्तुशास्त्र का उपयोग करते हुए किसी भी दिशा के भूखण्ड में उत्तम भवन-निर्माण किया जा सकता है। एक और बात, आजकल राशि व कुंडली के अनुसार भवन बनाने की प्रथा चल रही है, परन्तु क्या भवन में केवल गृहस्वामी ही रहेगा, उसका परिवार भी तो साथ में रहेगा, जिसमें प्रत्येक की कुंडली अलग-अलग होगी? इस प्रकार से मृत्यु उपरांत या भवन बेच देने पर नए गृहस्वामी के लिए भवन निरर्थक हो जाएगा। क्या हर बार गृहस्वामी बदलने पर भवन का पुनः निर्माण करना होगा? प्रिय पाठकों! मेरा निजी विचार तो यह है कि व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाते हुए वास्तु विज्ञान का प्रयोग करें।

वास्तुशास्त्र का सम्बंध ज्योतिष विज्ञान के साथ भी है। अगर ज्योतिष विज्ञान को वास्तुशास्त्र से अलग कर दें, तो वास्तुशास्त्र के महत्त्व में न्यूनता आ जायेगी। इस प्राचीन विद्या का भारत में प्रायः लोप हो चुका था। जब पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने इसके विषय में सोचना प्रारम्भ किया तो भारत में भी चलन होने लगा। वास्तुशास्त्र भारत के ही ऋषि-मुनियों की देन है। वास्तु का प्रभाव भवन पर अवश्य पड़ता है। वास्तु का सम्बंध धर्म, कर्म और मोक्ष के साथ है। जब परिवार का कोई न कोई सदस्य रोगी रहता है, तो सदैव कलह होती रहती है। बच्चे माता-पिता के आज्ञाकारी नहीं होते हैं। कोर्ट-कचहरी इत्यादि होता ही रहता है, यह सब वास्तुदोष के कारण होता है।

मैं अपने वर्षों के शोध के पश्चात् बिना तोड़-फोड़ के वास्तुदोष निवारण हेतु "भारतीय वास्तुशास्त्र सूत्र एवं सिद्धान्त" नामक पुस्तक आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं एवं आत्मविश्वास है कि अगर इस पुस्तक के अनुसार आप अपने गृह के वास्तुदोष निवारण करें, तो मुझे विश्वास है कि आप सुखी जीवन-यापन करते हुए धर्म, कर्म को शान्तिपूर्वक करते हुए मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। यह पुस्तक लेखन का एक मात्र उद्देश्य है।

"सर्वे भवन्तु सुखिन, सर्वे जन सुखिनो भवन्तु" यह वेद वाक्य है। इसका अर्थ है कि विश्व में सभी प्राणी और मनुष्य सुखी और समृद्ध हों।

प्रिय मित्रों! मैंने कहीं पढ़ा था कि लंका का नाश वास्तुदोष के ही कारण हुआ था। कहा जाता है कि रामायण काल में वास्तुशास्त्र के नियमों का कठोरता से पालन किया जाता था। रावण जब शक्तिशाली और धनसम्पन्न हो चुका था तो उसने भारत के दक्षिण में लंका को स्वर्ण नगरी बनाने का निर्णय किया, क्योंकि स्वर्गलोक से लूटकर लाया गया सारा सोना रावण ने अपने पास जमा कर लिया था। स्वर्ण नगरी लंका को बनाने के लिए रावण को एक अच्छे वास्तुविज्ञानी की आवश्यकता पड़ी। अन्ततः देवताओं के वास्तुकार विश्वकर्मा को स्वर्ण नगरी का

वास्तुशिल्प बनाने के लिए विवश किया गया। विश्वकर्मा रावण की करतूतों से चिढ़े रहते थे। उन्होंने रावण और उसके परिवार के महलों का वास्तु संयोजन करते हुए कुछ ऐसे दोष छोड़ दिये जिससे वहां रहने वालों को कष्ट सहने पड़े। चंद वर्षों में ही आधी से अधिक लंका को हनुमान जी ने आग लगाकर फूंक दिया और शेष लंका में रावण कभी भी चैन से नहीं रह पाया। अंततोगत्वा, उसे स्वर्ण नगरी में ही नष्ट होना पड़ा।

वास्तुदोष के अनुसार भवन या घर बनाने से पहले नगर नियोजन का अध्ययन अवश्य कर लेना चाहिए। घर के आगे-पीछे झाड़-झंखाड़ की बजाय सुन्दर फल-फूल आदि लगाने की भूमि अवश्य होनी चाहिए। खैर, आज के समय में जहां वास्तुशास्त्र की आवश्यकता बढ़ी है, वहीं नौसिखिए वास्तुशास्त्री भी उत्पन्न हो गए हैं। ऐसे लोगों से ली गयी राय कभी-कभी वास्तुनियमों की घोर अवहेलना सिद्ध होती है।

अंत में बात जब 'भारतीय वास्तुशास्त्र सूत्र एवं सिद्धान्त' की आती है, तब निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अनिवार्य हो जाता है—

- उसका कोई कल्याणकारी उद्देश्य हो। वह अखिल विश्व में समान रूप से आचरणीय हो।
- वह ज्ञान कार्यकारण पर आधारित हो और अनुकरण करने योग्य हो।
- वह अपनी मूल संकल्पना और उद्देश्य के मध्य स्थिर हो। वह नियमों के कठोर अनुशासन से बंधा हो।

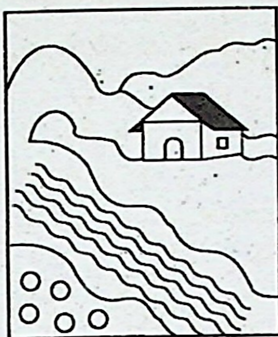
वास्तुशास्त्र में उपरोक्त लक्षण मिलते हैं, वे उसे विज्ञान के रूप में स्थापित करते हैं। अतः वास्तुशास्त्र एक विज्ञान है। इसलिए उसके अध्ययन का प्रयत्न सबको करना चाहिए।

मैं उन विद्वानों का, ग्रंथों का, लेखकों का आभारी हूं जिन्होंने इस पुस्तक को बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय रूप में प्रस्तुत करने में सहयोग किया है।

शीघ्र फिर मिलने के आश्वासन के साथ।

—पं० शशि मोहन बहल
"तंत्र सबके लिए मिशन"
डी-4, राधापुरी, कृष्णनगर
(जमुनापार) देहली—110051
E-mail : tantrik_bahl@yahoo.com

विषयानुक्रमणिका





1

भवन-निर्माण के लिए आवश्यक निर्देश

आधुनिक दौर के लोग अपने मकान, दुकान, दवालय, कार्यालय औद्योगिक संस्थान, सार्वजनिक स्थल आदि बनाते हैं, लेकिन इन सबको बनाते समय हमें यह ध्यान रखना जरूरी है कि क्या हमारा मकान, दुकान आदि सही दिशा, सही भूखण्ड अथवा सही कोण पर बना है या नहीं? अगर हम ऐसा देखकर अपना भवन-निर्माण न करें तो फिर हमें जरूर कोई-न-कोई नुकसान उठाना पड़ सकता है। यह बहुत गलत होगा।

प्राचीन काल से ही इस बात को माना जाता रहा है कि अपना मकान सही दिशा, सही भूखण्ड पर स्थित होना जरूरी है वरना उसमें हमें कोई-न-कोई नुकसान अवश्य हो सकता है। जब यह रीति प्राचीन काल से ही चली आ रही है जो कि आज भी सही मानी जाती है, तो फिर क्यों न हम अपने मकान का निर्माण सही दिशा अथवा कोण में बनाने की कोशिश करें। मकान तो फिर भी बनाना ही है तो फिर आइये अपने मकान के निर्माण से पहले कुछ जरूरी निर्देशों की जानकारी प्राप्त कर लें–

(1) वास्तु शब्द "वस्तु" से बना हुआ है। वस्तु का शास्त्र ही वास्तुशास्त्र कहलाता है। यहां वस्तु से तात्पर्य पृथ्वी, भवन, वाहन और चारपाई आदि से है।

(2) वस्तु छोटी हो अथवा बड़ी हो लेकिन एक बात स्पष्ट है कि उसका निर्माण पांच चीजों से हुआ है–

(1) वायु
(2) अग्नि
(3) जल
(4) पृथ्वी
(5) आकाश

इन्हीं पांच चीजों को पंचतत्व कहा जाता है। इनको प्राकृतिक स्त्रोतों से ज्यादा-

से-ज्यादा कैसे प्राप्त किया जाए? इसका ज्ञान हासिल करने के लिए सभी कार्यों को प्रकृति द्वारा किया जाना चाहिए। हमें हमेशा प्रकृति से लाभ उठाते रहने की कोशिश करनी चाहिए।

भारतवर्ष में वास्तुशास्त्र को एक धार्मिक कार्य माना जाता है, ऐसा होने पर विज्ञान का प्रचुर सम्मिश्रण होता है। वास्तु का लक्ष्य यही है कि ऐसा भवन-निर्माण करना चाहिए जिससे मानव विभिन्न जरूरतों की पूर्ति सहित सुख-शान्ति तथा समृद्धि प्राप्त कर सकें।

(3) अगर आपको कोई भूमि खरीदनी हैं तो सबसे पहले उसका परीक्षण जरूर करा लेना चाहिए। शुभ मुहूर्त में विधिवत् परीक्षणोपरान्त भूमि खरीदकर क्षेत्र पूजन और सम्भव हो तो शल्य शोधन भी कराना चाहिए। उसके पश्चात् भूमि का वर्ण देखना जरूरी है।

(4) जो जमीन सामेद मधुर, सुगन्धयुक्त हो तो वह ब्राह्मणी तथा सुखदायक होती है। जो भूमि लाल कषैली रक्तगन्धयुक्त हो तो वह क्षत्रिय व राज्यप्रदा होती है। जो भूमि हरे, पीले, खट्टे शहद के समान गन्धयुक्त हो तो वह वैश्य और धनप्रदा होती है।

(5) जो भूमि काली, कड़वी, मदिरा सदृश गन्धयुक्त हो तो वह शूद्रा व त्याज्य है। जिस भूमि पर आंवला, अमरूद, अनार पलास के पेड़ पर उगे वृक्षों पर फलफूल, वनस्पति आदि सरलता से वृद्धि करें तो उत्तम भूमि, जिस भूमि पर खट्टे व कड़वे फलों वाले वृक्ष (नीम, खेजड़ा, नींबू, शमी आदि पैदा होते हों तो मध्यम भूमि और जिस भूमि पर कांटे-झाड़-बेरी, कीकर आदि के पेड़ पैदा हों तो वह सामान्य भूमि है।

(6) अगर भूमि का पूर्व-उत्तर भाग ढलानदार तथा दक्षिण-पश्चिम दिशा में पहाड़ अथवा ऊंची चट्टानें हों तो वह भूमि शुभ माननी चाहिए। इसलिए भवन का दक्षिण-पश्चिम भाग ऊंचा व ईशान कोण नीचा होना शुभ है। भूमि का पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण आग्नेय कोण, नैर्ऋत्य कोण उन्नत अर्थात् ऊंचा होना अशुभ माना जाता है।

(7) भूमि का आग्नेय कोण दक्षिण दिशा, नैर्ऋत्य कोण पश्चिम दिशा तथा वायव्य कोण नीचा होना अशुभ है जबकि उत्तर दिशा ईशान कोण तथा पूर्व दिशा नीचा होना शुभ है। नैर्ऋत्य और वायव्य कोण में उन्नत भूमि गजपृष्ठा, मध्य में उन्नत और चारों तरफ से अवनत भूमि कूर्मपृष्ठा, पूर्व आग्नेय व ईशान दिशा में उन्नत और पश्चिम दिशा में अवनत और पश्चिम दिशा में अवनत भूमि दैत्यपृष्ठा और पूर्व-पश्चिम दिशा में लम्बी तथा दक्षिण-उत्तर दिशा में उन्नत भूमि नागपृष्ठा होती है।

(8) गजपृष्ठा भूमि और कूर्मपृष्ठा भूमि शुभ अर्थात् धनधान्य यश, सुख और दीर्घायुकारक हैं जबकि दैत्यपृष्ठा और नागपृष्ठा भूमि अशुभ हैं; अर्थात् पशु, पुत्र तथा धनादि हानि तथा शत्रुभय कारक है। शुभ भूमि ग्राह्य तथा अशुभ भूमि भवन-निर्माण के लिए त्याज्य होती है।

(9) इस तरह भूमि की परीक्षा से पता चलता है कि भूमि ठोस है या ढीली है। झिरझिरी, ढीली तथा पोली भूमि भवन-निर्माण के लिए उपयुक्त नहीं होती। किसी भी भवन की नींव के लिए ठोस आधार का होना बहुत आवश्यक होता है।

(10) भवन-निर्माण करते वक्त दिशा का निर्धारण भी उचित प्रकार से करना चाहिए, क्योंकि भवन रोज-रोज तो बनाये नहीं जाते और न ही इतना धन रोज-रोज कोई खर्च कर सकता है कि आज एक मकान अथवा दुकान बनायी जाये और वह दिशा की अनुचितता की वजह से व्यर्थ मानी गयी है तो उसे कोई भी आदमी छोड़ या बेच नहीं सकता—और न ही ऐसा करना ही उचित होगा। इससे पहले वह खुद भवन की दिशा निर्धारित करे तो अच्छा होगा।

(11) विशाल स्थान ऐश्वर्य प्रदान होता है लेकिन स्थल किसी भी दिशा में कटा-फटा नहीं होना चाहिए। दो विशाल भूखण्डों के बीच स्थित एक छोटा या संकरा भूखण्ड भी उत्तम नहीं होता है उस पर निर्मित भवन से ज्यादातर दुःख होता है।

(12) आकार की दृष्टि से वर्गाकार भूमि उत्तम मानी जाती है। आयताकार भूमि उत्तम तथा वृत्ताकार भूमि शुभ मानी जाती है। इसके अलावा जो भूमि शुभ होती हैं वह इस प्रकार हैं—

- षट्कोणाकार
- चतुष्कोणाकार
- अष्टकोणाकार
- गोमुखाकार
- सिंहमुखाकार
- भद्रासन
- काकमुखी।

यह भूमि वास्तुशास्त्र के अनुसार श्रेष्ठ व उत्तम मानी जाती हैं और जो भूमि अशुभ हैं वह इस प्रकार हैं—

- त्रिकोणाकार
- शकटाकार

- चक्राकार
- विषमबाहु
- अर्द्धवृत्ताकार।

इन भूमियों को वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत अशुभ माना जाता है, इन पर भवन-निर्माण नहीं करना चाहिए।

(13) भूमि की जांच हम इस तरह कर सकते हैं—अपनी जमीन के उत्तर दिशा में एक-डेढ़ फुट गहरा गड्ढा खोदकर सारी मिट्‌टी निकाल लें और निकाली गयी मिट्‌टी को पुनः गड्ढे में भरिये—अगर गड्ढा भरने पर कुछ मिट्‌टी बाकी बचती है तो वह भूमि उत्तम बाकी नहीं बचती तो वह भूमि मध्यम और अगर गड्ढा भर जाने पर और कुछ गड्ढा खाली रह जाता है तो वह भूमि निकृष्ट मानी जाती है।

(14) उत्तम भूमि झिरझिरी न होकर ठोस होगी और ठोस भूमि को ही खरीदना चाहिए, यह अच्छा रहता है। इसका परीक्षण इस प्रकार करना चाहिए—जमीन के उत्तर दिशा में दो फुट गहरा गड्ढा खोदकर और उसके गले तक पानी भरकर आप उत्तर दिशा की ही तरफ सौ कदम या 10 गज चलिए या दो मिनट के बाद उस गड्ढे को देखें। अगर गड्ढ़ा पानी से उतना ही भरा हुआ है जितना कि आपने दो मिनट पहले भरा था तो वह भूमि श्रेष्ठ और अगर पानी आधा सूख गया है तो भूमि मध्यम और अगर पानी बिल्कुल सूख गया है तो यह भूमि अशुभ मानी जाती है।

(15) मकान बनाते समय पूर्व दिशा में अधिकतर खुला, उत्तर दिशा में उससे कम खुला तथा दक्षिण-पश्चिम दिशा में खुला स्थान न के बराबर होना चाहिए।

(16) भूखण्ड के कोणों में विस्तार या ह्रास होने पर शुभ-अशुभ प्रभाव पड़ता है। भूखण्ड में ईशान कोण की वृद्धि अर्थात् उत्तर-पूर्व अथवा पूर्व-दक्षिण, दक्षिण-पूर्व या दोनों तरफ आग्नेय कोण में वृद्धि या विस्तार हो तो भूखण्ड अशुभ होता है।

(17) भूखण्ड में आग्नेय कोण की वृद्धि; अर्थात् पूर्व-दक्षिण, दक्षिण-पूर्व या दोनों तरफ आग्नेय कोण में वृद्धि अथवा विस्तार हो तो भूखण्ड अशुभ होता है। इस पर निर्माण न करें।

(18) दिशा का ज्ञान होने के बाद भूखण्ड को चार या आठ खण्डों में बांटना चाहिए। सबसे पहले भूखण्ड का केन्द्र ज्ञात करके वहां कुतुबनुमा रखकर

उत्तर दिशा ज्ञात करके उत्तर-दक्षिण रेखा खींच लें और सही दिशाओं का ज्ञान करें। बाद में 90 अंश पूर्व और 90 अंश पश्चिम के दो कोण बनाकर रेखाएं खींचकर भूखण्ड के चार भाग करें।

(19) भूखण्ड को आठ भागों में विभाजित करने के लिए केन्द्र तथा दिशाओं का ज्ञान करने के बाद प्रत्येक दिशा की भुजा के तीन बराबर भाग करके रेखा खींच लेने पर आठ खण्ड बन जाएं—और केन्द्र का भाग मध्य भाग कहलायेगा, जो वास्तु के अनुसार आंगन के लिए छोड़ना चाहिए।

(20) भूखण्ड की पूर्व दिशा की तरफ मार्ग हो तो श्रेष्ठ होता है, पश्चिम दिशा की तरफ मार्ग हो तो अच्छा होता है, उत्तर दिशा की तरफ मार्ग हो तो उत्तम एवं दक्षिण की तरफ मार्ग होने की वजह से भूखण्ड श्रेष्ठ व उत्तर-पूर्व दिशा की तरफ मार्ग होने की वजह से भूखण्ड श्रेष्ठ व उत्तम माना जाता है। भूखण्ड के उत्तर व पश्चिम दिशा की तरफ मार्ग होने के कारण भूखण्ड सामान्य होता है। इस पर भवन-निर्माण करना सम, न अच्छा है न बुरा।

(21) भूखण्डों के आस-पास मन्दिर, मीनार, नाला, कीचड़ अथवा अन्य वस्तु व दो मार्ग वाले सन्धि स्थल के कारण वेध दोष होता है। वेध दोष के कारण श्रेष्ठ भूखण्ड भी दोषयुक्त हो जाता है।

(22) सबसे पहले निर्माण कार्य पश्चिम या दक्षिण दिशा की तरफ करने के बाद अन्य दिशाओं में बढ़ना चाहिए। दक्षिण तथा पश्चिम दिशा में मोटी दीवारें बनानी चाहिएं।

(23) अगर भूखण्ड वायव्य कोण में उत्तर अथवा पश्चिम दिशा में घटा हुआ हो तो दोनों स्थितियां शुभ हैं। इन भूखण्डों पर भवन-निर्माण करना चाहिए। अगर भूखण्ड आग्नेय कोण में, पूर्व में या दक्षिण या पूर्व-दक्षिण दोनों दिशा में घटा हुआ हो तो ये तीनों स्थितियां शुभ हैं। इन भूखण्डों पर भवन-निर्माण करना चाहिए।

अगर भूखण्ड ईशान कोण में उत्तर या पूर्व या उत्तर-पूर्व दोनों दिशा में घटा हुआ हो तो ये तीनों स्थितियां अशुभ हैं। इन भूखण्डों पर भवन-निर्माण न करें।

अगर भूखण्ड के सामने के दो कोण अधिक कोण, एक कोण समकोण एवं एक कोण न्यूनकोण हो तो ऐसे भूखण्ड कर्णात्मक स्थिति वाले टेढ़े होते हुए भी शुभ होते हैं। इस भूखण्ड पर भवन-निर्माण करना शुभ होता है व उत्तम माना जाता है।

(24) मकान में खुली छत पूर्व तथा उत्तर दिशा में रखनी चाहिए। दोमंजिला

भवन बनाते समय दक्षिण तथा पश्चिम की अपेक्षा पूर्व और उत्तर की ऊंचाई कम रखनी चाहिए।

(25) मकान बनाते समय भूमि का वास्तु सिद्धान्तों के अनुसार ही चयन करके भूमि का प्रारूप वास्तुविद् की सलाह से बनाना चाहिए।
मकान का प्रारूप बनावाकर विद्वान् ज्योतिषी से शुभ मुहूर्त निकलवाकर नींव खनन करके गृह-निर्माण शुरू करना चाहिए।
शिलान्यास तथा वास्तुशान्ति शास्त्रीय रीति से करके मकान का निर्माण करना चाहिए।

(26) शल्य शोधन अथवा भूमि की शुद्धि किए बिना भूखण्ड पर भवन-निर्माण करने से भवन दूषित हो जाएगा। उसमें रहने वाले लोग परेशान आकस्मिक आपदा, धनहानि तथा मृत्युभय से त्रस्त रहते हैं। शल्य दस फुट से ज्यादा गहराई में हो तो उसका दोष नहीं रहता।

(27) मकान की ऊंचाई से दोगुनी दूरी तक भूखण्ड के आसपास अथवा सामने मन्दिर या धर्मस्थल नहीं होना चाहिए। मकान के मुख्य दरवाजे के सामने सूर्य, ब्रह्मा, विष्णु, दुर्गा अथवा शिव का मन्दिर नहीं होना चाहिए। यह अशुभ है।

(28) मकान के उत्तर तथा पूर्व दिशा में दरवाजे तथा खिड़कियां ज्यादा रखनी चाहिएं। दरवाजे और खिड़कियों की संख्या सम 2, 4, 6, 8 होनी चाहिए तथा विषम 1, 3, 5, 7 न हो तथा उनकी संख्या के अन्त में शून्य 10, 20, 30, 40 न हो।

(29) भवन-निर्माण सम्बन्धी किसी भी काम में जो वास्तु शान्ति अथवा वास्तुपूजा नहीं करनी चाहिए, वह जल्दी ही दरिद्र हो जाता है और उसे अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

(30) मकान में पूजास्थल का निर्माण हमेशा ईशान कोण में ही करना उत्तम होता है। पूजा करते समय व्यक्ति का मुंह पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिएं। जरूरत पड़ने पर पूर्व ईशान कोण के निकट किया जा सकता है, यह एक उत्तम स्थिति है।

(31) एक बात का ख्याल रखें कि आंगन मध्य में ऊंचा और चारों तरफ से नीचा हो तो शुभ तथा मध्य में नीचा व चारों तरफ ऊंचा हो तो यह स्थिति अशुभ मानी जाएगी।

(32) ईशान कोण में भोजनालय न बनाकर पूर्व या पश्चिम दिशा में बनाना चाहिए, क्योंकि यह स्थान उपयुक्त है।

(33) भूखण्ड पर मकान बनाते समय दक्षिण तथा पश्चिम दिशा की अपेक्षा

उत्तर तथा पूर्व दिशा में सबसे ज्यादा खुला स्थान रखना चाहिए। ऐसा करने पर सूर्य का प्रकाश भवन में सबसे ज्यादा रहता है।

(34) भूखण्ड पर मकान बनाते समय दक्षिण तथा पश्चिम दिशा की अपेक्षा उत्तर तथा पूर्व दिशा में सबसे ज्यादा खुला स्थान रखना चाहिए। ऐसा करने पर सूर्य का प्रकाश मकान में सबसे ज्यादा रहता है।

(35) रसोईघर का निर्माण हमेशा आग्नेय कोण में करना उत्तम होता है। विशेष परिस्थिति में पूर्व अग्निकोण के समीप किया जा सकता है।

(36) अगर रसोईघर में अन्न संग्रह करना है तो ईशान व आग्नेय कोण के मध्य पूर्वी दीवार के पास रखना चाहिए। रसोईघर में चूल्हा अथवा गैस आग्नेय कोण में रखनी चाहिए।

(37) भवन-निर्माण में भूखण्ड पर भवन-निर्माण करते समय भवन दक्षिण-पश्चिम में ऊंचा और पूर्व-उत्तर में नीचा होना चाहिए। दीवारें भी इसी तरह बनानी शुभ होती हैं।

(38) भवन का समस्त भारी सामान तथा स्थायी रूप से रखने योग्य वस्तुएं दक्षिण-नैर्ऋत्य अथवा पश्चिम-नैर्ऋत्य दिशा में रखना श्रेष्ठ होता है।

(39) दक्षिण तथा नैर्ऋत्य दिशा वाले कमरों में जितना भारी सामान रहेगा उतना ही गृहस्थ जीवन का सुख अधिक प्राप्त होगा। वास्तुशास्त्र के द्वारा यह एक सरल उपाय है।

(40) मकान में तिजोरी, गल्ला, नगदी आदि सदैव उत्तर दिशा में रखनी चाहिए। गल्ला अथवा तिजोरी में कुबेर यन्त्र भी रखना अशुभ होता है। चैक बुक व बैंक पास बुक भी उत्तर दिशा में अपने दायें हाथ की तरफ रखनी चाहिए। यह एक उत्तम स्थिति है।

(41) मकान की पूर्व दिशा में ऊंचे भवन नहीं बनाने चाहिएं। पश्चिम दिशा में पेड़ आदि लगायें।

(42) भण्डार गृह उत्तर, उत्तर तथा ईशान कोण के मध्य, पूर्व व आग्नेय कोण के मध्य अथवा दक्षिण व आग्नेय कोण के मध्य बनाना चाहिए। यह भी एक सरल उपाय है।

(43) सोते समय अपना सिर पूर्व अथवा दक्षिण दिशा में ही रखकर सोना चाहिए। यह स्थिति श्रेष्ठ होती है। किसी भी हालत में पैर दक्षिण अथवा पूर्व दिशा की तरफ नहीं होने चाहिएं।

(44) भवन का मुख्य दरवाजा जहां तक संभव हो एक ही रखना चाहिए जिसमें मांगलिक चिन्हों का बनाना शुभ होता है। जैसे स्वास्तिक, ॐ, क्रॉस, कलश आदि।

(45) छत पर पानी की टंकियां आदि दक्षिण-पश्चिम दिशा में रखनी ही शुभ होती हैं। उत्तर और ईशान में कभी नहीं स्थापित करनी चाहिएं, वास्तु द्वारा यह अशुभ है।

(46) अगर आपके मकान पर सुबह 9 से 3 बजे तक पेड़ों की छाया गिरे तो अशुभ और कष्टदायी होती है।

(47) वास्तुपूजा के अभाव में नये घर में प्रवेश करने के लिए हर प्रकार के दुःख झेलने पड़ते हैं। इसलिए वास्तुपूजा करनी बहुत जरूरी है यह करना शुभ माना जाता है।

(48) आग्नेय-नैर्ऋत्य कोण और वायव्य कोण की दिशाओं में कुएं अथवा गड्ढ़े रहने पर ऐसे मकान में हमेशा कलेश व झगड़े रहते हैं। वास्तु द्वारा यह एक अशुभ स्थिति है।

(49) आप अपनी पशुशाला मकान में उत्तर-पश्चिम दिशा अर्थात् वायव्य कोण में रख सकते हैं।

(50) मकान का निर्माण कराते समय योग्य ज्योतिर्विद से शुभ मुहूर्त निकलवा लेना चाहिए। शुभ महीना, दिन, दिनांक, नक्षत्र, सूर्य, शशि तथा शुभ लग्न चयन करके ही निर्माण कार्य का आरम्भ करना चाहिए। वास्तु द्वारा यह शुभ माना जाता है।

(51) मेहमानों का स्थान अथवा कमरा उत्तर अथवा पश्चिम दिशा की ओर बनाना चाहिए।

(52) देवालय का निर्माण कराते समय उसके दरवाजे चारों दिशाओं में रखे जा सकते हैं।

(53) मकान में नई लकड़ी का ही प्रयोग करना उत्तम होता है। पुरानी लकड़ी प्रयोग में नहीं लानी चाहिए। उपभोग में लायी हुई लकड़ी का प्रयोग अशुभ होता है। भवन-निर्माण में एक ही किस्म की लकड़ी का उपयोग करने से वास्तु सम्बन्धी दोष नहीं रहता, ज्यादातर दो-तीन प्रकार की लकड़ी का प्रयोग किया जा सकता है।

(54) वास्तुक्षेत्र के दक्षिण तथा पश्चिम में मकान का निर्माण करना शुभ होता है। उत्तर-पूर्व दिशा में भवन बनाना चाहिए। वास्तु द्वारा यह एक उत्तम स्थिति है।

(55) मकान का दरवाजा जिस दिशा में बनाना हो, उस तरफ की लम्बाई को बराबर नौ भागों में विभाजित कर पांच भाग दायीं ओर से और तीन भाग बायीं ओर से छोड़कर बाकी एक भाग में अथवा सातवें भाग में दरवाजे का निर्माण कराना चाहिए। भवन के मध्य में सिंहद्वार अशुभ माना गया है।

(56) वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त हमारे पूर्वजों के अध्ययन अनुसंधान तथा अनुभव के प्रकाश स्तम्भ हैं। उनकी सच्चाई व्यावहारिकता तथा वैज्ञानिकता आज सिद्ध हो रही है।

(57) वास्तु-निर्माण करते वक्त पंचतत्व, भूमि, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश के महत्त्व को विस्मृत नहीं करना चाहिए। पंचमहाभूतों से लाभ उठाने के लिए ही वास्तु सिद्धान्त बनाए गए हैं।

(58) घर में प्रवेश करने से पहले वास्तु शान्ति करानी चाहिए। घर में प्रवेश के वक्त कुल देवकी पूजा, अंग्रेजों का सम्मान तथा ब्राह्मणों व परिजनों को भोजन कराना चाहिए। मंगल ध्वनि का घर में प्रवेश करना शुभ होता है। वास्तु द्वारा यह उत्तम है।

(59) चौकीदार के लिए कक्ष घर की सीमा के प्रवेश अहाते के निकट बनाना शुभ होता है। इनके क्वार्टर घर की सीमा के अन्तर्गत बायें हिस्से में होने चाहिएं। वास्तु द्वारा यह उत्तम है।

(60) जल का प्रवाह एवं निकास पूर्व वायव्य तथा ईशान और उत्तर दिशा के अलावा अन्य दिशाओं में अशुभ होता है तथा कष्टकारी सिद्ध होता है। वास्तु द्वारा यह स्थिति गलत है।

(61) टी०वी०, रेडियो अथवा अन्य किसी तरह के खेल तथा मनोरंजन का स्थान नैर्ऋत्य कोण के निकट निर्धारित करना चाहिए। वास्तुशास्त्र के द्वारा यह एक उत्तम स्थिति है।

(62) आप अपने मकान में सजावट के लिए युद्ध तथा संग्राम के चित्र पत्थर तथा लकड़ी से निर्मित राक्षसों की मूर्तियां सूअर, चीता, व्याघ्र, सियार सर्प, गिद्ध, उल्लू, कबूतर, बाज, बगुला आदि के चित्र भी अशुभ माने जाते हैं। इन्हें घर के अन्दर सजावट के लिए नहीं लगाना चाहिए। वास्तु द्वारा यह स्थिति ठीक नहीं है।

(63) आपके अपने मकान के आंगन का प्रयोजन मकान को हवा व सूर्य-प्रकाश से परिपूर्ण बनाने के लिए हैं, इन दोनों प्रकाश व वायु से मकान में रहने वाले परिवार के लोगों का स्वास्थ्य ठीक रहता है। वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत यह एक उत्तम स्थिति है।

(64) अगर ड्राइंगरूम को भोजनालय की तरह से प्रयोग में लाना है तो आपकी डायनिंग टेबल ड्राइंगरूम के अलावा भोजन कक्ष के दक्षिण-पूर्व दिशा में ही रखनी चाहिए। भोजन कक्ष पूर्व अथवा पश्चिम दिशा में ही बनाना चाहिए। वास्तु द्वारा यह उत्तम है।

(65) उत्तर-ईशान तथा वायव्य दिशाओं में जितना हल्का सामान होगा उतने

ही अनुपात में गृहस्थ जीवन का सुख अधिक प्राप्त होगा। वास्तुशास्त्र के अन्दर यह सही माना जाता है।

(66) वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों का मुख्य लक्ष्य प्राकृतिक व्यक्त और अव्यक्त ऊर्जाओं से लाभ प्राप्त करना होता है। वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त प्राकृतिक प्रदूषण से भी हिफाजत करते हैं। वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत इस स्थिति को उपयुक्त समझा जाता है।

(67) विद्युत मीटर, बोर्ड, मेनस्विच, विद्युत कक्ष अथवा अग्नि से सम्बन्धित कोई भी काम आग्नेय कोण में करना चाहिए। यह कोण वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत सर्वोत्तम माना जाता है।

(68) अगर आपको एक से ज्यादा दरवाजे बनाने हों तो पूर्व के अलावा पश्चिम-उत्तर अथवा दक्षिण में बनाना अशुभ होता है। इस वजह से दरवाजे का निर्माण निर्धारित स्थान में ही शुभ माना जाता है। वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत इस स्थिति को एक उत्तम स्थिति माना जाता है।

(69) सोफासेट, अलमारी, मेज और भारी तथा स्थायी रूप से रखने योग्य वस्तुएं दक्षिण-नैर्ऋत्य अथवा पश्चिम-नैर्ऋत्य दिशा में रखना शुभ माना जाता है। वास्तु द्वारा यह सही है।

(70) पांच तत्व पृथ्वी जल, अग्नि, वायु आकाश को अपने मकान के अधीन बनाना ही वास्तव में वास्तुशास्त्र का रहस्य है। इसलिए निर्माण के लिए तलघर स्थल और दिशाओं में वैसे कमरों का निर्माण उन्हीं उद्देश्यों के लिए कराया जाना उत्तम होता है; जैसे अग्नि के लिए अग्निकोण तथा वायु के लिए वायव्य कोण और ईश-प्राप्ति के लिए ईशान दिशा श्रेष्ठ होती है। वास्तुशास्त्र के द्वारा यह उत्तम है।

(71) मकान में सीढ़ी का दरवाजा पूर्व दिशा अथवा दक्षिण दिशा में रखना शुभ लाभदायक माना जाता है। मकान के पश्चिम अथवा उत्तरी भाग में दायीं तरफ निर्माण उत्तम माना जाता है। वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत यह एक उपयुक्त उपाय है।

(72) आप अपने मकान के अन्तर्गत दुछत्ती का निर्माण मकान या कमरे के दक्षिण अथवा पश्चिम दिशा में करना चाहिए। दक्षिण तथा पश्चिम भाग ऊंचा स्थान उत्तम माना जाता है।

(73) वास्तुशास्त्र के अनुसार आप अपनी कार पार्किंग के लिए उत्तर-पश्चिम स्थान का ही प्रयोग करें।

(74) तलघर या तहखाना उत्तर-पूर्व अथवा उत्तर-पूर्व में ही बनवाना चाहिए।

भूखण्ड के बीच में भी भूमिगत निर्माण नहीं कराना चाहिए। वास्तु द्वारा यह अच्छा नहीं।

(75) मकान बनवाते समय शौचालय को वायव्य कोण में बनाना शुभ माना जाता है। आवश्यकता अथवा स्थानाभाव में किसी भी दिशा में बनवाया जा सकता है। लेकिन शौच के समय खुद के मुख की दिशा दक्षिण अथवा उत्तर में ही होनी चाहिए। यह उपयुक्त स्थिति है।

(76) जिस जमीन पर मकान का निर्माण करवाना हो उस स्थान की मिट्टी खोदकर बदलनी और नई मिट्टी डालने पर भूमिगत किसी तरह का दोष नहीं रहता।

(77) समान रेखाओं में पूर्व-उत्तर की तरफ मार्ग वाले स्थान का चुनाव भवन-निर्माण के लिए श्रेष्ठ होता है।

(78) अगर मकान बनाबनाया है तो उसके भी वास्तुदोष दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

(79) वास्तु सलाहकार से सलाह लेकर वास्तुदोष दूर कर सकते हैं।

(80) अगर मकान का विस्तार करना हो तो चारों दिशाओं में विस्तार करना चाहिए, एक तरफ से विस्तार नहीं करना चाहिए।

(81) भवन-निर्माण शुक्ल-पक्ष में करवाना शुभ रहता है।

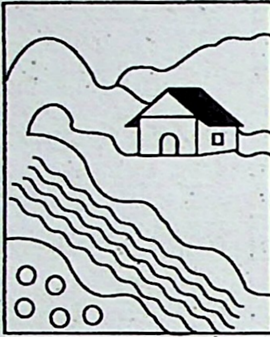
(82) भवन में कांटे वाले वृक्ष व पौधे मानसिक अशान्ति के सूचक होते हैं।

(83) भवन का मुख्य द्वार सभी द्वारों से बड़ा व मंगलकारी चिन्हों—स्वास्तिक आदि से युक्त होना शुभ रहता है।

(84) मंगल यंत्र, सम्राट यंत्र, मयूर मुकुट, ब्रह्मदण्डी यंत्र रखने से भूमिदोष नहीं होता है परन्तु इनके साथ आदित्य मोहन यंत्र रखना अनिवार्य है। कारण आप यह नहीं जानते हैं कि आपका संस्थान रजस्वला भूमि पर है या सोयी हुई भूमि पर। अतः निदान आवश्यक है। किसी भी पदार्थ का अस्तित्व वास्तु के अन्तर्गत आता है।

(85) घर में मन्दिर रख सकते हैं। देव प्रतिमा अथवा विग्रह 2.1/2 से 3 इंच तक की ऊंचाई में ही रखें। घर-मन्दिर में शिवलिंग नहीं रखें अगर स्थापित करते हैं तो नित्य जलाभिषेक आवश्यक है।

□□□



2



राशि नक्षत्र शुभ-अशुभ विचार

वास्तुशास्त्र के अनुसार मकान में रहने से पहले इस विधि का प्रयोग करना आवश्यक होता है, ताकि मकान के मालिक अपने विषय में शुभ-अशुभ का स्थान तथा उन्नति के बारे में विचार कर मकान का निर्माण करें। इसके लिए ज्योतिष ग्रन्थों में अनेक निर्देश दिए गये हैं—

देश ग्राम गृह हजवर व्यवद्वातिषु दाने मनौ।
सेवाकाकिणिव्रर्गसंगरपुनर्भूमेलके नामभय॥

घर, गांव, देश, ज्वर, व्यवहार, दानकार्य घृत, मन्त्र प्रयोग नौकरी में कांकिणी विचार, वर्ग शुद्धि संग्राम और पुनर्भूमेलापक में नाम राशि से ही विचार करके रखना चाहिए।

अश्विनी सहित 3 नक्षत्र मेष राशि, मघा सहित 2 नक्षत्र सिंह राशि और मूल सहित 3 नक्षत्र धनु राशि होती है। मेष राशियां दो नक्षत्र की होती हैं, यह मेलापक विवाह की भांति करना चाहिए।

गृह नक्षत्र	कृत्ति. रोहि.	आर्द्रा पुन.	आश्ले. मघा	3 फा. हस्त	स्वाति विशा.	ज्येष्ठा मूल	उ.षा. श्रवण	शत. पू. भा.	रेवती अश्वि.
	मृग	पुष्य	पू. फा.	चित्रा	अनु.	पू.षा.	धनि.	उ.भा.	भरणी
फल	उद्वेग	पुत्र-प्राप्ति	धन-प्राप्ति	शोक	पुत्र-भय	राज-भय	मृत्यु	सुख	प्रवास

अन्तिम कोष्ठ में निर्दिष्ट वैरयोनियां सर्वथा त्याज्या होती हैं।

नक्षत्र	आश्व. शत.	स्वाति हस्त.	धनि. पू.भा.	भरणी रेवती	पुष्य कृत्ति.	श्रव. पूषा	ऊषा अभि.

योनि	हथ	महिष	सिंह	गज	मेष	वानर	नकुल
बैर	दोनों का परस्पर		वही		वही		वही

नक्षत्र	रोहि. मृग	अनु. ज्येष्ठा	मूल आर्द्रा	पुन. आश्ले.	मघा पू. फा.	चित्रा विशा.	उ. फा. उ. भा.
योनि	सर्प	मृग	श्वान	मार्जार	मूषक	व्याघ्र	गौ
बैर	वही	वही	वही			वही	

गृह मित्र	सूर्य च.मं.वृ	चन्द्र बु.सू.	भौम सू.चं.वृ.	बुध सू.शु.	बृहस्पति सू.चं.मं.	शुक्र बु.श.	शनि शु.बु.
सम शत्रु	बुध शु.ब.	म.वृ. श.श.	शु.श. बुध	वृ.श.मं. चन्द्र	शनि बु.शु.	मं.वृ. सू.चं.	बृहस्पति सू.चूं.मं.

आवृत्ति भिभौस्त्रिभिरान्धिभाद्यं क्रमोत्क्रमात संगणयेदुडूनि।
यदेकपर्वण्युभमोश्च हर्म्यं हर्म्येश्योर्भेजति शुभं तदा स्थात॥

उक्त नाड़ी विचार गृह नक्षत्र और गृहपति के नक्षत्र के साथ किया जाता है। गृह तथा गृहपति की आपि मध्य अन्त्य में से कोई एक नाड़ी पड़ जाये तो उत्तम होता है। नाड़ी विचार में नक्षत्रों का क्रम सर्पाकार चलता है। जैसा चक्र द्वारा स्पष्ट किया जाता है।

नाड़ी चक्रम :

आदि	अश्वि.	आर्द्रा	पुन	उ.फा.	हस्त	ज्येष्ठा	मूल	शत.	पू.भा.
मध्य	भरणी	मृग	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनु.	पू.षा.	धनि.	उ.भा.
अन्त्य	कृत्ति.	रोहि.	आश्ले.	मघा	स्वाति	बिशा.	उषा.	श्रवण	रेवती
स्थान नक्षत्र	मस्तक 5 लाभ	मुख 3 धनहानि	कक्षि 5 धनधान्य वृद्धि	पाद 6 स्त्री हानि	पीठ 1 पाद हानि	नाभि 4 सम्पत्ति	मुदा 1 भय पीड़ा	दायां हाथ 1 क्रंदन	बायां हाथ 1 भेद

नाम की राशि से श्री ग्राम अथवा नगर वास हेतु निवासकर्त्ता की शुभ-अशुभ का विचार कर लेना चाहिए। अपने नाम की राशि से ग्राम की नाम राशि 2, 5, 9, 10, 11 हो तो उस नगर या ग्राम में वास करना उत्तम लाभदायक होता है और 4, 8, 12वीं राशि हो तो रोग, पहली तथा सातवीं राशि हो तो शत्रुता और 3, 6 राशि स्थान की हो तो हानि समझनी चाहिए और वहां वास नहीं करना चाहिए। शास्त्रकारों ने ग्राम-वास के काकिणी का भी विचार किया है—

स्ववर्ग द्वि गुणं कृत्वा पर वर्गेण योजयेत।
अष्टभिश्च हरेभ्दाग योऽधिकः स ऋणीभवेत॥

अपने नाम के अक्षर की वर्ग संख्या को दुगना करके दूसरे वर्ग की संख्या का योग करें और योगफल में आठ की संख्या का भाग देने पर जो बाकी बचे वह कांकिणी कहलाती है। दोनों की कांकिणियों में जिसकी संख्या अधिक हो वह देनदार अर्थात् ऋणी व दूसरा लाभप्रद अथवा लेनदार होता है। वर्ग आठ होते हैं। इनकी गणना निम्न वर्ग एवं संख्या के आधार पर करनी चाहिए—

वर्ग	अ	क	च	ट	त	प	य	श
	1	2	3	4	5	6	7	8

पंचांगों में वर्ग बैर के अनुसार इन वर्गों के गरुड़, मार्जार, सिंह, श्वान, सर्प, मूषक, मृग और शशक ये आठ स्वामी होते हैं। अपने वर्ग से 5वां वर्ग शत्रु होता है। अतः स्थान एवं भूस्वामी को अपने वर्ग से 5वें वर्ग को छोड़कर शुभ-अशुभ की जानकारी करनी चाहिए। विवाह मेलापक एवं अन्य साझेदारी कार्यों में वर्ग, बैर, विचार का शास्त्रकारों ने उल्लेख किया है। नगर तथा नगर में रहने वालों की राशियों के स्वामियों में मित्रता अथवा उनके स्वामी एक हों तो उस नगर में रहना उत्तम होता है।

नगर-गांव में रहने से शिवावाले (गीदड़ी) का विधान भी है जिसमें शिवा को बलि प्रदान कर उसके शब्दों का दिशा के अनुसार फल का विचार करना चाहिए। अगर शिवा पूर्व में मुख करके बोले तो शत्रुता, आग्नेय में भय, दक्षिण में कल्याण, नैर्ऋत्य में अशुभ, पश्चिम में सुख, वायव्य में भय, उत्तर में शुभ, ईशान में मृत्यु, चारों ओर अशुभ तथा शब्द नहीं करे तो अति उत्तम होता है यह गर्भाचार्य का मत है लेकिन आजकल शिवा ही उपलब्ध नहीं होती और इस विधान का पालन दूर-दूर तक आवास बन जाने के कारण सम्भव नहीं जान पड़ता है।

इसके अलावा अष्टोत्तरीयादिक दशासाधन के आधार पर वास करने पर शुभ ग्रहों की दशा में शुभ फल तथा अशुभ ग्रहों की दशा में अशुभ फल होता है।

गृहपति के नाम पर वर्ग, ग्राम के नाम का वर्ग और पूर्व आदि दिशा वर्ग का योग कर व भाग देने पर जो शेष बचे उसके अनुसार आ.चं.भो.रा.जी.श.ब.के.शु.

ग्रहों की दशा जाननी चाहिए। जिसमें चन्द्रमा, बृहस्पति, बुध तथा शुक्र की दशा हो तो धन-सुख और आनन्द की प्राप्ति होती है। शेष ग्रहों की दशा में अशुभ एवं हानि होती है। इसमें वर्गों का स्वरांक्षक क्रम 8, 5, 6, 4, 7, 1, 3, 2, क्रमशः अ क च ट त प य श के क्रमानुसार होते हैं।

नृग्रामदिग्वर्गामिताङ्कयोगे सूर्याद्वशेशा नवभिर्विभक्त।
आंचकुरूजीश बुकेशु पूर्वा दशा ग्राहाणां कथिता मुनीन्द्रै॥

इस तरह भू एवं भूस्वामी के लिए दिग्दशा आदि का ज्ञान करें और उस नगर या ग्राम की भूमि से भवन-निर्माणकर्त्ता को वहां आवाज करने, सम्भावित लाभ-हानि एवं शुभ-अशुभ के बारे में विचार करना चाहिए।

भूमि की गुणवत्ता

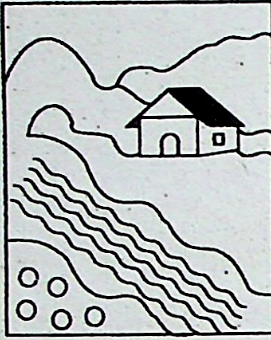
(1) कुशायुक्त भूमि	—	ब्राह्मणी
(2) शर (मुंज) युक्तभूमि	—	क्षत्रिया
(3) कुश-काशयुक्त भूमि	—	वैश्या
(4) सब प्रकार के घास से युक्त	—	शूद्रा

कल्पद्रुम के अनुसार

सुगन्धा ब्राह्मणी भूमिरक्तगन्धा तु क्षत्रिया।
मधुगन्धा भवेद्वैश्या मद्यगन्धा च शुद्रिका॥

(1) सुगन्धयुक्त भूमि	—	ब्राह्मणी
(2) रक्तगन्धयुक्त भूमि	—	क्षत्रिया
(3) सस्थ (अन्न) गन्धयुक्त भूमि	—	वैश्या
(4) मद्य गन्धयुक्त भूमि	—	शूद्रा

□□□



3



रसों के अनुसार भूमि के लक्षण

(1) मधुर रसयुक्त भूमि — ब्राह्मणी
(2) कषाय रसंयुक्त भूमि — क्षत्रिया
(3) अम्ल (खट्टा) रसयुक्त भूमि — वैश्या
(4) कटु (कड़ा) रसयुक्त भूमि — शूद्रा

ब्राह्मणी भूमि सुखदा, क्षत्रिया राज्यप्रदा, वैश्या धन-धान्य प्रदात्री और शूद्रा भूमि त्यागने योग्य होती है।

वशिष्ठ एवं नारदादि ऋषियों के मत के अनुसार, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इनके अलावा अन्य लोगों के लिए क्रमशः श्वेत रक्त, हरित और काले रंग की मिट्टी वाली भूमि शुभ होती है और इन चारों वर्णों में ब्राह्मण घृतगन्ध, क्षत्रिय रक्तगन्ध, वैश्य अन्नगन्ध तथा अन्य लोगों को मद्यगन्ध वाली भूमि सुख देने वाली होती है।

इस तरह मिट्टी के रंग कुशा, घास, गन्ध तथा रस के अनुसार भूमि की गुणवत्ता के बारे में भी विचार करें।

आयत्ययौ च भूशुद्धि तृणगेहे न चिन्तयेत।
शिलान्यासादि नो कुर्यात तथागारे पुरातने॥

पुराने घरों के जीर्णोद्धार में और तृण गृह के निर्माण में शिलान्यास सादिक का शास्त्र निषेध करता है।

गृहपिण्ड को उसे गुणा करके 9 का भाग दें जो शेष बचेगा उसके क्रम से सूर्यादि ग्रह अंशों के स्वामी होंगे। यथा—1 शेष में सूर्य, 2 में चन्द्रमा, 3 में मंगल, 4 में राहू, 5 में गुरु, 6 में शनि, 7 में बुध, 8 में केतु, 9 में शुक्र—ये ग्रह अंशेश होते हैं।

गृहपिण्ड को 3 से गुणा कर गुणनफल में 12 का भाग देकर जो शेष होगा उसको निम्नांकित क्रम से (द्रव्य) समझें, 1 शेष में वस्त्र, 2 में शत्रु, 3 में द्रव्य, 5 में धन्य, 6 में पृथ्वी, 7 में कुटुम्ब, 8 में विद्या, 9 में पशु, 10 में वाटिका,

11 में भाण्ड-भूषण, 12 में धन समझें।

गृहपिण्ड को 3 से गुणा कर 8 से भाग देने पर जो शेष बचे उसको ऋण समझें। इसका स्वामी पूर्व कथित रीति से समझना चाहिए।

गृहपिण्ड को 8 से गुणा कर 26 से भाग दें, वह अश्विनी नक्षत्र से गिनकर नक्षत्र समझना चाहिए।

विद्युत तारा से विपत्ति प्रत्यादि तारा से शत्रुता निधन तारा से सर्वथा निधन होता है; अर्थात् 3, 5, 6 में ताराएं अच्छी नहीं होतीं।

तृतीय तारा दुःखद, पंचम भाग का तारा और सप्तम तारा विनाशकारक होता है।

गृहपति का नक्षत्र और ग्रह-नक्षत्र यदि एक ही हों तो गृहपति का विनाश होता है, ऐसा वशिष्ठ का मत है।

गृहपिण्ड गजैर्हत्वा तिभिर्भिर्भाग माहरेत।
शेष चात्त तिथिर्ज्ञेया वस्तुशास्त्रविशारवै॥
शक्राहंत ज्ञेत्रफल त्रिशभ्दक्ता वशेषकम।
तिथिः प्रतिपदादि स्थाद्दर्शरिक्ता विवर्जयेत॥

गृहपिण्ड को 8 से गुणा कर 15 का भाग दें शेष की तिथि समझें। दूसरे आचार्यों के मत से गृहपिण्ड की 14 से गुणा कर 30 का भाग दें शेष शुक्ल पक्ष से प्रतिपदा आदि तिथियां होंगी। इसमें रिक्ता तिथि अमावस्या को छोड़ दें।

गृहपिण्ड की 4 से गुणा कर 27 का भाग देने पर जो शेष आयेगा क्रमशः विष्कुभादि योग होंगे। इनका फल नाम के अनुरूप ही होता है। इसमें अतिगण्ड घृति, शूल, गण्ड व्याघात, वज्र, परिध व्यतीपात और वध्रति—ये योग गृहकर्म में वर्जित होते हैं।

गृहपिण्ड को 8 से गुणा कर 120 का भाग दें। शेष गृह आयु हो गया, जब तक आयु की अवधि शेष है तब तक गृह शुभ है। अथवा पूर्णायु गृह शुभ है।

पृथिव्यापोऽनली वायुराकाश इति पञ्चभि।
गृहस्थायुषि सम्पूर्णे विकारो जायतेध्रुवम॥

कभी-कभी पूर्णायु वाले ग्रहों का विनाश होते देखा जाता है, इस सम्बन्ध में विचार करते हैं। एक हाथ के क्षेत्रफल को 8 से गुणा कर 60 का भाग दें, जो भी उपलब्धि प्राप्त हो उसको 10 से गुणा कर गुणनफल गृह की आयु होगी, भाग देने पर जो शेष बचे उसमें 5 का भाग देकर जो शेष हो उसके क्रम से पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाशजनित दोष से घर का नाश होता है। अथवा टूट-फूट आदि होती है।

गृहपति के हाथ से दीर्घ विस्तार (इन दोनों) का गुणा करके 9 का भाग देकर

शेष मण्डल होता है। यथा—

1—शेष में दाता।

2—भूपति

3—में नपुंसक

4—में चोर

5—में विचक्षण

6—में भोगी

7—में धनाढ्य

8—में दरिद्र

9—में धनद कुबेर होता है।

गृहपति के पांव में अंगूठे से कान तक सीधे बांस का एक बड़ा नाप लें। उस डण्डे से पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक भूमि को नाप लें। दोनों तरफ की नाप को लेकर उनको आपस में गुणा करें। गुणनफल में 8 का भाग देकर शेष अंक के अनुसार उसका शुभ-अशुभ फल कहें। शेष बचे तो रजक का स्थान होता है। इसका फल है धन घटता-बढ़ता रहे। 2 शेष में चमार का स्थान; इसमें वास करने से भूख-प्यास से व्यात रहता है। 3 शेष में ब्राह्मण का स्थान; इसमें उद्वेग, 4 शेष में शूद्र का स्थान, इसमें धनधान्य से युक्त 5 शेष में योगी का स्थान; इसमें अत्यन्त उदासीनता, 6 शेष में गोपस्थान; इसमें सर्वसिद्धि, 7 शेष में क्षत्रिय स्थान; इसमें लड़ाई-झगड़ा और 8 में क्रिया स्थान इसमें रोग एवं मरण स्थान होता है।

भ नागतष्ट व्यय ईरितोऽसौ ध्रुवादिनामा क्षौरयुक सपिण्डः।
तष्टोगुणैरिन्द्रकृता तभूषा हांश भबेयुर्न शुभोऽन्तकोऽत्र॥

पिण्डगत नक्षत्र में 8 का भाग देने से जो लब्धि प्राप्त हो, उसका नाम व्यय है इसमें ध्रुव आदि नामाक्षर जोड़कर पिण्ड भी जोड़ दें और उसमें 3 का भाग दें। 1 में इन्द्र, 2 में यमराज, 3 में राजा का अंश होता है। इसमें यमराज का अंश 2 शुभ नहीं होता हैं।

आय से कम व्यय हो जाये तो उस घर में रहना नहीं चाहिए। मूलराशि (क्षेत्रफल) में व्यय को जोड़कर घर के नामाक्षर भी जोड़ दें, इसमें 3 का भाग देने से जो शेष हो क्रम से 1 में इन्द्र, 2 में यम, 3 में राजा का अंश होता है, इसमें यमं का अंश अग्राह्य होता है।

नक्षत्रै चाष्टभिर्भक्ते योऽक्कः स स्थाद्गृहे व्ययः।
पैशाचस्तु समाये स्थाद्राक्षसोप्सधिके व्यये॥

पिण्डगत नक्षत्र में 8 का भाग देने पर व्यय निकल आयेगा, आय और व्यय समान होने से उस गृह का नाम पिशाच और अधिक व्यय होने से उसका नाम

राक्षस होता है। इस सम्बन्ध में नारायण भट्ट का मत इस प्रकार है—"ऋक्षे सर्पहते स्वल्पायभूरिव्ययम।"

पूर्व द्वार में शाला ध्रुवांक 1, दक्षिण में 2, पश्चिम में 3, उत्तर में 8 होता है। जितने दरवाजे मकान में बनाने हों उतने ध्रुवांक जोड़ें। फिर उसमें 1 और जोड़ दें, जोड़कर जो भी संख्या आती है उसको ध्रुवादि शाला का नाम ही समझें।

ध्रुवा धान्यं जय नन्दं खरं कान्तं मनोरमम।
सुमुखं दुर्गखं क्रूरं रिपुदं धनदं क्षयम॥
आक्रन्द विपुलं चैव विजयं चेति षोडशा।
गृहनामानि शास्त्रऽस्मिन समारव्यातापि सूरिभि॥

सोलह प्रकार के ग्रहों के नाम—

(1) ध्रुव
(2) धान्य
(3) जय
(4) नन्द
(5) खर
(6) कान्त
(7) मनोरम
(8) सुमुख
(9) दुर्मुख
(10) क्रूर
(11) रिपुद
(12) धनक
(13) क्षय
(13) आक्रन्द
(15) विपुल
(16) विजय।

सौम्यफाल्गुन वैशाख-माघ-श्रावण कार्तिकाः।
मासाः स्युर्गहनिर्माणे पुत्राऽरोग्फलप्रदाः॥

मार्गशीर्ष, फाल्गुन, वैशाख, माघ, श्रावण और कार्तिक में गृह आदि का निर्माण करने से घर के मालिक को पुत्र और स्वास्थ्य लाभ होता है।

वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन में अगर कन्या, मिथुन, धन और मीन से अन्य राशि के सूर्य हों तो गृह-निर्माण शुभ होता है।

उक्त महीनों में कन्या का सूर्य नहीं होता, अतः यहां कन्या राशि के सूर्य से

रहित कार्तिक मास का संकेत समझना चाहिए। क्योंकि कार्तिक मास में तुला, वृश्चिक का सूर्य हो जाता है और सौर मास के अनुसार तुला एवं वृश्चिक का सूर्य ग्राह्य होता है। यथा–''कन्या रोग तुले सौख्य वृश्चिके धनवर्धनम्।''

चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, माघ महीनों में गृह-निर्माण नहीं करना चाहिए।

मेष के सूर्य (वैशाख) में गृह-निर्माण शुभ, वृष (ज्येष्ठ) में धनवृद्धि, मिथुन (आषाढ़) में मृत्यु, कर्क (श्रावण) में शुभ, सिंह (भाद्रपद) में मृत्यवृद्धि, कन्या (आश्विन) में रोग, तुला (कार्तिक) में धनवृद्धि, धन (पौष) में महाहानि, (माघ) में धनागम, कुम्भ (फाल्गुन) में रत्नलाभ और मीन (चैत्र) में भयदायक होता है।

उपर्युक्त अर्थ को चक्र द्वारा समझें–

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
मास	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
फल	शुभ	धनलाभ	मरण	शुभ	मृत्यवृद्धि	रोग

राशि	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पोष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
फल	सुख	धनलाभ	हानि	धनलाभ	रत्नलाभ	भय

कुम्भेऽर्के फाल्गुने प्रागपरमुख गृहं श्रावणे सिंहकर्क्योः।
पौषे नक्रे च याम्योत्तर मुखसदन गोऽजगेऽर्गे च राधे।
मार्गे जुकालिगे सद्ध्रुवमृदुवरूणस्वातिवस्वर्क पुष्यैः।
सूती गेहन्त्वादित्यां हरिभाविधिभ्योस्तत्र शस्तः प्रवेश॥

फाल्गुन मास में कुम्भ के सूर्य हों, श्रावण में सिंह-कर्क के तथा पौष में मकर के सूर्य हों तो पूर्व-पश्चिम द्वार का गृह-निर्माण शुभ होता है। वैशाख में मेष-वृश्चिक के और मार्गशीर्ष में तुला-वृश्चिक के सूर्य हों तो दक्षिण-उत्तर द्वार का गृह-निर्माण शुभ होता है। ध्रुव, शतभिषा, स्वाति, धनिष्ठा, हस्त, पुष्य नक्षत्रों में गृहारम्भ शुभ होता है। लेकिन सूतिका निर्माण पुनर्वसु नक्षत्र में प्रारम्भ करें और श्रवण अथवा अभिजित में उक्त गृह में प्रवेश करें।

कर्क, मकर, सिंह, कुम्भ के सूर्य में पूर्व-पश्चिम द्वार का गृह और तुला, मेष, वृश्चिक के सूर्य में दक्षिण-उत्तर द्वार का गृह-निर्माण शुभ होता है। मीन, धन, कन्या, मिथुन के सूर्य में जो अनभिज्ञ लोग गृह-निर्माण कराते हैं वे रोग और शोक के भागी बनते हैं।

किसी आचार्य के मत से मेष के सूर्य में चैत्र, वृष में ज्येष्ठ, कर्क में आषाढ़, सिंह में भाद्रपद, तुला में आश्विन, वृश्चिक में कार्तिक, मकर में पौष, कुम्भ में माघ मास गृहारम्भ के लिए शुभ होता है।

कार्तिक में कन्या का सूर्य शुभ नहीं होता और माघ में धन का सूर्य शुभ नहीं होता।

खात भूमिशोधन राहु के मुख से न करें। मुखस्थ विदिशा से पांचवीं। ईशान 2, पूर्व 3, आग्नेय 4, दक्षिण 5, नैर्ऋत्य विदिशा राहु की पुच्छ संज्ञक है। मुख और पुच्छ के बीच भाग को पीठ कहते हैं। पीठ से खात शुभ होता है।

यथा–देवालय खात में चैत्र 12, वैसाख 1, ज्येष्ठ 2 में राहु का मुख ईशान कोण में पुच्छ नैर्ऋत्य कोण में है तो पीठ आग्नेय कोण में हुई, इसी कोण से खात का आरम्भ करें, 160 चक्र में स्पष्ट है–

राहुमुख चक्रम :

विदिशाएं	ईशान में	वायव्य में	नैर्ऋत्य में	आग्नेय में
देवालय	121/11 के सूर्य में राहुमुख	3/4/5 के सूर्य में राहुमुख	6/7/8 के सूर्य में राहुमुख	9/10/11 के सूर्य में राहुमुख
गृहारम्भ में	5/6/7 के सूर्य में राहुमुख	8/9/0 के सूर्य में राहुमुख	11/12/1 के सूर्य में राहुमुख	2/3/4 के सूर्य में राहुमुख
जलाशय में	10/11/12 के सूर्य में राहुमुख	1/2/3 के सूर्य में राहुमुख	4/5/6 के सूर्य में राहुमुख	7/8/9 के सूर्य में राहुमुख

जल अथवा अग्नि के द्वारा गिरे हुए मकान का जीर्णोद्धार श्रावण, कार्तिक, माघ में करना चाहिए। इसमें गृहपति को सुख-प्राप्ति होती है।

पूर्वोक्त गृहारम्भ के मासों में अथवा केवल माघ मास में भी देवालय, तालाब, बगीचा आदि शुभ कृत्य करना मुनियों का मत है।

तृण अथवा लकड़ी के घर बनाने में मास शुद्धि की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि ये चिरस्थायी नहीं होते। ईंट अथवा पत्थर द्वारा स्थायी ग्रहों का निर्माण उक्त निन्दित मासों में न करें। ज्येष्ठ में पशु गृह, आश्विन में धान्य गृह, मोघ में पौधशाला और चैत्र में धारा गृह; अर्थात् गंगा के तटवर्ती भवन का निर्माण शुभ है।

शुक्लपक्षे भवेत्सौख्यं कृष्णे तस्करती भयम।
गृहानिर्माणकार्येषु पक्षशुद्धि विचिन्तयेत॥
गीर्वाणपूर्व गीर्वाणमन्त्रिणोर्द्दश्यमानयो।
शुक्लपक्षे दिवाकार्य न निर्माणञ्च रात्रिषु॥

शुक्ल पक्ष में गृहारम्भ करने से सर्वाधिक सुख, कृष्ण पक्ष में चोरों का भय रहता है। महर्षि वशिष्ठ के मत में—यदि गुरु-शुक्र उदयी हों तो शुक्ल पक्ष के दिनों में गृहारम्भ करना चाहिए न कि रात्रि में।

प्रतिपदा को गृह-निर्माण का आरम्भ करने से दरिद्रता, चतुर्थी को धनहानि, अष्टमी को उच्चाटन, नवमी को शस्त्रभ्य, अमावस्या को राजभय और चतुर्दशी को स्त्रीहानि होती है। महर्षि भृगु के मत में—चतुर्थी, अष्टमी, अमावस्या तिथियां सूर्य, चन्द्र और मंगल वारों का त्याग होना चाहिए।

चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, पुष्य उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रों में गृहारम्भ शुभ होता है। महर्षि पाराशर के मत में चित्रा, शतभिषा, स्वाति, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी, रेवती, मूल, श्रवण, उत्तराफाल्गुनी, धनिष्ठा, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, अश्विनी, मृगशिरा और अनुराधा—इन नक्षत्रों में वास्तुपूजन करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

हस्त, पुनर्वसु, मृगशिरा, पुष्य, स्वाति, रोहिणी, अनुराधा, तीनों उत्तरा, चित्रा, अश्विनी और श्रवण नक्षत्रों को तथा वृश्चिक एवं कुम्भ लग्नों को रिक्ता (4/9/14) तिथियों को छोड़कर बुध, गुरु, शुक्र, शनि वारों में शुभ चन्द्रमा में गृहारम्भ एवं सूतिका गृह का निर्माण प्रारम्भ करने से गृहपति का कल्याण हो जाता है।

वास्तुकर्म में अश्विनी, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, पुष्य, मृगशिरा और रोहिणी ये नक्षत्र शुभ हैं। मंगल और रविवार को छोड़कर शेष दिन पूर्णा (5/10/15) और नन्दा (1/6/11) तिथियां शुभ हैं। वैधृति शूलगण्ड, परिध व्याघात और वज्र योग अशुभ होते हैं।

योगों में विष्कुम्भ और व्यतीपात को छोड़कर शेष शुभ होते हैं। कारणों में नाग, तैतिल और गर उत्तम हैं। तिथियों में सम तिथियां (2, 4, 6, 8, 10, 12, 14, 30) शुभ नहीं हैं।

मुहूर्तों में—2, 3, 5, 6, 7, 8, 9, 13 ये शुभ मुहूर्त हैं, **लग्नों में**—2, 3, 6, 7, 9, 11 लग्न उत्तम हैं।

स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, रोहिणी—इन नक्षत्रों में स्तम्भ की ऊंचाई आदि करानी चाहिए। इनके अलावा अन्य वर्जित हैं।

द्वयग्डेवा स्थिरभे च सौम्यसहिते लग्नेशुर्वीक्षते।
सौम्येवीर्य समन्वितैश्च दशमें निर्माण माहुर्बुधाः।

पञ्चाङ्कैर्विधुकेन्द्रगैः सुफलदं पापैस्त्रिपष्ठाशेगैः।
क्रूरो ह्याष्ठमंसस्थितोऽपि मरणं कर्तुर्विधन्तेराम॥

शुभग्रह से युक्त और दृष्ट द्विस्वभाव और स्थिरलग्न में वास्तुकर्म शुभ होता है। शुभ ग्रह बलवान होकर दशम स्थान हो तो वास्तुकर्म शुभ होता है। अथवा शुभग्रह पञ्चम, नवम हों और चन्द्रमा 1, 4, 7, 10, स्थान में हो तथा पाप गृह तीसरे, छठे, ग्यारहवें स्थान में हों तो शुभ होता है। यदि अष्टम स्थान में पाप ग्रह हों तो गृहेश की मृत्यु होती है।

मंगल, रविवार रिक्ता (4/9/14) अमावस्या, सप्तमी तिथियां चरलग्न बाणपञ्चक—इन सबको छोड़कर आठवें, बारहवें के अलावा शुभग्रह हो और तीसरे छठे, ग्यारहवें में पाप गृह हों तो गृहारम्भ शुभ होता है।

शनौ स्वाती सिंहलग्न शुक्लपक्षश्च सप्तमी।
शुभयोगः श्वावगाश्च सकाराः सप्तकीर्तिताः।
सप्तानां योगतो वास्तुः पुत्रवित्त प्रदः सदाः।
गजश्च धनधान्यादिनित्य तिष्ठान्ति सर्वतः॥

शनिवार, स्वाति नक्षत्र, सिंह लग्न, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि शुभ योग, श्रावण—इन सात सकारों के योग में लिया गया वास्तुकर्म पुत्र, हाथी, धनधान्य को देने वाला होता है।

यदि बलवान बृहस्पति गृहेश हो तो सौख्य शुक्र से धान्य, चन्द्रमा से लक्ष्मी, सूर्य से सौख्य आदि चारों फल देता है। यदि उक्त चारों ग्रह नीच अथवा अस्तगत हों तो अपना पूर्ण फल नहीं देते। लग्न में बृहस्पति, सप्तम में बुध, सूर्य, षष्ठ में; शुक्र चतुर्थ में और शनि तृतीया में हो तो वह गृह शतायु होता है।

प्रकारान्तर से गृह की आयु का विचार लिखते हैं—यदि शुक्र लग्न में या एकादश में, सूर्य, बुध दसवें और बृहस्पति केन्द्र में हो तो गृह की आयुं 100 वर्ष होती है। शुक्र लग्न में, सूर्य तीसरे स्थान में, बृहस्पति पांचवें में और मंगल छठे में हो तो गृह की आयु 200 वर्ष की होती है।

अगर गृह-निर्माण लग्न से सूर्य सप्तम में, शनि तृतीया में हो तो उस गृह की आयु 100 वर्ष होती है। अथवा सूर्य तीसरे में, मंगल छठे में हो तो उस गृह की आयु 200 होती है।

लग्न में शुक्र, दशम में बुध, एकादश में सूर्य, केन्द्र में गुरु हो तो उस घर की आयु 100 वर्ष की होती है। चतुर्थ गुरु दशम, चन्द्रमा मंगल और शनि एकादश में हो तो उस घर की आयु 80 वर्ष की होती है।

प्रारम्भकाले यदि मन्दभौमो लाभाश्रितौ देव गुरुश्चतर्थे।
चन्द्रोदये चेच्दरदाम शीति। स्थितिर्नियुक्ता भवणस्य सिद्धि॥

गृहारम्भ से समय यदि मंगल, ग्यारहवें और बृ-स्पति चतुर्थ, चन्द्रमा दशम हो तो उक्त गृह की आयु 80 वर्ष की होती है।

लग्न में सूर्य होने के वज्रपात, चन्द्रमा से कोषहानि, मंगल से मृत्यु, बुध से कुशल शक्ति और आयु की वृद्धि, बृहस्पति से धर्मादि कार्य, शुक्र से पुत्रोत्पत्ति और शनि से दरिद्रता होती है।

यामित्र के शुद्ध होने पर, विवाहोक्त, महादोषों रिक्ता तिथियों (4, 9, 14) रविवार, मंगलवार, चरलग्न तथा चरनवांश को छोड़कर सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र के उच्च एवं बलवान होने पर किया गया गृहारम्भ शुभ होता है।

वर-कन्या की कुण्डली के मिलान के समान ही गृह मेलापक भी होता है। अगर घर और घर के मालिक की एक ही नाड़ी हो तो फिर अन्य विषयों का विचार न करना चाहिए।

जो घर 32 हाथ से अधिक विस्तृत हो अथवा जिसमें 4 दरवाजे हों या घास-फूस के घर में और अलिन्द आदि में भी आयादि का विचार नहीं करना चाहिए।

जिस घर का विस्तार 32 हाथ से अधिक है उसमें विद्वज्जन आयादि गुणों का विचार नहीं करते।

बुधे द्रविणसंपत्तिर्गुरौ धर्म समागम।
यथा काम विनोदेन भृगौ कालंवज्र दोहि॥

दूसरा सूर्य हानि, चन्द्रमा शत्रुनाश, मंगल बन्धन, बुध द्रव्य-सम्पत्ति, बृहस्पति धर्मसमागम, शुक्र विनोद, शनि विघ्नकारक होता है।

तीसरे स्थान में शुभ ग्रह शुभकारक होते हैं। तृतीय पाप गृह भी शुभ होते हैं। शीघ्र मनोरथ पूरे होते हैं। चौथा गुरु राजद्वार से सम्मान दिलाता है, चौथा चन्द्रमा सदा लाभदायक होता है। शुक्र भूमि लाभ, सूर्य मित्र वियोग, मंगल मित्र भेद, चन्द्रमा बुद्धि नाश, शनि लाभदायक होता है।

पञ्चमस्ये सुराचार्ये मित्रवस्त्र धनागमः।
शुक्र पुत्रधनप्राप्ति हेंमाभरणमिन्दुजे॥
सुतदुःख सदा सूर्य शशांके कलहप्रिय।
भौमे कामविरोधा स्याच्छनौ कामविमर्दनम॥

पञ्चम गुरु मित्र, वस्त्र, धन-लाभ करता है, शुक्र पुत्र, धन लाभ, बुध स्वर्ण, भूषण, सूर्य पुत्र सम्बन्धी कष्ट, चन्द्रमा कलह, मंगल विरोध, शनि काम विनाशकारक होता है।

षष्ठ सूर्य हो तो राजपूज्य, चन्द्रमा तुष्टि, मंगल से लाभ, शनि से शत्रु बल-नाश, गुरु से अर्थोदय, शुक्र से विद्यागम और बुध से सम्मान, ज्ञान में कुशलता।

सप्तम गुरु से हाथी, बुध से घोड़ा, शुक्र से भूमियोग, सूर्य से कीर्तिभंग, मंगल से विद्रोह, चन्द्रमा और शनि से अंग-भंग जयजड़ता होती है।

अष्टम सूर्य से शत्रुता, विपत्ति, चन्द्रमा से हानि, मंगल-शनि से भय, बुध से मान, धन की प्राप्ति, बृहस्पति से महान् और शुक्र से आत्मीय सुख होता है।

नवम बृहस्पति वृद्धि और भाग्यवृद्धि, बुध विविध भोग, शुक्र से सामान्य भाग्य, चन्द्रमा से धातुक्षीणता, सूर्य से धर्महानि, मंगल से शक्तिहानि, शनि से कामदोष होता है।

दशम शुक्र से शयन आसन की वृद्धि, गुरु से सौख्य, बुध से विजय, सूर्य से धनवृद्धि, चन्द्रमा से खजाने की वृद्धि, मंगल से बल-प्राप्ति, शनि से कीर्ति-नाश, एकादश स्थान में सभी ग्रह विशेष शुभ फल देते हैं। द्वादश स्थान में सभी ग्रह उदासीनता देते हैं।

अपने उच्च का शुक्र लग्न में अथवा बृहस्पति चतुर्थ में अथवा अपने उच्च का शनि एकादश में हो तो वह घर चिरकाल लक्ष्मीयुक्त रहता है।

अगर तीन से अधिक ग्रह शत्रु क्षेत्र में या नीचस्थ हों अथवा अन्य ग्रहों से पराजित हों—ऐसे समय में यदि गृहनिर्माण किया जाता है तो वह लक्ष्मीहीन होता है। अथवा यदि वर्णपति निर्बल हो और सातवें या दसवें भाव में स्थित कोई ग्रह शत्रु के अंश में हो तो वह गृह एक वर्ष के भीतर ही दूसरे के हाथ में चल जाता है।

पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, आश्लेषा, पूर्वाषाढ़ा—ये नक्षत्र शुक्र से युक्त होकर रहें और शुक्र का ही दिन हो तो निर्णय कियां हुआ गृह धन तथा धान्य देता है।

हस्त, पुष्य, रेवती, मघा, पूर्वाषाढ़ा और मूल—ये नक्षत्र मंगल से युक्त होकर रहें और उस दिन मंगलवार भी हो तो वह गृह अग्निदाह और पुत्रनाश का कारण होता है, और रोहिणी, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, हस्त—ये नक्षत्र बुधयुक्त हों तथा उस दिन बुधवार भी हो तो वह गृह सुख एवं पुत्रदायक होता है।

अजैकपादहिर्बुध्य शक्रमित्रानिलान्तकैः।
स मन्दैर्मन्दवारे स्याद्रक्षोभूतयुतं गृहम्॥

पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, ज्येष्ठा, अनुराधा, स्वाति, भरणी में से किसी नक्षत्र का शनि हो उस दिन शनिवार भी हो तो वह गृह राक्षस एवं भूतों से युक्त रहता है।

गृहेशतत्स्त्री सुखवित्तनाशोऽर्कैन्द्वीन्यशुक्रे विब्लेऽस्तनीचे।
कर्णुः स्थितिनो विधुवास्तुनोर्भेपुरः स्थिते पृष्ठगते खनिःस्थवा॥

सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र ग्रहों में कोई गृह यदि निर्बल, अस्तगत या नीच स्थान स्थित हो तो क्रम से गृहहेश गृहपति के स्त्री-सुख, धन का नाश कर सकता है। चन्द्रमा और गृह का नक्षत्र ये दोनों यदि आगे हों तो गृहकर्त्ता उसमें निवास नहीं करता। उक्त दोनों नक्षत्र यदि पीछे हों तो चोरी, सेंध आदि का डर होता है।

गृहपिण्ड द्वारा प्राप्त नक्षत्र और चन्द्र नक्षत्र ये दोनों यदि वाम या दक्षिण हों तो शुभ होता है और आगे-पीछे अशुभ, अतः अपना कल्याण चाहने वाले व्यक्ति इसका विचार अवश्य कर लें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा केन्द्र में बृहस्पति शेष गृह अपने मित्र अथवा उच्च अंश में हो तो ऐसे समय में बनाया हुआ गृह लक्ष्मी से युक्त होता है। यदि गृह-निर्माण काल में गृह नीच राशि में स्थित हो तो निर्धनता होती है, एक भी ग्रह दशम या सप्तम में होकर शत्रु के अंश में हो तो उस गृह में वर्ष भर में दूसरों का अधिकार हो जाता है।

मीन राशि में स्थित शुक्र यदि लग्न में हो या कर्क का बृहस्पति चौथे स्थान में स्थित हो अथवा तुला का शनि ग्यारहवें में हो तो वह घर सदा धनयुक्त रहता है।

त्रिवेद वेदाग्नि युगाग्नि वेदत्तिकेषु भानोः शीशभं गृहेषु।
दाहो विनाशः स्थिरताधन श्रीः शूलञ्च दारिद्रयमूतीक्रमेण॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनें यदि प्रथम 3 नक्षत्रों में गृहारम्भ का नक्षत्र हो तो दाह 4 नक्षत्रों में निवाश, 4 नक्षत्रों में स्थिरता, 3 नक्षत्रों में धन लाभ, 4 नक्षत्रों में लक्ष्मी-प्राप्ति, 3 नक्षत्रों में शून्यता, 4 नक्षत्रों में दरिद्रता और 3 नक्षत्रों में मृत्यु होती है। इसका नाम वृष वास्तु चक्र है, अतः उक्त नक्षत्रों का विभाजन वृष के आगे के रूप में चक्र में प्रदर्शित होता है।

वृष वास्तु चक्रम

अंग	शिर	अग्रपाद	पृष्ठपाद	पृष्ठ	वामकुक्षि	दक्षकुक्षि	पुच्छ	मुख
नक्षत्र	3	4	4	3	4	3	4	3
फल	गृहदाह	विनाश	स्थिरता	धनलाभ	लक्ष्मीलाभ	शून्य	दरिद्रता	मृत्यु

सम्पूर्ण अंगों वाले वृषभ के शरीर में सूर्य नक्षत्र से चक्र के अनुसार नक्षत्र रखें और फल समझें। संक्षेप में प्रारम्भ के 7 नक्षत्र अशुभ, बीच में 11 शुभ, शेष त्याज्य होते हैं। विशेष चक्र द्वारा समझें—

गृहारम्भेवत्सचक्रम्
सूर्य नक्षत्राद्गणना साभिजित

स्थानानि	नं०	फलानि
शीर्षे	3	अग्निभय दाहः
अग्रपाद	4	शून्यमसत्
पृष्ठपादे	4	स्थिरता
पृष्ठे	3	लक्ष्मी-प्राप्ति
दक्षिण कुक्षौ	4	लाभःसत्
पुच्छ	3	स्वामीनाश
वाम कुक्षौ	4	निर्धनता
मुखे	3	पीड़असत

वृषभ चक्रम

अंग	सिर	अग्रपाद	पृष्ठपाद	पृष्ठ	दक्षकुक्षि	वामकुक्षि	पुच्छ	मुख
नक्षत्र	3	4	4	3	4	4	3	3
फल	गृहदाह	वज्रपात	स्थिरता	धनागम	जलायाम	दरिद्रता	स्वामिनाश	पीड़ा

पराशर मुनि के मत से वर्तमान तिथि में 4 मिलाकर उस संख्या को दूना करें उसमें गृहपति के नाम से अक्षरों की संख्या को जोड़कर 3 का भाग दें शेष में स्वर्ग, 2 में पाताल, शून्य शेष में मृत्युलोक में वास्तुपुरुष का वास समझें।

वास्तुपुरुष के सिर, पुच्छ, दक्षिणकुक्षि और पृष्ठ भाग में दीर्घायु की कामना वाले पुरुष को खात (गड्ढा) नहीं बनाना चाहिए, अतः वामकुक्षि में खात शुभ होता है।

वास्तुपुरुष को 28 भागों में बांटें, 10 भाग सिर की तरफ, 17 भाग पुच्छ की तरफ छोड़ दें, अवशिष्ट भाग में शकुन्यास करें।

तिथि को 5 से गुणा कर वृत्ति आदि (सप्तशलाका चक्र के अनुसार) नक्षत्र संख्या को जोड़कर उसमें 12 और जोड़ दें इसमें 9 का भाग दें। यदि 1, 4, 7 शेष बचे तो जल में; 2, 5, 8 शेष बचे तो स्थल मे;, 3, 6, 9 शेष बचे तो आकाश में कूर्म का निवास होता है। उनका फल—जल में लाभ, स्थल में आकाश में गरण होता है।

अष्टास्त्र च तृतीयांशमजस्त्र मृज्ववर्णकम्।
एवं लक्षण संयुक्त परिकल्पयं शुभे दिने॥

ब्राह्मणादि वर्णो के क्रम से 24-20-16-12 अंगुल का खैर अर्जुन, शाल, नील, करंज, कुटक तथा बेल की लकड़ी का शंकु बनाकर उसको सुवर्ण वस्त्र आदि से विभूषित करें। तदनन्तर शंकु को तीन भागों में विभाजित कर चार कोण, आठ कोण अथवा गोल या सीधा शंकु निर्माण करें।

गृहस्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई की नाप की गुणा करके उसको पुनः 2 से गुणा करें, इसमें 8 का भाग दें। शेष कूर्म में मण्डलेश होंगे यथा—1 शेष में इन्द्र, 2 में विष्णु, 3 में यम, 4 में वायु, 5 में कुबेर, 6 में शिव, 7 में ब्रह्म, 8 में गणेश।

इनका फल इन्द्र—सौख्य विष्णु—यश यम—दुःख, वायु—उत्पादन, कुबेर—धनलाभ, शिव—कलह, ब्रह्मा—सुखवृद्धि और गणेश—सब प्रकार की सिद्धि देते हैं।

माण्डलेश फल चक्रम

शेष सं	1	2	3	4	5	6	7	8
मण्डलेश	इन्द्र	विष्णु	यम	वायु	कुबेर	शिव	ब्रह्मा	गणेश
फल	सौख्य	यश	दुःख	उत्पादन	धनलाभ	कलह	सुखलाभ	सर्वसिद्धि

वास्तुक्षेत्रादवाकप्रत्यग्दिशि नैव गृह स्चेत।
उत्तरस्यान्तु पर्वूस्यां गृहात्सर्व गृहंरचेत॥
सद्योच्चाद्विगुणाधिकान्तरभुवि प्रत्यक तथा दक्षिणे।
गेहं चाशुरचेछुभय भवनं सत्कर्मणा सिद्ध ये।
माण्डत्यादि मुनीन्द्रगर्गप्रभवा एवं वदन्तीति च।
सशोध्यैव गृह रजेच्छुभदिने भव्यादि कर्माखिल॥

पहले घर से दक्षिण और पश्चिम दिशा में गृहनिर्माण न करवायें इसके लिए उत्तर एवं पूर्व दिशा शुभ होती है। यदि दक्षिण-पश्चिम की तरफ घर बनाना हो तो पहले घर की ऊंचाई से दूना पश्चिम या दक्षिण हटकर घर बनायें। इसी का समर्थन माण्डत्य, गर्ग प्रभूति मुनि करते हैं। इस तरह संशोधन करके बनाया हुआ घर सुख-शान्तिदायक होता है।

गृहकर्त्ता के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई की नाप को गुणा करके 9 का भाग देकर जो शेष बचता है उसका फल क्रमशः इस प्रकार होता है। यथा—1 में दाता, 2 विलक्षण (बुद्धिमान), 3 भीरू, 4 कलह, 5 राजा, 6 दानव, 7 नपुंसक, 8 धनी अर्थात् इन शब्दों के नाम के अनुसार ही फल देता है।

ब्राह्मण राशि के लिए पूर्व द्वार, क्षत्रिय राशि के लिए उत्तर द्वार, वैश्य राशि के लिए दक्षिण द्वार और शुभ राशि के लिए पश्चिम दिशा का द्वार शुभ होता है।

सर्वद्वार इहध्वजों वरूणादिग्द्वारं, च हित्वा हरिः।
प्राग्द्वारोवृषभोगजोयम सुरेशाशामुख च हित्वाः स्याच्छुभः॥

पूर्ववर्णित ध्वज आय का सभी दिशाओं में द्वार शुभ होता है। सिंह आय के पश्चिम के अतिरिक्त अन्य द्वार शुभ होते हैं। वृष आय के पूर्व द्वार और गज आय के दक्षिण और पूर्व द्वार शुभ होते हैं।

ध्वज आय और ब्राह्मण वर्ग की पश्चिम मुख द्वार सिंह आय, क्षत्रिय वर्ग को, उत्तर द्वार वृष आय, वैश्य वर्ण को पूर्व मुख द्वार तथा गज आय शूद्र जाति को दक्षिण मुख्य द्वार शुभ होता है।

गृह के दीर्घविस्तार के योग में 9 का भाग देकर पूर्व द्वार करना हो तो बायीं तरफ दो हिस्से भूमि को छोड़कर तीसरे-चौथे अंश में दक्षिणामुख द्वार बनाना हो तो चौथे-पांचवें भाग में और उत्तराभिमुख द्वार करना हो तो चौथे-पांचवें में ही द्वार की रचना करनी चाहिए।

मार्ग वृक्ष कोण कूप स्तम्भ चक्र से बेधयुक्त द्वार अशुभ होता है, लेकिन दरवाजे की ऊंचाई से दूरी पर ये सब हों तो उक्त दोष नहीं होते।

मार्ग से बेधयुक्त गृह द्वार गृहपति का नाश करता है। वृक्ष से बेधयुक्त गृह द्वार बालकों के लिए अहितकारक होता है। पंकविद्ध द्वार शोक करता है। जल निकलने वाले मार्ग से विद्ध द्वार धन-व्यय कराता है। कुएं से विद्ध द्वार अपस्मार (मृगी) रोग करता है। देवमूर्ति से विद्ध द्वार विनाशकारक होता है। स्तम्भ विद्ध द्वार स्त्री को दुश्चरित्र बनाता है।

उन्माद स्वयमुद्धाटितेऽथ पिहिवे स्वयं कुलविनाश।
मानाधिके नृपभयं दस्युभयं व्यसन मेव नीचे च॥
द्वार द्वारस्योपरि यतन्न शिवाय श्ङ्कट यच्च।
आत्यान्त क्षुद्भयदं कुब्ज कुलनाशनं भवति॥
पीड़ाकर मति पीड़ितमन्तविनत भवेदभावाय।
बाह्यविनते प्रवासों दिग्भ्रान्ते दस्युभिः पीड़ा॥

दरवाजा अगर अपने आप खुलता हो तो उन्माद-रोग होता है, स्वयं बन्द होता है तो कुलनाश, प्रमाण से अधिक हो तो राजभय, प्रमाण से कम हो तो चोरभय और शारीरिक कष्ट होता है।

दरवाजे के ऊपर दरवाजा शुभ नहीं होता है, मोटाई में कम द्वार भी अच्छा नहीं होता है। जो अधिक मोटा दरवाजा होता है वह भूख का भय करवाता है। अगर दरवाजा टेढ़ा हो तो कुल का नाश होता है। अगर दरवाजे पर गूलर का पेड़ लगा हो तो गृहपति को कष्ट होता है। घर के भीतर झुकाव हो तो गृहपति का मरण होता है। अगर बाहर की तरफ झुका हो तो परदेस में निवास होता है और अगर दरवाजा दूसरी दिशा में झुका हुआ होता है तो चोरी की पीड़ा उठानी पड़ती है।

जिस प्रकार प्रधान द्वार की रचना की गयी है उसी तरह अन्य द्वारों को भी

बनायें और उनको कलश, श्रीफल, लता, पत्र एवं आदि के चित्रों से अलंकृत करना चाहिए।

पीछे और पार्श्व में बेध नहीं होता, दो या इससे ज्यादा पेड़ों की छाया पहले वाली और अन्तिम पहर को छोड़कर दूसरे और तीसरे पहर में दुःख देने वाली होती है।

घर के जिस भाग में दरवाजा बनाना हो उस भाग की लम्बाई-चौड़ाई को जोड़कर उसमें 9 का भाग देना चाहिए। उसमें 5 भाग दक्षिण, 3 उत्तर को छोड़कर शेष भाग में दरवाजा बनाना चाहिए। मकान का दक्षिण वाम भाग घर से बाहर निकलते समय का समझें।

गृह भित्ति दीवार के 9 विभाग करने से प्रत्येक भित्ति में आठ-आठ दरवाजे होते हैं इस तरह चारों भित्तियों में 32 दरवाजे होते हैं, पूर्व के 8 दरवाजों का फल प्रथम शिखिद्वार से वायुभय, द्वितीया पर्जन्य द्वार से कन्यालाभ, तृतीया जन्य द्वार से धनलाभ, चतुर्थ इन्द्र द्वार से राजप्रियता, पंचम सूर्य द्वार से क्रोध की अधिकता, षष्ट सत्य द्वार से असत्यता, सप्तम भृंश द्वार से क्रूरता और अष्टम अन्तरिक्ष द्वार से चोर-भय रहता है।

दक्षिण दिशा में 8 दरवाजों का फल प्रथम अनिल दरवाजे से पुत्रों की संख्या में कमी करता है।

प्रथम पौष्ण द्वार से दास वृत्ति।
तृतीय वितध द्वार से नीचता।
चतुर्थ वृहत्क्षत द्वार से भक्ष्यपान, पुत्रवृद्धि।
पंचम याम्य द्वार से अशुभ।
षष्ट गन्धर्व द्वार से कृत्घ्न।
सप्तम भृङ्कराज द्वार से नीचता।
अष्टम मृगद्वार से बलनाश होता है।

सुतपीडारिपुवृद्धिर्नसुतधनाप्तिः सुतार्थफलसम्भव।
ध्समन्न पति भय धनक्षयों रोग इत्यपरे॥

पश्चिम दिशा में 8 दरवाजों का फल-प्रथम पितृद्वार से पुत्रकष्ट, द्वितीय दौवारिक द्वार से शत्रुवृद्धि।

तृतीय सुग्रीव द्वार से पुत्रहानि।
चतुर्थ कुसुभदन्त द्वार से पुत्र, धनफल की प्राप्ति।
पंचम वरूण द्वार से धन-सम्पत्ति।
षष्ट अयुर द्वार से राजभय।
सप्तम शोष द्वार से धननाश।
और अष्टम पापयक्ष्मा द्वार से रोगभय।

उत्तर के 8 दरवाजों का फल–

प्रथम रोग द्वार से बध बन्धन।

द्वितीय सर्प द्वार से रिपुवृद्धि।

तृतीय मुख्य द्वार से पुत्र-धनलाभ।

चतुर्थ भल्लाट द्वार से सद्गुण-सम्पत्ति।

पञ्चम सौम्य द्वार से पुत्र-धन लाभ।

षष्ट भुजंग द्वार से पुत्र-बैर।

सप्तम आदित्य द्वार से स्त्री-जन्म दोष।

अष्टम दिति द्वार से निर्धनता होती है।

सूर्यक्षाद्युगभैः शिरस्यथ फलं लक्ष्मीस्ततः कोणभै।
नार्गरूद्वसनं ततो गजमितैः शाखासु सौख्य भवेत।
देहल्या गुणभैर्मृतिगृहपतेर्मध्यास्थिततैवेदं भै।
शौख्यं चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेय शुभम॥

सूर्य के नक्षत्र से द्वार चक्र का विचार कर दरवाजे का निर्माण करने से लक्ष्मी-प्राप्ति 8 नक्षत्र कोण में दें। इनसे 3 द्वार (परदेस जाने की इच्छा) 8 नक्षत्र शाखा में दें। इनसे सुख फिर 3 नक्षत्र देहली में दें, इसमें गृहपति की मृत्यु 4 नक्षत्र बीच में दें, इनमें सुख की प्राप्ति होती है। इस चक्र के अनुसार द्वार निर्माण शुभ होता है।

अश्विनी, तीनों उत्तरा, स्वाति, रोहिणी—ये नक्षत्र द्वार स्थापन के लिए शुभ होते हैं।

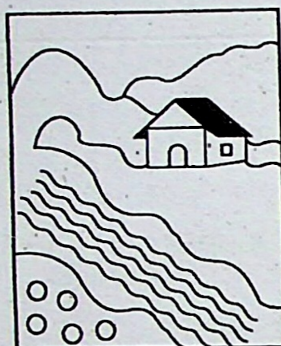
पंचमी तिथि में द्वार स्थापन करने से धन-लाभ, इसके अलावा सप्तमी, अष्टमी, नवमी तिथियां भी शुभ हैं। प्रतिपदा तिथि को द्वार स्थापन से दुःख मिलता है। यह वर्जित है। तृतीया में रोग, चतुर्थ में भग, षष्टी में कुलनाश, दशमी में धननाश और पूर्णिमा, अमावस्या बैर कारक होती है।

रेवती, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, हस्त, अश्विनी, चित्रा, स्वाति और पुनर्वसु नक्षत्र रवि, सोम, बुध, गुरु शुक्रवार तथा नन्दा, जया, पूर्णा द्वार स्थापना में शुभ होती है।

गुरु के मत अनुसार ध्रुव नक्षत्र, शुभ वार, स्थिर लग्न, शुभ तिथि में द्वार स्थापन शुभ होता है। उसमें भी मृगशिरा और चित्रा नक्षत्र कुल-संपत्ति को बढ़ाने वाले हैं और चर स्थिर नक्षत्र बुध, शुक्रवार, शुभ तिथि और द्विस्वभाव लग्न में कपाट (दरवाजा) स्थापना शुभ होती है।

सूमशंकु शिलान्यास द्वारा स्थापन गृहच्छादन आदि कार्य स्तम्भ प्रतिष्ठा में प्रकरण के कहे गये तिथि, वार, नक्षत्रों में शुभ होते हैं।

❑❑❑



4



शिलान्यास शुभ-अशुभ विचार

घर बनाने के लिए शुभ मुहूर्त में शिलान्यास किया जाना जरूरी है।

कन्या, सिंह, तुला, सक्रान्ति में शेष का ईशान कोण में होता है इसलिए अग्निकोण (पूर्व-दक्षिण के मध्य) में खात शिलान्यास करना चाहिए। वृश्चिक, धनु, मकर में शेष का मुख वायव्य में होने से (पूर्व, उत्तर ईशान कोण में शिलान्यास) कुम्भ, मीन, मेष के सूर्य में शेष का मुख्य नैर्ऋत्य में होने से वायव्य (पश्चिम-उत्तर) कोण में शिलान्यास तथा वृष, मिथुन, कर्क का सूर्य संक्रांति में शेष का मुख अग्नि कोण में होने के कारण नैर्ऋत्य कोण में (दक्षिण-पश्चिम) में शिलान्यास करना चाहिए।

शिलान्यास गृहारम्भ खात निर्णय

सूर्य	खात निर्णय
राशि 5, 6, 7 (सिंह, कन्या, तुला)	अग्निकोण में शिलान्यास
राशि 2, 3, 4 (वृष, मिथुन, कर्क)	नैर्ऋत्य कोण में शिलान्यास
राशि 11, 12, 1 (कुम्भ, मीन, मेष)	वायव्य कोण में शिलान्यास
राशि 8, 9, 10 (वृश्चिक, धनु, मकर)	ईशान कोण में शिलान्यास

इसके अलावा दक्षिण भारतीय वास्तुशास्त्री विद्वान् द्वारा दिशाओं को छोड़कर तथा किसी भी समय में केवल ईशान कोण में ही शिलान्यास (खात निर्णय) करने का उल्लेख किया है जो भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार समीचीन तो नहीं है, किन्तु ऐसा ज्ञात होता है कि यह केवल ईशान कोण के महत्त्व को आधार मानकर ही उल्लेख किया गया है।

निर्माणे मन्दिराणा च प्रवेशे त्रिविधेऽपि च।
वास्तुपूजा च कर्तव्या यस्मात्ता कथयाम्यत॥

मकान बनाते समय और तीनों प्रकार के प्रवेश के समय वास्तुपूजा करनी चाहिए। इन शास्त्रीय वचनों के अनुसार भूखनन के पश्चात् गृह-निर्माणकर्त्ता अपने

नित्यकर्म स्नान साध्यादिक कर्म से निवृत्त होकर नूतन अथवा धैवरूप धारण कर शुभ मुहूर्त के अनुसार भवन-निर्माण स्थल पर पूर्व या उत्तराभिमुख होकर पत्नी सहित शुद्ध आसान पर बैठे।

पत्नी दक्षिण भाग में एवं दाएं हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन और प्राणायाम करे। सर्वेषु धर्म कार्येषु पत्नी दक्षिण्त शुभा "वाराह" के अनुसार पत्नी को दक्षिण भाग में बैठना चाहिए। आचार्य या पुरोहित मांगलिक तिलक तथा पति-पत्नी का ग्रन्थिबन्धन करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रों वा सर्वावस्थां गतीऽपिवा।
यः समरेत पुडरीकक्ष स्वाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

इसके बाद उपर्युक्त मन्त्र का उच्चारण कर अपने शरीर पर जल का छींटा दें और पूजन सामग्री का प्रोक्षण करें। हाथ में अक्षत, पुष्प लेकर मंगल श्लोक (स्वस्तिवाचन) पढ़ें और गणेशादि देवों का स्मरण कर उन्हें प्रणाम करें और गुरु पादाभिवन्दन करें। यथाशक्ति शरीर वृद्धि के लिए प्रायश्चित्त तो निमित्त अपने दायें हाथ में द्रव्य (मुद्रा) जल, गन्ध, अक्षत्र, पुष्प, दूर्वा, पूंगीफल आदि लेकर देश काल (स्थान, तिथि, वर, गोत्र एवं नाम तथा कर्म का संकीर्तन आचार्य या विद्वान के वचनानुसार उच्चारण कर गोदान अथवा इसके निमित्त द्रव्य दान का संकल्प करें।

प्रायश्चित्त संकल्प के बाद शिलान्यास कार्य के लिए देशकाल का पुनः संकीर्तन करते हुए शिलान्यास एवं कर्म की निर्विघ्नता के लिए गणेश स्त्रस्ति पुण्याह वाचन मातृ का पूजन आचार्य विवरण, नवग्रह, प्रधान वास्तु देवता एवं शिला भूमिपूजन एवं शिलान्यास का संकल्प करें।

वरुण एवं दीप पूजन पूर्वक गणेश पूजा से लेकर आचार्यादि वरुण पर्यन्त ग्रह शान्ति के अनुसार देवताओं का आदान एवं षोडशोपचार या यथा–उपलब्ध सामग्री से अर्चन करें।

वास्तु कश्यप, मत्स्य नाग-नागिनी की प्राणप्रतिष्ठा एवं पूजा के बाद आचार्य आचमन एवं प्राणायाम करके शरीर-शुद्धि के लिए पुरुष सूक्त के सहस्त्र शीर्षा पुरुषः 0 मन्त्र से यज्ञेन यज्ञमयजन्त 0 तक सोलह मन्त्रों का पाठ करें और बायें हाथ में पीली सरसों लेकर दाहिने हाथ से आच्छादन करते हुए निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करें–

यदत्त संस्थित भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थान व्यकत्वा तु तत्सर्व यत्रस्थं तत्रगच्छतु॥
अपसर्पन्तु ते भृता ये भूता भमि सस्थिताः।
ये भूताबिघ्न कर्तारः ये नश्युन्तु शिवाज्ञया॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशा।
सर्वेषामविरोधेन न्यासकर्म समारभे॥
भूतानि राक्षसा पाऽपि येऽत्रातिष्ठन्ति केचन।
ते सवेडप्यपगच्छन्तु न्यासकर्म करोम्यहम॥

तथा सभी दिशाओं में अभिमंत्रित सरसों का विकीर्ण करें और 5 शिलाओं एवं शंकुओं को सुस्थान पर स्थापित करें। वास्तु द्वारा यह उत्तम है।

शंकुलक्षण

स्निग्धाधि भू भाग समुत्थितानां
न्यग्रोध बिल्व-द्रुम खादिरणाम्
शमी - बटोटुम्बर - देवदारू
क्षीर-स्वदेशोत्थ फल द्रुमाणाम्॥

चिकनी मिट्टी में उत्पन्न बिल्व, खैर, शमी, न्यग्रोध, देवदारू व गूलर तथा अपने क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले फल और दूध वाले वृक्ष को आधे हाथ या एक बिलांद (बित्ताभर) की टहनी (वृक्ष-शाखा) को शंकु कहा जाता है।

शिला प्रणाम

शिलाओं का प्रमाण शास्त्रों में एवं प्रयोग वर्ण के अनुसार करने का उल्लेख है—

वर्ण	लम्बाई	चौड़ाई	ऊंचाई
ब्राह्मण	21 अंगुल	10½	5¼
क्षत्रिय	17 अंगुल	8½	4¼
वैश्य	13 अंगुल	6½	3¼
शूद्र	9 अंगुल	4½	2¼

लेकिन आजकल शिलाओं का प्रमाण के अनुसार प्रयोग नहीं किया जाता है। और 5 पाषाण की शिलाओं का (शास्त्रीय प्रमाणानुसार नहीं) यथेष्ट जैसी भी शिलाएं तत्काल उपलब्ध हो जाएं प्रयोग करते हैं। पत्थर के मकान में पाषाण शिला पहाड़ी घर में पत्थर का ढेला, ईंटों के घर में ईंट की शिलाओं का स्थापन होना चाहिए तथा लकड़ी के मकान में इच्छानुसार शिला स्थापित की जा सकती है।

नींव में 5 शिलाएं मजबूत और सुन्दर होनी चाहिएं और उनमें किसी तरह का दोष न हो तथा इनकी लम्बाई-चौड़ाई और ऊंचाई ऊपर निर्दिष्ट परिणाम से अधिक एवं कम नहीं होनी चाहिए और कृष्ण वर्ण शिला का प्रयोग नींव में न करें।

पंच शिलास्थान

पांचों शिलाओं को सुस्थान पर रखने के बाद उन्हें शुद्ध जल से धोना चाहिए और 'ॐ अग्नि मुर्द्धादिव' मन्त्र से मिट्टी लगाकर 'यज्ञा यज्ञ वोऽअग्नेयः' मन्त्र

के साथ जल से स्नान करायें फिर 'आयं गौ' मन्त्र द्वारा गोमय (गोबर से अश्वत्थेवो निषदनम' गायत्री मन्त्र और गन्ध द्वारा दुराधर्वा मन्त्रों से क्रमशः आंवले के जल, गोमूत्र एवं गोबर से स्नान कराना चाहिए।

इसके बाद दूध, दही, घी, शहद एवं बूरा से शिलाओं को अलग-अलग तथा पंचामृत से स्नान करायें। पंचामृत स्नान के बाद कुशा दूर्वा (दूब हरी घास) जल गंधोदक (चन्दनयुक्त जल) सर्वोषधि फल के रस से पंच शिलाओं को स्नान करायें। बैल के सींग से जल, धान्य जल, जौ मिश्रित तिलोदक (तिल व जल) नदी एवं तीर्थजल से स्नान कराने के पश्चात् उन शिलाओं को हाथी के दांत में लगी मिट्टी के जल और कुल्हाड़ी अथवा फावड़े से खोदी गयी मिट्टी के जल के पश्चात् स्वर्ण (सोने), चांदी और वस्त्र के जल से स्नान कराने के बाद शुद्ध जल से स्नान करायें।

पंचशिलाओं के स्नान के पश्चात् उन पर कुमकुम (रोली) और चंदन लगाकर वस्त्र से आच्छादित करें—और इन नामों से नन्दायै नमः, भद्राये नमः, जयाये नमः, रिकायै नमः, पूर्णायै नमः पांचों शिलाओं का पूजन करें तथा नन्दा नामक शिला में कमल की आकृति भद्रा में सिंहासन, जया में तोरण छत्र, रिक्ता में कूर्म (कछुवा) और पूर्णा नाम की शिला में चार भुजाधारी विष्णु का उल्लेख करें।

इन पांचों शिलाओं में क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, ईश्वर और सदाशिव का आह्वान कर ॐ ब्राह्मणे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ रूद्राय नमः, ॐ ईश्वराय नमः, ॐ सदा शिवाय नमः मन्त्र उच्चारण करें तथा षोडशोपचार से शिला के मध्य और ऊपरी भाग में पूजन करें तथा पांच मन्त्रों से पांचों शिलाओं पर पांचों देवताओं का अभिषेक करें।

नन्दा आदि पांचों शिलाओं के पास पद्म, महापद्म, शंख, विजय और सर्वतो भद्र नाम से पांच कलश स्थापित करें। पध्याय नमः, महापध्याय नमः, शंखाय नमः, विजयाय नमः, सर्वतोभद्राय नमः बोलकर आवाहन एवं पूजन करें। शिलान्यास कर्म में पद्धतिकार हवन करने का उल्लेख भी करते हैं। लेकिन बहुत-से लोग हवन न करके केवल शिलापूजन करके ही शिलान्यास कर्म करते हैं।

इसके बाद कुशकण्डिका विधि से अग्नि स्थापन कर आधा राज्य भाग एवं गणेशाम्बिका के लिए आहुति प्रदान कर ग्रहों के लिए आहुति दें। इस मन्त्र में 108 आहुति अग्नि को प्रदान कर प्रधान देवता के लिए हवन करें।

ॐ प्रयम्बक यजामहे सुगधिम्पुष्टिवर्धनम।
ऊर्वारुकनिव बन्धनात मृत्योर्मुक्षीय मामृतात॥

प्रधान देवता के लिए हवन करने के बाद 5 शिलाओं के नन्दा, भद्रा, जया,

रिक्ता, पूर्णा के नाम क्रम से प्रत्येक के लिए 28–28 आहुति कलशों के लिए 5 नामों से प्रत्येक के लिए एक-एक आहुति प्रदान करें। आहुति के बाद अग्नि का पूजन कर सम्पूर्ण ध्वनीय अवशिष्ट द्रव्य एक साथ 'ॐ आग्नेय स्वितकृते स्वाहा' ऐसा बोलकर हवन करें तथा आहुति घी की प्रदान करें। हवन के बाद दिकपाल एवं क्षेत्रपाल गंधादिक उपचार से पूजन करें व सदीप, दही, उड़द आदि द्रव्य से बलि प्रदान कर प्रार्थना करें–

नमो वै क्षेत्रपालस्य भूतप्रेतगणै सह।
पूजां बलिं गृहाणेंद सौम्यो भवतु सर्वदा॥
पुत्तान देहि धन देहि सवान कामॉश्न देहिमे
आयुरारोग्य में देहि निर्धिध्न कुरू सर्वदा॥

इसके बाद पूर्ण आहुति एवं वसोर्धारा हवन करें तथा हवन कृत भस्म की ललाट, ग्रीवा दक्षिण भुजा के मूल भाग एवं हृदय के पूर्ण पात्रदान एवं बर्हिहोम आदि कर्म के बाद उन पांचों कलशों के जल से शिलाओं के मूल एवं अग्रभाग पर जलाभिषेक करें। नींव स्थान को लीप कर चार स्थानों में चार अक्षत पुंजों पर गणेश कूर्म शेष और बाराह का पूजन करें।

भूमि पूजनम

कूर्मपृष्ठो परिस्थिता शुक्लवर्णा चतुर्भुजाय
सुरम्यां पृथिवी दिव्यां रूपाभरण संयुताम॥
स्त्रीरूपा प्रमदावेषधारिणी सुमनोहराम।
महाल्याहति पूर्वेण पूजयेत मन्त्रपूर्वकम॥

हाथ में अक्षत पुष्प लेकर भूमि के स्वरूप का ध्यान करें व षोडशोपचार सहित वैदिक अथवा पौराणिक मन्त्रों से पूजन कर भूमि के लिए विशेषार्घ्य प्रदान करें व निम्नलिखित प्रार्थना करें–

सर्वबीज समायुक्ते सर्वरत्नौषाधि युते।
पूजिते परमाचार्य गन्धमाल्यैरङ्कृतैः।
सर्वान कामान प्रशच्छंत्व त्वामहं शरणं गतः।
पुत्र-दार धनायुष्यं धर्म बृद्धिकरी भव॥
आगच्छ सर्वकल्याणी वसुधे लोकधारिणी।
पृथिवी ब्रह्मदत्ताऽसि काश्यपेनाभिवन्दिता॥
उद्‌ध्दटताऽसि वराहेण सशेल वन कागना।
गृहंतु कारयामद्य त्वदूर्ध्व शुभलक्षणम्।
गृहाणाऽर्घ्यमयादत्तं प्रसन्ना शुभदाभव॥

शिलान्यास

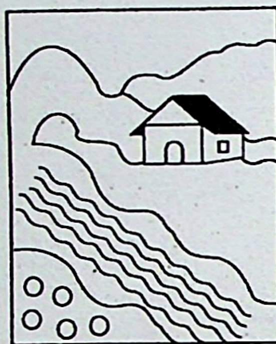
शुभ लग्न के अनुसार मंगल गीत तथा वाद्यादि के साथ इन पांचों शिलाओं के नीचे (आधार) अतिरिक्त शिला रखकर पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण तथा मध्य में अक्षतों की ढेरी रखनी चाहिए और इन अक्षतों पारद, सुवर्ण, रत्न, फल, पुष्प तथा माला से सुशोभित करें और आवाहनपूर्वक पूजन करें और इन कुम्भों के समान मिट्टी या चूना रखकर पूर्व में नन्दा नामक शिला, दक्षिण में भद्रा शिला, पश्चिम में जया शिला, उत्तर में रिक्ता शिला तथा मध्य में पूर्णा शिलाओं आदि का पूजन एवं स्थापना करें तथा पांचों शिलाओं के आधार पूर्णा शिला स्थापित करनी चाहिए।

शिला स्थापना के बाद अग्निकोण से शंकु रोपण (कील) निम्नलिखित मन्त्र से करना चाहिए–

विशन्तु भूतले नागा लोगपालश्च सर्वतः।
अस्मिन गृहेव तिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा॥

शंकुरोपण एवं सूत्र वेष्टन के पश्चात् पूर्व इन्द्राय नमः इत्यादि नाम मन्त्रों से दश दिक्पालों एवं क्षेत्रपाल का आवाहन एवं पूजन करें एवं नन्दादि देवियों, दिक्पालों एवं क्षेत्रपाल के लिए दही, उड़द आदि भेंट समर्पित करें।

❑❑❑





5 गृह-निर्माण एवं प्रवेश मुहूर्त

भूमि की परख, भूखण्ड की दिशा के साथ-साथ निर्माण और गृह प्रवेश में शुभ मुहूर्त का ध्यान रखना जरूरी है।

गृहारम्भ के लिए ज्योतिष शास्त्र का सहारा लेना जरूरी है। सूर्य अनुसार गृहारम्भ के लिए इन तिथियों को ध्यान में रखना चाहिए—

(1)	मेष राशि में सूर्य होने पर	14 अप्रैल से 13 मई	शुभ
(2)	वृष राशि में सूर्य होने पर	14 मई से 13 जून	धनवृत्ति
(3)	मिथुन राशि में सूर्य होने पर	14 जून से 13 जुलाई	मृत्यु
(4)	कर्क राशि में सूर्य होने पर	14 जुलाई से 13 अगस्त	शुभ
(5)	सिंह राशि में सूर्य होने पर	14 अगस्त से 13 दिसम्बर	सेवकों की वृद्धि
(6)	कन्या राशि में सूर्य होने पर	14 सितम्बर से 13 अक्टूबर	रोग
(7)	तुला राशि में सूर्य होने पर	14 अक्टूबर से 13 नवम्बर	सुख
(8)	वृश्चिक राशि में सूर्य होने पर	14 नवम्बर से 13 दिसम्बर	धनवृद्धि
(9)	धनु राशि में सूर्य होने पर	14 दिसम्बर से 13 जनवरी	हानि
(10)	मकर राशि में सूर्य होने पर	14 जनवरी से 13 फरवरी	धनलाभ
(11)	कुम्भ राशि में सूर्य होने पर	14 फरवरी से 13 मार्च	रत्नलाभ
(12)	मीन राशि में सूर्य होने पर	14 मार्च से 13 अप्रैल	भय

अर्थात् 3, 6, 9, 12 के क्रम अथवा मिथुन, कन्या, धनु और मीन राशि की सूर्य संक्रान्ति में गृहारम्भ नहीं करना चाहिए। ये सूर्य संक्रान्ति की सामान्य विथियां हैं—

मासों में—वैशाख, श्रावण, मार्गशीष, माघ, फाल्गुन उत्तम तथा भाद्रपद तथा कार्तिक मास भी सामान्य रूप से ग्राह्य हैं।

तिथियों में—2, 3, 5, 6, 7, 10, 12, 13, 15 और कृष्ण पक्ष की 1 तिथि में गृह-निर्माण आरम्भ करना चाहिए।

निषेध तिथियां—1, 4, 8, 9 और 14 तथा अमावस्या तिथियों में गृहारम्भ

करने से दरिद्रता, धनहानि, उच्चाटन, धान्यनाश, स्त्रीनाश एवं राजभय होता है, अतः इन तिथियों में गृहारम्भ नहीं करना चाहिए।

नक्षत्र—गृहारम्भ के लिए रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, हस्त, स्वाति, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।

लग्न—मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, कुम्भ और मीन किन्तु पंचबाण और भूमिशयन के दिन हों तथा केन्द्र व त्रिकोण स्थानों में शुभ ग्रह हों और तीसरे, छठे एवं 11वें स्थान में पाप ग्रहों के रहते हुए अष्टम स्थान शुद्ध हो तो नये भवन का निर्माण कार्यारम्भ शुभफलदायक होता है।

भूमिशयन

सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे 5, 7, 9, 12, 19, 26—इन दिनों व नक्षत्रों में भूमि शयनशील होती है। इनमें 4, 8, 5, 3, 6, 7 घटी (कलांश) मात्र में भूमिशयन तथा शेष घटियों में भूमिशयन नहीं होता।

भूशयन में मतान्तर होने के कारण सूर्य संक्रान्ति से 5, 7, 9, 11, 15, 20, 22, 23, 28वें दिन भूमिशयन दोष और कतिपय विद्वान 7, 9, 15, 21, 24वें मात्र ही भूमिशयन मानते हैं।

वार

ग्रहारम्भ के लिए सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार तथा शनिवार उत्तम होते हैं। रविवार और मंगलवार को गृहारम्भ का त्याग करना चाहिए।

गृहारम्भ में वृष वत्स गणना कर देखना चाहिए कि सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गणना करने पर 7 तक अशुभ उसके आगे 11 तक शुभ और आगे के 10 अशुभ मानने चाहिएं। अभिजित सहित गणना करनी चाहिए।

7 अशुभ	11 शुभ	10 अशुभ	28 नक्षत्र सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे गणना कर चन्द्रमा के नक्षत्र तक का फल।

गृहारम्भ में विशिष्ट योग का भी उल्लेख प्राप्त होता है जिनमें शनिवार स्वाति नक्षत्र, सिंह लग्न, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, शुभयोग तथा श्रावण मास—यह सभी सात सकारों से युक्त हैं और इन सातों सकारों के योग में अगर गृहारम्भ किया जाये तो वाहन सुख, धन-धान्य की वृद्धि, पुत्र-पौत्र आदि की प्राप्ति के साथ घर के मालिक को विभिन्न प्रकार का लाभ और सौभाग्य की वृद्धि होती है।

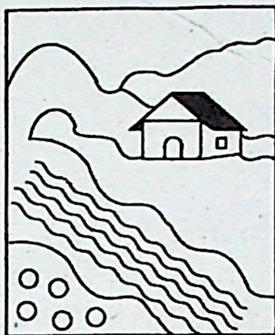
शनिः स्वाति सिंह लग्नं शुक्ल पक्ष सप्तमी।
शुभ योगा श्रावणश्च सकाराः सप्त कीर्तिता॥

अगर सिंह लग्न में गृहारम्भ का निषेध है। अकेले सिंह लग्न में गृहारम्भ नहीं करना चाहिए; किन्तु उपर्युक्त योगों के साथ सिंह लग्न होने पर शुभ होता है।

गृहारम्भ शुक्ल पक्ष में करने से सुख और कृष्ण पक्ष में करने से हानि होती है। इसलिए शुक्ल और कृष्ण पक्ष का विचार करके गृहारम्भ करना उचित होता है।

गृहारम्भ के लिए शुभ मुहूर्त देखना चाहिए और शुभ समय की विशेष जानकारी के लिए कुशल विद्वान से भी सम्पर्क करना चाहिए। क्योंकि गृहारम्भ शुभ मुहूर्त के अनुसार करने पर सभी प्रकार की बाधाएं शान्त रहते हुए कुशलतापूर्वक गृह-निर्माण किया जा सकता है। प्रायः देखा गया है कि शुभ मुहूर्त के अभाव में किये गये गृहारम्भ कार्य पूर्ण न होकर बीच में ही अवरुद्ध हो जाते हैं और अनेक प्रकार के व्यवधान तथा आर्थिक कठिनाइयां उत्पन्न होने के साथ-साथ मानसिक शान्ति भी हो जाती है। अतः गृहारम्भ विचारपूर्वक करना चाहिए तथा विशेषतः उपर्युक्त तथ्यों को आवश्यक रूप से ध्यान में रखने पर गृहारम्भ तथा उत्तम फलदायक होता है।





6



मंगलकारी घर तथा वास्तुशास्त्र

वास्तुशास्त्र यानि किसी भवन इत्यादि को बनाने का वैज्ञानिक दृष्टिकोण घर का मुख्य दरवाजा किस दिशा में हो, फैक्ट्री के लिए जमीन कहां ली जाए, पानी की टंकी कहां बने, इस सबका वास्तुशास्त्र में अपना एक विशेष महत्त्व है। यह महत्त्व बैडरूम को लेकर भी है तथा इस आशय से है कि यौन सुख का पूरा आनन्द लिया जा सके तथा आदर्श सन्तान की प्राप्ति की जा सके।

कुल मिलाकर हर प्रकार के सुख साधन तथा आनन्ददायक घर का निर्माण करना ही वास्तुशास्त्र का उद्देश्य है। वास्तु विद्या को 64 महत्त्वपूर्ण विधाओं में से एक गिना जाता है। इस विद्या में दार्शनिक, धार्मिक, खगोलीय ज्योतिषीय, भौगोलिक और भूगर्भीय आदि पहलुओं समेत तथा ऊर्जा पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति गुरुत्वाकर्षण बल, वायु ऊर्जा और अन्तरिक्ष से आने वाली किरणों तथा उनका व्यक्ति पर असर का अध्ययन कर विभिन्न सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं।

आज से पांच साल पहले तक वास्तुशास्त्र को जानने तथा उस पर यकीन करने वाले लोग उंगलियों पर गिने जा सकते हैं। लेकिन आज की स्थिति बदल चुकी है। आज बहुत-से लोग वास्तुशास्त्र के मुताबिक भवन-निर्माण के लिए लाखों-करोड़ों रुपये खर्च कर रहे हैं।

इस विषय पर किताबों की भरमार है तथा वास्तु सलाहकार इस विद्या में अपने ग्राहकों को रिझाने के लिए आवश्यक मानने लगे हैं। यहां तक कि कुछ वास्तु सलाहकार तो बाकायदा विज्ञापन देते हैं।

वास्तुशास्त्र की लोकप्रियता का कारण भी सीधा-सा है। आज भी लाखों भारतीय सुन्दर भविष्य के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। आर्किटेक्ट एवार्ड विजेता जोसिग के शब्दों में, "उर ही मूल्य रहस्य है।"

जब मात्र घर की वजह से व्यक्ति को सामाजिक मान-सम्मान और स्वास्थ्य

खोने का खतरा होता है तब वह आसानी से ऐसी चीजों की शरण में आ जाता है।

वास्तुशास्त्र के बढ़ते महत्त्व का अन्दाजा इससे लगाया जा सकता है कि प्रमुख शराब व्यवसायी विजय माल्या, ताज होटल समूह, बिड़ला समूह तथा जिन्दल समूह समेत भारत के अग्रणी औद्योगिक घराने वास्तुशास्त्र पर आधारित भवनों का निर्माण करवा रहे हैं।

एक अनुमान के मुताबिक वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार न होने पर अकेले बंगलौर शहर में ही दस हजार से अधिक भवनों का नर्मिाण बीच में ही रोक दिया गया ।

वास्तु सलाहकारों का कहना है कि अगर व्यक्ति का चुम्बकीय क्षेत्र पृथ्वी तथा भवन के चुम्बकीय क्षेत्र के समतुल्य न हो तो दुर्घटनाओं की आशंका प्रबल हो जाती है। ऐसे व्यक्ति पर न सिर्फ बुरा वक्त आ सकता है, बल्कि गम्भीर बीमारियां भी घर कर सकती हैं। यहां तक कि कैंसर जैसी घातक बीमारी भी।

वास्तुशास्त्र के विद्वानों के अनुसार रसोई के सही दिशा में न होने पर पूरे परिवार को पाचन सम्बन्धी समस्याओं से जूझना पड़ सकता है, इसी प्रकार बैडरूम में पड़े पलंग के ठीक ऊपर से बीम गुजर रही हो तो उस पलंग पर सोने वाले व्यक्ति के अपंग होने का खतरा बढ़ जाता है, यह स्थिति अशुभ है।

अनेक वास्तु सलाहकारों की राय में न सिर्फ भारतीय बल्कि विश्व की कई प्राचीन सभ्यताएं भी वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों का अक्षरशः पालन करती थीं। चीन के पास अपनी भवन-निर्माण की विद्या फेंगशुई वास्तुशास्त्र भी है। सिंगापुर के कई भवनों का निर्माण इसी विज्ञान के सिद्धान्तों पर ही हुआ है।

कुछ लोग तो हांगकांग तथा शंघाई बैंकिंग कारपोरेशन की सफलता के मूल में भी भवन विज्ञान को बताते हैं। उनका कहना है कि हांगकांग स्थित मुख्यालय वास्तुशास्त्र के आधार पर बना, इसी कारण इसे अप्रत्याशित सफलता मिली है।

भारतवर्ष में वास्तुशास्त्र का प्रचलन अभी हाल में ही बढ़ा है, पर ब्रिटेन के विश्वविद्यालय में विगत तीन वर्षों से इसे एक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है। चीन की फेंगशुई विद्या को भारतीय वास्तुशास्त्र की समकक्ष विद्या माना जाता है। फेंगशुई का शाब्दिक अर्थ हवा और पानी है। चीन की यह विद्या इस कदर प्रचलित है कि कैलीफोर्निया के अग्रणी बिल्डर कॉफमैन और ब्राड इसके बिना एक ईंट भी नहीं लगाते।

इनके अतिरिक्त कई अन्य अन्तर्राष्ट्रीय हस्तियां मसलन माइकल डगलस एलिजाबेथ, माइकल जैकसन, जूलिया राबर्ट ब्राड पिट्ट भी फेंगशुई के साधारण

सिद्धान्तों के अनुसार ड्राइंगरूम में मछलीघर बनवाकर अथवा फिर घर के उत्तर-पश्चिम में पेड़ लगाकर जीवन में आए बदलाव को महसूस कर चुके हैं।

भारतीय वास्तुशास्त्र भी ऐसे ही सिद्धान्तों से परिपूर्ण है। सफलता या बेहतर जीवन के अनेक मन्त्र इसमें छिपे हुए हैं, जो इस प्रकार हैं–

घर के लिए

मकान के चारों तरफ खुली जगह हो। दक्षिण और पश्चिमी भागों की ऊंचाई अधिक रहे। बहुखण्डीय भवनों में छज्जा हमेशा उत्तर-पूर्व दिशा में रहे। बालकनी का मुंह भी उत्तर या पूर्व की तरफ खुले।

मुख्य बेडरूम दक्षिण-पश्चिम में हो। ज्यादातर खिड़की-दरवाजे उत्तर अथवा पूरब की तरफ रहें। स्नानागार के लिए आदर्श स्थान पूर्व में हो, ऐसा मुमकिन न होने पर दक्षिण-पूर्व या उत्तर-पश्चिम चल सकता है। बरामदा पूर्व या उत्तर दिशा में हो। सीढ़ियां दक्षिण-पश्चिम में हों। दक्षिण-पश्चिम दिशा में कभी भी पानी की टंकी न रखें। गैराज दक्षिण-पूर्व दिशा में हो।

भूखण्ड के लिए

वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त भूमि खण्ड के लिए विशेष प्रावधान नहीं रखते हैं। फिर भी भूमि खण्ड आयताकार या वर्गाकार हो। उत्तर-पूर्व दिशा में सड़क हो जिस पर दो गेट हों। इनमें अगर एक का मुंह पूर्व तथा दूसरे का मुंह उत्तर की तरफ हो तो सर्वश्रेष्ठ स्थिति रहेगी। मैदान का झुकाव उत्तर-पूर्व दिशा में जबकि उठान दक्षिण-पश्चिम दिशा में हो।

भूखण्ड का आकार

वर्गाकार प्लॉट से सुख-समृद्धि आती है, आयताकार प्लॉट जिसकी लम्बाई-चौड़ाई की दो गुनी हो वह भी लाभदायक होता है गोलाकार, तिकोने या बहुकोणीय प्लॉट आशंकाओं, समस्याओं व दुःख के कारण बनते हैं।

रसोईघर

दक्षिण-पूर्व दिशा उपयुक्त है। उत्तर-दक्षिण या दक्षिण-पश्चिम स्थिति ठीक नहीं है। उत्तर-पूर्व दिशा में स्थित रसोईघर से धन का अपव्यय व मानसिक अशान्ति मिलती है।

दरवाजे-खिड़कियां

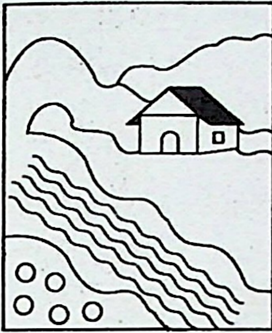
अगर खिड़कियां-दरवाजे पूर्व, उत्तर तथा उत्तर-पूर्व दिशा में हों तो घर में

सुख-समृद्धि आती है। उत्तर-पूर्व दिशा में खुलने वाले दरवाजे से यश तथा सम्पत्ति आती है। वास्तुशास्त्र के अनुसार दक्षिण में दरवाजा होना शुभ नहीं है। घर में कुल खिड़की-दरवाजों की संख्या विषम कभी नहीं होनी चाहिए।

फर्नीचर

घर के दक्षिण या पश्चिमी भाग में फर्नीचर अच्छा रहता है। फर्नीचर को उत्तर अथवा पूर्वी दीवार से सटाकर कभी भी नहीं रखना चाहिए। इस तरह इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखकर घर-निर्माण से जीवन में खुशहाली-समृद्धि लाई जा सकती है।





7



वास्तुशास्त्र के कुछ उपयोगी नियम, वास्तुदोष निवारण

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत कुछ नियम इस प्रकार हैं–

1. घर में चाहे प्राकृतिक वर्षा का जल हो या कृत्रिम जल इसका प्रवाह हमेशा उत्तर-पूर्व की तरफ होना चाहिए।
2. चाहे जानवर हो, रथ हो, बैलगाड़ी, टैक्सी या कार पार्किंग के लिए हमेशा घर का उत्तर-पश्चिम कोण काम में लें।
3. चाहे रसोईघर हो, भट्टी हो, जेनरेटर, ट्रांसफार्मर अथवा ऑयल इंजिन अग्नि की स्थापना हमेशा दक्षिण-पूर्व अग्निकोण में करें।
4. अनुपयोगी तथा वर्जनीय वृक्षों को कभी भी घर, फैक्ट्री के द्वार पर न लगायें।
5. फैक्ट्री, कारखानों, मिल या विद्यालय का मुख्य द्वार कभी भी कोण में नहीं होना चाहिए।
6. हमेशा भवन ऐसा बनाना चाहिए कि उसमें रहने वाले व्यक्ति को अधिकतम प्राकृतिक प्रकाश, प्राकृतिक पवन तथा स्वच्छ वायु का प्रवाह मिल सके। भवन ऐसा बनाना चाहिए कि प्रातःकालीन सूर्य की किरणों का लाभ निवासियों को मिल सके।
7. भवन बनाने से पहले भूमि जाग्रत करके शुभ मुहूर्त में भूमि पूजन, नींव पूजन कराने चाहिएं। भवन पूरा बन जाने के बाद उसकी विधिवत् प्रतिष्ठा, वास्तुपूजा, गायत्री-जप, गणपति पूजन, रूद्र जप, विष्णु पूजन नवग्रह पूजन तथा घर की शान्ति, हवन के साथ, ब्राह्मण भोजन दक्षिणापूर्वक कराना चाहिए। शास्त्रों में तो भवन की लागत का दशांश प्रतिष्ठा में खर्च करने का विधान है।
8. भूखण्ड खरीदने से पहले वास्तु नियमों के अनुसार भूमि की परीक्षा एवं भूखण्ड की आकृति व कोणों की जांच अवश्य किसी विद्वान् वास्तुविज्ञ से करानी चाहिए।

वास्तुदोष निवारण

व्यवसायी के लिए यह जरूरी होता है कि वह अपने सहज तथा मधुर व्यवहार के द्वारा व्यावसायिक प्रगति करने में सक्षम हो। व्यवहार इतना लचीला भी नहीं होना चाहिए कि सब कुछ समाप्त हो जाए और न इतना कठोर ही हो कि लोग सम्पर्क करते हुए भी हिचकिचाएं। व्यवहार ही व्यवहार का मूल मन्त्र है। व्यवहार से ही लक्ष्मी आती है, कीर्ति का विस्तार होता है जिससे सुख क़ी प्राप्ति होती है।

जगत का सुख भी व्यवहार को माना जाता है। व्यवहार ही व्यवहार का मूल मन्त्र है। इसलिए व्यवसायी का मृदुल व स्नेहपूर्ण व्यवहार होना चाहिए। व्यवसायी ग्राहकों को रोजाना आकर्षित करें। उसके लिए व्यवहार नम्र होना आवश्यक है।

व्यापारी व्यवसायी समाज का प्रमुख अंग होता है, सम्पन्न है, लक्ष्मीवान् है, सभी वर्ग के लोगों को इससे काफी उम्मीदें रहती हैं। अपेक्षा करते हैं। याचक भी व्यवसायी के पास अपनी आशा लेकर जाते हैं। इसलिए व्यापारी को चाहिए कि याचक के साथ विनम्रता से पेश आये उसे दुत्कारे न।

अगर याचक वृत्ति मानव समाज के लिए कलंक है, अभिशाप है इसे दूर करना चाहिए। फिर भी याचक के साथ विनम्र बर्ताव करें। प्रताड़ना नहीं। कभी-कभी दुराशीष भी निर्बल समय में कुपित ग्रहों के साथ ही हो जाता है।

यह पनरिये की शक्ति से युक्त सिद्ध बीसा यन्त्र है, जिससे जगदम्बा के निर्वाण मन्त्र भी सम्मिलित है। इसको दुकान की चौखट अथवा देहली के ऊपर लगाने से नजर होकर नहीं लगती। किसी का शाप दुराशीष या बद्दुआ भी इस पर असर नहीं करते। यह एक तरह से दुकान का रक्षा कवच है, इसे शुद्ध धातु में प्राणप्रतिष्ठित करके दुकान में रखें।

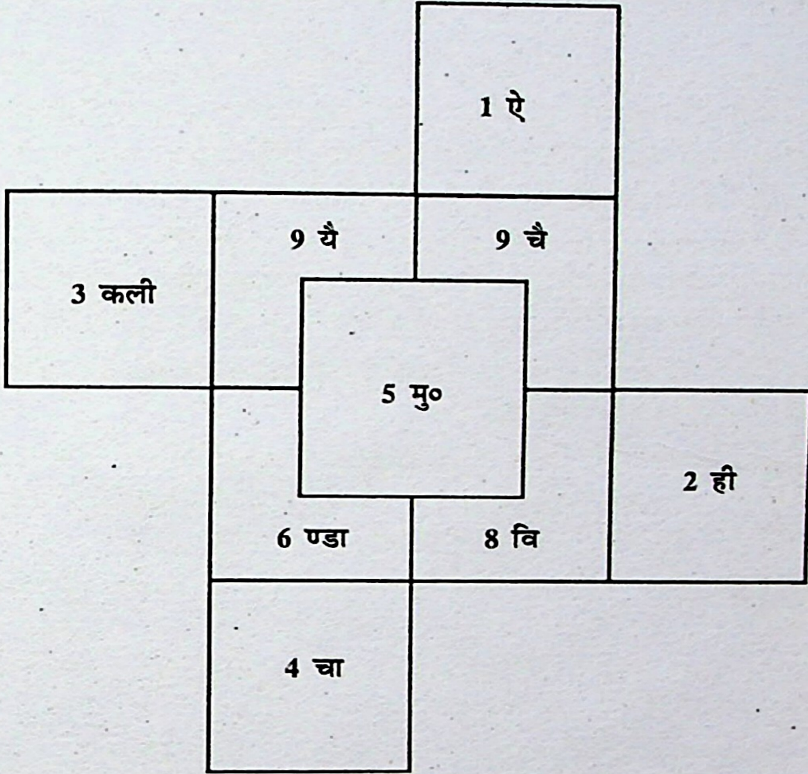
दुकान के अन्दर गणेशजी की मूर्ति को भी स्थापित करें। श्री गणेश की प्रतिमा दक्षिणाभिमुख न रखें। पूजन के गणेश को गल्ले में विराजमान करें।

अपनी दुकान, कार्यालय व गद्दी आदि में कुल देवता तथा इष्ट देवता आदि की स्थापना करनी चाहिए और प्रेरणा देने वाले अपने प्रेरक गुरु का चित्र अवश्य लगाना चाहिए।

हर व्यवसायी को चाहिए कि रोजाना दुकान खोलते समय सुबह-सवेरे अपने इष्ट देवता तथा कुल देवता को श्रद्धा के साथ प्रणाम करें। दुकान में प्रतिष्ठापित देवी-देवताओं की पुष्पमाला, धूप तथा दीप आदि से अर्चना करनी चाहिए।

अर्चना के समय व्यापारी को मनसा, वाचा व कर्मणा श्रद्धा प्रकट करनी चाहिए। आत्मा में विशुद्ध भाव हो, इससे व्यापार में वृद्धि होती है तथा मानस में दृढ़ संकल्प शक्ति का विस्तार होता है।

सिद्ध बीसा यन्त्र



यह जीवन खुद के लिए ही नहीं, बल्कि समस्त जगत तथा चराचर के लिए अर्पित है, इस वजह से व्यापारी को चाहिए कि अपने व्यापार से जो विशुद्ध लाभ अर्जित करता है, उसमें से कुछ अंश धर्मकार्य में लगाता रहे।

किसी भी सार्वजनिक कार्य अथवा मानव सेवा के लिए अपने लाभ का अंश अर्पित करता रहे। ऐसा करने पर आत्मसुख, जनकल्याण, यशवृद्धि होती है और व्यापार में भी दिन (दुगुनी) रात चौगुनी तरक्की होती है।

अपने कारोबार से विषुद्ध लाभ का छठा हिस्सा अथवा दशमांस धर्मकार्य में लगाना चाहिए।

ऐसा करने से कारोबार में अभिवृद्धि होती है और व्यावसायिक उन्नति भी होती है। धर्मकार्य से यहां साम्प्रदायिक नहीं है। अपितु प्राणी-मात्र के कल्याण की ओर संकेत है।

व्यापारिक प्रगति आकस्मिक रूप से होती है और समृद्धि बढ़ती ही जाती है।

यह विकास आम आदमी को सहन नहीं होता है। प्रतिस्पर्धा एवं ईर्ष्या की भावना रखने वाला कुंठित हो जाता है, यदाकदा दृष्टि दोष से व्यापार गति में जड़ता आ जाती है।

इसी रुकावट को नजर लगना भी कहा जाता है, इसलिए प्रत्येक कारोबार करने वाले व्यक्ति को शनिवार के दिन अपनी दुकान अथवा कार्यालय या प्रतिष्ठान के बाहरी स्तम्भ पर नींबू व सात हरी मिर्च बांध देनी चाहिए। नींबू व हरी मिर्च ऐसी जगह पर लगानी चाहिए जहां पर सबकी नजर पड़े।

अगर आपकी दुकान अथवा कार्यालय आदि में चोरी होती हो; अर्थात् नौकरों द्वारा वस्तु अथवा धन की वंचना हो या फिर ग्राहकों द्वारा बिना मूल्य दिये वस्तुएं जा रही हों या फिर चोरों द्वारा हरण की जा रही हो तो ऐसी हालत में घबराएं नहीं तुरन्त किसी वास्तु सलाहकार से परामर्श करके भौम यन्त्र की विधि-विधान से स्थापना करनी चाहिए। यह एक सरल उपाय है।

अगर आपको आग लगने की आशंका है तो भूमि के अन्दर भौम यन्त्र की स्थापना करें। यह यन्त्र पूर्वोत्तर कोण अथवा पूर्व दिशा में स्थापित करें। फर्श से नीचे दो फीट गहरा गड्ढा खोदकर विधिवत् इसको स्थापित करें।

अगर आपकी दुकान में आपका दिल नहीं लगता है, या फिर आपके गल्ले में बरकत न हो पा रही हो, आपके पास रुपया-पैसा तो बराबर आ रहा है मगर आपके पास बच नहीं रहा है तो आप दुकान की देहली अथवा मुख्य द्वार की चौखट के ऊपर, आगे-पीछे गणपति की मूर्ति की स्थापना करें।

गणपति की दृष्टि में अमृत होता है लेकिन पीठ में दरिद्रता है। कई दुकानंदारों के यहां केवल घर के बाहर ही गणपति लगे होते हैं। यह मूर्ति आगन्तुक व्यक्ति (ग्राहक) का शुभ कल्याण करती है, अतः इसे लगाना शुभ होता है।

घर के मालिक का नहीं क्योंकि घर के भीतर तो गणपति की दृष्टि नहीं पड़ती है इसलिए इससे ऐसा अनुभव किया जाता है कि गणपति दोनों तरफ लगाना चाहिए।

अगर सफेद गणपति के साथ चांदी का श्रीयन्त्र सिक्के साइज वाला भी चौखट पर लगा दिया जाए, या फिर उसको दीवार में गाड़ दिया जा सके तो शुभ फल की प्राप्ति होती है। उस घर या दुकान में लक्ष्मी और गणेश दोनों की कृपादृष्टि बनी रहती है।

अगर कार्यालय या दुकान अथवा गद्दी आदि पर सूर्य की क्रांति से बेध हो रहा है या स्थापना के समय नीच का सूर्य हो तो वह दुकान कलेश प्रदान करती है। जबकि व्यवसायी भी नीच राशि के सूर्य से प्रभावित हो तो ऐसी स्थिति में व्यापारिक लाभ होने पर भी कष्ट बना रहता है और आत्मिक कलेश से मनुष्य दुःखी रहता है।

अगर दुकान का मुंह ठीक नहीं है तो सार्वजनिक उपद्रव, आन्दोलन, दंगा-फसाद, असामाजिक व्यक्तियों द्वारा किया गया बलवा आदि या रौद्र स्थिति आगजनी, लूटपाट आदि में विनाश की स्थिति बनती हो, इसलिए यमकालीन यन्त्र की स्थापना करनी चाहिए जिससे कालदोष का निवारण हो सके।

अगर सरकारी तन्त्र द्वारा बार-बार संत्रस्त किया जा रहा हो या अन्य किसी तरह से राजकीय विपत्ति संक्रान्त हो तो ऐसी हालत में सर्विघ्न निवारक 'सूर्य यन्त्र' की स्थापना करें।

अगर कारोबार के लाभकारी रहने पर भी अशान्ति बनी रहती है, विवाद होता रहे या भागीदारों को बीच कलेश की स्थिति बनी रहती हो तो ऐसी हालत में दुकान या प्रतिष्ठान में श्री लक्ष्मी सहस्त्र नाम का पाठ अवश्य कराना चाहिए।

उन्नति हेतु लक्ष्मी-गणेश-कुबेर, स्वास्तिक, ॐ, मांगलिक चिन्ह इत्यादि मेनगेट के ऊपर स्थापित करें।

अगर पानी की व्यवस्था उत्तर-पूर्व में नहीं हो तो ट्यूबवैल की अवश्य स्थापना करें।

घर में कोई पूजास्थल नहीं हो तो उसे उत्तर-पूर्व में स्थापित अवश्य करें।

अगर पूर्व-उत्तर दिशा का भाग ऊंचा हो तो दक्षिण-पश्चिम भाग को ऊंचा अवश्य करवा दें।

अगर दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम कोण में जल की व्यवस्था हो तो उसे बंद करके उत्तर-पूर्व कोण में करें यदि ऐसा नहीं कर सकते हैं तो उससे पानी लेना बंद कर दें अथवा इसके जल की व्यवस्था उत्तर-पूर्व में करें। दक्षिण-पश्चिम दिशा में अधिक दरवाजे और खिड़कियां हों तो उन्हें बंद करके रखें। यदि हो सके तो पूर्णतः बंद कर दें। उस दिशा में समान का बोझ लाद दें अथवा दरवाजे-खिड़कियां कम कर दें।

दर्पण चाहे कैसा ही क्यों न हो, घर में उत्तर और पूर्व की दीवार पर होना ही शुभ होता है।

घड़ी पूर्व, उत्तर और पश्चिम दिशा की दीवार पर लगाना शुभ होता है।

अगर घर में कोई बहुत दिनों से बीमार है तो उसे नैर्ऋत्य कोण में सुलाएं।

दवाई सर्वदा ईशान कोण में रखें। दवाई लेते समय, पानी पीते समय भी अपना मुंह ईशान कोण में रखें तो परिणाम शुभ होगा।

कोर्ट-केस की फाईल सर्वदा पूर्व दिशा अथवा ईशान कोण में रखें। इससे विजय लाभ होने की संभावना बढ़ जाती है। टेलीफोन कहीं भी रख सकते हैं, परंतु मुख्य स्थान अग्निकोण है।

टी.वी. को सदैव अग्निकोण में रखना श्रेयस्कर होता है। वैसे सभी टी.वी.

की साईज या चौड़ाई या लंबाई एक नहीं होती है। इस कारण किसी भी दिशा में रख सकते हैं। परंतु इसके लिए पूर्व ईशान और उत्तर ईशान ही उत्तम होता है।

गृहस्थ के घर पर मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि की छाया नहीं पड़नी चाहिए।

गृहस्थ के घर पर पुनः किसी भी तरह के पीपल या बड़ वृक्ष की भी छाया नहीं पड़नी चाहिए। कुछ विद्वानों का मत है कि तीसरे पहर की छाया नहीं पड़नी चाहिए परंतु हमने प्रत्यक्ष देखा और अनुभव किया है कि किसी भी रूप में पीपल या बड़ की छाया मकान पर पड़ती है तो परिवार में आर्थिक कमी, रोग, कलह एवं परिवार के मुखिया प्रायः परदेश में अधिक रहते हैं। हां, घर से कुछ दूर पूर्व में बड़, दक्षिण में गूलर, पश्चिम में पीपल और उत्तर में पाकड़ का वृक्ष शुभ होता है।

गृह के मध्य में किसी भी प्रकार का वृक्ष न लगाएं, यह अत्यंत अशुभ होता है। केवल तुलसी का वृक्ष लगाना शुभ होता है। घर की चारदीवारी पर या प्रवेशद्वार के पास केला, चंपा, गुलाब, चमेली, बेला एवं सुगंधित वृक्ष लगा सकते हैं।

ब्रह्मा, विष्णु, शिव या सूर्य का मुख पूर्व या पश्चिम की ओर होना चाहिए। इससे गृहस्थ को बहुत ही लाभ होता है।

गणेश और दुर्गा का मुख दक्षिण में हो सकता है। काली का मुख भी दक्षिण में हो सकता है।

हनुमान का मुख दक्षिण-पश्चिम में होना लाभ-फलदायक होता है।

गृहस्थ को अपने घर में मंदिर नहीं बनाना चाहिए, पूजास्थल ठीक होता है।

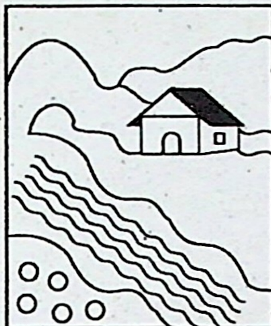
(क) जब भी पानी पीएं, अपना मुख उत्तर-पूर्व की ओर रखें। जब भी भोजन ग्रहण करें थाली दक्षिण-पूर्व की ओर रखें और पूर्व दिशा में मुख करके भोजन करें।

(ख) जब भी सोएं दक्षिण दिशा में सिर और उत्तर दिशा में पैर करके।

उपरोक्त बातें परिवार के सभी सदस्य मानकर चलें तो अवश्य लाभ होगा। विशेषकर परिवार का मुखिया तो अवश्य पालन करे। निम्नलिखित बातों का भी पालन करे—

जब भी पूजा करे तो मुख उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम की ओर करके बैठे।

□□□



8



पंचमहाभूतों को अनुकूल किस प्रकार बनायें

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत मूलभूत सिद्धान्तों में पंचमहाभूतों के अनुकूल आंकलन अति आवश्यक है।

भूखण्ड का उचित चुनाव करने के पश्चात् जलकूप, नलकूप, अण्डरग्राउण्ड वाटर टैंक, ओवर हैट टैंक, जल वितरण प्रणाली, जल निकास प्रणाली और अग्नि प्रकाश, पाकशाला, हीटर, गीजर तथा ताप से सम्बन्ध रखने वाले स्थान को आंकलन में सही स्थान देकर अपने अनुकूल बना लेते हैं। वास्तुशास्त्र में इसका विशेष महत्त्व है।

पृथ्वी

पृथ्वी तत्व का गुण गन्ध होता है। भूखण्ड का चुनाव दिशा, पृष्ट और स्तर के अनुसार जैसा कि पूर्व में निर्देश दिए गए हैं, चुनाव करना घर में मदिरा-मासाहार का प्रयोग नहीं करना चाहिए। मकान में स्वच्छ वातावरण रखने से पृथ्वी तत्व अनुकूल हो जाता है।

जल

जल का गुण रस माना जाता है। भूखण्ड में जलकूप, नलकूप, हैण्डपम्प, अण्डरग्राउण्ड वाटर टैंक, ओवर हैड टैंक को उचित स्थान देना चाहिए। मकान में स्वच्छ जल का भण्डारण करना, स्वच्छ जल का उपयोग करना, जल वितरण व्यवस्था, जल निकासी का प्रबन्ध, शौचालय तथा स्नानागार की दिशा अनुसार उचित जगह बनाकर जल तत्व को अनुकूल किया जा सकता है।

अग्नि

अग्नि का गुण रूप माना जाता है। जिस जगह रूप होती है वहां अग्नि होती है। मकान के सामने का दृश्य सुन्दर होना चाहिए। रसोईघर भी सही स्थान पर होना चाहिए। मकान में गर्म पानी के लिए गीजर, हीटर तथा चूल्हे को उचित स्थान

देना चाहिए। मकान में प्राकृतिक प्रकाश के प्रचुर आगमन की व्यवस्था करके अग्नि तत्व को अनुकूल किया जा सकता है।

वायु

वायु का गुण स्पर्श माना जाता है; अर्थात् संवेदनशीलता। मकान का आंकलन "विश्ववारया" करके या फिर मकान ऐसा होना चाहिए जो सभी तरफ की वायु को ग्रहण कर सके। इस प्रकार सिंह द्वार, प्रवेश द्वार आलिन्द तथा रोशनदान को सही दिशा में बनवाकर वायु तत्व को अनुकूल बनाया जा सकता है।

अगर आपका दरवाजा या खिड़की सड़क के सामने है तो उचित स्थिति है जिससे वायु संचरण सही प्रकार से होता है। ब्रह्मस्थान खाली छोड़ने पर पूरे घर को दूषित वायु आंगन के बीच से ऊपर को निकल जाती है।

आकाश

आकाश का गुण शब्द माना जाता है। यह अवधारणा सर्वमान्य है कि पृथ्वी, जल, अग्नि तथा वायु को अगर अनुकूल बना लिया जाये तब आकाश तत्व स्वतः ही अनुकूल हो जाता है। पर्दों पर मधुर ध्वनि के लिए छोटी-छोटी घंटियां लगानी चाहिएं।

मकान की कॉलबैल मधुर ध्वनि की होनी चाहिए, इससे घर की शान्ति बनी रहती है।

अपने मकान में प्रतिमान का भी विशेष ख्याल रखना चाहिए। छत की ऊंचाई भी सही होनी चाहिए। कम होने के कारण आकाश तत्व असन्तुलित हो जाता है।

प्रतिमान

मकान बनाने के सन्दर्भ में प्रतिमान का अर्थ लम्बाई, चौड़ाई तथा ऊंचाई का परस्पर ऐसा संयोजन है जो देखने में सुन्दर और प्राकृतिक सद्गुणों को आकर्षित तथा संगृहीत करे।

वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत हर उपयोगी वस्तु का निश्चित माप होता है, वह निश्चित माप ही उसे वह खूबसूरती प्रदान करता है, और जो कार्यशीलता उसे वह माप प्रदान करती है। वह एक लयात्मकता द्वारा पूर्ण होती है। वह एक छन्द की प्रकार ही है। जैसे एक कविता में शब्द संयोजन पंक्ति की रत्नता और पूर्ण अर्थ की भावाभिव्यक्ति एक छंद में निहित होती है, इसी तरह मकान का सौन्दर्य एक निश्चित प्रतिमान में निहित रहता है। जिस प्रतिमान के अन्तर्गत वह संरचना सबसे ज्यादा सुन्दर दिखाई देता है। यह सुन्दरता लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई के बीच का आनुपातिक माप है।

(अ) आयाएं : लम्बाई तथा चौड़ाई

प्राचीन भारतीय ऋषियों के द्वारा गहन मनन चिन्तन करके आयाओं का वर्गीकरण किया है। यह "आया।" भूखण्ड का माप अथवा क्षेत्रफल नहीं है। यह "आया" मकान की माप (ल० × चौ०) होती है। इसका ख्याल रखना अति आवश्यक है।

आया आठ प्रकार की होती है—ध्वज, धूम्र, सिंह, श्वान, वृषभ, खर, गज तथा काक। जिनकी गणना भिन्नं प्रकर से होती है—

1. मकान के क्षेत्रफल को 9 से गुणा करके उसमें 8 का भाग देने पर अगर 1 शेष आए तो उसको ध्वज आया माना जाता है। अथवा ध्वज आया कहलाती है।
2. मकान के क्षेत्रफल को 9 से गुणा करके उसमें 8 का भाग देने पर अगर 2 शेष बचे तो उसे धूम्र आया कहते हैं।
3. उपर्युक्त तरीके से अगर 3 शेष बच रहा है तो उसे सिंह आया कहते हैं।
4. उपर्युक्त तरीके से अगर 4 शेष बचता है तो उसे श्वान आया कहते हैं।
5. उपर्युक्त तरीके से अगर 5 शेष बच रहा है तो उसे वृषभ आया कहते हैं।
6. उपर्युक्त तरीके से अगर 6 शेष बच रहा है तो उसे स्वर आया कहते हैं।
7. उपर्युक्त तरीके से अगर 7 शेष बच रहा है तो उसे गज आया कहते हैं।
8. उपर्युक्त तरीके से अगर 8 शेष बच रहा है तो उसे काक आया कहा जाता है।

इनमें ध्वज, सिंह, वृषभ तथा गज आया को मंगलकारी माना जाता है और धूम्र, श्वान, खर तथा काक आया को अमंगलकारी माना जाता है। इसलिए वास्तुपुरुष मण्डल के लेखाचित्र (ग्राफ) में ल०-चौ० की आया निश्चित करके प्रत्येक वर्ग आयत का माप निश्चित करके मकान का आंकलन करना उपयुक्त रहता है।

विभिन्न तरह के मकानों की आयाओं का चुनाव अग्र प्रकार से करना सही रहता है—

क्र.सं.	उद्देश्य	प्राथमिकतानुसार आय का चक्र
1.	आवासीय भवन	ध्वज, सिंह, वृष, गज
2.	औद्योगिक प्रतिष्ठान	सिंह, ध्वज, वृष
3.	भण्डारगृह (अन्न भण्डार, अवशीतन, धर्मशाला, क्लब, दुकानें, शॉपिंग, कॉम्पलेक्स, जिम्नेजियम	गज, ध्वज, वृष
4.	विश्राम गृह (होटल) भोजनालय व धर्मशाला, क्लब, दुकानें, जिम्नेजियम	सिंह, गज
5.	प्रशासनिक भवन, न्यायालय सचिवालय, संसद भवन, विधान सभा भवन, सरकारी कार्यालय	सिंह, गज
6.	अनुसंधान केन्द्र सरकारी या गैर सरकारी, डायग्नोस्टिक सेन्टर विद्यालय महाविद्यालय, प्रशिक्षण संस्थान	वृष, ध्वज
7.	टाऊन हॉल, सभा भवन, सार्वजनिक भवन	ध्वज, वृष

मकान की आया कोई भी हो मगर उसकी प्रथम मंजिल (First floor) की आया भी वही होनी चाहिए। अगर भूस्तल मंजिल (Ground floor) तथा पहली मंजिल का उद्देश्य बदल जाए तब उनके उद्देश्य अनुसार आया बदली जा सकती है।

(ब) वास्तु की ऊंचाई

जिस तरह से आया का चुनाव करते हैं उसी तरह मकान की ऊंचाई पर मकान का सौन्दर्य निर्भर करता है। मकान की ऊंचाई का भी घर के मालिक पर असर पड़ता है जिसका वर्णन वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत किया जा चुका है। मयमतम में निम्न प्रकार की ऊंचाइयों व उनके प्रभावों को वर्णित किया है। (भूलम्ब विधानम 8, 9)

शान्तिका

जिस मकान की ऊंचाई, चौड़ाई के बराबर होने पर वह एक कलात्मक रूप ले लेती है उसे शान्तिका कहा जाता है।

जयदा

जिस मकान की ऊंचाई, चौड़ाई से डेढ़ गुना होती है उसे जयदा कहते हैं।

पौष्टिक

जिस मकान की ऊंचाई, चौड़ाई से सवाया गुणा (1¼) होती है उसे पौष्टिक कहते हैं।

सर्वकामिका

जिस मकान की ऊंचाई, चौड़ाई से दो गुणा (2) होती है उसे उसे सर्वकामिका कहा जाता है।

अद्भुत

जिस मकान की ऊंचाई, चौड़ाई से पौने दो गुणा (1¼) होती है उसे अद्भुत कहा जाता है।

घर के मालिक पर ऊंचाई का असर इन ऊंचाइयों के नाम से ही पता चल जाता है। यहां ऊंचाई से तात्पर्य छत पर बने किसी भी निर्माण के उच्चतम बिन्दु से फर्श जो सिंह द्वार पर है उससे है।

किसी भी मकान के आंकलन में सबसे पहले आय निर्धारण के बाद ऊंचाई (शांतिका, जयदा, पौष्टिक, सर्वकामिका तथा अद्भुत) का चयन किया जा सकता है।

(स) वास्तु की ऊंचाई तथा आधुनिक माप

वृहत् संहिता के अन्तर्गत वास्तुशास्त्र की ऊंचाई को वास्तु की चौड़ाई के सापेक्ष माना गया है जो कि प्रायोगिक रूप से सही जान पड़ता है। ऊंचाई का मकान की स्थिरता तथा सुन्दरता पर असर पड़ता है।

विस्तार षोडशांशः सचतुर्हस्लो भवेद गृहोच्छायः।
द्वादश भागेनोनो भूमौ भूमौ समस्तानाम॥

(वृहत् संहिता 22)

अर्थात् वास्तु के विस्तार (चौड़ाई) के सोलहवें भाग के साथ (सोलहवें भाग में) चार हस्तमान (एक हस्तमान=1½ फुट) का योग करने पर जो मान आता है वह वास्तु की ऊंचाई है।

इसे भू-स्तर मंजिल की ऊंचाई माना जाता है। इसके बाद की मंजिलों की ऊंचाई के लिए वृहत्संहिता में निर्देश लिया गया है कि भू-स्तर मंजिल की ऊंचाई का बारहवां अंश भू-स्तर मंजिल की ऊंचाई से घटा देने पर पहली मंजिल की ऊंचाई आ जाएगी।

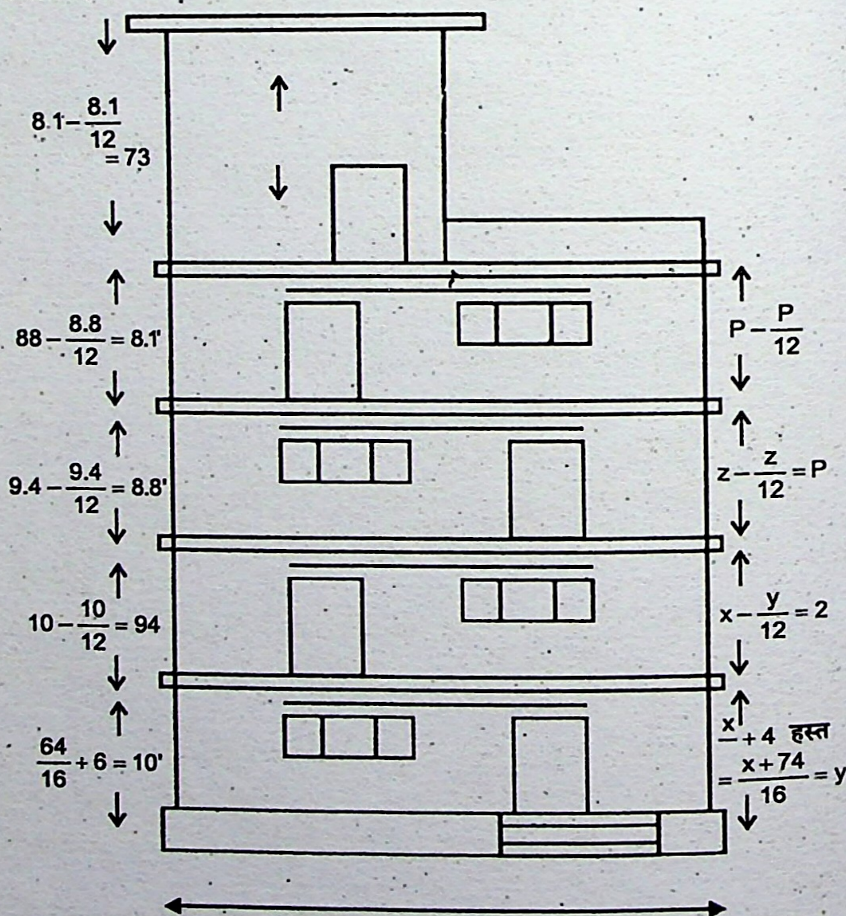
दूसरी मंजिल के लिए पहली मंजिल की ऊंचाई में से उसका बारहवां अंश

घटा देने पर दूसरी मंजिल की ऊंचाई आ जाएगी। इसी तरह अन्य मंजिलों की गणना कर लें। वृहत् संहिता अनुसार ऊंचाई का रेखाचित्र संख्या (8-7) में दर्शाया गया है।

परम्परागत तौर से दरवाजे की ऊंचाई से दुगने ऊपर छत रखनी चाहिए। कुछ मकानों की चौड़ाई कम होने से लम्बमान (ऊंचाई) बहुत कम आती है। इसलिए कम-से-कम ऊंचाई (Roof Top) 10½ फुट मान ली जाए। वैसे 12½ फुट व 13 फुट ऊंचाई बड़े भवनों के लिए उपयुक्त है।

वृहत् संहिता में भवन की ऊंचाई, भूखण्ड छोटा होने की वजह से कम आती है। इसलिए मकान की छत की ऊंचाई (Roof Top) कम-से-कम 10½ फुट रखनी चाहिए। आवासीय मकानों में यह 12½ फुट से 13 फुट सही मानी जाती है।

परम्परागत रूप से छत की ऊंचाई, दरवाजे की ऊंचाई से दुगने तक रखने का विधान है।



(द) कुर्सी तल तथा वास्तु की ऊंचाई

वास्तु की ऊंचाई के सन्दर्भ में इसका चुनाव मकान के आंकलन के अनुसार करना चाहिए। इसके अन्तर्गत कुर्सी तल का भी खास स्थान है। कुर्सी तल की ऊंचाई का निर्धारण एक मुख्य कारक है। जिसे विस्तृत नहीं करना चाहिए जो कि मकान को आस-पड़ौस के मकानों में उत्तम बनाता है।

अगर मकान का समीप का हिस्सा निचले स्तर पर है तब कुर्सी तल ऊंचा रखना चाहिए। वैसे सामान्य मुख्य सड़क मार्ग के स्तर से कम-से-कम 3 फुट ऊंचा कुर्सी तल रखना चाहिए।

मध्यम स्तर के मकानों में छत की ऊंचाई (Ceiling level) 11½ फुट रखी जाए। बड़े मकानों में यह ऊंचाई 12½ फुट से 13½ फुट रखी जा सकती है। सामान्यतः 10½ फुट की ऊंचाई सही है।

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार प्रतिमान (वास्तु की आया व ऊंचाई) का चुनाव घर के मालिक के जीवन में सुख-समृद्धि को निमन्त्रण देता है और उस पर वास्तु देवता की कृपा हमेशा बनी रहती है।

ईंटों की चिनाई हो या पत्थरों की, किसी तल तक विषम संख्याओं में ही रद्दे आयेंगे। माना पत्थर का एक रद्दा 9 इंच का है तब कुर्सी तल 3, 5, 7 की संख्या में रद्दे आयेंगे, माना 3 रद्दों से कुर्सी तल की ऊंचाई 2 फुट 3 इंच, 5 रद्दों से 3 फुट 9 इंच, 7 रद्दों से 5 फुट 3 इंच आयेंगे।

इसी तरह कुर्सी तल से छत तक भी कोर्स विषम संख्या में लगाने चाहिएं, सम संख्या में नहीं।

भवन में लगाने योग्य फूल-पौधे, पेड़ आदि

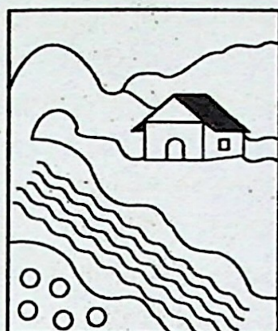
वनस्पति जीवन के पश्चात् ही पृथ्वी पर मानव-जीवन की शुरूआत हुई है, इसी बात से यह साबित हो जाता है कि जीव जगत वनस्पति जगत के बिना नहीं रह सकता। जहां तक मकान का वास्तुशास्त्र से ताल्लुक है, मकान परिसर में कौन-कौन से फूल-पौधे तथा पेड़ लगाना उपयुक्त है, इसका वर्णन वास्तुशास्त्र में किया गया है।

मकान परिसर में कोई भी पेड़ उत्तर तथा पूर्व की तरफ नहीं लगाना चाहिए। बड़े पेड़ दक्षिण तथा पश्चिम दिशा की तरफ ही लगाने चाहिएं। पेड़ लगाने के लिए भूखण्ड का बड़ा होना जरूरी है। मकान से पेड़ की ऊंचाई से द्विगुणित दूरी पर पेड़ लगाना विहित है। अन्यथा उसकी जड़ें, मकान की नींव को हानि पहुंचा सकती हैं।

छायादार पेड़ों को ही लगाना चाहिए। फलदार या कांटेदार नहीं। फलदार पेड़ लगाने पर आस-पड़ौस के बालकों का उत्पात हमेशा बन रहेगा। कांटेदार पेड़ों को वस्तु द्वारा शुभ नहीं माना जाता। वास्तुशास्त्र के अनुसार उन पेड़ों को वरीयता देनी चाहिए, जो वायु शोधक, रोगनाशक तथा स्वास्थ्यवर्धक हो, यथा नीम, अनार, अशोक, शाल, पुन्नाग, गुलमोहर, मौलश्री, शीशम, अरिष्ट, शाल, कटहल, बेल, चन्दन आदि।

मकान के उत्तरी दिशा की तरफ सुगन्धित, दर्शनीय फूल, गुल्म आदि लगाने चाहिएं। कांटेदार झाड़ी आदि नहीं लगानी चाहिए। तुलसी के पौधे लगाना शुभ एवं मंगलकारी रहता है, क्योंकि तुलसी अनेक विलक्षण औषधीय गुणों से युक्त तथा वायुशोधक है। मकान में दूध के पेड़ आक, धतूरा, कटैली आदि नहीं लगाने चाहिएं। वास्तुशास्त्र के अनुसार यह स्थिति अशुभ मानी जाती है। इसलिए इस प्रकार की स्थिति से बचें वरना हानि भी हो सकती है।

❑❑❑



9



निर्माण सामग्री तथा गुणवत्ता

मकान बनाते समय हमेशा ही ऊंची गुणवत्ता की सामग्री प्रयुक्त की जानी चाहिए। आदिकाल में लकड़ी का उपयोग बहुत अधिक मात्रा में किया जाता था। पाषाण का उपयोग सिर्फ देव शिल्प के लिए किया जाता था।

कालांतर में वास्तु सलाहकारों के परामर्श तथा अनुमति से आवास गृहों में भी पाषाण का उपयोग होने लगा, क्योंकि सद्गृहस्थ का मकान भी मन्दिर के समान ही है। पाषाण उच्च भार वहन क्षमता अपार गम्यता व दीर्घ कालिख होने की वजह से मकान निर्माण में सबसे ज्यादा काम आने वाली निर्माण सामग्री है। इस पर कलात्मक उत्कीर्णन होने की वजह से बहुत सुन्दर लगता है। इसमें चूने की मात्रा होने की वजह से यह जमीन के अन्दर से आने वाले प्रभावों को निष्क्रिय कर देता है।

मगर ग्रेनाइट में क्वार्ट्ज की मात्रा ज्यादा होने की वजह से स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त नहीं है। इसकी विशेष चमक व विभिन्न प्रकार के रंगों में मिलने के कारण इसका उपयोग बढ़ रहा है। आधुनिक भवन-निर्माण में पत्थरों को किसी भी आकार, मोटाई तथा लम्बाई में काटने की सुविधा होने की वजह से आदमी पूर्ण कलात्मक का उपयोग करता जा रहा है। जिस स्थान पर ग्रेनाइट का प्रयोग किया जाये, उसकी अन्तः सतह पर चूने का मसाला प्रयुक्त करने से क्वार्ट्ज से होने वाली हानि नहीं होती।

जहां तक पत्थरों के प्रयोग का प्रश्न है। मकान के कार्य में अनियमित चिनाई नहीं करवाकर कोर्स रबल चिनाई करवाई जानी चाहिए। वह भी वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुकूल।

क्योंकि भवन के निर्माण के लिए पत्थर का एक संस्कारित टुकड़ा ही एक इकाई है। अहिर्निश वास्तुपुरुष समय चक्र में दर्शाया गया है कि जिस वक्त वास्तुपुरुष की दृष्टि पड़े उस दिशा में निर्माण कार्य करना चाहिए।

इस तरह जो भी निर्माण कार्य होगा, उसके अन्तर्गत एक कर्मबद्धता होगी।

जो भी निर्माण कार्य होगा, वास्तुपुरुष की दृष्टि में होगा जिसके द्वारा वास्तुपुरुष की कृपा हमेशा घर के मालिक पर बनीं रहेगी।

किस प्रकार का पत्थर उपयोग में लाना चाहिए, मयमतम में निर्देश किया गया है—

एक वर्णाः स्थिराः स्निग्धाः सुख संस्पर्शनान्विता॥

(मयमतम, शिलालखणम् 6, 7, 9)

अर्थात् निर्माण में प्रयोग होने वाला पत्थर एक रंग का, कठोर, चिकना और स्पर्श करने पर अच्छा लगने वाला होना चाहिए।

धर्म भारतीय संस्कृति की आत्मा होता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धर्मानुकूल आचरण को महत्त्व दिया गया है। विश्वकर्मा प्रकाश में निम्न निर्देश इस प्रकार है—

अन्यत्र स्खलित शिला विशीर्णमच्छिन संस्कारात्।

(विश्वकर्मा प्रकाश)

अर्थात् इधर-उधर से उठाई गयी, बिखरी हुइ तथा स्वामी की आज्ञा के बिना उठायी गयी निर्माण सामग्री भवन-निर्माण में प्रयुक्त नहीं की जानी चाहिए वरना वह अमंगलकारी साबित होगा।

उपर्युक्त श्लोक का अर्थ बड़ा गम्भीर है इनमें अनेकों उदाहरण आज भी प्रत्यक्ष हैं। जैसलमेर जिले के पालीवाल ब्रह्मण किन्हीं राजनीतिक वजहों से अनेक जगहों पर बसे गांवों से रातोरात चले गये, जिसकी वजह से उनके मकान खाली पड़े रह गए। जब उनके वापस आने की कोई सम्भावना न बची तो उनके मकानों की निर्माण सामग्री, खासकर पत्थर जिन्होंने उठा-उठाकर अपने मकान बनाए वे धीरे-धीरे अवनति को प्राप्त हो गए।

आखिरकार उनके परिणाम को देखकर यही निष्कर्ष निकाला गया कि जिस-जिसने शौर्य कर्म पत्थरों का उपयोग किया उनको ही दण्ड दिया और वे पतन के गर्त में गिर गए।

पुरानी व नई सामग्री का भी प्रयोग नहीं करना चाहिए।

न नव पुराण युक्तं न पक्वमानेन चैव संजोज्यम्।

(विश्वकर्मा प्रकाश)

अर्थात् नई तथा उपयोग की गयी ईंटों व पत्थरों का सम्मिलित उपयोग नहीं करना चाहिए और कच्ची व पक्की ईंटों का संयोजन भी नहीं करना चाहिए।

मय दानव ने गुणवत्ता के विषय में निर्दिष्ट किया है—

सुघनाः समदग्धाश्च सुस्वराश्चोष्टका शुभाः।

(मयमतम, 699)

अर्थात् ईंटें समान रूप से भली प्रकार पकी हुई और ज्यादा घनत्व की हों और उनको आपस में टकराने पर खनकती आवाज उत्पन्न होती हो।

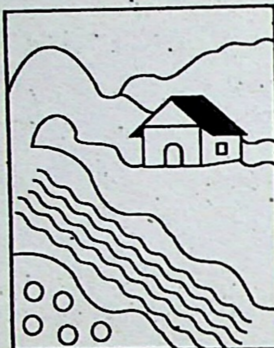
दारू आहरण

मकान के बनाने में प्रयोग की जाने वाली लकड़ी (दारू आहरण) का वास्तुशास्त्र में वर्णन किया गया है।

लेकिन उन नियमों का पालन तब ही होता है जब खुद वन क्षेत्र में वृक्षों का चुनाव कर सकते हैं। लेकिन आधुनिक समय में यह मुमकिन नहीं तो मुश्किल आवश्यक है। दारू आहरण की स्वतन्त्रता भवन-निर्माता को नहीं हो सकती। मगर यह ध्यान जरूर रखना है कि जो लकड़ी बाजार में आई है वह उच्च गुणवत्ता की है या नहीं? देवदारू, शीशम, सागवान, कटहल आदि वृक्षों की लकड़ी मकान बनाने में सही रहती है।

इस बात का ध्यान रखना मंगलकारी होगा कि जो सामग्री निर्माण कार्य में हो वह ऊंची गुणवत्ता की होनी चाहिए।

□□□



10



मकान में लगाए गए रंगों, चित्रों और प्रकाश का प्रभाव

व्यक्ति जो सुनता है, जैसा देखता है तथा फिर वैसा ही करता हैं। उसके ऊपर वैसा ही संस्कार पड़ता है। जिस प्रकार के उस पर संस्कार पड़ते हैं वैसा ही वह कार्य करने के लिए प्रेरित होता है।

जैसी प्रेरणा व्यक्ति को मिलती है वैसा ही कार्य करता है और जैसा कार्य वह करता है उससे फिर वैसा ही संस्कार मन पर अंकित हो जाता है। बार-बार एक-जैसे संस्कार से फिर वैसी ही वृत्ति पैदा होती है।

मनुष्य का मन, बुद्धि व चित्त हमेशा निद्रा अवस्था में भी जाग्रत रहते हैं। मनुष्य को पता भी नहीं होता कि दृश्य व श्रृत्य से मन प्रति पल क्या ग्रहण कर रहा है। मगर विशेष बात यह है कि मन ने जो जाने या अनजाने कुछ भी ग्रहण किया उसी के अनुसार मनुष्य वैसा ही कार्य करने पर मजबूर हो जाता है।

1. चित्र

कलाकार की कल्पना तथा सृजनशीलता की पहचान चित्र को माना जाता है। चित्र बनाते वक्त चित्रकार ने जैसे भाव, रंगों के माध्यम से जो भर दिए, वही भाव चित्र हमेशा दर्शाता रहेगा। यह एक विशेष बात है जो कि प्रत्येक कलाकार को प्राप्त होती है।

देखे गए चित्र आदि का मनुष्य के मन पर काफी असर पड़ता है। एकाग्रता से देखने पर तो चित्र के हाव-भाव, विषयवस्तु तथा उनके रंगों से उत्पन्न प्रभाव तो चित्त पर गहरे अंकित हो जाते हैं।

इस वजह से घर में शुभ चित्र लगाने चाहिएं, अशुभ असर दिखाने वाले नहीं। जैसे किसी युद्ध के चित्र, दो वीरों का युद्ध करते हुए चित्र, घायल पीड़ादायक, पागल, नग्न अथवा अर्धनग्न स्त्री अथवा पुरुष के आपत्तिजनक चित्र, वीभत्स चित्र, हिजड़े, अग्नि, पशु, उल्लू, गिद्ध, सांप, हाथी, सियार घोड़ा, सभी देवता व अप्सरा, विकृत चेहरा या फिर ऐसे ही किसी विषय पर बने चित्रों को आवासीय गृहों में नहीं लगाना चाहिए।

जो चित्र आप घर में लगायें उनमें ॐ, स्वास्तिक देवों के कोषाध्यक्ष, लक्ष्मी, कुबेर, नन्दी गाय-बछड़ा, पुष्पों के मनोहारी शिल्प अथवा चित्र, गुलाब, कमल, नृत्य करती महिलाएं, सुन्दर स्वस्थ बालक, स्वस्थ प्रकृति के पक्षी; जैसे हंस, मोर, बत्तख और अपने कुल देवताओं के चित्र लगाने की अनुमति है। इसके अलावा प्रेरणास्पद चित्र लगाने चाहिएं। जिसके द्वारा अन्तर्मन सद्गुणों को ग्रहण करे।

2. रंग तथा प्रकाश

हमारे सौर मण्डल के अन्तर्गत सूर्य ताप तथा प्रकाश का मूल स्त्रोत है। सूर्योदय से दोपहर के समय तक सूर्य से अल्ट्रावायलेट किरणें निकलती हैं। जो जगत के सभी जीवों के लिए लाभदायक हैं।

वनस्पति जगत सूर्य के ताप तथा प्रकाश की उपस्थिति में प्रकाश-संश्लेषण क्रिया द्वारा अपना खाद्य (कार्बोहाइड्रेट) बनाकर प्राण वायु ऑक्सीजन छोड़ती है परमात्मा की व्यवस्था भी कितनी अद्भुत है जिसकी जीव जगत को कितनी जरूरत पड़ती है। ऑक्सीजन वह वनस्पति जगत देता है जिसकी वनस्पति जगत को बड़ी जरूरत देती है।

कार्बन डाइ-ऑक्साइड वह जीव जगत देता है। यह दोनों जगत परमात्मा की बनाई सृष्टि से पूर्णता को प्राप्त होते हैं और परमात्मा ने यह सृष्टि जीवरूप प्रजा के लिए बनाई है।

शुद्धम अपापविद्मम कविः मनीषी स्वयंभू परिभू।
व्यदधाश्वंशातीभ्य सभाभ्या॥8b॥
(यजुर्वेद 40/8)

इसके लिए प्रकाश जीवन का मूल आधार है। रंग प्रकाश में ही अदृश्य रूप से निहित है। सृष्टि के आदिकाल से ही भरत खण्ड के ऋषियों व विज्ञानियों को प्रकाश में निहित सात रंग और प्रत्येक रंग की तरंग तथा इनमें निहित विभिन्न प्रकार की ऊर्जाओं का ज्ञान था तथा यह ज्ञान विभिन्न साहित्य में यत्र-तत्र वर्णित है।

इतनी सूक्ष्म तथा विशद विवेचना विज्ञान अभी तक नहीं कर पाया है। लेकिन आज के वैदिक विद्वान भी किन्हीं प्रायोगिक तर्क के आधार पर वैदिक साहित्यों के निष्कर्षों को आधुनिक विद्वानों के सामने प्रस्तुत नहीं कर पा रहे। मगर आधुनिक विज्ञान जब किसी ठोस निष्कर्ष पर पहुंचता है तब वह वैदिक ज्ञान की पुष्टि करता है।

प्रकाश में ही रंग अन्तर्निहित होता है। तभी तो रंगों का अपना एक विशेष प्रभाव होता है। किसी भी जगह पर जब प्रकाश की किरण पड़ती है सतह उसको अवशोषित कर लेती है।

जिस तरंग रंग को वह परावर्तित करती है सिर्फ वह ही दृश्य है। इन रंगों व प्रकाश का अटूट नाता होता है और मनुष्य के व्यक्तित्व पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। इस वजह से घर के अन्दर दूधिया रोशनी होनी चाहिए।

मकान की अभिमुखता एवं रंगों का चुनाव

वास्तु सलाहकारों ने रंगों के प्रभावों का किसी खास दिशा के अनुसार किसी मनुष्य के व्यक्तित्व पर कितना पड़ता है उसका विवेचन वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत किया है। मकान की अभिमुखता के आधार पर रंगों का संयोजन किस प्रकार का होना चाहिए, यह निर्देशित किया है।

1. हरा

हरा रंग उत्तराभिमुखी, आग्नेयमुखी तथा नैर्ऋत्यमुखी भवनों के लिए अच्छा है।

2. श्वेत

श्वेत रंग पूर्वाभिमुखी और वायव्यमुखी भवनों के लिए अच्छा रहता है।

3. नीला, आसमानी तथा फिरोजी

नीला, आसमानी व फिरोजी रंग पश्चिमाभिमुखी भवनों के लिए उत्तम है।

4. रक्तिम, नारंगी तथा गुलाबी

रक्तिम, नांरगी या गुलाबी रंग दक्षिणामुखी भवनों के लिए उत्तम है।

स्तम्भ

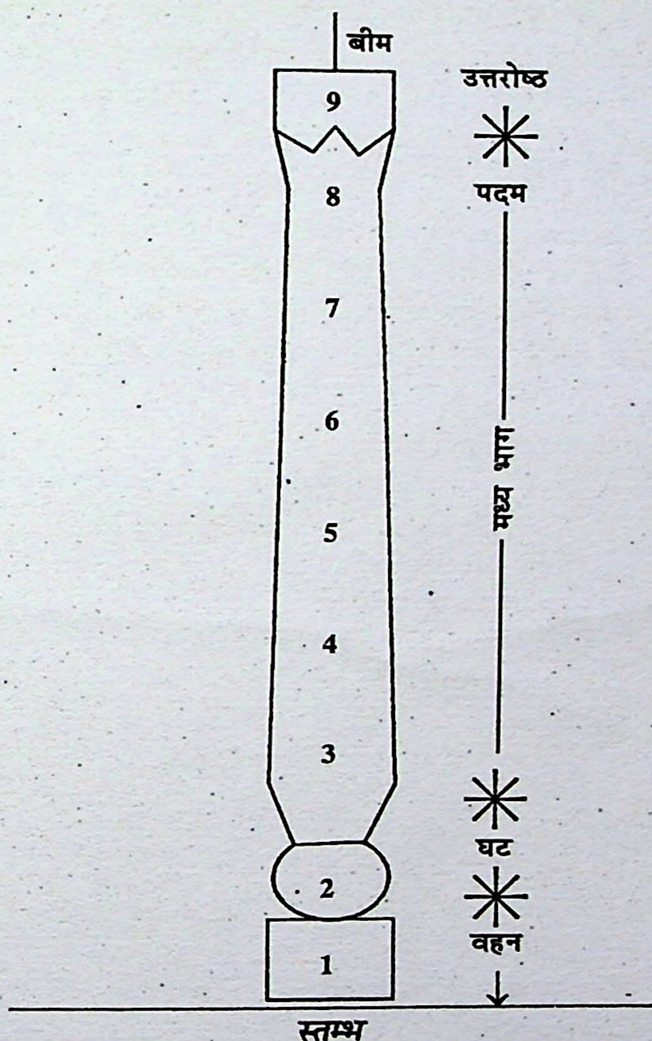
संरचना चाहे औद्योगिक हो या आवासीय या फिर किसी उद्देश्य के लिए बनाई जा रही हो। स्तम्भ का एक विशेष स्थान होता है। स्तम्भ संरचना का भार भूमि के ऊपर स्थानान्तरित करता है।

इसलिए इसकी रचना विशेष प्रकार की होनी चाहिए। स्तम्भ की निर्माण सामग्री यथा प्रस्तर, पक्की ईंटों अथवा आर०सी०सी० उच्च गुणवत्ता की होनी चाहिए।

स्तम्भ विभज्य नवधा वहन भागों घटोस्य भोगडन्यः।
पदम तथोन्तरोष्ठ कुर्याद भागेन भागेन॥

(वृहत् संहिता, स्तम्भ/29)

अर्थात् स्तम्भ की सम्पूर्ण लम्बाई को नौ समान भागों में विभाजित करें। सबसे नीचे का एक भाग जिसे वहन कहते हैं, उससे ऊपरवाले भाग को घट कहा जाता है। उसके ऊपर के पांच भागों को छोड़कर अष्टम भाग को पदम और सबसे ऊपर वाले भाग को उत्तरोष्ठ कहते हैं। जिसके ऊपर भार वहन करने के लिए शहतीर या बीम को रखा जाता है।



स्तम्भ

परम्परागत तौर पर वहन व उत्तरोष्ठ को चौकोर बनाया जाता है। घट को घड़े को आकार का ही बनाया जाता है। अष्टम भाग को कमल की आकृति दी जाती है।

भट्टोपल ने अष्टम तथा नवम भाग को कमल के रूप में निर्मित करने का भी निर्देश दिया है।

अगर आपका स्तम्भ आर०सी०सी० या ईंटों का हो तब प्रस्तर खण्ड जैसे स्तम्भ नहीं बन सकते। वृहत् संहिता में शुभ आकारों व आकृतियों के स्तम्भों का वर्णन किया है।

समचतुर स्त्रो रूचको वज्रोऽष्टास्त्रिद्विवज्रको द्विगुणः।
द्वांत्रिशता तु मध्ये प्रलीनको वृत इति वृतः॥

(वृहत् संहिता, स्तम्भ/28)

अर्थात् मध्य भाग में वर्गाकार स्तम्भ को रूचक, आठ कोणों से युक्त स्तम्भ को वज्र, सोलह कोणों से युक्त स्तम्भ को द्विवज, बत्तीस कोणों से युक्त स्तम्भ को प्रलीनक तथा गोलाकार स्तम्भ को वृत स्तम्भ कहते हैं।

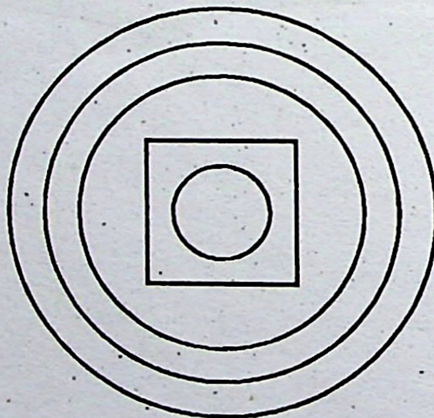
श्लोक में वर्णित पांच तरह (रूचक, द्विवज, वज्र, प्रलीनक तथा वृत) के स्तम्भ शुभ तथा मंगलकारी होते हैं। मत्स्य पुराण में भी इसका प्रमाण उपलब्ध है—

एते पञ्च महास्तम्भाः प्रशस्ताः सर्ववास्तुषु॥

(मत्स्य पुराण)

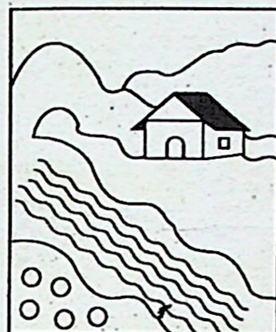
अर्थात् उपर्युक्त वर्णित पांच तरह के स्तम्भ हर प्रकार की संरचना के लिए शुभ तथा मंगलकारी हैं।

इसलिए इन पांचों प्रकार के स्तम्भों में से निर्माण के लिए चुनाव करना सही है।



पंचमहास्तम्भ





11

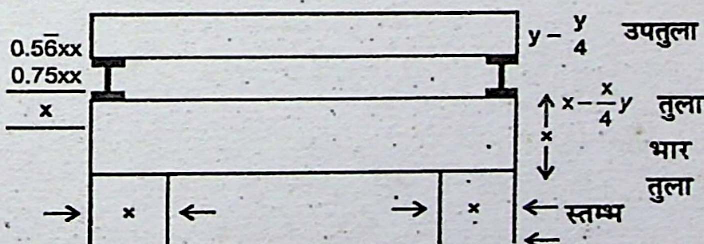


स्तम्भ, स्तम्भ के ऊपर शहतीर एवं उसका मान

स्तम्भसमं बाहुल्यं भारतुलानामुपर्युपर्यासाम्।
भवति तुलोपतुलानामूनं पादेन पादेन॥

(वृहत् संहिता शहतीर 130)

स्तमभ के ऊपर लगायी गई बीम लकड़ी, लोहे या आर०सी०सी० की लगाई जाती है, जो ऊपरी संरचना का भार स्तम्भ पर स्थानान्तरित करती है। उसका नाम भार तुला है। इससे ऊपर छोटी बीम का नाम तुला तथा तुला के ऊपर एक और छोटी बीम का नाम '34 तुला' है। इस तरह से संरचना के भार के विस्तार के अनुसार भार तुला, तुला व उपतुला को जरूरत के मुताबिक काम में लिया जा सकता है। इस तरह की व्यवस्था से बड़ी-से-बड़ी संरचना को स्थायित्व दिया जा सकता है। उनके माप भी वृहत् संहिता में दर्शाए गए हैं। जिनको पुराने माप से आधुनिक माप में बदलकर नीचे चित्र में दर्शाया गया है।



पहला बीम (भार तुला) अगर × मोटाई (×–Section में ऊंचाई) की है तब तुला की मोटाई, भार तुला की मोटाई में से चौथाई भाग को कम करने पर आएगी। उपतुला की मोटाई, तुला की मोटाई में से चौथाई भाग कम करने पर आएगी।

आधुनिक दौरे में आर०सी०सी० स्ट्रेक्चर के लिए बीम का डिजाइन उसके ऊपर आने वाले भार के अनुसार किया जाता है। इसलिए उसका डिजाइन किसी अभियन्ता द्वारा ही करवाना चाहिए।

□□□



12



मकान की बनावट के अनुरूप निर्देश

वास्तुशास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ वृहत् संहिता के रचयिता वास्तुशिल्पी वाराहमिहिर जो उज्जैन के सम्राट विक्रम के प्रमुख नवरत्नों में से एक थे। जिन्होंने विक्रम स्तम्भों का निर्माण करवाया, जिनमें से दो विक्रम स्तम्भ आज भी अफगानिस्तान के फिरोजकोट क्षेत्र में हरीरूप नदी के किनारे कुतुबमीनार जैसे 63.9 मीटर ऊंचे बने हैं। जो अपने आपमें ही अद्‌भुत संरचनाएं हैं।

कुतुबमीनार के बारे में भी प्राचीन लोगों का कहना है कि यह संरचना भी वाराहमिहिर ने विक्रम स्तम्भ के रूप में करवाई थी, इसके बाद इसका बाहरी स्वरूप बदल गया।

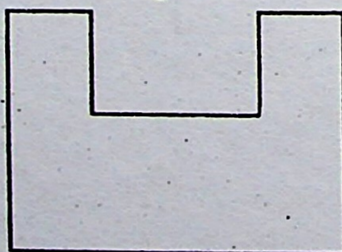
घर के मालिक पर किस तरह की संरचना का कैसा प्रभाव पड़ता है, इसका वर्णन वाराहमिहिर ने वृहत् संहिता में किया है।

1. त्रिशाल वास्तु

त्रिशाल वास्तु उस संचरना को कहा जाता है जो तीन दिशाओं में निर्मित होती है। उसके असर को वाराहमिहिर ने बताया है। तीन दिशाओं के अन्तर्गत शाला निर्मित होने को त्रिशाल कहा जाता है।

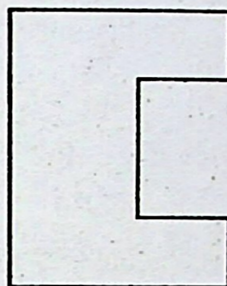
उत्तरशालाहीनं हिरण्यनाभं त्रिशालकम धन्यम्।
प्राकशालया विमुक्तं क्षेत्रं वृद्धिदं वास्तु॥

(वास्तु संहिता, त्रिशाल वास्तु लक्षणं, 37)



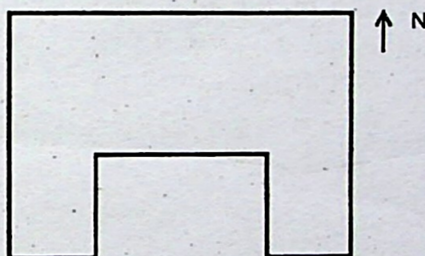
हरण्यनाभ वास्तु

उत्तर दिशा में शाला का न होना हिरण्यनाभ वास्तु कहलाता है। इस तरह का निर्माण उत्तम, भाग्यवर्द्धक, यशस्वी, शुभ तथा मंगलकारी माना जाता है।



सुक्षेत्र वास्तु

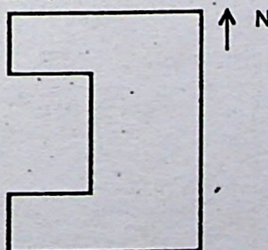
पूर्व दिशा में किसी निर्माण का न होना सुक्षेत्र वास्तु कहा जाता है। इस तरह का निर्माण घर के मालिक के लिए पुत्र-धन तथा आयुकारक माना जाता है।



चुल्ली वास्तु

दक्षिण दिशा में किसी निर्माण का न होना चुल्ली वास्तु कहलाता है। इस तरह का निर्माण करवाने से घर के मालिक का धन सर्वनाश हो जाता है।

मत्सय पुराण के अनुसार चुल्ली वास्तु मित्रता में बाधक, बन्धुओं से वैर व पुत्रों के लिए अशुभ माना जाता है।



पक्षघ्न वास्तु

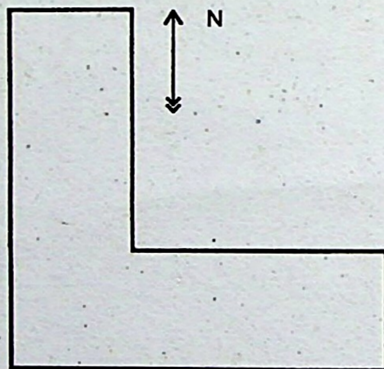
पश्चिम दिशा में किसी भी तरह के निर्माण न होने से वह पक्षघ्न वास्तु होता है। इससे पुत्रों की हानि तथा पुत्रों से वैर होता है।

त्रिशाल वास्तु होने पर हिरण्यनाभ वास्तु व सुक्षेत्र वास्तु का ही चुनाव करना चाहिए। त्रिशाल वास्तु में आलिन्द (बरामदा) हो या न हो इसकी कोई मर्यादा निश्चित नहीं की गयी है।

द्विशाल वास्तु का प्रभाव

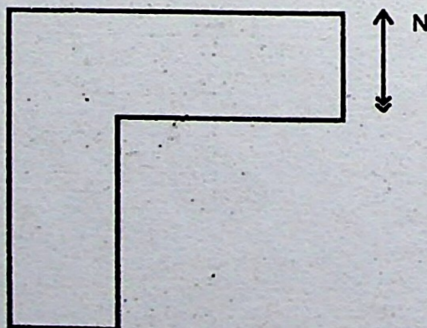
सिद्धार्थमषरयाम्ये यमसूर्य पश्चिमोत्तरेशाले।
दण्डाख्यामुदकपूर्वे वाताख्यां प्राग्युता याम्या॥89॥
पूर्वा परे तू शाले गृहचुल्ली दक्षिणोत्तरे काचम्।
सिद्धार्थऽर्थावाप्तिर्यमसूर्ये गृहपतेर्मृत्यु:॥40॥
दण्डवधो दण्डाख्ये कलहोंद्वेग: सदैव वाताख्ये।
वित्त विनाशश्चुल्यां ज्ञाति विरोध: स्मृत: काचै॥41॥

(वृहत् संहिता)



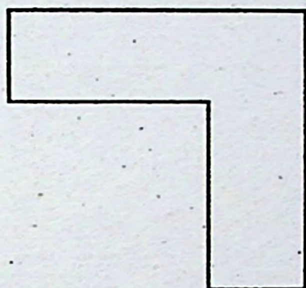
सिद्धार्थ वास्तु

दक्षिण तथा पश्चिम में शाला होना सिद्धार्थ वास्तु कहलाता है। इस तरह का निर्माण गृहस्वामी को धन-लाभ करवाता है।



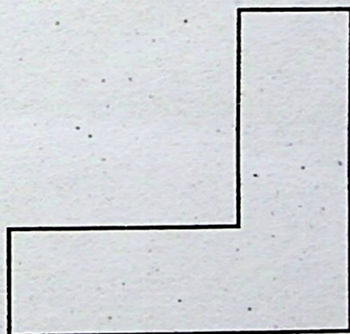
यमसूर्य वास्तु

उत्तर तथा पश्चिम में शाला का होना यमसूर्य कहलाता है, जो घर के मालिक के जीवन पर संकट ला सकता है।



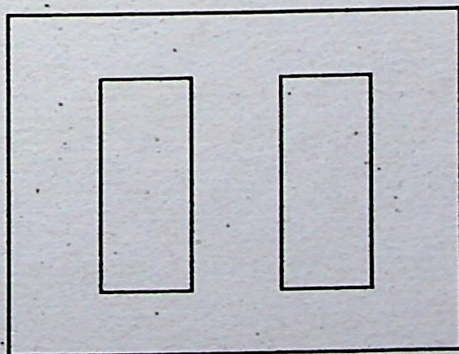
दण्ड वास्तु

उत्तर तथा पूर्व में शाला होने पर घर दण्ड वास्तु कहलाता है। इस तरह के निर्माण से घर के मालिक को दण्ड तथा वध का डर बना रहता है। दुश्मन हावी रहते हैं।



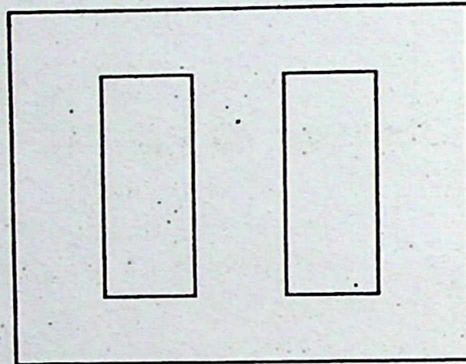
वात वास्तु

पूर्व तथा दक्षिण में शाला होने पर यह निर्माण वात वास्तु कहलाता है। इस तरह के निर्माण से हमेशा कलेश तथा उद्वेग की स्थिति बनी रहती है। मन में चंचलता बनी रहती है।



चुल्ली वास्तु

पूर्व तथा पश्चिम में शाला के होने पर वह चुल्ली वास्तु कहलाता है। इस तरह का निर्माण सूर्य की सुखद किरणों और उत्तर से चुम्बकीय प्रवाह दोनों का ही लाभ नहीं ले पाता। इस तरह के निर्माण से धन-नाश की स्थितियां निर्मित होती हैं।



काच वास्तु

उत्तर तथा दक्षिण में शाला होने से काच वास्तु कहते हैं। इससे घर के मालिक के बन्धु विरोध की स्थितियां बनती हैं।

3. एकशाल वास्तु

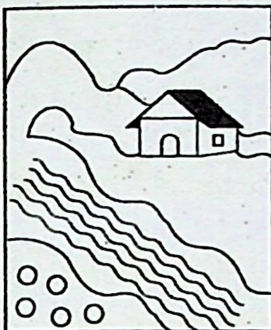
अगर भूखण्ड अथवा मकान की लम्बाई तथा चौड़ाई का अनुपात 2 : 1 हो तब इस तरह के निर्माण को एकशाल वास्तु कहते हैं।

एकशाल यथाकामं बिस्तारं कारयेद गृहम।
गृहमायामहीनं तत्वेकशालं प्रचक्षते॥

एकशाल मकान में ध्यान रखने लायक बात होती है कि निर्माण की लम्बाई सामने वाले भाग उत्तर तथा पूर्व दिशा की तरफ होनी चाहिए। उत्तर दिशा की तरफ होने से धन-लाभ तथा यश की वृद्धि होती है। पूर्व की तरफ सामने पृष्ठ होने से मान प्रतिष्ठा, पुत्र तथा वंशवृद्धि होती है। अन्य दो दक्षिण तथा पश्चिम आवास के लिए सही नहीं है।

एकशाल गृहों में प्रतिमान का ध्यान रखना बहुत जरूरी हैं। एकशाल भवन कीं ऊंचाई चौड़ाई के बराबर रखी जा सकती है। वास्तु द्वारा यह उत्तम है।



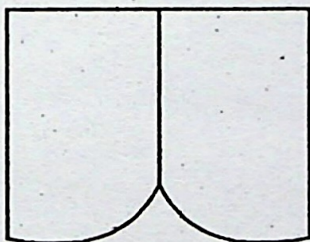




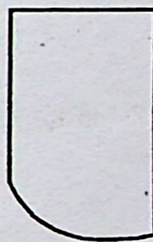
13

प्रारूपों में प्रयोग होने वाले चिन्ह

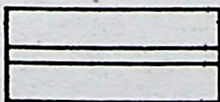
वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भवन प्रारूपों में दरवाजे, खिड़की आदि के लिए कुछ ख़ास चिह्नों का प्रयोग किया गया है। वे चिह्न तथा उनका तात्पर्य निम्नांकित तालिका में स्पष्ट किया गया है–



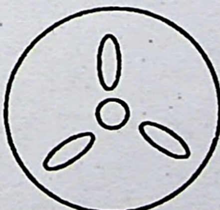
दो किवाड़ों का दरवाजा,



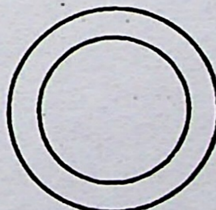
एक किवाड़ का दरवाजा



खिड़की



एग्जास्ट या फेश मैन

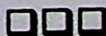


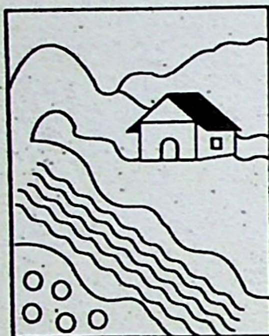
ट्यूबवेल



विद्युत मीटर एवं बोर्ड

वास्तुशास्त्र में विभिन्न आकारों के भूखण्डों पर बनाए गए भवन-प्रारूपों के चित्र दे रहे हैं और साथ ही इन प्रारूपों का विश्लेषण वास्तुशास्त्र के अनुसार करके भवन के मालिक तथा उसमें रहने वाले लोगों पर इसके शुभ-अशुभ प्रभाव की चर्चा करेंगे।







14 भवन-निर्माण में वास्तुशास्त्र का महत्त्व

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत मकान के बनवाने में उपयोगी सिद्धान्तों, सम्भावित वास्तुदोषों तथा उनके निवारण के लिए उपायों के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।

मकान बनाने की प्रक्रिया में सबसे पहले भवन का प्रारूप तैयार किया जाता है या मकान में कौन-सा कमरा किस दिशा में तथा किस आकार का बनाया जाना है? इस बारे में हम सबसे पहले मुख्य दरवाजे के विषय में चर्चा करेंगे।

मुख्य दरवाजा

सबसे पहले मकान का प्रारूप बनवाते समय मुख्य दरवाजा निर्धारित किया जाता है।

मुख्य दरवाजे के निर्धारण की मुख्य विधि के अनुसार भूखण्ड में जिस दिशा में मुख्य दरवाजे का निर्माण करना हो, उस दिशा की भुजा को नौ हिस्सों में बांटकर पांच भाग दाहिनी तरफ से तथा तीन भाग बायीं तरफ से छोड़कर बचे भाग में दरवाजा बनाना चाहिए।

वास्तुशास्त्र के द्वारा हर भूखण्ड तथा मकान में कुछ स्थान शुभ होने की वजह से ग्राह्य स्थान अशुभ होने की वजह से त्यागने योग्य हो जाता है।

आगे भूखण्ड पर भुजाओं को नौ हिस्सों में विभाजित किया गया है और विभिन्न भागों के लिए एक विशेष अंक प्रदान किया गया है।

इस अंक के स्थान पर मुख्य दरवाजा बनवाने का फल निम्नानुसार होता है—

1. रोगभय
2. शत्रुवृद्धि
3. धनलाभ
4. विपुल धन-प्राप्ति
5. धर्म तथा सदाचार वृद्धि
6. पुत्र-बैर
7. स्त्रीदोष
8. निर्धनता
9. अग्निभय
10. कन्या वृद्धि
11. धनलाभ
12. राजसम्मान

13. क्रोध से हानि	14. झूठ बोलने की आदत
15. क्रूर व्यवहार	16. चोरी से हानि का भय
17. सन्तान की हानि	18. सेवक प्रवृत्ति, अर्थहानि
19. अनुचित प्रवृत्ति	20. पुत्रलाभ
21. मृत्युभय	22. निर्धनता
23. निर्धनता	24. वंश पराक्रम हानि
25. अल्पायु तथा निर्धनता	26. व्यर्थ व्यय
27. धनहानि	28. धनवृद्धि
29. योगक्षेम प्राप्ति	30. राजभय
31. सामान्य फल	32. पाप संचय

उपर्युक्त तालिका का अध्ययन करने पर पता चलता है कि मुख्य दरवाजे के लिए सही स्थान 11-2, 28, 29, 3-5-4 हैं। अगर हमारा भूखण्ड दक्षिणीमुखी है तो 20 पर मुख्य दरवाजे का निर्माण कराया जा सकता है यह सही स्थिति है।

हर भूखण्ड के चारों तरफ चार दिशाएं पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण होती हैं।

भूखण्ड के पूर्वी भुजा के मध्य बिन्दु से लेकर ईशान कोण तक का भाग उच्चकोटि का तथा शुभ एवं बिन्दु से नैर्ऋत्य कोण तक का भाग निम्नकोटि का अर्थात् अशुभ होता है।

भूखण्ड की उत्तरी भुजा के बीच बिन्दु से लेकर ईशान कोण तक का भाग उच्चकोटि का अर्थात् शुभ एवं मध्य बिन्दु से वायव्य कोण तक भाग निम्नकोटि का अर्थात् अशुभ माना जाता है।

या उत्तरी-दक्षिणी ईशान, पूर्वी ईशान, दक्षिणी आग्नेय तथा पश्चिमी वायव्य उच्चकोटि के तथा उत्तरी वायव्य, पूर्वी आग्नेय, दक्षिणी और पश्चिमी नैर्ऋत्य निम्नकोटि के समझे जाते हैं।

उच्चकोटि के मुख्य द्वार

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भूखण्ड के उत्तरी ईशान कोण में निर्मित मुख्य दरवाजा उच्चकोटि का माना जाता है। उत्तरी ईशान कोण में दरवाजा बनाने से मकान के मालिक को अनेक प्रकार से लाभ पहुंचता है।

भूखण्ड के उत्तरी ईशान कोण में मुंख्य दरवाजा बनाने से भारी सामान दक्षिण-पश्चिम दिशा में रखा जाना चाहिए। इस प्रकार उत्तर-पूर्व का भाग दक्षिण-पश्चिम से हल्का हो जायेगा। यह वास्तुशास्त्र का आधारभूत सिद्धान्त है जो कि अत्यन्त शुभ फलदायक होता है। वास्तु द्वारा इसे उत्तम माना गया है।

भूखण्ड के पूर्वी ईशान कोण में बनाया गया मुख्य दरवाजा उच्चकोटि का माना जाता है। पूर्वी ईशान कोण में दरवाज़ा बनाने से मकान में रहने वाले अत्यन्त मेधावी तथा विद्वान होते हैं। पूर्वी ईशान कोण में मुख्य दरवाजा होने से भारी सामान दक्षिण दिशा में रखा जाता है तथा आने-जाने का रास्ता उत्तर की तरफ होता है जो कि शुभ फलदायक होता है।

भूखण्ड के दक्षिणी आग्नेय कोण में स्थापित मुख्य दरवाजा उच्चकोटि का होता है। दक्षिण आग्नेय कोण में मुख्य दरवाजा बनाने से शुभ फल प्राप्त होते हैं।

क्योंकि इस मकान में फर्नीचर आदि भारी सामान दक्षिण दिशा में और आने-जाने का रास्ता पूर्व दिशा में रहता है जो कि सभी प्रकार से कल्याणमय माना जाता है।

भूखण्ड के पश्चिमी वायव्य कोण में बनाया गया मुख्य दरवाजा उच्चकोटि का होता है। इस कोण में मुख्य दरवाजा शुभ फलदायक तथा कल्याणकारी होता है।

निम्नकोटि के मुख्य दरवाजे

वास्तुशास्त्र के द्वारा भूखण्ड के आग्नेय कोण में स्थापित मुख्य दरवाजा निम्नकोटि का होता है। पूर्वी आग्नेय कोण में दरवाजा बनाने के परिणाम अच्छे नहीं होते हैं, इसलिए पूर्वी आग्नेय कोण में दरवाजा कभी नहीं बनायें।

वास्तुशास्त्र के द्वारा भूखण्ड के दक्षिणी नैर्ऋत्य कोण में बनाया गया मुख्य दरवाजा निम्नकोटि का होता है। दक्षिणी नैर्ऋत्य कोण में मुख्य दरवाजा बनवाना आर्थिक हानिकारक तथा औरतों के लिए अस्वास्थ्यकारी सिद्ध होता है।

इसलिए दक्षिणी नैर्ऋत्य कोण में दरवाजा भूलकर भी नहीं बनाना चाहिए। वास्तु द्वारा इस स्थिति को अशुभ माना जाता है। इससे हानि भी पहुंच सकती है।

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भूखण्ड के पश्चिमी नैर्ऋत्य कोण में स्थापित मुख्य दरवाजा निम्नकोटि का माना जाता है। इस कोण के अन्तर्गत मुख्य दरवाजा बनाने में आर्थिक हानि के साथ-साथ परिवार के मुखिया की पदावनति भी हो जाती है। इसलिए पश्चिमी नैर्ऋत्य कोण में दरवाजा कभी भूलकर भी नहीं बनाना चाहिए।

भूखण्ड के उत्तरी वायव्य कोण में बनाया गया दरवाजा निम्नकोटि का माना जाता है। वास्तुशास्त्र के द्वारा इस मकान में निवास करने वालों के मन की स्थिति हमेशा अस्थिर तथा चंचल बनी रहती है।

ईशान कोण में पांच रंग का ध्वज बनाकर लगावें।

"ॐ सर्वेभ्योदेवेभ्यो नमः" केवल 11 बार जाप करके गृह से बाहर जाएं।

चारों दिशाओं की मुख्य दीवार के सम्बंध में जानकारी दी गयी अतः पुनः

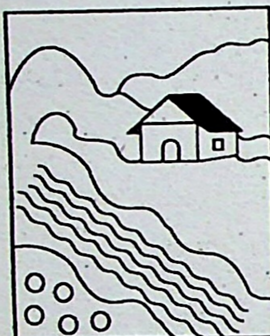
मुख्य द्वार के सम्बंध में स्पष्ट कर देता हूं ताकि पाठक इस विषय से अवगत होकर बिना तोड़-फोड़कर सुखपूर्वक जीवन-यापन कर सकते हैं।

भवन में अगर एक ही द्वार बनाना हो तो पूर्व दिशा में बनाना चाहिए, यदि दो दरवाजे बनाने हों तो पूर्व तथा पश्चिम दोनों ओर तथा दक्षिण में द्वार न बनावें।

द्वार के सम्मुख मार्ग में किसी भी प्रकार का वृक्ष, दूसरे के घर का कोना, खंभा या पानी के निकास के लिए नाली या ट्यूबवैल न हो तो शुभ है। यदि यह दूरी द्वार की ऊंचाई से दुगुनी है तो शुभ है।

मुख्य द्वार की चौड़ाई से दुगुनी ऊंचाई होना चाहिए। कम या अधिक नहीं होना चाहिए, मुख्य द्वार के ऊपर दरवाजा नहीं होना चाहिए। घर के सभी दरवाजे एक किवाड़ के हों परंतु मुख्य द्वार दो किवाड़ का बनाना चाहिए तथा घर के भीतर की ओर खुलता हुआ रखना चाहिए। द्वार के सामने द्वार नहीं बनाना चाहिए, मुख्य द्वार खुलते समय किसी भी प्रकार का कर्कश शब्द नहीं होना चाहिए।

□□□



15



मकान में तोड़-फोड़ करना वास्तु के विरुद्ध

वास्तुशास्त्र केवल भवन-निर्माण में ही सहायता नहीं करता बल्कि मकान में रहने वाले सदस्यों को सुख तथा मानसिक शान्ति भी प्रदान करता है लेकिन अगर मकान बनाते समय वास्तुशास्त्र के नियमों का पालन नहीं किया जाता तो मनुष्य सर्वनाश की हालत पर आ खड़ा होता है। ऐसे हालात में मकानों की बेकार तोड़-फोड़ विधि-विधान के विरुद्ध होगी। वास्तुशास्त्र के निमय के अनुसार ऐसा नहीं करना चाहिए।

रसोई

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत अगर आपने भूलचूक से अपनी रसोई दक्षिण-पूर्व में न बनवाकर किसी अन्य दिशा में बनवा ली है तो आपके परिवार का कोई भी सदस्य भयंकर रूप से पेट सम्बन्धी रोग से ग्रस्त हो जाएगा। ऐसी हालत में रसोई में चूल्हा दक्षिण-पूर्व दिशा में ही रखें और गृहिणी अपना मुंह पूर्व दिशा की ओर रखे। वास्तु द्वारा यह उपयुक्त दिशा है।

मुख्य द्वार

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत अगर आपका मुख्य द्वार छोटा है, तो उसको निकालने की आवश्यकता नहीं है। सिर्फ तैलीय रंगों से दरवाजे पर फूल-पत्तियों की आकृति बनवाकर ऊंचा या बड़ा कर लीजिए। अगर मुख्य दरवाजे पर गणपति की आकृति बनाकर लगायें तो परिवार के सदस्यों के सारे दुःख दूर हो जाते हैं तथा दुर्घटनाओं से भी उनकी रक्षा होती है।

अगर आपका मुख्य दरवाजा दक्षिण दिशा में है तो ऐसे मकान में एक दरवाजा उत्तर-पूर्व दिशा में जरूर बनाएं और उत्तर दिशा में कुछ अशोक वृक्ष भी लगाएं तो फायदा होगा।

शौचालय

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत शौचालय का निर्माण कभी भूलकर भी ईशान कोण में न करवायें तथा अगर भूल से आपने ऐसे शौचालय का निर्माण करवा लिया है तो शौचालय में एक फौहारे की व्यवस्था उत्तर दिशा में करें और दक्षिण दिशा में शिकार करते हुए शेर का चित्र शौचालय के बाहर जरूर लगाएं। इस प्रकार आपके मकान में किसी बुरी आत्मा का साया नहीं पड़ेगा।

मकान की दक्षिण-पश्चिम दीवार पर नैर्ऋत्य दिशा में एक दर्पण जरूर लगायें। वास्तु द्वारा ऐसा करना उत्तम होगा।

फर्नीचर

वास्तुशास्त्र द्वारा मकान में फर्नीचर का निर्माण अत्यन्त आवश्यक माना जाता है। फर्नीचर की लकड़ी खरीदते समय मौसम, नक्षत्र और स्थान का खास ख्याल रखना चाहिए। लकड़ी कभी भी नक्षत्र दीमकयुक्त अथवा शमशान भूमि के पेड़ों की नहीं खरीदनी चाहिए, वरना घर में प्रेत-बाधा, चिन्ताएं, सुख-यश का नाश हो जाएगा। यह अशुभ स्थिति है।

वास्तुशास्त्र द्वारा फर्नीचर हमेशा दक्षिण तथा पश्चिम दिशा की तरफ ज्यादा रखें। मेहमानों का स्वागत उत्तर अथवा पूर्व दिशा में मुंह करके करना चाहिए। इससे घर में शान्ति बनी रहेगी, यश की प्राप्ति होगी। वास्तु द्वारा इस स्थिति को उत्तम माना जाता है।

दीवारें

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत मकानों की दीवारें कभी गन्दी अथवा भद्दे रंग की नहीं होनी चाहिएं अथवा बनवानी चाहिएं। इस स्थिति की वजह से आपको हानि पहुंच सकती है। कमरे की दीवारों में ज्यादा जाली, खूंटी आदि भी नहीं लगवानी चाहिएं, वरना घर के अन्दर आक्रोश, वैमनस्य, निराशा, दुःखमय वातावरण बना रहेगा।

फर्श और दीवारें

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत ईशान कोण या पूर्वोत्तर में फर्श का ढाल न रखें, अगर ऐसा करेंगे तो हमेशा आर्थिक चिन्ता तथा अस्वस्थता में रहेंगे। फर्श का ढाल उत्तर दिशा में रखना अति उत्तम माना जाता है और लाभ भी प्राप्त होता है।

अगर काले रंग के पत्थर का प्रयोग फर्श पर करेंगे तो हमेशा 'राहु' के प्रभाव

से फिक्रमन्द रहेंगे।

सफेद रंग के पत्थर का प्रयोग भी फर्श पर ज्यादा मात्रा में नहीं करना चाहिए अन्यथा अगर 'शुक्र' निर्बल है तो यह अशुभ फलदायी हो जाता है।

अगर बृहस्पति निर्बल होगा तो पीले तथा सफेद रंग की दीवारें अथवा फर्श नहीं बनाने चाहिएं, वरना परिवार में विरोध बढ़ जाता है तथा आत्म-कलेश भी बना रहता है।

फर्श पर आलेखन

वास्तुशास्त्र के द्वारा फर्श का निर्माण करवाते समय फर्श के ऊपर पशु, पक्षी, शेर की आकृति, क्रॉस, शंख, चक्र, देवी-देवता, गदा, फूल, मुकुट, तोरण, लेखनी, मृदंग, स्वास्तिक आदि नहीं बनाने चाहिएं, वरना परिवार के लिए यह अनिष्टकारी स्थिति बन जाती है। वास्तुशास्त्र में यह अशुभ स्थिति है।

इसके कारण आपके परिवार में विरोध तथा वैचारिक असमानता बढ़ जाती है। साथ ही विकास का मार्ग भी बन्द हो जायेगा। जहां तक हो सके ऐसी स्थिति से बचना चाहिए।

उपचार

वास्तुशास्त्र के द्वारा जब कभी उपयुक्त स्थिति बने तो अपनी जन्मपत्री में 'गृह-नक्षत्र' के अनुसार रंग का चुनाव करें तथा उसके मुताबिक निर्माण कराएं। अगर आपका मकान बना हुआ है तो दीवारों से मिलाकर उपयुक्त रंग के अनुसार कालीन बिछा लें। ऐसा करने पर आपको जरूर लाभ होगा। इसका उपयोग करें।

अन्दर के कमरों का आयतन

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत मकान बनवाते समय मकान के भीतरी कमरों का आयतन विषम नहीं रखना चाहिए अगर आयतन विषम हो गया तो परिवार की सुख-शान्ति चली जायेगी। इसके अलावा आमदनी कम तथा खर्च इतना ज्यादा बढ़ जायेगा कि ऋण तक लेना पड़ सकता है और हमेशा आर्थिक परेशानी बनी रहती है।

अगर किसी कारण से आपके भीतरी कमरों का आयतन विषम रह गया है तो कमरे में लकड़ी की आलमारी बनवा लें और आयतन समतल कर लें। इसके अलावा अगर मामूली सा विषम आयतन है तो गमले में फूलदार अथवा हरे पत्ते जो हमेशा खिले रहें, लगाकर स्थान को शान्त कर लें। वास्तुशास्त्र के द्वारा यह स्थिति उत्तम होती है।

भवन में धनहानि, अपयश, अशान्ति

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत घर में अशान्ति, धनहानि तथा अपयश का वातावरण है तो निम्नलिखित बातों का ध्यान अवश्य रखें और वस्तुओं की स्थापना भी दिशा के अनुकूल ही कर सकते हैं–

(1) अगर आप तुलसी का पौधा घर में लगायें तो आपके घर में हमेशा खुशी का वातावरण बना रहेगा और वास्तु सन्तुलन भी बना रहेगा।

(2) वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत आभूषण, धन, एफ०डी०आर० आदि हमेशा ऐसी आलमारी में रखें जिसका दरवाजा उत्तर दिशा की तरफ खुलता हो। यह एक उपयुक्त स्थिति है।

(3) वास्तुशास्त्र के द्वारा अगर आपको मानसिक परेशानी हो तो पलंग पर मृगचर्म बिछाकर सोना चाहिए।

(4) अगर घर में कोई परिवार का सदस्य काफी समय से बीमार चल रहा है तो उसे दक्षिण दिशा की तरफ सिर करके लेटना चाहिए। वास्तुशास्त्र के अनुसार उसके कमरे में कछुआ पालें और रात में उसके पलंग के सिरहाने चांदी के बर्तन में घुटी हुई केशरयुक्त जल भरकर रखें। स्वास्थ्य लाभ अवश्य होगा। यह उपाय उत्तम माना जाता है।

(5) वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत कोर्ट केस एवं अन्य महत्त्वपूर्ण फाइलें ईशान दिशा में ही रखनी चाहिएं।

(6) वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत हमेशा अग्निकोण अथवा ईशान कोण में ही अपना टेलीफोन रखना चाहिए।

(7) वास्तुशास्त्र के अनुसार हमेशा अग्निकोण में ही अपना टी०वी० रखना चाहिए। यह उपयुक्त दिशा है।

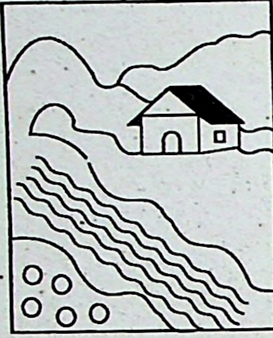
(8) सुख-समृद्धि तथा शान्ति के लिए घर में हरे-भरे और फूलदार पौधे रखने चाहिएं। या फिर पात्रों में जल भरकर रखें।

(9) अगर आपको कोई केस जीतना हो तो पूजास्थल के नीचे अपनी केस फाइल रख दें। फैसला आपके हित में होगा।

गृह जीर्णोद्धार

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत क्षतिग्रस्त घर का जीर्णोद्धार करके घर की वास्तु शान्ति जरूर करा लेनी चाहिए।

□□□



16



उत्तर दिशा की सड़क वाले मकान

(1) वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत लॉन अथवा खुला स्थान उत्तर दिशा में ही होना चाहिएं।

(2) देवस्थान, पूजा, ध्यान तथा अध्ययन कक्ष ईशान कोण में ही स्थापित करना चाहिए।

(3) वास्तुशास्त्र के अनुसार मल निकासी टंकी पश्चिम-उत्तर दिशा अथवा वायव्य कोण में होनी चाहिए।

(4) जलस्रोत, कुआं, बोरवैल जल भण्डारण के लिए अण्डरग्राउण्ड टंकी उत्तर-पूर्व दिशा अथवा ईशान कोण में बनायें।

(5) वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत मुख्य दरवाजा ईशान कोण अथवा उत्तर-पूर्व दिशा में होना आवश्यक है।

(6) आपका बैठकखाना आग्नेय कोण में दक्षिण दिशा, अथवा पूर्व दिशा में ही होना चाहिए।

(7) वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत अधिक खुला हुआ स्थान ईशान कोण अथवा उत्तर-पूर्व दिशा में होना चाहिए।

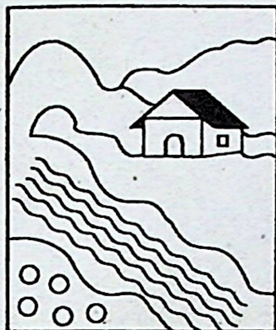
(8) वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत आपका रसोईघर दक्षिण-पूर्व दिशा अथवा आग्नेय कोण में स्थापित होना चाहिए।

(9) शौच, स्नानागार नैर्ऋत्य दिशा तथा वायव्य कोणों में पश्चिम दिशा तथा दक्षिण दिशा में होना चाहिए।

(10) आपका बैडरूम दक्षिण-पश्चिम तथा उत्तर-पश्चिम कोणों या दक्षिण, उत्तर तथा पश्चिम दिशा में होना जरूरी है।

(11) वास्तुशास्त्र के अनुसार डायनिंग हॉल आग्नेय कोण दक्षिण-पूर्व दिशा में बनाएं।





17



दक्षिण दिशा की सड़क वाले मकान

(1) भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार आप अपना शौच, स्नानागार दक्षिण-पश्चिम अथवा पश्चिम-उत्तर अथवा पूर्व दिशा में अन्यथा दक्षिणी भाग में ही स्थापित करवायें। यह उचित दिशा है।

(2) वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत आपका बैठकखाना दक्षिण-पूर्व अथवा उत्तर दिशा में होना चाहिए।

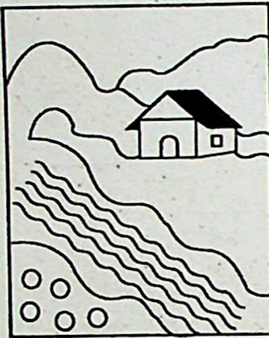
(3) वास्तुशास्त्र के अनुसार आपका अपना रसोईघर आग्नेय कोण में या फिर पूर्व दिशा में दक्षिणी हिस्से के समीप होना चाहिए।

(4) आपका बैडरूम, मेहमानों का कमरा तथा सामान्य कक्ष, दक्षिण-पश्चिम, उत्तर-पश्चिम, पश्चिम तथा उत्तर दिशा में होना उपयुक्त होगा।

(5) वास्तुशास्त्र के अंन्तर्गत आपका देवस्थान, पूजाघर, अध्ययन तथा ध्यान कक्ष ईशान कोण में होना चाहिए।

(6) वास्तुशास्त्र के द्वारा बोरवैल कुआं अथवा जल भण्डारण के लिए अण्डरग्राउण्ड टंकी उत्तर-पूर्व ईशान कोण में स्थापित करायें।

□□□



18



पूर्व दिशा की सड़क वाले मकान

(1) वास्तुशास्त्र के अनुसार आपका पूजाघर, देवस्थान, अध्ययन तथा ध्यान कक्ष ईशान कोण में होना आवश्यक है।

(2) आपका भण्डारघर उत्तर-पश्चिम अथवा रसोई के समीप आग्नेय कोण में या पूर्व दिशा में स्थित होना चाहिए।

(3) वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत जलस्रोत उत्तर-पूर्व ईशान कोण में ही स्थापित करायें। यह उचित स्थिति है।

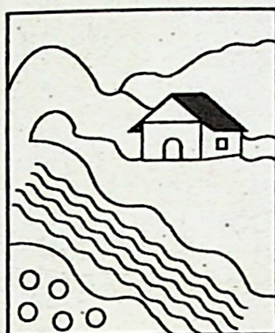
(4) आपका मुख्य दरवाजा उत्तर अथवा पूर्व दिशा में या फिर दोनों दिशाओं के बीच ईशान कोण में होना चाहिए।

(5) आपका शौचघर व स्नानागार नैर्ऋत्य कोण अथवा पूर्व दिशा और दक्षिण-पूर्व कोण अथवा दक्षिण-पश्चिम कोण में होना चाहिए।

(6) आपका बैडरूम वायव्य तथा नैर्ऋत्य कोणों में दक्षिण, उत्तर तथा पश्चिम दिशा में होना चाहिए।

(7) वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत आपका रसोईघर आग्नेय कोण में या पूर्व दिशा में दक्षिण की तरफ तथा भोजनालय भी इसी दिशा में रखा जा सकता है।

□□□



19



पश्चिम दिशा की सड़क वाले मकान

(1) आपका बैडरूम वायव्य कोण तथा नैर्ऋत्य कोण में होना चाहिए। इसके अलावा दक्षिणी दिशा व उत्तर दिशा में भी बैडरूम बनाया जा सकता है। वास्तु द्वारा यह उपयुक्त स्थिति है।

(2) वास्तुशास्त्र के अनुसार आपका बैठकखाना—ड्राइंगरूम, आग्नेय कोण उत्तर दिशा या पश्चिम दिशा में होना चाहिए।

(3) वास्तुशास्त्र के द्वारा आपका रसोईघर तथा डायनिंग रूम आग्नेय कोण में होना चाहिए।

(4) वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत बोरवैल कुआं और अण्डरग्राउण्ड टंकी ईशान कोण में स्थापित करानी चाहिए।

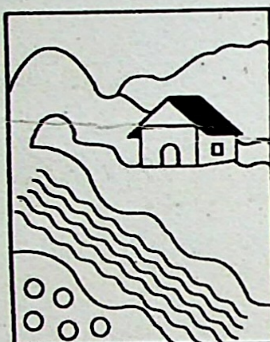
(5) वास्तुशास्त्र के द्वारा पूजाघर, अध्ययन कक्ष, योग तथा ध्यान कक्ष ईशान कोण में होना चाहिए।

(6) आपका शौचघर तथा स्नानघर उत्तर-पूर्व, दक्षिण-पूर्व तथा दक्षिण पश्चिम में स्थापित किया जाना चाहिए।

(7) आपका मुख्य दरवाजा उत्तर दिशा में अथवा उत्तर-पश्चिम यानि वायव्य कोण में रखना उपयुक्त होता है।

(8) वास्तु द्वारा आपका मनोरंजन कक्ष बैठकखाने में भी स्थापित किया जा सकता है या फिर किसी उपयुक्त स्थान पर भी बनाया जा सकता है। वास्तु द्वारा यह उचित रहेगा।

□□□



20



वास्तु पर आधारित भवन-निर्माण

किसी भी भवन का प्रारूप तैयार करना हो तो इसके अन्तर्गत भवन के विभिन्न भागों को किस आकार का तथा किस दिशा में बनाना है, दर्शाया जाता है। भवन का निर्माण इसी प्रारूप के अनुसार ही किया जाना चाहिए। वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भवन के विभिन्न भागों तथा कमरों के लिए अनुकूल दिशाएं निर्धारित की गयी हैं।

भवन का प्रारूप तैयार करवाते समय इस बात का खास ख्याल रखना जरूरी है कि वास्तुशास्त्र के अनुसार बतायी गयी अनुकूल दिशा में ही मकान के अनेक भागों तथा कमरों का निर्माण किया जाना बहुत जरूरी है।

भवन का प्रारूप तैयार करने से पहले भूखण्ड को आठ दिशाओं के अन्तर्गत विभाजित करके विभिन्न दिशाओं तथा विदिशाओं के क्षेत्र को ज्ञात कर लेना चाहिए।

अगर हम किसी कारणवश चाहते हुए भी अनुकूल दिशा में कमरे का निर्माण नहीं कर पा रहे हैं, जैसे कि रसोईघर के लिए आग्नेय कोण अनुकूल स्थिति है और हम इसका निर्माण उस दिशा में नहीं कर पा रहे हैं तो हम रसोईघर को पश्चिम में बनाकर उसको आठ दिशाओं में बांटकर इसके आग्नेय कोण में अग्नि अर्थात् चूल्हे का स्थान निश्चित करेंगे। इसके अन्तर्गत भारी सामान दक्षिण तथा पश्चिम दिशा की दीवार के सहारे रखा जाएगा।

मकान के विभिन्न कमरों के लिए वास्तु अनुसार अनुकूल दिशा

दिशा	भवन का भाग
उत्तर-पूर्व	बालकॉनी
पूर्व-दक्षिण, पूर्व, उत्तर-पश्चिम	स्नानघर, बैडरूम
उत्तर-पूर्व	तलघर

उत्तर-पश्चिम	बच्चों का कमरा
उत्तर-पश्चिम	गोशाला
उत्तर, उत्तर-पूर्व	दरवाजे
उत्तर-पश्चिम/दक्षिण-पूर्व	भेंट गृह
उत्तर-पश्चिम/दक्षिण-पूर्व	केशविन्यास कक्ष
उत्तर-पश्चिम	मनोरंजन कक्ष
दक्षिण-पूर्व, दक्षिण-पश्चिम	भोजन कक्ष
उत्तर-पश्चिम	खाद्य भण्डारगृह
दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पूर्व	खुला स्थान
उत्तर-पश्चिम, दक्षिण-पूर्व	अतिथिगृह
दक्षिण-पूर्व, पश्चिम	रसोईघर
दक्षिण-पूर्व	मेनस्विच बोर्ड
उत्तर-पश्चिम	परामर्श कक्ष
उत्तर-पूर्व	खुला स्थान
उत्तर-पूर्व	पोर्टिको
दक्षिण-पूर्व/उत्तर-पश्चिम	सेवक कक्ष
दक्षिण-पश्चिम	सीढ़ियां
दक्षिण-पश्चिम	भण्डार
उत्तर, पूर्व-उत्तर, पूर्व-पश्चिम	अध्ययन कक्ष
उत्तर	तिजौरी
उत्तर-पूर्व	पूजाघर
उत्तर-पूर्व, दक्षिण और पश्चिम	टेरेस, पेड़-पौधे
दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम	मूत्रालय
उत्तर-पूर्व	बरामदा
उत्तर-पश्चिम	जलभण्डार
उत्तर-पूर्व	कुआं (ट्यूबवैल)

आपको हम छह विभिन्न आकार के भूखण्डों के विषय में बता रहे हैं, उन भूखण्डों पर आठों दिशाओं तथा विदिशाओं की तरफ मुंह होने पर या मार्ग होने पर भवन का प्रारूप वास्तुशास्त्र द्वारा कैसा होगा, यह मानचित्र द्वारा स्पष्ट किया गया है।

आकार के अनुसार भूखण्ड का चुनाव

(1) 38 मीटर चौड़ा तथा 58 फीट लम्बा।

(2) 33 फीट चौड़ा तथा 48 फीट लम्बा।

(3) 23 फीट चौड़ा तथा 36 फीट लम्बा।
(4) 43 फीट चौड़ा तथा 68 फीट लम्बा।
(5) 50 फीट चौड़ा तथा 85 फीट लम्बा।
(6) 48 फीट चौड़ा तथा 78 फीट लम्बा।

मुखानुसार भूखण्डों का वर्गीकरण

(1) उत्तरमुखी
(2) ईशानमुखी
(3) पूर्वमुखी
(4) आग्नेयमुखी
(5) दक्षिणमुखी
(6) नैर्ऋत्यमुखी
(7) पश्चिममुखी
(8) वायव्यमुखी

आकार तथा मुखानुरूप प्रारूप विश्लेषण

भवन का निर्माण करते समय पांच सिद्धान्तों का ध्यान रखना आवश्यक होता है। सभी लोग जानते हैं कि मानव शरीर की संचरना पंचतत्व जल, अग्नि, वायु, आकाश तथा पृथ्वी से हुई है और इन्हीं पांच तत्वों का सन्तुलन शरीर में बना रहता है, मानव स्वस्थ रहता है। इसी तरह मकान के निर्माण में भी इन्हीं पांच तत्वों को ध्यान में रखा जाता है।

पृथ्वी

मकान बनाते समय सबसे पहले भूखण्ड के आकार को ध्यान में रखना आवश्यक होता है। पृथ्वी तत्व की शुद्धता तथा गुणात्मकता के लिए मिट्टी का रंग व गन्ध, आर्द्रता, मिट्टी के खाद के आधार पर करना चाहिए, ताकि पृथ्वी तत्व भूखण्ड के चुनाव के बाद भवन का ढाल वास्तु के अनुसार पूर्व-उत्तर या ईशान कोण में होना चाहिए।

भवन का ढाल विभिन्न दिशाओं में होने से शुभ-अशुभ फल

दिशा/विदिशा	फल
उत्तर	धनवृद्धि
ईशान	ज्ञान-प्राप्ति धर्म-कर्म में अभिरुचि
वायव्य	अस्थिरता
पश्चिम	वंशहानि, नाशकारक

नैर्ऋत्य	धनहानि
दक्षिण	मृत्युकारक
पूर्व	धनवृद्धि
आग्नेय	अग्निभय

जल

भवन का निर्माण करने से पहले जल की समुचित व्यवस्था करनी आवश्यक होती है ताकि निर्माण कार्य की गति व्यवस्थित रह सके। वास्तु द्वारा उत्तर-पूर्व अथवा उत्तर भाग में जल का संसाधन तैयार करना चाहिए। आजकल हर घर के मालिक अपना ट्यूबवैल बनवाना ज्यादा ही पसन्द करते हैं। यह ट्यूबवैल भूखण्ड के ईशान कोण में या उत्तर एवं पूर्व की तरफ बनाना चाहिए। ट्यूबवैल बनवाते समय इस बात का खास ध्यान रखें कि भवन के ईशान कोण को मिलाने वाली रेखा पर ट्यूबवैल न खोदा जाए।

ट्यूबवैल विभिन्न दिशाओं में होने से शुभ-अशुभ फल

दिशा/विदिशा	फल
उत्तरी ईशान	वंश, धन तथा ऐश्वर्य में वृद्धि
उत्तर	सुख-समृद्धि में वृद्धि
पूर्व ईशान	ऐश्वर्य में वृद्धि
पश्चिमी नैर्ऋत्य	पुरुष अस्वस्थ तथा चरित्र का पतन
पश्चिमी वायव्य	धन में ह्रास, पुरुषों के शत्रु प्रबल
उत्तरी वायव्य	पति-पत्नी के बीच तनाव
दक्षिण	स्त्रीनाश तथा अकाल मृत्यु
पूर्वी आग्नेय	वंश-हानि, दुर्घटना का डर
दक्षिणी आग्नेय	पुत्रनाश, दुर्घटना, चोरी का डर
दक्षिणी नैर्ऋत्य	महिलाओं की मृत्यु, डर

अग्नि

मानव का मुख्य आधार अग्नि है। प्राचीन काल में पांच तत्वों की ही पूजा की जाती थी जिसके अन्तर्गत अग्नि को देवस्वरूप मानकर हदिस्यान्न के माध्यम से हवन आदि के द्वारा भजन-पूजन करके देवताओं को प्रसन्न किया जाता था। तेज का सम्बन्ध सूर्य और सूर्य की किरणों से भी होता है, इस वजह से पूर्व-दक्षिण दिशा तेज के लिए भवन-निर्माण के समय अग्नि स्थान का निर्धारण दक्षिण-पूर्व दिशा के बीच करना चाहिए।

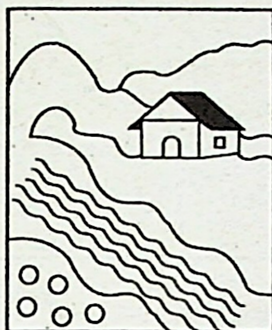
वायु–

दीर्घायु के लिए स्वच्छ हवा का होना आवश्यक होता है। मकान बनाते समय मकान में वायु संचरण के लिए उचित स्थान निर्धारित करना चाहिए। अगर वायु का संचरण प्रत्येक दिशा में होता है फिर भी स्वास्थ्य की दृष्टि से भवन-निर्माण के मौके पर वायु तथा प्रकाश का खास ख्याल रखना जरूरी होता है। इसके लिए पश्चिम-उत्तर दिशा जो वायव्य कोण के नाम से जाना जाता है, मकान के पश्चिम तथा उत्तर दिशाओं में वायु सेवन का स्थान रखना चाहिए। इस दिशा से वायु का आना दीर्घायु तथा स्वास्थ्य की निशानी है।

आकाश

आकाश से तात्पर्य आंगन से है। मकान के कमरों की ऊंचाई कमरे के अनुपात से निर्धारित करनी चाहिए, ताकि वायु का प्रवाह बना रहे। अधिक ऊंचाई की वजह से आजकल तत्व प्रभावित होता है। कहा जाता है कि अमुक भवन में प्रेत आवास है इसकी वजह है आकाश तथा वायु का सही निर्धारण न होना, वैज्ञानिकों के अनुसार मानसिक रोग में भी यह कारण दृष्टिगोचर होते गये हैं।





21



दिशाओं का महत्त्व

वास्तुशास्त्र के द्वारा विभिन्न दिशाओं का प्रभाव मनुष्य के जीवन पर इस तरह पड़ता है–

1. उत्तर दिशा

यह स्थान पैतृक स्थान कहलाता है। इसका स्वामी कुबेर को माना जाता है, इसलिए उत्तर दिशा में खाली स्थान न छोड़ने पर घर में पैतृक पक्ष की हानि होने की सम्भावना रहती है।

2. पूर्व दिशा

यह स्थान भी पैतृक स्थान कहलाता है। इसका स्वामी इन्द्र को माना जाता है और यही स्थान सूर्य का निवास स्थान है। इसलिए किसी भी भवन का निर्माण कराते समय पूर्व में खाली स्थान छोड़ना अनिवार्य है, अन्यथा वंश के मालिक को नुकसान हो सकता है।

3. उत्तर–पूर्व दिशा

इस दिशा को ईशान दिशा भी कह सकते हैं यह देवताओं का स्थान क़हलाता है, इसलिए ईशान में किसी तरह का दोष आदि नहीं होना चाहिए, क्योंकि ईशान वंश वृद्धि करता है।

4. दक्षिण दिशा

इस दिशा का स्वामी यम अर्थात् यमराज कहलाता है जो मृत्यु के देवता हैं। यह मुक्तिकारक दिशा होती है। इसलिए इस दिशा में ज्यादा से ज्यादा निर्माण कार्य करके भारी रखना चाहिए। दक्षिण दिशा शान्तिदायक तथा सुख-समृद्धि की प्रतीक है।

5. दक्षिण–पूर्व दिशा

इस दिशा को अग्नि दिशा भी कहते हैं। यह दिशा मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य की प्रतीक है।

6. दक्षिण-पश्चिम दिशा

इस दिशा को नैर्ऋत्य दिशा भी कहते हैं। इसका स्वामी राक्षस को माना जाता है। इसलिए इस स्थान पर किसी भी तरह का दोष होने पर अकाल मृत्यु की आशंका रहती है।

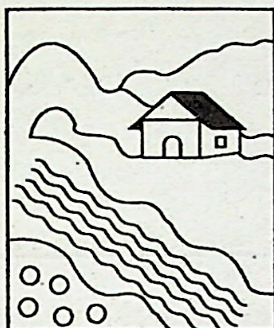
7. पश्चिम दिशा

इस दिशा का स्वामी वरूण को माना जाता है जो सुख-समृद्धि एवं शक्ति प्रदाता है।

8. पश्चिम-उत्तर दिशा

इस दिशा को वायव्य दिशा भी कहते हैं। इस स्थान पर किसी भी तरह का दोष होने पर अकारण दुश्मनी अथवा मुकदमेबाजी हो सकती है।

❑❑❑



22

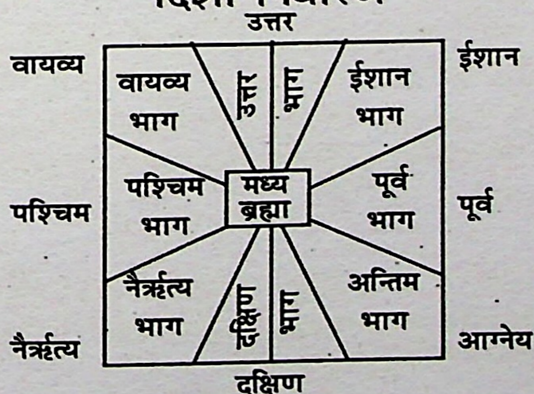


वास्तु द्वारा दिशा सम्बन्धी निर्देश

वास्तुशास्त्र के द्वारा कुछ निर्देश इस प्रकार हैं–

- आग्नेय कोण मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य प्रदान करता है।
- पूर्व दिशा में खाली व खुला स्थान छोड़ना अनिवार्य होता है। पूर्व दिशा का भाग पैतृक स्थान है। पूर्व दिशा के भाग को खुला न छोड़ने पर वंश के मालिक को नुकसान हो सकता है।
- पश्चिम दिशा यश, सफलता तथा भव्यता प्रदान करती है।
- नैर्ऋत्य में किसी प्रकार का गम्भीर दोष होना अकाल मृत्यु को निमन्त्रण देना होता है।
- उत्तर दिशा में खाली स्थान छोड़ने पर घेर में मातुल या मामा, नाना अथवा मौसी को नुकसान पहुंचा सकता है।
- वायव्य कोण अन्य आदमियों के साथ परस्पर सम्बन्ध नियन्त्रित करता है, जो दोस्तों से दुश्मनी तक हो सकते हैं।
- ईशान कोण में किसी भी तरह का दोष अथवा कटाव नहीं होना चाहिए। ईशान वंश-वृद्धि का स्थायित्व प्रदान करता है।

दिशा निर्धारण



दिशाओं तथा विदिशाओं का निर्धारण

किसी भी स्थान का दिशा निर्धारण कुतुबनुमा द्वारा किया जाना चाहिए। दिशा सूचक यन्त्र की सहायता से भूखण्ड के चारों दिशाओं का ज्ञान हो जाता है।

भूखण्ड का दिशा-ज्ञान होने के बाद उत्तर दिशा से दक्षिण की तरफ एक रेखा खींचकर भूखण्ड को दो भागों में बांटा जाता है। अब इस भूखण्ड के केन्द्र से इस रेखा के पूर्व एवं पश्चिम की 22.5° के कोण पर रेखाएं खींच लेते हैं। इस तरह कोण रेखाएं खींचकर अन्य दिशाओं तथा विदिशाओं का निर्धारण किया जाता है।

वास्तु द्वारा दिशा-ज्ञान

भारतीय वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत दिशाओं का अत्यन्त महत्त्व है। वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त पांच तत्वों तथा दिशाओं पर आधारित हैं।

भारतीय वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों पर बताने से पहले दिशाओं तथा विदिशाओं के बारे में जान लेना आवश्यक है।

पुराने जमाने में दिशा-ज्ञान के लिए अनेक साधन प्रचलित थे; जैसे सूरज के निकलने वाली दिशा से ध्रुव तारे की स्थिति की दिशा आदि। आज के दौर में तो कुतुबनुमा ही दिशाओं की जानकारी देता है। वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत चारों दिशाओं तथा उसके सहायक कोणों; अर्थात् विदिशाओं का खास महत्त्व होता है।

पुराने काल के ऋषि-मुनियों ने आधुनिक विज्ञान के विकसित होने से हजारों साल पहले पूर्व सूर्य की किरणों में निहित जीवनदायक तत्वों का पता लगा लिया था तथा इसलिए उन्होंने आवास को पूर्वीमुखी बनाने का विधान बनाया। इसके साथ ही कोणों के देवता के अनुसार गृहनिर्माण की योजना बनायी, ताकि वे मनुष्य की सुख-समृद्धि तथा आरोग्य वृद्धि में सदैव सहायक बने रहे।

चार दिशायें होती हैं—उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम। प्रातःकाल सूर्य जिस दिशा से निकलता है, उसे पूर्व दिशा कहते हैं, जिसे संस्कृत भाषा में प्राक, प्राची, पूर्व आदि शब्दों से जाना जाता है।

शाम को सूर्य छिपने की दिशा पश्चिम दिशा कहलाती है।

सुबह सूर्य की तरफ मुंह करके खड़े होने पर सामने, पूर्व, दायें हाथ की तरफ दक्षिण और बायें तरफ उत्तर एवं पीठ भाग पश्चिम दिशा होती है।

इस तरह इन दिशाओं को मिलाने के स्थान पर कोणों को विदिशा भी कहा जाता है।

1. ईशान

उत्तर-पूर्व दिशा का कोण ईशान कोण कहलाता है। पूर्व दिशा में उत्तर की तरफ स्थित ईशान कोण के स्थान को पूर्वी ईशान और उत्तर दिशा में पूर्व की तरफ स्थित ईशान को उत्तरी ईशान कहते हैं।

2. आग्नेय

दक्षिणी तथा पूर्व दिशा का भाग आग्नेय कोण कहलाता है। पूर्व दिशा में दक्षिणी छोर को पूर्वी आग्नेय और दक्षिण दिशा के पूर्व की तरफ के छोर को दक्षिणी आग्नेय कहेंगे।

3. नैर्ऋत्य

दक्षिण तथा पश्चिम के कोण को नैर्ऋत्य कोण कहा जाता है। दक्षिण दिशा के पश्चिम की तरफ वाले छोर को दक्षिण नैर्ऋत्य और पश्चिम वाले भाग को पश्चिम नैर्ऋत्य कहेंगे।

4. वायव्य

उत्तर तथा पश्चिम दिशा का कोण वायव्य कोण कहलाता है। पश्चिम दिशा के उत्तरी सिरे के भाग को पश्चिमी वायव्य और उत्तर दिशा की तरफ के छोर को उत्तरी वायव्य कहेंगे।

भूखण्ड के विषय में दिशा निर्धारण

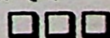
किसी भी मकान, फैक्ट्री या अन्य निर्माण कार्य में भूखण्ड अगर चौकोर हो या आयताकार उसकी दिशाओं को ठीक तरह से समझने के लिए प्रत्येक विस्तार को नौ हिस्सों में बराबर बांटा गया है।

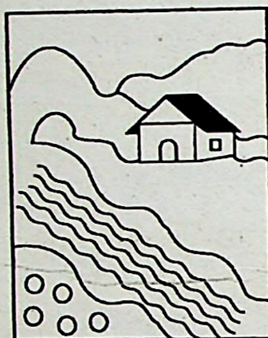
दिशा	अधिष्ठाता	दिशा	अधिष्ठाता
उत्तर	कुबेर-सोम	उत्तर-पूर्व (ईशान कोण)	सोम-शिव
दक्षिण	यम	पूर्व-दक्षिण (आग्नेय कोण)	अग्नि
पूर्व	इन्द्र-सूर्य का निवास	दक्षिण-पश्चिम (नैर्ऋत्य कोण)	नैर्ऋति
पश्चिम	वरूण	उत्तर-पश्चिम (वायव्य कोण)	वायु

पूर्व दिशा में जिस तरफ सूर्य निकलता है, उस तरफ मुंह करें तो बायीं तरफ के अन्तिम कोने के दो भाग पूर्वी ईशान कहलायेंगे तथा दहिनी तरफ के अन्तिम कोने के दो भाग पूर्वी आग्नेय तथा बीच के शेष भाग मध्य पूर्व या पूर्व कहलायेंगे।

दक्षिण में पूर्व की तरफ के दो अन्तिम भाग दक्षिणी आग्नेय और पश्चिमी दिशा वाले अन्तिम दो भाग पश्चिमी नैर्ऋत्य तथा उत्तर की तरफ के दो अन्तिम भाग पश्चिमी वायव्य कहलायेंगे। बीच के बाकी पांच पश्चिमी अथवा मध्य पश्चिमी कहलायेंगे। उत्तर में पश्चिम की तरफ के दो अन्तिम भाग उत्तरी वायव्य और पूर्वी सिरे के दो अन्तिम भाग ईशान, बीच के शेष पांच भाग उत्तर अथवा मध्य उत्तर कहलायेंगे।

ऊपर दी गयी आठों दिशाओं का मनुष्य पर काफी प्रभाव पड़ता है।





23



वास्तु में मांगलिक चिन्हों का प्रयोग

पुराने समय से ही हमारे समाज में मकान के मुख्य दरवाजे से ऊपरी भाग में मांगलिक चिह्नों का उपयोग करना शुभता की पहचान माना जाता है। भारत के लोगों का हर काम धार्मिक भावनाओं तथा परम्पराओं पर आधारित होता है। सम्पूर्ण जगत की भावना से हमारी मान्यताएं ओतप्रोत हैं। चाहे कारोबारी क्षेत्र हो या आजीविका का और चाहे भवन के निर्माण का या फिर किसी शुभ कार्य का, हमारा ध्येय परोपकार वृत्तिपूर्वक उन्हें निभाना है। हमारे पुराने पूर्वजों ने कठोर तपस्या और साधना के बल पर प्रकृति की अनुकूल तथा दिव्य शक्तियों को प्राप्त किया और जनकल्याण की भावना से धार्मिक आस्था तथा दिनचर्या के रूप में इन्हें अपनाने के संस्कार दिए।

ॐ



इस शब्द को ब्रह्मा का प्रतीक कहा जाता है। इसी शब्द से वेदों का शुभारम्भ होता है। मकानों के अन्तर्गत इसका प्रयोग मंगल चिह्न के रूप में करते हैं। यही ब्रह्मा है। जिस प्राणी ने इसके भेद को जान लिया, उसी को मनोवांछित फल की प्राप्ति भी हुई है। यह शब्द पूरे ब्रह्मा, ब्रह्माण्ड, अपरिमित बल और प्रणव का प्रतीक होता है। इस शब्द को देखने तथा उच्चारण करने मात्र से ही मन की एकाग्रता हो जाती है और शान्ति का मार्ग भी प्रशस्त होने लगता है। इसका प्रयोग शुभ होता है।

स्वास्तिक (卐)

इसका प्रयोग भी लोग पुराने समय से करते आ रहे हैं। इस चिह्न को भी शुभ माना जाता है तथा मकान के मुख्य दरवाजे के दोनों तरफ बनाया जाता है ताकि अनिष्टकारी दृष्टि से मकान की हिफाजत होती रहे। इसको गणेशजी लिप्यात्मक स्वरूप समझा जाता है।

स्वास्तिक का अर्थ

जो स्वास्तिक अथवा क्षेम कथन करता है, यह रेखाओं द्वारा बनता है। दोनों रेखाओं के बीच में समकोण स्थिति में विभाजित कर देना चाहिए। दोनों रेखाओं के सिरों पर बाईं से दाईं तरफ समकोण बनाती हुई रेखाओं को इस प्रकार आगे बढ़ाएं कि आगे की रेखा को छूने से पहले ही रुक जाए। जिस स्थिति में स्वास्तिक को रखा जाए, उसकी रचना एक-सी रहती है।



स्वास्तिक के सिरों पर निर्मित समकोण पर मुड़ी रेखाएं अन्तहीन बनाई जाती हैं। इसका कोई स्पर्श या सन्धि बिन्दु नहीं होता, क्योंकि ब्रह्माण्ड अनन्त है, यह सृष्टि चक्र के गूढ़ रहस्य का सूचक होता है। इसमें निहित दिव्य शक्ति के कारण ही यह धार्मिक आस्था का प्रतीक बन सका।

ईसाई धर्म का क्रॉस (×) चिह्न भी स्वास्तिक का ही अंग है। वास्तु में स्वास्तिक चिह्न को भवनों के द्वारों तथा दीवारों पर अंकित किया जाता है। गमन से पृथ्वी तक ब्रह्माण्ड के चतुर्भुजी आकार धन (+) के चिह्न की तरह ही स्वास्तिक चारों दिशाओं का प्रतीक है। जब इस चिह्न के अन्तर्गत चार भुजाएं दक्षिणावर्ती होकर जुड़ जाती हैं तो सूर्य का प्रतीक बन जाती हैं। क्योंकि सूर्योदय और सूर्यास्त की गणना भी दक्षिणावर्ती गति से ज्ञात होती है। स्वास्तिक का प्रयोग दिशापति देवताओं (इन्द्र, सोम, अग्नि तथा वरूण) के पूजन-अर्चन में किया जाता है।

मंगल कलश

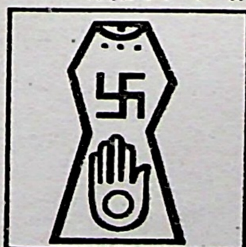
मंगल कलश वैदिक काल से ही जलपूरित तथा आम्रपत्र, पुष्प और नारियल से ढका हुआ शुभ मंगल कलश शुभता, समृद्धि और सम्पन्नता का प्रतीक माना जाता है।



क्योंकि सृष्टि का उदय जल से ही हुआ है, इसी कारण जल को ब्राह्मण्ड की उत्पत्ति का प्रतीक माना जाता है।

पंचागुलक हाथ

भारतवर्ष में मांगलिक चिह्न पंचागुलक हाथ गृहप्रवेश, पुत्रजन्म और विवाह के शुभ अवसर पर हल्दी तथा चावल की पीटी सी पीठ पर लगाने की काफी पुरानी परम्परा चली आ रही है। पांच की संख्या को पांच तत्वों की निरन्तरता, अनश्वरता का प्रतीक माना जाता है।



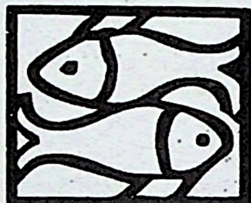
हाथों को कार्य का प्रतीक समझा जाता है। यह देवताओं की अभय मुद्रा तथा आशीष मुद्रा का प्रतीक समझा जाता

है। मकान में हाथ को मांगलिक चिह्न के रूप में स्थापित करके समृद्धि पंचमहाभूतों तथा कार्य की महत्ता को प्रकट किया जाता है।

बौद्ध धर्म के अन्तर्गत हाथ की मुद्राओं द्वारा ही विभिन्न मनोदिशाओं को संकेत के रूप में बताया गया है।

मीन

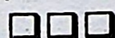
मीन को सच्चे प्रेम का प्रतीक मानते हैं। यात्रा आरम्भ करने से पहले मत्स्य दर्शन कार्य-सफलता का सूचक तथा शुभ माना जाता है। दशहरा पर्व पर मत्स्य दर्शन की प्राचीन परम्परा रही है।

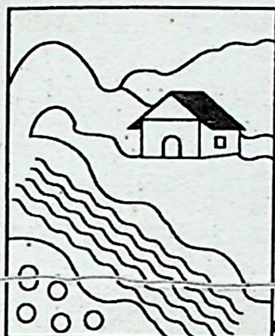


मकान के मुख्य दरवाजे पर जुड़वां मछलियों के चित्र को बनाने की परम्परा है इसके पीछे यही भावना जुड़ी हुई है कि अगर मत्स्य के साक्षात दर्शन नहीं होते तो उसके चित्र के द्वारा दर्शन होने जाने चाहिएं।

प्राचीन मान्यता के अनुसार भी विष्णु भगवान का प्रथमावतार मत्स्य ही माना गया है और प्रलय के समय मीन ने ही मनु तथा सृष्टि की रक्षा नख के रूप में की। इसको कामदेव की ध्वजा का प्रतीक भी माना गया है। इसें मुख्य दरवाजे पर मांगलिक चिह्न के रूप में अंकित करने का प्रचलन शुभता प्रदान करतां है।

ऊपर दिये गये मांगलिक चिह्नों के अलावा ईसाइयों का शुभ प्रतीक चिह्न क्रॉस (×) और मुसलमानों का शुभ प्रतीक अंक (<Λ५) और अर्द्धचन्द्र ☪ व सिक्खों का एक ओंकार (१ॐ) है। इन मांगलिक चिह्नों को भवनों के बाहर दरवाजे पर लगाना चाहिए। ये चिह्न समृद्धि और शुद्धता के प्रतीक माने जाते हैं।





24



समस्या और समाधान

वास्तु-दोष से छुटकारा पाने हेतु बिना तोड़-फोड़ के निम्नलिखित उपाय से वास्तु-दोष से मुक्ति पा सकते हैं।

मानव को सबसे अधिक शान्ति शयनकक्ष से प्राप्त होती हैं। अतः सर्वप्रथम शयनकक्ष को ही लेते हैं।

अपनी रुचि के अनुसार सुगंधित फूलों का गुलदस्ता सदैव रखें परंतु मध्य में नहीं, पलंग के सिरहाने की ओर कोने में।

आधुनिकता के कारण लोग घर या कमरों में कैक्टस के पौधे या कंटीली झाड़ियों या कांटों को गुलदस्तों या गमलों में सजाते हैं। ऐसे पौधे को नहीं लगाना चाहिए। ऐसे पौधों को लगाना पारिवारिक जीवन में कलह को बुलावा देना होता है। मुखिया के अंदर अहं की भावना अधिक होती है। घमंड में चूर होकर परिवार के सदस्यों से लड़ता-भिड़ता रहता है। भाई-भाई में किसी भी समस्या को लेकर कोर्ट-कचहरी हो जाती है। पिता की संपत्ति को लेकर कलह उत्पन्न होती है। ऐसे पुष्पों या पौधों को सजावट के लिए नहीं लगाना चाहिए, जिनमें दूध झरता हो। ये भी अशुभ होते हैं। शयनकक्ष में पलंग के आस-पास पीपल, वटवृक्ष, नीम, अरंड या गूलर के पत्ते या टहनी नहीं रखनी चाहिए अथवा इन पेड़ों की तस्वीर भी शयनकक्ष में नहीं लगानी चाहिए। इससे रोग, दुःख, कष्ट और दाम्पत्य जीवन में भी कष्ट उत्पन्न होता है। प्रायः पत्नी का स्वास्थ्य किसी न किसी रूप में खराब रहता है।

शयनकक्ष में किसी भी प्रकार के झूठे बर्तन नहीं रखने चाहिएं। इससे परिवार में रोग उत्पन्न होता है। गृहिणी का स्वास्थ्य खराब होता है। धन की कमी होने लगती है।

परिवार में कोई भी मानसिक तनाव से ग्रस्त हो तो पलंग पर मृगचर्म बिछाकर सोने से लाभ होता है। किसी भी सदस्य को रात्रि में बुरे स्वप्न आते हों तो उसे बर्तन में पानी सिरहाने रखकर सोना चाहिए।

गुप्त शत्रु द्वारा परेशान हों तो पलंग के नीचे लोहे की छुरी रखें। परिवार में

अगर कोई भयानक रोग से ग्रस्त हो तो चांदी के पात्र में परिवार में शुद्ध केसरयुक्त जल भरकर सिरहाने रखें तो अच्छा फल प्राप्त होगा।

परिवार में यदि कोई व्यक्ति मानसिक तनाव से ग्रस्त हो तो कमरे में शुद्ध घी का दीपक प्रतिदिन जलाकर रखें।

शयनकक्ष में कभी झाडू नहीं रखनी चाहिए। शयनकक्ष में तेल का कनस्तर, इमामदस्ता, अंगीठी आदि नहीं रखनी चाहिए। इनसे बुरे स्वप्न, रोग, व्यर्थ की चिंता, कलह आदि होते हैं।

शयनकक्ष में बैठकर नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। इनसे स्वास्थ्य, व्यापार, धन आदि पर बुरे प्रभाव होते हैं। सर्वदा किसी-न-किसी बात की कमी लगी ही रहेगी।

अगर सूर्य ग्रह द्वारा कष्ट हो रहा हो तो पलंग के नीचे तांबे के बर्तन में पानी रखकर सोना चाहिए अथवा तकिए के नीचे लाल चन्दन रखें। चन्द्रमा द्वारा कष्ट हो तो चांदी के पात्र में जल भरकर पलंग के नीचे रखकर सोना चाहिए अथवा चांदी के बने आभूषण धारण करें। मंगल यदि कष्ट देता हो तो सोने-चांदी मिश्रित नग तकिए के नीचे रखें अथवा कांसे के बर्तन में जल भरकर लाल चंदन देकर पलंग के नीचे रखकर सोना चाहिए।

बुध से कष्ट होता हो तो तकिए के नीचे सोना, चांदी और तांबा मिलाकर कोई आभूषण बनाकर रखें या पीतल के बर्तन में जल भरकर पलंग के नीचे रखकर सोना चाहिए। यदि गुरु द्वारा कष्ट हो रहा हो तो कांसे के बर्तन के ऊपर सोने का पानी चढ़ाकर बर्तन में पानी भरकर पलंग के नीचे रखकर सोना चाहिए या तकिए के नीचे पांच हल्दी की गांठें रखकर सोना चाहिए। शुक्र से कष्ट हो रहा हो तो नौव चांदी की मछली बनाकर उसे तकिए के नीचे रखकर सोना चाहिए। शनि द्वारा कष्ट होता हो तो लोहे के कटोरे में पानी रखकर सोना चाहिए। राहु द्वारा कष्ट हो रहा हो तो सात चांदी का सांप बनाकर उसकी आंख में काला रंग लगाकर पैर के नीचे रखकर सोना चाहिए।

इस विषय में किसी विद्वान ज्योतिष से परामर्श कर लेना उत्तम होता है।

यदि दुकान में ग्राहक कम होते हों अथवा बिक्री कम होती हो तो दुकान के चौखट या दहलीज के ऊपर सिद्ध किया हुआ वीसायंत्र स्थापित करना चाहिए।

दुकान या कार्यालय में चोरी होती हो या ग्राहक द्वारा बिना कीमत दिए वस्तुएं जा रही हों तो दुकान की चौखट के पास दो फुट गड्ढा करके विधिवत् पूजा करके मंगलयंत्र स्थापित कर देना चाहिए।

दुकान में बैठने में मन नहीं लगता हो या बरकत नहीं होती हो तो श्वेत गणपति की मूर्ति की विधिवत् पूजा करके मुख्य द्वार के आगे और पीछे स्थापित करनी

चाहिए। दुकान का मुख्य द्वार अशुभ हो या वास्तुशास्त्र के नियम द्वारा नहीं बना हो तो 'यमकीलक यंत्र' का पूजन करके स्थापना करनी चाहिए।

यदि सरकारी कर्मचारी द्वारा तंग किया जा रहा हो तो 'सूर्य यंत्र' की विधिवत् पूजा करके दुकान में स्थापना करें।

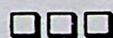
सीढ़ियों के नीचे बैठकर कोई भी महत्वपूर्ण कार्य नहीं करना चाहिए।

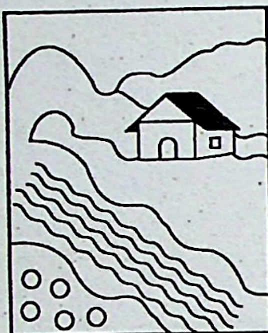
वास्तुदोष से मुक्ति पाने हेतु शुभ मुहूर्त, शुभ तिथि और शुभ मास में वास्तुपूजन अवश्य करवा लें इससे वास्तु-दोष न्यून हो जाता है।

दुकान, मकान, फैक्टरी, होटल, कार्यालय आदि स्थानों में एक बार तीन वर्ष में पूजा अवश्य करें इसका शुभ फल अवश्य प्राप्त होगा।

कलश-स्थापना कर श्री गणपति का पूजन करें, उसके पश्चात् नवग्रहों का पूजन करें। नवग्रह पूजन का विधान स्पष्ट कर रहा हूं–

सफेद वस्त्र या भूमि में गेहूं के आटे से नव कोष्ठक बनाएं, मध्य में सूर्य–सूर्य से दक्षिण मंगल, अग्निकोण में चंद्रमा, ईशान कोण में बुध, उत्तर में गुरु, पूर्व में शुक्र, पश्चिम में (सूर्य के पीछे) शनि, नैर्ऋत्य कोण में राहु और वायव्य कोण में केतु इस तरह का नववेद बनाएं। सूर्य हल्का लाल, मंगल गहरा लाल, चंद्रमा श्वेत, शुक्र रंग-बिरंगा, गुरु पीला, बुध हरा, शनि काला, राहु श्याम वर्ण, केतु धुर्क वर्ण का हो। प्रत्येक सूर्य गेहूं, चंद्रमा चावल, शुक्र सफेद उड़द की दाल, गुरु चने की दाल, बुध साबुत मूंग, मंगल मटर की दाल, शनि काला उड़द, राहु काला तिल और केतु मोठ आदि कोष्ठक में रखें, उसके पश्चात् नवकलश की स्थापना करें–कलश के मुंह पर आम का पल्व अवश्य रखें। उसके ऊपर प्रदीप घी से या सरसों के तेल में प्रज्जवलित करके ग्रहों का पूजन करें।







25

वास्तुदोष निवारण

त्रुटि स्वाभाविक है

इस संसार को बनाने वाला ईश्वर ही सर्वज्ञ है और इस दुनिया में भगवान के बनाए हुए ही निमयों-उपनियमों तथा उसके सृजन में कोई त्रुटि नहीं होगी। मगर मनुष्य अल्पज्ञ है, इसी वजह से मनुष्य के द्वारा किए गए सृजन में कोई न कोई कमी अवश्य रह जाती है। मनुष्यों की अल्पज्ञता की वजह से किसी भी निर्माण में सम्पूर्ण रूप से वास्तुशास्त्रों के नियमों का पूरी तरह से पालन करना बहुत जरूरी है।

अग्निपुराण के अन्तर्गत भी कहा गया है कि मनुष्य द्वारा जो भी कार्य किया जाता है उसमें मनुष्य की अल्पज्ञता के कारण कुछ न कुछ कमी अवश्य रह ही जाती है और यह स्वाभाविक भी है।

इसलिए किसी भी निर्माण कार्य को आदर्श रूप में वास्तुशास्त्र अनुसार बनाना बहुत मुश्किल है। ज्यादातर वास्तुदोष निर्माण के बाद परिलक्षित होते हैं कई बार तो निर्माण हो जाने पर ही वास्तुदोषों की जानकारी होती है।

थोड़े-बहुत वास्तुदोषों को तो कुछ सुधार करवाकर ही दूर किया जा सकता है। मगर जिन दोषों को निर्माण के द्वारा हम दूर करने में असमर्थ हैं उन दोषों को सिर्फ वह वास्तु सलाहकार ही दूर कर सकता है।

आन्तरिक प्रबन्ध

वास्तुशास्त्र द्वारा पूर्ण भूखण्ड का सूर्य क्षेत्र आग्नेय से वायव्य-ईशानोत्तर क्षेत्र हमेशा हल्का रहना चाहिए और चन्द्र क्षेत्र आग्नेय से वायव्य-नैर्ऋत्योत्तर क्षेत्र हमेशा भारी रहना चाहिए। सम्पूर्ण भवन के नक्शे में इस बिन्दु का ख्याल रखना जरूरी है अगर भवन वास्तुशास्त्र के अनुसार नहीं बन पाया है तो हमें क्या करना चाहिए, क्योंकि पूरे मकान का तो दोबारा से निर्माण नहीं किया जा सकता।

मगर इसके समाधान के लिए हर कमरे के भारी सामान को दक्षिणी और पश्चिमी दीवारों के साथ लगाकर रखें। उत्तरी तथा पूर्वी दिशा की तरफ जहां तक मुमकिन हो ज़्यादातर खाली जगह छोड़ें। अपने बैडरूम का भारी डबलबैड जो कि बॉक्स वाला होता है, स्टील से निर्मित आलमारी, ड्रेसिंग टेबल इत्यादि को कमरे के चन्द्र भाग यानि दक्षिणी और पश्चिमी दिशा की तरफ ही रखें।

अगर किसी कारणवश उत्तर और पूर्व की तरफ खाली स्थान छोड़ने की स्थिति न बन पाए तो इस दिशा की ओर हल्का सामान ही रखें। इसके कारण कमरे में चन्द्र भाग और सूर्य भाग हल्का हो जाएगा।

- किचन तथा अन्य कमरों की व्यवस्था भी इसी तरह करने से पूरे भवन की व्यवस्था स्वयं ही वास्तु के अनुकूल बन जाती है।
- आप अपने ड्राइंगरूम में, सोफा, दीवान आदि दक्षिणी और पश्चिमी दिशा की दीवारों की तरफ ही रखें। सेंटर टेबल को भी दक्षिण-पश्चिम दिशा की तरफ ही रखना चाहिए। अपने कमरे का उत्तरी व पूर्वी भाग बिल्कुल खाली रखना चाहिए। यह वास्तु के अनुकूल है।

आन्तरिक व्यवस्था कोणों के सन्दर्भ में

अगर आपका मकान वास्तु के द्वारा निर्मित नहीं है तो उसे देबारा तो बनाया जाएगा नहीं। मगर मकान वास्तु के एकदम ही विपरीत नहीं होना चाहिए। कुछ तो उसका सन्तुलन बना रहना चाहिए, ताकि बुरा प्रभाव न पड़े।

ईशान कोण

ईशान कोण का देवता सोम माना जाता है। यह दिशा सबसे पवित्र मानी जाती है। ईशान कोण के अन्तर्गत पूजाघर, पोर्टिको, प्रवेश द्वार व ध्यान कक्ष बनाया जाता है। इसी दिशा में जल भण्डारण का प्रबन्ध भी किया जाता है। अगर मकान वास्तु के अनुसार नहीं बना है तो ऐसी स्थिति में ईशान कोण को सन्तुलित करने के लिए निम्न बिन्दुओं का ख्याल रखना चाहिए–

- ईशान कोण वाले भाग को हमेशा साफ-सुथरा रखना चाहिए वहां गन्दगी इकट्ठी नहीं होनी चाहिए।
- ईशान कोण के भाग में पानी से भरा हुआ घड़ा, फिल्टर अथवा कैम्पर जरूर रखें।
- एक सुन्दर पेंटिंग जिसके अन्दर पानी का दृश्य जैसे बहती हुई नदी, समुद्र अथवा बादल हों उत्तरी ईशान अथवा पूर्वी ईशान में जरूर लगा दें। दीवार पर ट्रांसपेरेंट टेप भी चिपकायें।
- कील आदि भी इस स्थान पर न लगायें।

- अगर इस स्थान में शेल्फ अथवा आलमारी हो तो उनमें हल्का सामान ही रखना चाहिए।
- ईशान कोण में होना निषेध माना जाता है उसे हटा देना चाहिए या फिर उसका उपयोग ही न किया जाये तो यह उत्तम होगा।

इन उपायों का उपयोग करने से ईशान कोण द्वारा उत्पन्न विषमता को काफी हद तक दूर कर सकते हैं।

आग्नेय कोण

आग्नेय कोण का देवता अग्नि होने से तेज उसका गुण है इसलिए रसोई-घर इसी स्थान में बनाना उपयुक्त माना जाता है। आग्नेय कोण को संतुलन में लाने के लिए निम्न बातों को प्रयोग में लाएं—

- अगर आपका बैडरूम आग्नेय कोण में स्थित है तो उसे फौरन बदल देना चाहिए। अगर किसी कारणवश उसे बदलना असम्भव हो तो ऐसी स्थिति में बैड को आग्नेय दिशा से प्रभावित भाग में नहीं रखना चाहिए, इसे दक्षिणी-उत्तरी भाग में रखना चाहिए, नहीं तो मकान में रहने वाला मकान का मालिक दाहग्रसित रहेगा, इसलिए ऐसी स्थिति से बचें।
- अपने मकान के आग्नेय कोण में हमेशा एक बल्ब जलता रहने दें। इस भाग में अगर आप ड्राइंगरूम बनायें तो ज्यादा उत्तम होगा।
- इस भाग में हमेशा एक सीनरी लगाएं, जिसके अन्तर्गत उगते हुए सूरज का दृश्य हो।
- अपने मकान की फिटिंग आदि अच्छी प्रकार कराएं।
- मैनस्विच, फ्रिज आदि भी आग्नेय कोण में ही रखें, वास्तु द्वारा यह उत्तम है।
- घर की महिलाओं को गैस पर खाना बनाते समय भी सावधानी रखनी आवश्यक है।

नैर्ऋत्य कोण

नैर्ऋत्य दिशा का प्रतिनिधि कोई देवता न होकर दैत्य है इसलिए नैर्ऋत्य दिशा के निर्माण के लिए ज्यादा सावधान रहना चाहिए, क्योंकि इस भाग की विषमता से जीवन में आकस्मिक दुर्घटनाएं और अचानक विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती है।

- अगर आपके मकान का नैर्ऋत्य भाग बढ़ा हुआ है तो छत पर छोटा बल्ब व बढ़े हुए हिस्से को छोड़कर तथा वायव्य के किनारे पर छोटा बल्ब लगायें जिससे बढ़ा हुआ हिस्सा छूट जाए। रात के समय इन दोनों

बल्बों को जला देना चाहिए। मगर इस दौरान एक बात का ध्यान रखें कि आपके पड़ौसियों को इससे परेशानी न हो।

- अगर आपके मकान का नैर्ऋत्य भाग कटा हुआ है तो तब मकान के अन्दर पूरी दीवार पर दर्पण का प्रयोग इस तरह करें कि अन्दर से नैर्ऋत्य कटा हुआ महसूस न हो।
- नैर्ऋत्य का निर्माण समकोण (90°) पर होना चाहिए।
- नैर्ऋत्य भाग में भारी-भारी सामान रखना चाहिए।
- नैर्ऋत्य दिशा के अन्तर्गत सुन्दर सौभाग्यवती व सौम्य स्त्री की तस्वीर लगानी चाहिए।

वायव्य कोण

इस भाग का देवता पवन देव को माना जाता है जिनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति चंचलता ही है। अगर इसमें विषमता उत्पन्न हो तो घर का मालिक स्थिरचित्त नहीं रह पाता और ठीक प्रकार से सो भी नहीं सकता।

- अगर आप अपने कन्या के विवाह के विषय में परेशान हैं तो उसके सोने का प्रबन्ध वायव्य कोण में करने से उसका सम्बन्ध जल्दी से कहीं तय हो जायेगा।
- इस स्थान में घर का मालिक अपने सोने का प्रबन्ध कभी न करे।
- इस दिशा में अध्ययन कक्ष बनाना उत्तम माना जाता है।
- वायव्य कोण को सूना नहीं छोड़ना चाहिए।
- इस कोण में मधुर ध्वनि वाली एक घड़ी लगाकर रखें।

द्वार का वास्तु द्वारा निवारण

ढलान मुख्य प्रवेश द्वार से मार्ग की तरफ रहना चाहिए।

- दरवाजे के सामने कम-से-कम दुगुनी लम्बाई का चबूतरा बनाना जरूरी होता है।
- मुख्य प्रवेश द्वार की जितनी चौड़ाई है उसकी दुगुनी चौड़ाई का चबूतरा बनाना चाहिए।
- अपने मुख्य दरवाजे के सामने स्वच्छता और सफाई रखनी चाहिए, नहीं तो धन फिजूलखर्ची में जायेगा।
- मुख्य प्रवेश द्वार के मार्ग के दोनों तरफ फूल आदि लगाना चाहिए। यह स्थिति शुभ मानी जाती है।
- आपके मुख्य दरवाजे के सामने वाला रास्ता संकरा नहीं होना चाहिए।

बहुमंजिली इमारत का वास्तु द्वारा निवारण

अगर आपके मकान के समीप कोई मल्टी स्टोरी बिल्डिंग है, तब उसका बुरा प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। इस स्थिति से घर के मालिक के मन में हीन भावना उत्पन्न हो जाती है और उसके कार्य करने की क्षमता कम होने लगेगी।

- अपने मकान के दरवाजे पर प्रकाश व्यवस्था का प्रबन्ध ठीक प्रकार से करना चाहिए। बल्ब का प्रकाश अपने मकान के फ्रंट ऐलीवेशन पर पड़ना चाहिए।
- अपने मकान में दर्पण इस तरह लगायें कि बहुमंजिली इमारत का प्रतिबिम्ब उस पर पड़े।
- मकान पर हवा से घूमने वाला यन्त्र लगाना चाहिए जिसके अन्तर्गत एक तीर भी लगा रहता है, उसकी दिशा बहुमंजिली इमारत की तरफ ही रखनी चाहिए।

इन उपयों को कोण वेध के लिए प्रयोग में लाना उत्तम होता है। अगर किसी दूसरे मकान का कोना आपके मकान के सामने आ रहा है, लेकिन कोण वेध तभी माना जायेगा जब दोनों के बीच की दूरी आपके मकान की ऊंचाई से दुगनी दूरी से कम होगी।

भार तुला द्वारा उत्पन्न दोष का निवारण

आपके मकान में बीम का महत्त्वपूर्ण स्थान है इसी के द्वारा मकान की संरचना होती है बीम की संरचना का भार स्तम्भ अथवा दीवारों पर स्थानान्तरित करती है। इस पर Bending Moment आता है। जिससे बीम Moment का प्रभाव छोड़ता है अगर कोई आदमी बीम के नीचे बैठता, सोता या काम करता है, ऐसी स्थिति में वह एक प्रकार से दबाव में कार्य करता है।

- बीम के दोनों तरफ समान आकार की बांसुरियां लगा देनी चाहिएं।
- बीम को False ceiling Tiles से ढक देना चाहिए।
- बीम के नीचे बैठकर काम करना और सोना नहीं चाहिए।

रंगों द्वारा निवारण

जैसे कि माना जाता है कि प्रकाश ही जीवन है तथा रंग प्रकाश में अन्तर्निहित होता है। प्रकाश की एक किरण में इन्द्रधनुष के सात रंग निहित हैं। रंगों की विभिन्नता उनकी तरंग लम्बाई की विभिन्नता के कारण है।

प्रकृति का कोई भी पदार्थ गुणरहित नहीं होता है। क्योंकि प्रकृति का निर्माण

गुणों के संघात के अनुसार ही हुआ है। इसलिए अलग-अलग रंग भी गुणों की भिन्नता की वजह से मानव-जीवन पर अलग-अलग असर डालते हैं। जिसकी व्याख्या हर क्षेत्र के सलाहाकार ने अलग-अलग ढंग से की है।

अष्ट चक्रों पर रंगों का प्रभाव

मनुष्य के शरीर में ध्यान के आठ केन्द्रों को तलाश किया गया है जिन्हें अष्ट चक्र द्वारा इंगित किया जाता है। अष्ट चक्रों पर प्रकाश के सात रंगों का प्रभाव पड़ता है। यह बड़े ही कठिन और दुरूह प्रयोगों द्वारा अनुभव किया गया है। किस चक्र पर किस रंग का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है यह इस प्रकार समझा जा सकता है—

अष्ट चक्र	रंग
1. माणिपूरक चक्र	पीला
2. स्वाधिष्ठान चक्र	नारंगी
3. मूलाधार चक्र	लाल
4. कुण्डलिनी चक्र	लाल
5. अनाहत चक्र	हरा
6. सहस्त्रार चक्र	बैंगनी
7. विशुद्ध चक्र	नीला
8. आज्ञा चक्र	नीला

त्रिदोषों पर रंगों का प्रभाव

सर्वाधिक प्राचीन और प्रामाणिक चिकित्सा पद्धति भारतीय आयुर्वेद विश्व की पद्धति है। अनेकों बीमारियों को आयुर्वेद में तीन दोषों के अन्तर्गत रखकर चिकित्सा की जाती है। यह तीनों बीमारी वात, पित्त और कफ के नाम से जानी जाती हैं। किस रंग का किस रोग पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, यह जानकारी आयुर्वेद से मिलती हैं।

कफ रोग — लाल
वात रोग — नीला
पित्त रोग — पीला

इन रोगों की चिकित्सा के लिए रंगों का प्रयोग किया जाता है, जिसे आधुनिक चिकित्सा में 'क्रोमोथेरेपी' नाम से पहचाना जाता है।

दिशा से सम्बन्धित रंग

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा किसी भी निर्माण को आध्यात्मिक और मानसिक संवेदना की दृष्टि से देखने पर पता चलता है कि मकान में पांच महाभूतों में से

कौन-सा तत्व शुभ तथा कौन-सा अशुभ है। उसी के अनुसार ही दोषों का निवारण किया जाता है और रंगों का उचित तथा समीचीन प्रयोग भी उक्त दोष के निवारण के लिए किया जाता है। नीचे सारिणी के जरिये आपको समझाया जा रहा है कि पांच महाभूतों पर किस रंग का प्रभाव पड़ता है और प्रत्येक तत्व के गुण धर्मों; जैसे रंग, स्वाद, स्वभाव, तन्मात्रा तथा ज्ञानेन्द्रिय का वर्णन इस प्रकार है–

तत्व	सम्बन्धित रंग	स्वाद	स्वभाव	तन्मात्रा	ज्ञानेन्द्रिय	प्रभावित कोण
पृथ्वी	पीला	मीठा	भारी	गन्ध	नासिका	नैर्ऋत्य
जल	सफेद	कसैला	शीतल	रस	जिह्वा	ईशान
अग्नि	लाल	चटपटा	गर्म	रूप	चक्षु	आग्नेय
वायु	धूम्र	खट्टा	चंचल	स्पर्श	त्वचा	वायव्य
आकाश	मिश्रित	कड़वा	मिश्रित	शब्द	कर्ण	अज्ञात आनुपातिक प्रभाव

इस सारिणी के अनुसार प्रत्येक भाग बैडरूम, ड्राइंगरूम तथा लॉबी के सामने दृश्य पर विभिन्न रंगों का उपयोग किया जा सकता है।

रंगों का विशेष प्रभाव

मनुष्य के जीवन के हर क्षेत्र पर वास्तु का प्रभाव पड़ता है। अगर रंगों को वास्तु से निकाल दिया जाए तो ये जीवन रंगहीन और आनन्दरहित हो जाएगा। आपके खाने-पीने और जीवन शैली का प्रभाव सबसे पहले शरीर व मस्तिष्क के विकास पर पड़ेगा मगर रंगों का असर सीधे-सीधे मानसिकता तथा संवेदनाओं पर होगा, इसके बाद शरीर इन प्रभावों को ग्रहण करके उसी के अनुसार काम करने लगेगा, यह निर्विवाद है। इस बात का पता लगाया गया है कि किस रंग का जीवन के किस क्षेत्र पर प्रभाव पड़ता है, जो कि वैदिक साहित्य के तर्कों की पुष्टि ही करता है। प्राकृतिक चिकित्सक हमेशा से ही रंगीन शीशे की बोतलों में पानी भरकर विभिन्न रोगों में अनेक रंगों से सूर्य प्रकाश में चार्ज करके प्रयोग करते रहे हैं।

प्रत्येक रंग का मानव के जीवन और उसके किस विशेष क्षेत्र पर कैसा प्रभाव पड़ता है, इस बात को नीचे समझाया जा रहा है।

इसका शारीरिक, मानसिक और संवेदनाओं पर कैसा प्रभाव पड़ता है, ये जानने में सरलता रहेगी।

लाल

लाल रंग रक्त-संचरण को तीव्र करता है। स्फूर्ति तथा सजगता को बढ़ाता है और अवसाद को कम करता है।

नारंगी

नारंगी रंग विश्वास और प्रसन्नता को बढ़ाने वाला होता है। थकान और अकेलेपन के अहसास को दूर करता है।

पीला

पीला रंग अवसाद और नैराश्यपूर्ण विचारों को कम करने वाला और स्मृति तथा प्रेरणास्पद विचारों को बढ़ाने वाला होता है।

बैंगनी

बैंगनी रंग अच्छे विचारों को बढ़ाने और आनन्द प्रदान करने वाला, मानसिक दृढ़ता बढ़ाने वाला और क्रोध कम करने का प्रभाव रखता है।

नीला

नीला रंग तनाव दूर करने और धैर्य बढ़ाने का प्रभाव डालता है। ब्लड प्रेशर को कम करता है, धड़कन की गति को नियन्त्रित करता है और विचारों में भी स्थिति एवं मानसिक दृढ़ता को प्रदान करता है।

हरा

हरा रंग ऊर्जा को बढ़ाने वाला, धन-लाभ करवाने वाला और सौभाग्यवर्द्धक प्रभाव रखता है। व्यावहारिक तथा भद्रता को बनाता है।

फूल और पौधों के द्वारा निवारण

वास्तुशास्त्र द्वारा आप अपने ड्राइंगरूम् और बैडरूम में से रोज़ाना मुरझाए हुए फूलों को हटा दें और उनके स्थान पर ताजे फूल लगाएं, जिससे वातावरण मनमोहक, सुगन्धित और प्रसन्नता से परिपूर्ण रहे।

अपने मकान के लॉबी और सोपान के समीप उपयुक्त स्थान पर फूल और पौधों के गमले रखने चाहिएं। कुछ फूलों और पौधों को तीन-चार दिन में एक बार धूप में रखने पर भी उनमें जीवन्तता बनी रहती है। इस प्रकार के पौधों को लॉबी, बैठक, बैडरूम में रखें। अपनी डायनिंग टेबल पर ताजे फूलों का गुलदस्ता रखना चाहिए।

अगर किसी कारणवश वास्तविक पौधे न रखे जायें तब प्राकृतिक रंगों के बनावटी और सजावटी पौधों को अनेक स्थानों में रखें।

फिश एक्वेरियम का उपयोग

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा आपके मकान के वायव्य कोण घर के मालिक के विचारों को उन्नति की तरफ प्रेरित करता है और जीवन्तता को बनाए रखने का स्थान होता है। जो निरन्तर क्रियाशील का नियामक है इसलिए वायव्य कोण से

प्रभावित क्षेत्र में फिश एक्वेरियम रखना फायदेमन्द रहता है। जिसके अन्तर्गत मछलियां निरन्तर गतिमान रहती हैं और उसमें बराबर पानी के बुलबुले उठते रहते हैं। वास्तुशास्त्र द्वारा यह गतिशीलता वायव्य क्षेत्र के लिए विहित है।

अध्ययन कक्ष

वास्तुशास्त्र द्वारा अध्ययन कक्ष के लिए पूजाघर के निकट ईशान और पूर्व मध्य के बीच का स्थान उचित माना जाता है। इसके अतिरिक्त नैर्ऋत्य दिशा और पश्चिम मध्य के बीच वाला स्थान भी अध्ययन के लिए सही माना जाता है। यह स्थान बुध, बृहस्पति, चन्द्र तथा शुक्र का स्थान होने से और अध्ययनकर्त्ता पूर्व और उत्तर की तरफ मुंह करके अध्ययन करने से प्रज्ञावान हो जाता है और उस व्यक्ति को धन-सम्पदा तथा यश की प्राप्ति होती है।

मनोरंजन तथा बाल कक्ष

भरतीय वास्तुशास्त्र द्वारा बच्चों के लिए बाल कक्ष वायव्य में बनवाना उचित माना जाता है। वायव्य कोण को पवन देवता से प्रभावित क्षेत्र माना जाता है जो कि चपलता और शक्ति प्रदान करता है। यह स्थान बच्चों की जिज्ञासा और ज्ञान में वृद्धि करता है।

वास्तुशास्त्र द्वारा मनोरंजन कक्ष भी वायव्य में और मध्य दक्षिण में शास्त्र विहित है। मनोरंजन कक्ष में भी भारी चीजों को नैर्ऋत्य दक्षिण और पश्चिम में रखना चाहिए और ईशान उत्तर-पूर्व दिशा के भागों को खाली तथा हल्का रखना चाहिए।

आंगन

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा आंगन भवन के बीच में ब्रह्म स्थान पर होता है जिसका वर्णन पूर्व में किया जा चुका है। इसके बारे में वृहत् संहिता में कुछ अन्य निर्देश भी दिये गये हैं, जिनका पालन करना मंगलकारी सिद्ध होता है।

वृहत् संहिता के अन्तर्गत यह बताया गया है कि हर प्रकार के सुख की अभिलाषा रखने वाले घर के मालिक को ब्रह्म स्थान की यत्नपूर्वक संभाल करनी चाहिए। ब्रह्म स्थान यानि आंगन पर झूठा भोजन, किसी भी तरह की अपवित्र चीज जूते तथा कूड़ा-करकट आदि न रखें और ब्रह्म स्थान पर शौचालय नहीं बनवाना चाहिए।

सभी प्रकार से शुद्ध वास्तु होने के कारण घर के मालिक को सुख-समृद्धि, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार अगर ब्रह्म स्थान पर कूड़ा-करकट व गन्द भी रहती

है तो ऐसी स्थिति में घर के छोटे सदस्य बड़ों का अपमान करने लगते हैं। आंगन के बीच में कूप अथवा हैण्ड पम्प आदि नहीं बनवाना चाहिए।

जहां तक मुमकिन हो आंगन को ऊपर से खुला ही रखना चाहिए। अगर किसी कारणवश आंगन खुला न रखा जा सके तो उस हालत में आंगन के ऊपर 1 या 2 फुट ऊंची दीवारें छत पर चारों तरफ बनवाकर चारों तरफ ग्रिल की खिड़कियां बनवा दें जिनमें शीशा अथवा प्लास्टिक शीट लगवाई जा सकती है तथा ऊपर से कवर रखवा दें।

डायनिंग रूम

वास्तुशास्त्र द्वारा शुद्ध वायु, जल तथा आहार मानव-जीवन की सर्वप्रथम जरूरत है। हवा की परिस्थिति व पर्यावरण सुधार पर उसकी गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है। जल का शोधन करके उसकी गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है। इसी तरह आप अपने भोजन की भी निम्नलिखित उपयों द्वारा गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं—

(अ) आहार को प्रेम-प्रीति द्वारा उचित रीति से पकाना चाहिए।

(ब) शुद्ध तथा पौष्टिक ताजा अनाज, फल एवं शाक उपयोग करके आप उसमें वृद्धि कर सकते हैं।

(स) अपने आहार को वास्तु के अनुकूल स्थान पर उचित रीति से ग्रहण करके भी वृद्धि की जा सकती है।

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा अपने आहार को श्रद्धापूर्वक उचित स्थान पर ग्रहण करने के लिए मकान में मध्य पश्चिम दिशा को उपयुक्त बताया गया है। जब आप मध्य पश्चिम में खाना खायें तो उस वक्त आपका मुंह पूर्व दिशा की तरफ होना चाहिए।

इस आधुनिक दौर में एक स्थान को अधिक उपयोग की दृष्टि से डायनिंग रूम और ड्राइंगरूम को सम्मिलित रूप से काम में लिया जाता है, इसलिए वायव्य तथा मध्य पश्चिम तक की स्थिति आदर्श मानी गयी है। वास्तु द्वारा इन उपायों का प्रयोग करें।

ड्रेसिंग रूम

सबसे पहले व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रभाव उसके पहने गए कपड़ों तथा उसके पहनने के तरीकों का पड़ता है जिसका एक खास प्रभाव अन्जान मनुष्य पर पड़ता है। जिसके द्वारा वह हमारे विषय में अन्दाजा लगाता है।

इसी वजह से शृंगार कक्ष वास्तुकला में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। भारतीय वास्तुशास्त्र में शृंगार कक्ष दूसरे कक्षों के समतुल्य ही था मगर इस आधुनिक

दौर में ड्रेसिंग टेबल तक ही सिमट गया। इसलिए ड्रेसिंग रूम को बैडरूम के स्नानागार के साथ भी रख सकते हैं। मगर सबसे ज्यादा उत्तम स्थान नैर्ऋत्य कोण में है जिसे घर के मालिक के ोड़रूम के साथ भी रख सकते हैं।

वास्तुशास्त्र द्वारा ड्रेसिंग टेबल को बैडरूम की पूर्वी तथा दक्षिणी दीवार के साथ ही रखा जा सकता है। रात के समय दर्पण को साफ कपड़े से ढक देना चाहिए, जिससे बैडरूम में सोने वाले व्यक्ति पर बुरा प्रभाव न पड़े।

कोषागार

आज के दौर में सफल व्यक्ति वही माना जाता है जो कि ज्यादा-से-ज्यादा धन की प्राप्ति करता है, उपयुक्त वियोजन करता है। उसे बढ़ाता है तथा पूरे तरीके से उसकी हिफाजत करता है।

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा अपना धन उत्तर दिशा के अधिष्ठाता देवता कुबेर से प्रभावित भाग में रखना चाहिए, ऐसा करने से धन में वृद्धि होती जाती है। उत्तर दिशा के मध्य भाग में आलमारी बनवा लेनी चाहिए। उसमें नकद राशि, कीमती सामान और गहने रखना उत्तम रहता है। इसके द्वारा धन में वृद्धि बढ़ती जाती है।

द्वार, बरामदा, बालकनी, टैरेस तथा पोर्टिको

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा मकान के निर्माण के दो भाग किए गए हैं। वायव्य से आग्नेय के कर्ण से ईशान तक का त्रिभुजाकार क्षेत्र सूर्य और कर्ण से नैर्ऋत्य तक का त्रिभुजाकार क्षेत्र चन्द्र क्षेत्र कहलाता है।

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा चन्द्र भाग में ज्यादा निर्माण और अधिक भार होना चाहिए, अपेक्षाकृत सूर्य के निर्माण से बरामदा बन जाने से निर्माण हल्का रहता है। इसलिए बरामदे का निर्माण हमेशा ईशान में ही करना चाहिए और बरामदे के लिए पूर्व तथा उत्तर दिशाएं भी उपयुक्त रहती हैं। आपके बरामदे के स्तम्भ भी गोल रहने चाहिएं।

आपके मकान के फर्श ऐरिया के बाहर कमरे की चौड़ाई या लम्बाई के एक-तिहाई (1/3) बरामदा या गैलरी बनानी चाहिए।

बालकनी उत्तर तथा पूर्व दिशा की तरफ बनवानी चाहिए अगर आप बालकनी पश्चिम तथा दक्षिण की तरफ बनायें तो ऐसी स्थिति में पूर्व तथा उत्तर की तरफ बालकनी उससे अधिक बड़ी होनी चाहिए। जिसके कारण उत्तर तथा पूर्व की दिशाओं का ज्यादा-से-ज्यादा फायदा मिल सके।

आप अपने टेरेस का निर्माण भी ईशान की तरफ ही कराएं। या फिर आप

इसे पूर्व व उत्तर दिशा में भी बना सकते हैं। इसकी ऊंचाई मकान की ऊंचाई से कम ही होनी चाहिए।

टेरेस की लम्बाई भी मकान की ऊंचाई से कम होनी चाहिए। इसका निर्माण भी ईशान तथा पूर्वी ईशान वाले भाग में ही होना चाहिए। दरवाजे के बाहरी स्तम्भ चौकोर होने चाहिएं, इन्हें गोल आकार में ही बनाएं।

भण्डारकक्ष

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा आपका भण्डारकक्ष मध्य दक्षिण में उचित माना जाएगा। उसके अन्तर्गत शैलम और सामान रखने के लिए आलमारियां तथा टांड दक्षिण व पश्चिमी दीवारों पर बना होना चाहिए।

वास्तु द्वारा उत्तर तथा पूर्व की दीवारों में अलमारियां दीवार के अन्दर भी बनाई जा सकती हैं। मगर उनमें अपेक्षाकृत हल्का सामान ही रखा जाना चाहिए। उत्तर तथा पूर्व की दीवारों में आलमारियां बनवाने से उत्तर व पूर्व की दीवारों का भार हल्का हो जाता है।

अगर प्लॉट का आकार कम हो—और भण्डारकक्ष की जगह नहीं निकल पा रही हो तब दक्षिणी तथा पश्चिमी दीवार के साथ-साथ छत की ऊंचाई तक आवश्यकतानुसार आलमारियां बनवाई जा सकती हैं, जिनकी गहराई 2 फुट या सवा दो फुट रखी जा सकती है। जिसे विपरीत दिशाओं में जरूरत के मुताबिक दोनों तरफ भी काम में लिया जा सकता है। इसे वास्तु द्वारा घरेलू सामान और भारी वस्तुएं रखने के भी काम में लिया जा सकता है।

सीढ़ियां तथा सोपान

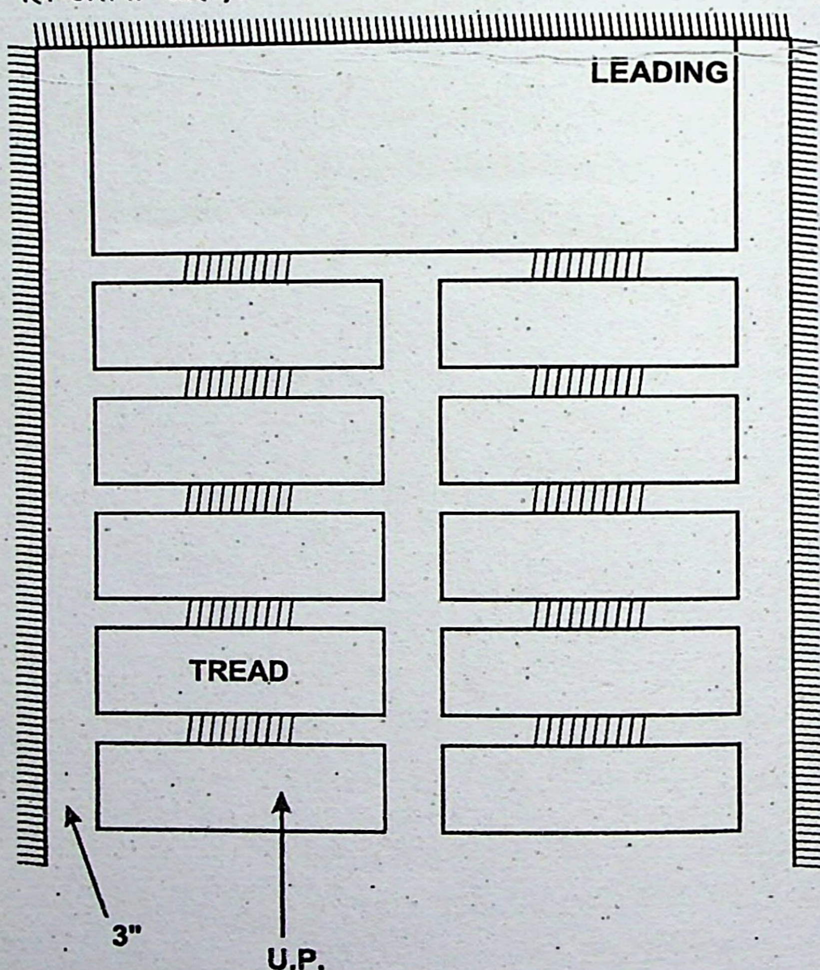
अपने मकान के अन्दर सोपान जरूरत के मुताबिक आप कहीं भी बना सकते हैं। वास्तुशास्त्र के द्वारा सोपान को मकान के पूर्व-पश्चिम तथा उत्तर-दक्षिण की धुरी पर भवन में कहीं भी बनाया जा सकता है। यह धुरी मध्य सोपान Up to Landing होगी, उसके पश्चात् सीढ़ियां दक्षिणावर्त ही घुमाव लेंगी, या वो समकोण पर मुड़ें या फिर विपरीत (180^0) दिशा में मुड़ें; अर्थात् छत पर चढ़ने वाला आदमी क्लॉक वाइज ही मुड़ना चाहिए।

एक बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि सोपान का प्रथम मंजिल पर दरवाजा अनुकूल दिशा में खुलना चाहिए तथा उत्तर, ईशान, पूर्व एवं दक्षिण, आग्नेय व पश्चिमी वायव्य भी मान्य हैं।

वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके मकान में सोपान की स्थिति दक्षिण नैर्ऋत्य तथा पश्चिम दिशा उत्तम मानी जाती है। सीढ़ियों की पहली मंजिल पर दमदमा

बनाया जाता है। जिससे पहली मंजिल पर ऊंचाई बढ़ जाती है। नैर्ऋत्य में दमदमा बनवाया जाए तो सही रहता है। अगर आप दूसरी जगह इसे बनवायें तो नैर्ऋत्य दिशा में इससे बड़ा तथा ऊंचा निर्माण करवाना जरूरी हो जाता है।

आर०सी०सी० की सीढ़ियां बनाने से यह सरल हो गया है कि उत्तरी तथा पूर्वी दीवारों से सीढ़ी 3 या 4 इंच दूर रखी जाये। उत्तरी तथा पूर्वी दीवारों पर ज्यादा भार नहीं डालना चाहिए।

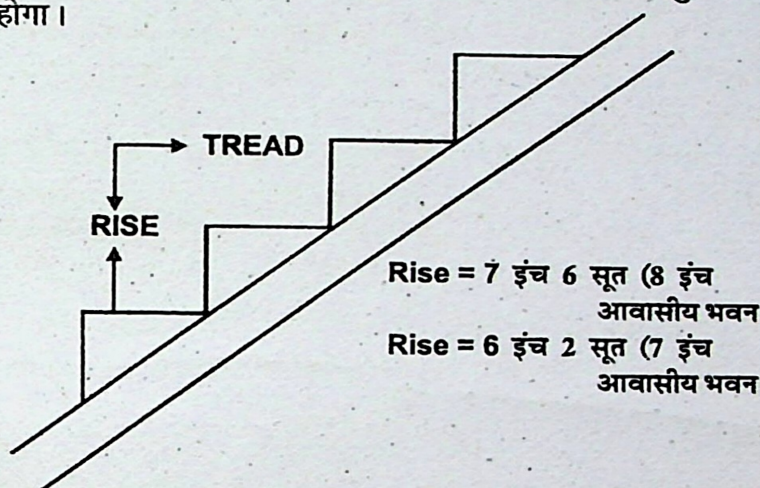


वास्तु द्वारा संख्या निर्धारण के लिए एक सामान्य नियम काम में लाया जाता है—

(अ) आपकी सीढ़ियों की संख्या विषम हो।

(ब) जितनी सीढ़ियों को बनाया जाए, जैसे कि 17 उसमें 3 का भाग देने

पर बाकी दो बचे 17÷3 इस तरह सीढ़ियों का निर्धारण करने से वह शुभ तथा मंगलकारी होगा।



आवासीय मकानों के अन्तर्गत सीढ़ी की चौड़ाई Tread 10 इंच से 12 इंच तक रखा जा सकता है। मगर सार्वजनिक भवनों, अस्पताल, विद्यालयों, राजकीय कार्यालयों, कॉम्पलैक्स आदि में 1 फुट से 1½ फुट तक Tread रखा जा सकता है।

सर्वेन्ट क्वार्टर

अगर आप किसी बड़े मकान का निर्माण करना चाहते हैं तो उसके साथ-साथ सर्वेन्ट क्वार्टर बनाना भी जरूरी होता है। घर के मालिक के नौकर जो हमेशा आपकी सेवा में लगे रहते हैं उनके रहने का प्रबन्ध मुख्य भवन से बाहर किया जाना चाहिए। इस प्रकार घर के मालिक के व्यक्तिगत तथा कार्यक्षेत्र की गोपनीयता बनी रहती है।

इस तरह मालिक और नौकर के बौद्धिक, मानसिक तथा सामाजिक स्तर में भी काफी अन्तर आ जाता है तथा उनके संस्कारों में भी काफी हद तक अन्तर आ जाता है।

इसलिए सर्वेन्ट क्वार्टर मकान से अलग बनाना बहुत जरूरी माना जाता है। वास्तु द्वारा यह निर्माण सम्पूर्ण वास्तुपुरुष मण्डल पर क़ाफी प्रभाव डालता है। वास्तुशास्त्र द्वारा अगर इसे उपयुक्त स्थान न दिया जाये तो नकारात्मक प्रभाव डालता है। इसलिए इसे दक्षिणी तथा पश्चिमी दिशाओं में स्थान देना उपयुक्त होता है। सर्वेन्ट क्वार्टर को पूर्व तथा उत्तर दिशा की तरफ ही बनाना चाहिए। नहीं तो ये स्थिति आपके मकान पर नकारात्मक प्रभाव अवश्य डालेगी।

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा उत्तर तथा पूर्व दिशा की तरफ ज्यादा खुला हुआ स्थान नहीं छोड़ना चाहिए। अगर आपने नैर्ऋत्य दिशा में क्वार्टर बनाया है तो तब सर्वेन्ट क्वार्टर का प्लिंथ लेवल मुख्य मकान के प्लिंथ लेवल से कम-से-कम 1 फुट अधिक ऊंचा रखना सही माना जाता है।

आपके मुख्य भवन का नैर्ऋत्य दिशा वाला भाग भारी तथा अधिक ऊंचा रहना चाहिए। वायव्य तथा आग्नेय कोण में यदि स्थान देना हो तो तब पूर्वी तथा उत्तरी दीवारों से लगभग दो हाथ यानि 3 फुट दूर रखना ज्यादा जरूरी होता है।

अगर इसके साथ ही आप अपने गैराज का भी निर्माण करना चाहते हैं तो तब नैर्ऋत्य दिशा में उसी गैराज के ऊपर सर्वेन्ट क्वार्टर बनाना ज्यादा सही रहता है। भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा यह सब सरल उपाय है।

गैराज

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा गैराज का निर्माण ईशान कोण में नहीं करना चाहिए। ईशान कोण में पोर्टिको अथवा दरवाजा बना होता है जिसके अन्तर्गत वाहन आदि अस्थायी तौर पर रुक सकते हैं।

वास्तु द्वारा गैराज को नैर्ऋत्य तथा वायव्य में बनाया जाये। अगर इन दोनों कोणों में न बन सके तब इसे आग्नेय कोण में बनाया जा सकता है। लेकिन ईशान कोण में इसे भूलकर भी नहीं बनाना चाहिए। वरना यह आपके लिए अवरोध बन सकता है तथा घर के मालिक की सुख-सम्पन्ता में बाधा भी उत्पन्न कर सकता है।

गैराज बनाने के लिए एक बात ध्यान रखना अति आवश्यक है कि इसकी दीवारें बाउन्ड्री वाल न बनाई जायें। इसकी दीवारों को कम-से-कम 3 फुट अन्दर की तरफ ही बनाना चाहिए। अगर आपने अपने गैराज का निर्माण नैर्ऋत्य दिशा में किया गया है तो आप निश्चिंत होकर इसके ऊपर सर्वेन्ट क्वार्टर बना सकते हैं।

दुछत्ती

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा अगर आपके मकान के फर्श की जगह कम हो और उसमें स्टोर की जगह भी न निकल पा रही हो तो जगह का सदुपयोग करने के लिए दुछत्ती का निर्माण कर सकते हैं।

दुछत्ती के अन्तर्गत ऐसा सामान रखा जाता है जिसकी जरूरत हमें कभी-कभी ही पड़ती है। दुछत्ती के निर्माण के लिए दक्षिण, पश्चिम तथा नैर्ऋत्य का स्थान उपयुक्त माना जाता है।

गौशाला

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा गौशाला दक्षिण दिशा में फूल वाटिका उत्तर दिशा में होनी चाहिए। वास्तु द्वारा उत्तर दिशा में आप अपना किचन गार्डन भी बना सकते हैं। वास्तु द्वारा आपकी गौशाला बनाने का उत्तम स्थान वायव्य कोण है। यह गौशाला के लिए उचित माना जाता है।

बूढ़ों का कमरा

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा वृद्धों के लिए ऐसा स्थान होना चाहिए, जिससे कि उनका स्वास्थ्य अच्छा बना रहे और उनकी मानप्रतिष्ठा भी हमेशा बनी रहे तथा उनके द्वारा नियमित पूजा, जप, साधना व उपासना निरन्तर चलती रहें।

वास्तु द्वारा जो लोग वानप्रस्थ आश्रम में पहुंच चुके हैं और अपना परलोक सुधारने की तैयारी में लगे हुए हैं इस प्रकार के लोगों का निवास स्थान पूर्व के दरवाजे के निकट या पश्चिम दिशा में होना चाहिए। जिससे उनका स्वास्थ्य भी बना रहे।

वास्तुशास्त्र द्वारा उत्तर तथा ईशान कोण का बीच वाला भाग जो कि पूजा-आराधना तथा अध्ययन के लिए उपयुक्त माना जाता है यह स्थान भी बुजुर्गों के आवास के लिए उचित रहता है इसलिए इसका प्रयोग भी कर सकते हैं।

मुख्य दरवाजे के सामने टॉयलेट

आपके मकान में टॉयलेट का स्थान काफी महत्त्व रखता है। यह स्थान अशुद्ध यानि नकारात्मक स्थान होता है आपके मकान का मुख्य दरवाजा टॉयलेट के सामने नहीं खुलना चाहिए। अगर आपके मुख्य दरवाजे के सामने टॉयलेट बना हुआ है तो उसका दरवाजा तुरन्त किसी दूसरी तरफ करवा देना अति आवश्यक होता है। आप अपने टॉयलेट का दरवाजा बन्द करके दूसरी दीवार अथवा दूसरे कमरे से टॉयलेट दरवाजा खोलकर इसके नकारात्मक प्रभाव को दूर कर सकते हैं।

अगर किसी कारणवश इसमें फेरबदल करना मुमकिन हो तो आप अपने टॉयलेट तथा मुख्य दरवाजे के बीच अपारदर्शी ठोस अवरोध बनवा सकते हैं इस प्रकार मुख्य दरवाजे से प्रवेश होने वाली शुद्ध वायु को टॉयलेट के मार्ग से नाली में बढ़ने से रोका जा सकता है। एक बात का खास ख्याल रखना चाहिए कि अवरोध ठोस होना चाहिए। अगर आप अवरोध के रूप में साधारण परदे का उपयोग करें तो कोई लाभ नहीं हो सकता।

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा मुख्य दरवाजे के समीप टॉयलेट का होना भी अशुभ

माना जाता है इस स्थिति की वजह से टॉयलेट की अशुद्ध वायु मुख्य दरवाजे से प्रवेश होने वाली शुद्ध वायु में मिल जाती है इसलिए अपने टॉयलेट का दरवाजा हटाकर मुख्य दरवाजे से दूर कर देना चाहिए।

आपका मुख्य दरवाजा अवरोधरहित होना चाहिए

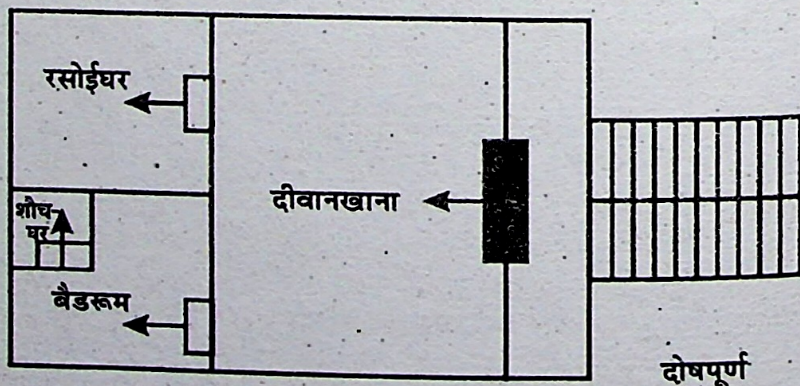
वास्तुशास्त्र द्वारा मकान का मुख्य दरवाजा भी एक विशेष महत्त्व रखता है। यह मकान का मुंह होता है जिससे होकर सभी शुद्ध वायु तथा सौभाग्य आपके घर में प्रवेश करता है इस वजह से आपका मुख्य दरवाजा एकदम सही दिशा में होना चाहिए।

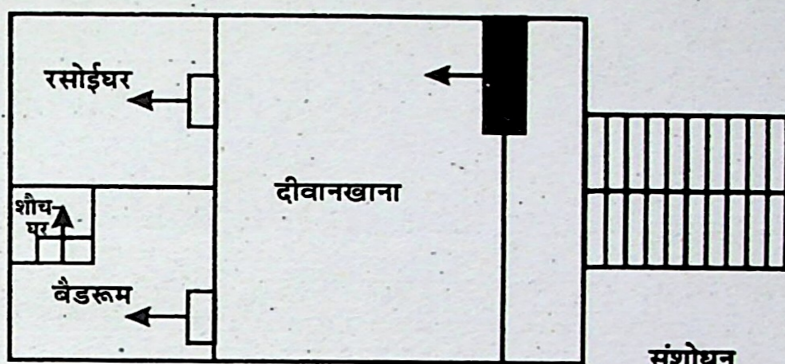
भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा आपके मकान के अन्दर तथा बाहर किसी भी तरह का अवरोध नहीं होना चाहिए। मुख्य दरवाजे के पास कोई भी अवरोध आपके सौभाग्य को दुर्भाग्य में बदल सकता है। वैसे तो आपका मुख्य दरवाजा मकान के सबसे बड़े तथा रोशनीदार कमरे या छोटे प्रवेश हॉल में ही खुलना चाहिए और उसके सामने जूते रखने का स्थान भी नहीं होना चाहिए। आपके मुख्य दरवाजे के सामने फालतू चीजें भी नहीं होनी चाहिएं।

आपके मुख्य दरवाजे के सामने इमारत का खम्भा होना भी एक प्रकार का अवरोध समझा जाता है यह काफी गम्भीर समस्या होती है तथा आपके दरवाजे को सही स्थान पर खिसकाकर इसे फौरन सुधार लिया जाना चाहिए। वास्तु द्वारा यह उत्तम उपाय है।

मुख्य दरवाजे के बाहर अवरोध न हो

वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके मकान के बाहर कोई अवरोध नहीं होना चाहिए। कुछ घरों के सामने मुख्य दरवाजे के बाहर सामने की तरफ अवरोधक दीवार होती है।

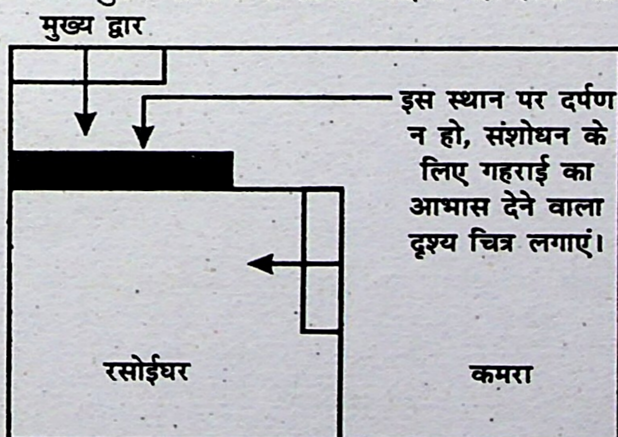




चित्र के द्वारा इमारत में ऊपर तथा नीचे जाने के लिए बनी सीढ़ियों के बीच की दीवार फ्लैट के मुख्य दरवाजे के सामने बीचो-बीच है। यह बहुत ही गम्भीर अवरोध माना जाता है। वास्तुशास्त्र द्वारा इस प्रकार के दोष का परिणाम परिवार के लोगों पर बहुत ही गम्भीर पड़ता है, इसलिए इस गम्भीर स्थिति से बचना बहुत जरूरी है।

दरवाजे के सामने दर्पण न हो

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा कुछ मकानों के मुख्य दरवाजे के सामने आईना होना हानिकारक होता है, क्योंकि इस मुख्य दरवाजे से प्रवेश करने वाली अच्छी व शुद्ध वायु परावर्तित होती है और वह तुरन्त मुख्य दरवाजे से बाहर निकल जाती है, इसलिए घर के मुख्य दरवाजे के सामने आईना नहीं होना चाहिए।



मुख्य दरवाजे के समाने खाली दीवार अशुभ मानी जाती है मगर आईने के द्वारा इस दोष का निवारण करना गलत है, अगर आप इसका सही प्रकार से निवारण

करना चाहते हैं तो दरवाजे के सामने वाली दीवार पर ऊपर से नीचे तक गहराई का आभास देने वाला कोई प्राकृतिक दृश्य चित्र चिपकाना है। यह जंगल में दूर-दूर तक दिखाई देने वाली पगडंडी या सड़क का कोई दृश्य होना चाहिए, ताकि देखने वाले को ज्यादा विस्तार का आभास न हो सके।

खम्भों पर टिका फ्लैट

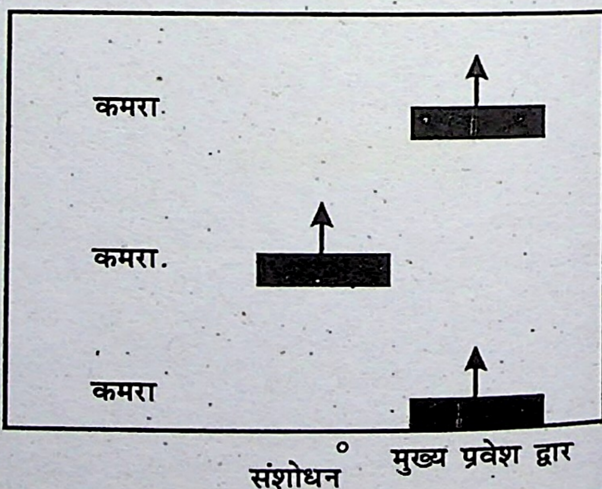
इस आधुनिक दौर में सभी बड़े-बड़े शहरों में इमारतों के आसपास के स्थान में कार पार्किंग के लिए जगह निकालने हेतु खम्भों के ऊपर मकानों का निर्माण करने का चलन बड़ी तेजी से बढ़ता जा रहा है।

पार्किंग की इस खुली जगह की सिर्फ खम्भों का ही आधार होता है इसलिए आप इन खम्भों पर टिके हुए पहली मंजिल का फ्लैट खरीदने से बचें, क्योंकि इस प्रकार के फ्लैटों में रहने वाले लोगों का जीवन स्थिर नहीं होता। इसकी वजह यही है कि इस तरह की इमारतों की पहली मंजिल के फ्लैटों के नीचे स्वतन्त्र रूप से अशुद्ध ऊर्जा प्रवाहित होती रहती है, वैसे ये गंभीर समस्या नहीं है। लेकिन जहां तक हो सके, इस समस्या से बचें।

वास्तुशास्त्र के अनुसार इस प्रकार की इमारतों में आप दूसरी मंजिल या ऊपर की अन्य मंजिलों पर फ्लैट ख़रीद सकते हैं।

एक सीध में तीन दरवाजे न हों

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा आपके मकान में एक सीध में तीन दरवाजे होना अशुभ माना जाता है, यह एक प्रकार का भौतिक व जानलेवा दोष माना जाता है क्योंकि इन दरवाजों से होकर शुभ वायु तेजी से गुजरती है और आखिर में इस दोष की वजह से मकान के आखिरी कमरे में रहने वाले लोग इससे बुरी तरह प्रभावित होते हैं। एक ही सीध में तीन दरवाजे होने के दोष से छुटकारा पाने का आसान उपाय है, बींच वाले दरवाजे को एक तरफ खिसका देना चाहिए।



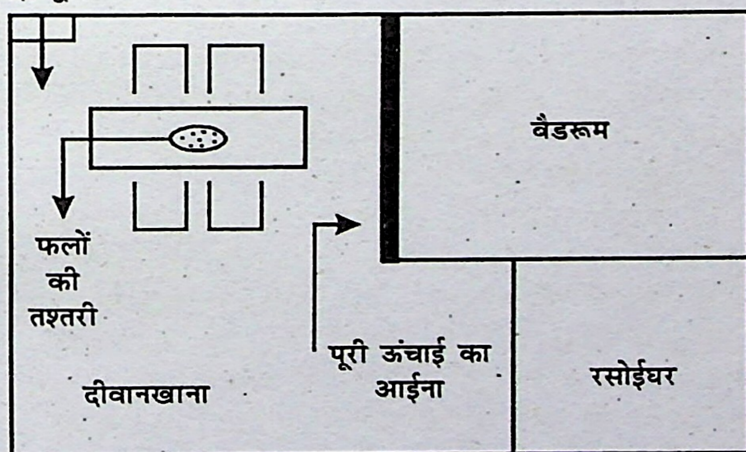
सबसे ऊपर वाली मंजिल का फ्लैट खरीदने से बचें

वास्तुशास्त्र के अनुसार किसी भी मकान के सबसे ऊपर वाली मंजिल का फ्लैट खरीदने से पहले इस बात की अच्छी प्रकार से देखभाल कर लेनी चाहिए कि मकान की पानी संग्रह करने की ओवरहेड टंकी आपके पसन्द किए हुए फ्लैट के ऊपर तो स्थित नहीं है।

अगर किसी वजह से वह टंकी आपके फ्लैट के ऊपर बनी है तो फिर आप इस फ्लैट को खरीदने का प्रयास न करें। अगर ओवरहेड टंकी किसी दूसरे स्थान पर है तो फिर आप निश्चिंत होकर यह फ्लैट खरीद सकते हैं।

वास्तुशास्त्र के अनुसार जिस फ्लैट के ऊपर यह टंकी होती है वह फ्लैट इसलिए नहीं खरीदना चाहिए क्योंकि उस फ्लैट के एकदम ऊपर खास तौर से फ्लैट के बैडरूम में एकदम ऊपर की भाग में पानी की टंकी का होना अशुभ समझा जाता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार यह सब खतरनाक स्थिति है—और इस टंकी के नीचे सोना खतरे की निशानी होता है, इसलिए वास्तुशास्त्र के अनुसार इस प्रकार की स्थिति से बचें।

डायनिंग टेबल को प्रतिबिम्बित करता दर्पण



भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार डायनिंग रूम में रखे हुए बड़े आईने या दीवार पर लगे हुए आईने ऊर्जा के अद्भुत स्रोत साबित हुए हैं। वास्तु द्वारा भोजन करने के लिए भाग्य अर्जित करने का यह बहुत ही अच्छा उपाय माना जाता है।

आपकी डायनिंग टेबल को प्रतिबिम्बित करता हुआ आईना उसके खाद्य पदार्थों

को द्विगुणित होने का आभास देता है। इस तरह की व्यवस्था आपकी सम्पत्ति तथा सम्पन्नता में चाहे वृद्धि न करे लेकिन वह इतना अवश्य सुनिश्चित कर देती है कि ऐसे परिवारों को अनाज की कमी कभी नहीं हो सकती।

वास्तु द्वारा आप अपने डायनिंग रूम में स्वादिष्ट व्यंजनों का चित्र भी लगा सकते हैं अथवा ताजा फलों से भरा हुआ कटोरा तथा तश्तरी टेबल पर रख सकते हैं। वास्तु के अनुसार आपका दिल हमेशा भरा हुआ रहना चाहिए। ये सब आपके घर में खाद्य पदार्थों की उपलब्धता का संकेत करते हैं।

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार डायनिंग टेबल के समीप दर्पण का होना शुभ माना जाता है पर स्टोव या खाना बनाने की गैस के निकट दर्पण होना बहुत ही खराब है। ऐसी स्थिति में आप जख्मी भी हो सकते हैं या आपका जीवन भी खतरे में आ सकता है।

वास्तुशास्त्र के द्वारा डायनिंग टेबल को प्रतिबिम्वित करने वाला आईना आपके सद्‌भाग्य में वृद्धि करता है, लेकिन दर्पण को भूलकर भी इस तरफ न लगाएं कि उनमें गैस सिलिंडर या स्टोव प्रतिबिम्बित दिखाई दे नहीं तो यह स्थिति आपकी जान भी ले सकती है।

गोल्डफिश

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा अपने घर में लघु मछलीघर अथवा फिश बाउल में कुछ रंगीन गोल्डफिश मछलियां रखना भी सद्‌भाग्य में वृद्धि करता है इसके अन्तर्गत आपको केवल 9 मछलियां रखनी होती हैं। इनमें से आठ मछलियां लाल व सुनहरे रंग की होनी चाहिएं और एक मछली काले रंग की होनी चाहिए। अगर किसी कारणवश आपकी सुनहरी मछली मर जाती है तो चिन्ता की कोई आवश्यकता नहीं, आप दोबारा नई मछली ला सकते हैं।

वास्तु द्वारा जब आपके घर की कोई गोल्डफिश मछली मर जाती है तो वह अपने साथ काफी दुर्भाग्यों को भी ले जाती है। अगर ऐसा नहीं हो पाता है, तो यह मुसीबत आपके परिवार में रहने वाले किसी भी व्यक्ति पर पड़ सकती है।

वास्तुशास्त्र के अनुसर गोल्डफिश मछलियां अपने रसोइघर, बैडरूम व टॉयलेट में कभी नहीं रखनी चाहिएं, इस स्थिति से आपकी सन्तानों का नुकसान हो सकता है। इस मछलीघर को रखने का सबसे उपयुक्त स्थान आपका ड्राइंगरूम माना जाता है और इसके रखने की सही दिशा पूर्व, दक्षिण-पूर्व और उत्तर दिशा होती है।

अगर आप पानी वाली वस्तुओं को उचित स्थान पर रखेंगे तो ये आपके भाग्य के लिए काफी लाभदायक सिद्ध हो सकती हैं। अगर इन्हें गलती से गलत जगह पर रख दिया जाए तो यह नुकसान पहुंचा सकती हैं। आप अपने दरवाजे के दाहिनी तरफ कभी भूलकर भी अपना मछलीघर न रखें। इस स्थिति से घर के पुरुष की

नजर परायी स्त्रियों पर पड़ती है जिन्दा मछलियों के बजाय आप नीले पानी में ऊपर कूदती हुई डॉल्फिन के चित्र का भी प्रयोग कर सकते हैं लेकिन जिंन्दा डॉल्फिन मछलियां काफी हद तक उत्तम मानी जाती हैं।

मांगलिक प्रतीक

भारतवर्ष के लोग स्वास्तिक तथा ॐ जैसे मांगलिक प्रतीकों का प्रदर्शन करते हैं, क्योंकि यह मांगलिक प्रतीक अधिकतर भाग्यशाली होने के चिह्न माने जाते हैं।

इन मांगलिक प्रतीकों का प्रयोग आप पेन्टिंग के रूम में भी कर सकते हैं या फिर लकड़ी के टुकड़ों पर अथवा फर्नीचर के ऊपर उत्कीर्ण करवा सकते हैं।

काफी लोगों ने अनेक बार स्वास्तिक तथा ॐ का प्रयोग किया है और इन्हें उपयोगी पाया है आप अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा तथा सौभाग्य के लिए स्टिकर के रूप में अपनी डायरी आदि पर चिपकाकर भी अपने साथ रख सकते हैं।

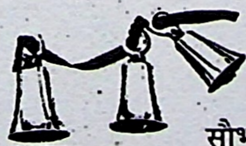
हिंसा तथा युद्ध वाले चित्र घर में न लगायें



भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार अपने घर में हिंसा वाले चित्र कदापि नहीं लगाने चाहिएं। आपके घर के किसी भी हिस्से में खास तौर पर दक्षिण-पश्चिम दिशा में हिंसा से सम्बन्धित कोई भी चित्र अथवा पेन्टिंग नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह भाग रिश्तों से सम्बन्धित होता है।

भारतीय वास्तुशास्त्र के द्वारा अगर दक्षिण-पश्चिम दिशा में युद्ध तथा जंगली जानवरों का चित्र लगा दिया जाए तो इससे आपके परिवार के लोगों के साथ आपके सम्बन्धों पर बुरा असर पड़ सकता है।

आपके घर में महाभारत से सम्बन्धित दृश्य या हथियार भी परिवार के लोगों में वाद-विवाद का कारण बनते हैं, क्योंकि ये हिंसा के प्रतीक माने जाते हैं इससे आपके प्रियजनों के आपसी सम्बन्धों में भी कटुता उत्पन्न हो सकती है। ऐसे चित्रों के द्वारा सास-बहू के बीच भी झगड़ा होता है।



घंटियों का प्रयोग

वास्तुशास्त्र के अनुसार आप अपने घर में सम्पत्ति व सौभाग्य को लाने के लिए दरवाजे के हैण्डल में तीन पुराने सिक्के लटका सकते हैं। उन तीन पुराने सिक्कों को आप लाल रंग के रिबन में बांधकर दरवाजे के हैण्डल में लटकाएं। इस प्रकार घर के सभी लोगों को फायदा होगा।

वास्तु द्वारा इन सिक्कों को दरवाजे के अन्दर की तरफ ही लटकाना चाहिए न कि बाहर की तरफ।

घर के सभी दरवाजों में सिक्के नहीं लटकाने चाहिएं। सिर्फ मुख्य दरवाजे के हैण्डल में सिक्के लटकाना काफी होता है। इसलिए इसका उपयोग करना लाभदायक होता है।

वास्तुशास्त्र द्वारा आप दरवाजे के बाहर वाले हैण्डल में छोटी घंटी भी लटका सकते हैं यह घंटी आपके घर में सौभाग्य के प्रवेश करने की सूचक है। सिक्के घर में सम्पत्ति के सूचक माने जाते हैं। पिछले दरवाजे पर इन सिक्कों को नहीं लटकाना चाहिए क्योंकि पिछले दरवाजे को इस बात का सूचक माना जाता है कि इस मार्ग से होकर आपका कुछ-न-कुछ बाहर की ओर चला जाएगा।

नागफनी तथा बोन्साई का प्रयोग

वास्तुशास्त्र द्वारा नागफनी का पौधा अपने ऑफिस आदि में भूलकर भी नहीं रखना चाहिए। इस पौधे में नन्हें-नन्हें कांटे निकले हुए होते हैं जो कि नकारात्मक ऊर्जा को उत्पन्न करते हैं और जहरीले बाणों का कार्य करते हैं। जो कि काफी हानिकारक सिद्ध होते हैं।

इसी प्रकार बोन्साई का पौधा भी घर में कभी नहीं रखना चाहिए वैसे बोन्साई का पौधा देखने में काफी सुन्दर लगता है लेकिन ये रुद्ध विकास के प्रतीक माने जाते हैं इसलिए ये पौधे आदमी के कारोबार, उसके कैरियर तथा अध्ययन आदि पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

वास्तु के अनुसार मकान में खास तौर पर दक्षिण-पूर्व दिशा के कोने में, जेड का पौधा रखना बड़ा शुभ माना जाता है। दक्षिण-पूर्व दिशा का कोना समृद्धि का कोना माना जाता है। यह पौधा आपके घर में समृद्धि कर सौभाग्य जागृत करता है।

पियोनिया के फूलों का उपयोग

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा आप अपने मकान के किसी भी हिस्से में शक्ति की बढ़ोत्तरी करने के लिए फूलों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।

वास्तु द्वारा पियोनिया के फूलों को स्त्री से सम्बन्धित माना जाता है। अगर किसी परिवार में लड़कियां हैं तो इस परिवार में पियोनिया के फूलों वाला चित्र लटकाना बहुत ही प्रभावशाली माना जाता है।

इसके चित्र को लटकाने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान ड्राइंगरूम होता है। इससे आपके लड़कियों के विवाह के लिए मनचाहे वर मिल सकते हैं। चित्र के

अलावा अगर आप पियोनिया के वास्तविक फूलों का उपयोग करें तो यह और भी अच्छा है, इन फूलों को घर के दक्षिण-पश्चिम दिशा के कोने में ही रखना चाहिए।

अगर आपके परिवार में एक ही लड़की है और उसकी शादी की उम्र हो गयी है तथा उसके लिए कोई अच्छा रिश्ता नहीं मिल रहा है तो आप उसे अपने बैडरूम के दरवाजे को बिल्कुल सीध में पियोनिया के फूलों का चित्र लगाने को कहें।

मगर कोई शादीशुदा औरत पियोनिया के फूलों को अपने बैडरूम में लगाती है तो उसके पति के किसी पराई स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित हो सकते हैं। इसलिए इन फूलों का चित्र लटकाने की उत्तम जगह ड्राइंगरूम ही मानी जाती है।

घर में सूखे फूल न हों

वास्तुशास्त्र के अनुसार पौधों को महत्त्वपूर्ण माना गया है। जब आप अपने घर या कार्यालय में इन फूलों का उपयोग करते हैं तो उनसे वातावरण में शुद्ध वायु का प्रयोग होता है और सौभाग्य में वृद्धि होती है।

आप अपने घर में ताजा फूलों का उपयोग कर सकते हैं, अगर ये फूल सूखने तथा मुरझाने लगें तो इन्हें वहां से फौरन हटा देना चाहिए और इनकी जगह ताजा फूलों को रख देना चाहिए। ताजा फूल जीवन के प्रतीक माने जाते हैं जबकि सूखे हुए फूल मृत्यु के सूचक माने जाते हैं। इनसे अशुभ वायु का प्रवाह होता है इसलिए इन सूखे हुए फूलों को भूलकर भी घर में नहीं रखना चाहिए।

वास्तु द्वारा फूलों के पौधे अपने बैडरूम में रखने की बजाय ड्राइंगरूम या डायनिंग रूम में ही रखना चाहिए अगर आप इनको किसी बीमार आदमी के बैडरूम में रखती हैं तो यह बहुत अच्छा रहेगा, अगर आप चाहें तो ताजे फूलों की जगह कृत्रिम फूलों का प्रयोग भी कर सकते हैं।

हाईफाई वस्तुएं

आज के दौर में विज्ञान ने काफी प्रगति की है जिसका अन्जाम हुआ है कि हमें बाजार में अधिक-से-अधिक मात्रा में ये हाईफाई वस्तुएं देखने को मिलती हैं। घरों के अन्तर्गत भी ज्यादातर यही हाईफाई उपकरण देखने को मिले हैं। अगर आप इन उपकरणों को सही स्थान पर रखें तो ये आपके घर के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं।

वास्तुशास्त्र के अनुसार इन उपकरणों के रखने के लिए ड्राइंगरूम की पश्चिमी दीवार तथा पश्चिमी कोना इन हाईफाई उपकरणों को रखने के सबसे उपयुक्त स्थान माने जाते हैं। ऐसी हालत में ये उपकरण घर के लोगों के लिए सौभाग्य लेकर आएंगे। इसलिए इस बात को ध्यान में रखें।

ये हाईफाई वस्तुएं धातु तत्व की प्रतीक मानी जाती हैं। इसी वजह से इन्हें पश्चिमी दिशा में रखना ज्यादा सही माना जाता है, क्योंकि आपके ड्राइंगरूम का पश्चिमी कोना धातु तत्व से संचालित होता है।

अगर आपके घर में टेलीफोन बैडरूम में रखा हुआ हो तो यह पलंग के एकदम सामने नहीं होना चाहिए। क्योंकि आईने की तरह परावर्ती सतह के रूप में काम करता है। इससे पति-पत्नी के बीच गलतफहमी पैदा हो सकती है। यह स्थिति अच्छी नहीं मानी जाती तथा नकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह करती है।

अगर कोई आदमी बैडरूम में टेलीविजन रखता है तो उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जब वह उसका प्रयोग न कर रहा हो, तो उसे कपड़े से ढक देना चाहिए।

आलमारियों को खुली न छोड़ें

वास्तुशास्त्र द्वारा आलमारी खुली हुई नहीं छोड़नी चाहिएं। यह स्थिति वास्तु द्वारा अच्छी नहीं मानी जाती। काफी लोगों को पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक होता है, लेकिन अगर उन पुस्तकों को खुली हुई आलमारियों में रखा जाता है तो ये अशुभ ऊर्जा को उत्पन्न करती हैं जो कि इस कमरे में रहने वाले व्यक्ति के लिए हानिकारक सिद्ध होती हैं और अपना बुरा प्रभाव छोड़ती हैं।

वास्तुशास्त्र के अनुसार ऑफिस हो या घर, किताबों को खुली हुई नहीं छोड़नी चाहिए, क्योंकि खुली हुई आलमारियां चाकुओं के समान होती हैं, जो नकारात्मक ऊर्जा बाहर निकालती हैं।

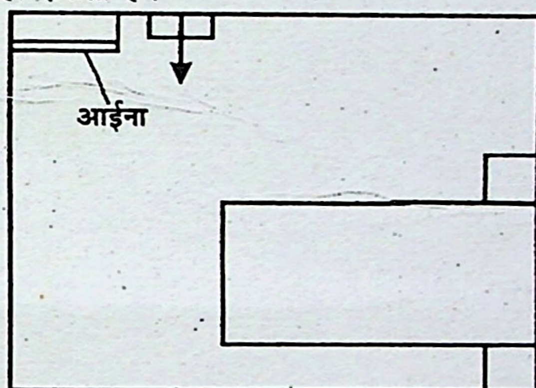
इन खुली हुई आलमारियों के कारण कमरे में रहने वाले आदमी बीमार पड़ सकते हैं। इसका प्रभाव चाहे दिखाई न दे मगर यह जानलेवा भी सिद्ध हो सकता है फिर समय आने पर इसका प्रभाव अपने आप ही सामने आ जायेगा।

अगर आप इस स्थिति से बचना चाहते हैं तो वास्तुशास्त्र के अनुसार उन आलमारियों में तुरन्त दरवाजे लगवा देना चाहिए और उन आलमारियों को हमेशा बंद रखिए इन्हें खुली नहीं छोड़नी चाहिएं। इससे खुली हुई आलमारियों का प्रभाव कम हो जाता है।

बैडरूम में आईना

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा आपके बैडरूम में आईने का होना अच्छा नहीं माना जाता क्योंकि आईनों के द्वारा इस प्रकार की ऊर्जा बाहर निकलती है। यह ऊर्जा कितनी ज्यादा अच्छी या कितनी ज्यादा बुरी हो सकती है, यह इस बात पर निर्भर करती है कि आईना किस जगह पर लगा है?

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार आईना पलंग के सामने बिल्कुल नहीं होना चाहिए, क्योंकि ऐसी स्थिति से पति-पत्नी के वैवाहिक सम्बन्धों में भारी तनाव पैदा हो सकता है, इसकी वजह से पति-पत्नी के बीच अच्छे-भले सम्बन्धों में किसी तीसरे का प्रवेश भी हो सकता है।



संशोधन

अगर आप इनका नकारात्मक प्रभाव कम करना चाहते हैं तो वास्तुशास्त्र के अनुसार उन्हें ढककर रखें या फिर उनको आलमारियों के अन्दर की तरफ बनवाएं।

बैड पर सोए पति-पत्नी को प्रतिबिम्बित करता हुआ आईना तलाक का कारण भी बन सकता है। इसलिए रात के वक्त आईने को नजरों से ओझल होना चाहिए। अपने मकान की छत में भी आईने का प्रयोग भूलकर भी नहीं करना चाहिए। वास्तुशास्त्र द्वारा इनके प्रभाव से बचने के साथ उपायों को प्रयोग में लाकर इस समस्या का समाधान कर सकते हैं।

अलग-अलग गद्दों वाला डबलबैड

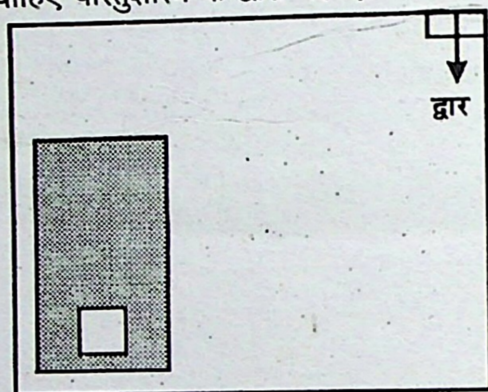
भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा अलग-अलग गद्दों वाला डबलबैड अच्छा नहीं माना जाता है। डबलबैड हमेशा एक गद्दे वाला ही होना चाहिए। पति-पत्नी का दो अलग-अलग इकहरे पलंग पर सोना बुरी बात नहीं है और जब ज्योतिष के अनुसार उन दोनों की सौभाग्यशाली दिशाएं बिल्कुल अलग-अलग हों तथा दोनों ही कमाने वाले हों तो कभी-कभी यह जरूरी हो जाता है।

दरवाजे के सामने न सोयें

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार दरवाजे की तरफ पैर करके नहीं सोना चाहिए यह स्थिति मृत्यु की सूचक मानी जाती है। वास्तव में मृत शरीर इसी अवस्था में रखा जाता है जो उसके लिए काफी अच्छा समझा जाता है। मगर जीवित व्यक्ति

के लिए यह स्थिति काफी हद तक हानिकारक होती है।

सोते समय एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि आपका सिर या पैर सीधे दरवाजे के सामने न हों। यह स्थिति अच्छी नहीं होती और इसका प्रभाव मनुष्य पर बहुत बुरा पड़ता है। इसलिए अपना पलंग दरवाजे के दाईं तथा बाईं तरफ ही बिछाना चाहिए वास्तुशास्त्र के द्वारा यह एक सरल व उत्तम उपाय है।



संशोधन

बैडरूम में मछलीघर

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके बैडरूम में पानी वाली कोई वस्तु, जैसे मछलीघर या छोटा फिश बाउल तथा झरने या समुद्र तट आदि की पेन्टिंग नहीं होनी चाहिए। यह स्थिति वास्तु द्वारा अशुभ मानी जाती है।

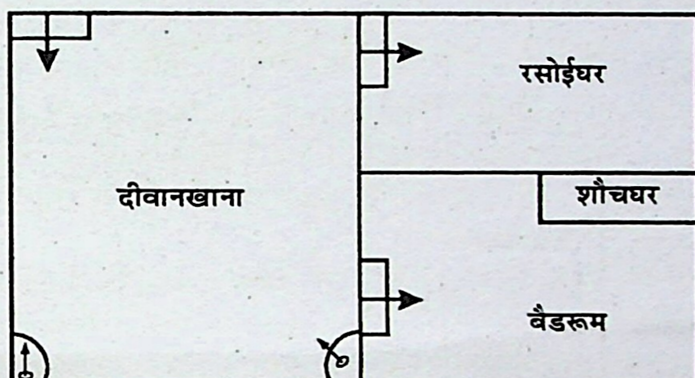
वास्तुशास्त्र के अनुसार इस स्थिति की वजह से पति-पत्नी के आपसी सम्बन्धों पर बहुत बुरा असर पड़ सकता है। अगर आपके बैडरूम में पानी का कोई बर्तन या पानी से सम्बन्धित कोई चित्र हो तो उसे वहां से फौरन हटा देना चाहिए। कभी-कभी कैरियर का क्षेत्र भी बैडरूम के अन्तर्गत आ जाता है ऐसी स्थिति में उसे पानी की वस्तुओं से नहीं, बल्कि धातु की वस्तुओं के द्वारा समृद्ध करना चाहिए। धातु की वस्तुएं उत्तर दिशा के जल तत्व में वृद्धि करती हैं। वास्तु द्वारा इन उपायों का प्रयोग करना चाहिए।

बुद्ध की प्रतिमा का प्रयोग



वास्तुशास्त्र के अनुसार हँसते हुए बुद्ध की प्रतिमा धन-दौलत के देवताओं में एक मानी जाती है। इसके द्वारा आपके घर में सफलता, सम्पन्नता तथा आर्थिक वृद्धि होती है। इस प्रतिमा को जिस स्थान पर लगाया जाता है वह स्थान बड़ा

महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस मूर्ति को वास्तु द्वारा लगभग 30' की ऊंचाई पर मुख्य दरवाजे के सामने स्थापित करना चाहिए।



वास्तुशास्त्र के अनुरूप हँसते हुए बुद्ध की प्रतिमा मुख्य द्वार से घर में प्रवेश करने वाली ऊर्जा का अभिनन्दन करती है। फिर यह ऊर्जा क्रियाशील होकर ज्यादातर समृद्धि प्रदान करती है।

अगर किसी वजह से इस स्थान पर आप मूर्ति न रख पायें, तो इसे बगल वाली या कोने वाली टेबल पर रखा जा सकता है ताकि तिरछी ही सही लेकिन मुख्य द्वार के सामने तो रहेगी। उसका मुंह भी मुख्य द्वार की तरफ होगा। हँसते हुए बुद्ध की मूर्ति बैडरूम या डायनिंग रूम में भी नहीं रखनी चाहिए।

सम्पत्ति के इस देवता की पूजा या आराधना नहीं की जाती, बल्कि इसे सजाकर रखा जाता है, क्योंकि इसकी उपस्थिति विशुद्ध रूप से प्रतीकात्मक और शुभ समझी जाती है।

परिवार का फोटो हँसती हुई मुद्रा में

भारतीय वास्तुशास्त्र के द्वारा परिवार के सदस्यों में मिल-जुल कर रहने की भावना विकसित करने का सबसे आसान तरीका अपने ड्राइंगरूम के दक्षिण-पश्चिम दिशा के कोने में परिवार के लोगों का प्रसन्नचित्त मुद्रा में एक फोटो लगाना चाहिए।

इस तस्वीर में परिवार के सभी सदस्यों का समावेश होना चाहिए और सभी सदस्यों के चेहरे पर मुस्कान भी होना आवश्यक है।

यह उपाय भारतीय संयुक्त परिवारों में, जहां सास-बहू के बीच अक्सर झगड़े होते हैं, काफी प्रभावकारी है। सास-बहू के बीच आपसी प्रेम बढ़ाने से उन दोनों की हँसती हुई मुद्रा में एक तस्वीर घर में लगा सकते हैं। वास्तुशास्त्र के द्वारा यह एक सरल उपाय है।

अगर पति-पत्नी के बीच आपसी प्रेम की वृद्धि करना चाहें तो उन दोनों को हँसती हुई मुद्रा में एक तस्वीर अपने बैडरूम के अन्दर दक्षिण-पश्चिम दिशा वाले भाग में लगानी चाहिए।

घर में झाड़ू छिपाकर रखें

प्रत्येक घर में सफाई करने के लिए झाड़ू का प्रयोग किया जाता है। झाड़ू घर में प्रवेश करने वाली बुरी तथा नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट कर देती है। मगर झाड़ू को खुले हुए स्थान पर नहीं रखना चाहिए। यह स्थिति अशुभ समझी जाती है, इसलिए इसे छिपाकर रखना चाहिए।

डायनिंग रूम में तो भूलकर भी खुले हुए स्थान में झाड़ू नहीं रखनी चाहिए क्योंकि यह स्थिति अन्न तथा आय के साफ हो जाने की प्रतीक समझी जाती है।

वास्तु द्वारा अगर आप अपने घर के बाहर मुख्य दरवाजे के सामने झाड़ू उल्टी करके रखते हैं तो यह स्थिति चोर-डाकुओं से हिफाजत रखती है लेकिन ऐसा सिर्फ रात में ही करना चाहिए दिन के समय झाड़ू को छिपाकर रखना चाहिए ताकि किसी की नजर उस पर न पड़े।

नमक मिले पानी से पौछा लगायें

वास्तुशास्त्र के द्वारा किसी भी स्थान या समृद्धि को शुद्ध करने के लिए नमक मिले पानी का प्रयोग किया जाता है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार नमक मिला पानी घर में स्थित नकारात्मकता को दूर करने में सहायक सिद्ध होता है। अपने घर में रोजाना नमक मिले पानी से पौछा लगाना शुभ माना जाता है। जिस वक्त आप पौछा लगाएं उस समय पानी में पांच चम्मच सादा नमक मिला लें। इस प्रकार आप नकारात्मक प्रभाव तथा नकारात्मक ऊर्जा को कम कर सकते हैं। भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा यह एक सरल उपाय है।

फालतू चीजें घर में न रखें

कुछ पुराने लोगों को अपने घर में अनावश्यक चीजें संभालकर रखने की आदत होती है, वे न तो इन वस्तुओं का उपयोग ही करते हैं तथा न ही इन्हें फेंकते हैं। एक प्रकार से ये सब बेकार वस्तुएं हैं।

जैसे कि–

1. पुराने कपड़े होते हैं आप इन कपड़ों को इस आशा से रख देते हैं कि शायद यह फैशन फिर दोबारा लौटकर आ जाए, या फिर आपको इन्हें किसी ने उपहार में दिया हो। वह कपड़े कीमती हों मगर किसी कारणवश

आपको पसन्द न हों, किसी न किसी कारण आप इनको पहन नहीं पा रहे हों, लेकिन इन कपड़ों से आपका लगाव बना हुआ है इसलिए आप इन्हें फेंकते भी नहीं हैं।

2. इसी प्रकार पुरानी किताबें, अखबार, पुरानी पत्रिकाएं होती हैं जिन्हें आप ये सोचकर संभाल के रख देते हैं कि कभी ये आपके काम आएं। लेकिन पिछले पांच-छः सालों से वह आपके काम में नहीं आ रही हैं।
3. आपके दिमाग में पुरानी यादें या घटनाएं।
4. पन्द्रह साल से ज्यादा पुराने खाते बही खाते, रजिस्टर जिनका उपायोग अब नहीं हो पा रहा है।
5. घर में पड़ा हुआ लोहा, टिन, प्लास्टिक तथा पुराने अखबार जो कबाड़ के रूप में रखे रहते हैं।
6. आपकी बन्द पड़ी घड़ियां।
7. पुराने और निष्क्रिय उपकरण।
8. आपके घर में पड़ी पुरानी वीडियो कैसेट तथा आडियो कैसेट जिनका आपने उपयोग करना छोड़ दिया है।
9. टूटी-फूटी हालत की वस्तुएं, जैसे चटके हुए कप व गिलास या प्लास्टिक आदि की चीजें।

मधुर सम्बन्ध व रोमांस के लिए

वास्तुशास्त्र द्वारा आपके मकान का दक्षिण-पश्चिम दिशा वाला भाग रोमांस तथा प्रेम व स्नेह से सम्बन्ध रखता है, इस क्षेत्र का तल पृथ्वी को माना जाता है। इस क्षेत्र की शक्ति बढ़ाने का श्रेष्ठतम् उपाय असली स्फटिक के दो गोलों का प्रयोग करना है।

असली स्फटिक की वजह से आपके बैडरूम के दक्षिण-पश्चिम दिशा का कोना सक्रिय हो जाता है तथा वह आपको प्रिय लगने वाले लोगों के साथ आपके सम्बन्धों में सामंजस्य स्थापित कर घर में सुख-शांति लाते हैं।

अगर आप अपने ड्राइंगरूम में ऐसा करते हैं तो पूरे परिवार के स्नेह सम्बन्धों में वृद्धि होती है।

वास्तु द्वारा स्फटिक के गोलों को शोधित करना आवश्यक है उनसे जुड़ी हुई किसी भी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करने के लिए उन्हें कम-से-कम एक हफ्ते तक नमक के पानी में रखना चाहिए। असली स्फटिक खास तौर पर काफी प्रभावशाली साबित होते हैं, क्योंकि उनको अपने विचारों के अनुसार परिवर्तित किया जा सकता है।

अगर किसी कारणवश आपकी लड़की की शादी नहीं हो पा रही है तो आप यह कल्पना करके देखें कि आपकी बेटी का विवाह धूमधाम से सम्पन्न हो रहा है, जब यह दृश्य आपके मस्तिष्क में आते हैं आप धूप से स्फटिक को उठा लाएं और इसे अपनी बाईं हथेली पर रखें और इसे दाहिनी हथेली से ढक लें फिर अपनी आंखें बन्द करके वही कल्पना करें। फिर यही कल्पना आपके स्फटिक में दर्ज हो जाएगी।

इसके बाद उस स्फटिक को अपनी बेटी के बैडरूम में लगा देना चाहिए। मगर याद रखें कि इसे बैडरूम के दक्षिण-पश्चिम दिशा वाले भाग में ही लगायें।

पीले रंग के फूलों का उपयोग

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार पीले रंगों का उपयोग अच्छा माना जाता है। पीले रंग के फूल परिवार के सदस्यों में आपसी सम्बन्ध बढ़ाने के लिए एक सरल उपाय है। वास्तु द्वारा अपने कमरे के दक्षिण-पश्चिम दिशा वाले कोने में क्रीम कलर की चीनी मिट्टी के गुलदस्ते में पीले रंग के कृत्रिम फूलों को लगा सकते हैं।

वास्तुशास्त्र के अनुसार यह क्षेत्र स्नेह सम्बन्धों का क्षेत्र माना जाता है। इस स्थान पर पीले रंग के फूल रखने से परिवार के बीच आपसी सम्बन्ध मजबूत बनते हैं। पीले और क्रीम कलर पृथ्वी के प्रतीक माने जाते हैं।

नारंगी का पौधा

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा पके हुए फलों से लदे नारंगी अथवा नींबू के पेड़ सौभाग्य तथा सम्पन्नता की निशानी है। इन वृक्षों को अधिकतर मकान तथा ऑफिस के सामने वाले हिस्से में लगाया जाता है।

वास्तु द्वारा सुनहरे रंग की चमकदार नारंगिया सोने का प्रतीक मानी जाती हैं तथा नए वर्ष के अन्तर्गत फलों से लदे हुए नारंगी के पेड़ ज्यादातर नारंगी के प्रतीक माने जाते हैं। आप अपने बगीचे के दक्षिण-पूर्व दिशा के भाग में नारंगी का पौधा लगा सकते हैं क्योंकि आपके घर का यह हिस्सा सम्पत्ति का सूचक माना जाता है। इस कोने में नारंगी का स्वस्थ तथा फल देने वाला पेड़ होना बहुत ही शुभ होता है।

वास्तु द्वारा अपनी सम्पन्नता में वृद्धि करने के लिए आप अपने घर या फ्लैट के दक्षिण-पूर्व दिशा में नारंगी का कृत्रिम पौधा भी लगा सकते हैं।

रोमांस के लिए प्रेमी-परिन्दे

वास्तुशास्त्र के अनुसार प्रेमी-परिन्दे रोमांस और प्रेम तथा निष्ठा के प्रतीक माने जाते हैं, मैंडरिन बत्तख का जोड़ा भी नौजवान पति-पत्नियों के बीच प्रेम तथा

रोमांस का प्रतीक माना जाता है।

वास्तु के अनुसार इन्हें अपने मकान के दक्षिण-पश्चिम दिशा के कोने में अथवा बैडरूम के दक्षिण-पश्चिम दिशा के कोने में रख सकते हैं, क्योंकि यह भाग पार स्परिक सम्बन्धों तथा रोमांस का क्षेत्र है। यह आपके प्रेमपूर्ण जीवन को समृद्ध करता है।

अगर आपकी शादी नहीं हुई है तो आप इन बत्तखों की पेंटिंग अपने बैडरूम में लटका सकते हैं या फिर एक जोड़ी बत्तख अपने बैडरूम में रख सकते हैं। लेकिन एक बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि आप सिर्फ बत्तख का एक ही जोड़ा रखेंगे न अकेली एक बत्तख रखेंगे तथा न ही तीन बत्तख रखेंगे। अगर आप सिर्फ एक ही बत्तख रखते हैं तो इसका अन्जाम यह होगा कि आप अविवाहित ही रह जायेंगे और तीन बत्तख रखने का अन्जाम यह होगा कि आपके वैवाहिक जीवन में किसी तीसरे व्यक्ति का प्रवेश हो सकता है।

अगर आप विपरीत लिंग वाले व्यक्ति को आकर्षित करना चाहते हैं, तो इस बात की जांच जरूर कर लेनी चाहिए कि आप बत्तख के जिस जोड़े को रखने वाले हैं उसमें से एक नर तथा दूसरी मादा होनी चाहिए। दो नर या दो मादा न हों।

प्रेमी परिन्दे भी मैंडरिन बत्तख की तरह प्रभावशाली होते हैं। इन पक्षियों की पेंटिंग तथा इनके चित्र भी लगाए जा सकते हैं। इन पक्षियों को पिंजरे में नहीं रखना चाहिए, यह स्थिति अच्छी नहीं मानी जाती इससे मनुष्य में महत्त्वाकांक्षा की कमी उत्पन्न हो जाती है।

झाड़-फानूस का प्रयोग

वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके मकान का दक्षिण-पश्चिम दिशा का कोना पृथ्वी तत्व से सम्बन्धित होता है। यह शादी तथा आपसी सम्बन्धों से जुड़ा होता है।

अगर आपका ड्राइंगरूम इस दिशा में स्थित है तो आप इस स्थिति का लाभ उठा सकते हैं, इसके लिए यहां आपको स्फटिक का एक झाड़-फानूस यहां लगाना होगा और फिर रोजाना शाम के समय दो घण्टे इसे जलाना भी होगा।

इस प्रकार इस क्षेत्र के पृथ्वी तत्व में अभूतपूर्व वृद्धि होगी। इसके परिणाम-स्वरूप आपके परिवार के लोगों में मेल-जोल की भावना बलवती होगी और इसके साथ-साथ अविवाहित मनुष्यों के लिए विवाह होने की सम्भावनाएं भी बढ़ेंगी। वास्तुशास्त्र द्वारा यह एक सरल तथा उत्तम उपाय माना जाता है।

सिक्कों से भरा कटोरा


पाकुआ

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके घर के उत्तर-पश्चिम

दिशा के क्षेत्र का सम्बन्ध घर के मालिक यानि रोजी कमाने वाले व्यक्ति से होता है। इस क्षेत्र का तत्व धातु है। यहां धातु के सिक्कों से भरा हुआ स्फटिक कांच का कटोरा रखकर आप इस क्षेत्र की धातु-ऊर्जा में वृद्धि कर सकते हैं।

लेकिन इस कटोरे को ऐसी जगह छिपाकर रखना चाहिए जिस पर किसी बाहर के आदमी की नजर न पड़ने पाए।

टॉयलेट का दरवाजा बन्द रहना चाहिए

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार टॉयलेट का दरवाजा हमेशा बन्द रहना चाहिए, क्योंकि टॉयलेट में सदैव गन्दे पानी का अवशेष रहता है, इसी वजह से टॉयलेट को बुरी ऊर्जा का स्रोत माना जाता है।

यह बुरी ऊर्जा जीवन की अभिलाषाओं को बुरी तरह प्रभावित करती है। मकान में जिस जगह पर यह स्थित होता है वहां इसका बुरा प्रभाव बना रहता है। इसलिए टॉयलेट को हमेशा परिवार में धनोपार्जन करने वाले व्यक्ति के दुर्भाग्य वाले क्षेत्र में ही बनाना चाहिए। वास्तुशास्त्र के अनुसार यह एक बुरी स्थिति मानी जाती है।

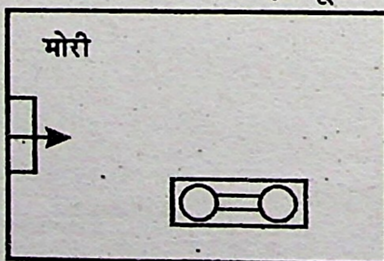
बर्नर अवरोधरहित हो

वास्तुशास्त्र के अनुसार बर्नर अवरोधरहित होना चाहिए। बर्नर के प्रति लापरवाही बरतने का परिणाम यह होता है कि वह तेल और कालिख से अवरुद्ध हो जाता है। कुछ दिन पश्चात् ही बर्नर की सफाई करवाकर उसे हमेशा स्वच्छ रखिए। अपने रसोईघर को भी हमेशा साफ-सुथरा तथा सुव्यस्थित बनाकर रखना चाहिए। वास्तुशास्त्र द्वारा यह एक सरल उपाय है।

रसोई में पानी तथा आग अलग-अलग रखिए

वास्तुशास्त्र के अनुसार आप अपने रसोईघर में पानी तथा आग यानि मोरी और गैस चूल्हा एक-दूसरे के निकट या आमने-सामने कभी न रखें।

इसकी वजह यह है कि जल तथा अग्नि एक-दूसरे के पूरी तरह विरोधी माने जाते हैं।



संशोधन

साथ-साथ भोजन करना चाहिए

वास्तुशास्त्र के अनुसार प्रतिदिन साथ-साथ भोजन करना चाहिए। अपने परिवार के सदस्यों को बतायें कि कम-से-कम दिन में एक बार सभी लोग जरूर साथ-साथ भोजन करें। भोजन का समय निर्धारित कर लें, ताकि परिवार के सभी लोग डायनिंग टेबल पर साथ-साथ भोजन कर सकें।

अगर आपको ऐसा करने के लिए किसी की प्रतीक्षा भी करनी पड़े तो वो भी कर सकते हैं। ऐसा करने से परिवार के सदस्यों के बीच आपसी सम्बन्ध मजबूत होते हैं। जिस परिवार के लाग साथ-साथ भोजन करते हैं उस परिवार के सदस्यों में एक-दूसरे के प्रति स्नेह बना रहता है।

हरियाली वाले चित्र लगाएं

वास्तुशास्त्र के द्वारा आपके मकान का दक्षिण-पूर्व दिशा वाला कोना सम्पत्ति का कोना समझा जाता है। इस कोने में हरियाली से भरे हुए मगर उनमें पर्वत न हो—ऐसा चित्र लगाना चाहिए। इसके लगाने से आपकी सम्पन्न्ता में वृद्धि होती है। इस प्रकार के चित्र काष्ठ तत्व से सम्बन्ध रखते हैं और दक्षिण-पूर्व दिशा का तत्व काष्ठ माना जात्ता है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार अगर यह कोना आपके घर के बैडरूम में पड़ता हो तो इस बात का खास ख्याल रखें कि जंगल के इस चित्र में कहीं भी पानी का दृश्य न हो, इस प्रकार का चित्र आप अपने बैठकखाने के दक्षिण-पूर्व दिशा के कोने में भी लगा सकते हैं। ऐसा करने से आपके बैठकखाने का सम्पत्ति क्षेत्र समृद्ध होगा।

उपहार में चाकू-कैंची न दें

वास्तुशास्त्र के अनुसार चाकू-कांटा-कैंची आदि जहरीले बाण का कार्य करते हैं और इनकी नोंक से किसी व्यक्ति की तरफ सीधे संकेत करने पर यह नकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करते हैं। नुकीली और तेज धार वाली वस्तुएं कभी भी अपनी तरफ या दूसरे आदमी की तरफ लक्ष्य करके न दिखाएं।

जब आप किसी व्यक्ति को उपहार दें तो एक बात का खास ख्याल रखें कि तेज धार वाती चीजें कभी भूलकर भी उपहार में न दें, ये वस्तुएं दुश्मनी को उत्पन्न करती हैं तथा दो दोस्तों के मध्य संघर्ष पैदा करती हैं, अन्ततः उनकी दोस्ती खत्म हो जाती है। इसलिए अपनी दोस्ती में कड़ुवाहट न आने देने के लिए धार वाली तथा नुकीली वस्तुएं अपने समीप भी कभी नहीं रखनी चाहिएं।

शिक्षा सम्बन्धी भाग्य को जगायें

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा आपके मकान का उत्तर-पूर्व दिशा का भाग आपका ताल्लुक शिक्षा तथा ज्ञान से जोड़ता है। इस क्षेत्र का तत्व पृथ्वी से होता है।

अगर आप चाहते हैं कि परीक्षा में आपके बच्चे शानदार सफलता को हासिल करें तो इस कोने में स्फटिक के गोले लटकाइये। यह एक शानदार उपाय है।

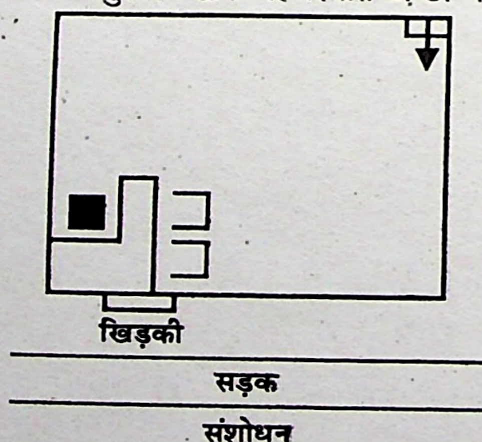
बच्चों का चित्र पश्चिम दिशा में लगाएं

भारतीय वस्तुशास्त्र द्वारा आपके मकान का पश्चिमी दिशा वाला भाग सन्तान तथा सृजनशीलता से सम्बंधित होता है। अगर आप इस क्षेत्र में दीवार पर अपने बच्चों की तस्वीर लगाते हैं, तो इससे उनकी ऊर्जा और भाग्य में वृद्धि होगी।

खुली खिड़की की ओर पीठ न हो

वास्तुशास्त्र के अनुसार आप अपने ऑफिस में खुली खिड़की की तरफ पीठ करके कभी न बैठें, क्योंकि इस प्रकार बैठने से आपकी सारी ऊर्जा नष्ट हो जाएगी, इस प्रकार आपके आत्मविश्वास में भी कमी आ जाएगी और आप हर समय स्वयं को तनावग्रस्त महसूस करेंगे।

अगर आपका ऑफिस तल मंजिल पर है और खिड़की की तरफ सड़क है, तब तो ऐसा होना और भी ज्यादा वास्तविक है, क्योंकि बाहर से आपकी पीठ दिखाई देती है तथा भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा यह स्थिति अच्छी नहीं मानी जाती।



संशोधन

बॉस का चित्र लगायें

वास्तुशास्त्र के द्वारा आपके घर का उत्तर-पश्चिम दिशा का भाग आपके

सहायक लोगों तथा आप पर उपकार करने वाले लोगों से सम्बन्ध रखता है।

अगर आप इस क्षेत्र में अपने बॉस का चित्र लगाएं तो उसकी तरफ से आपको मिलने वाली सहानुभूति में वृद्धि हो सकती है। अगर आपके ऑफिस में आपके प्रति आपके बॉस का व्यवहार अच्छा नहीं है तो इस स्थान में उसका चित्र लगाने से वह आपके साथ पहले से भी ज्यादा सहानुभूति तथा स्नेह रखने लगेगा। भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार यह एक सरल उपाय माना जाता है।

टॉयलेट में नमक का कटोरा रखें

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार टॉयलेट वह स्थान होता है जहां हम अपने शरीर की गन्दगी त्यागते हैं। इस गन्दगी में अनेक प्रकार के कीटाणु तथा जीवाणु विद्यमान रहते हैं, इसी वजह से टॉयलेट घर के किसी भी हिस्से में बना हो वो हमेशा बुरी ऊर्जा ही उत्पन्न करता है।

वास्तुशास्त्र के द्वारा आप अपने मकान के टॉयलेट की खिड़की में कांच के एक कटोरे में सादा समुद्री नमक भरकर रख दीजिए, क्योंकि नमक नकारात्मक ऊर्जा को सोख लेता है। जब यह नमक गीला हो जाए तो आप इसे बदलकर कटोरे में नया नमक भर दीजिए।

टपकता हुआ नल

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार जल को सम्पत्ति का प्रतीक माना जाता है। इसलिए अगर आपके घर का कोई भी नल लगातार टकप रहा हो तो उसकी फौरन मरम्मत करवा लेनी चाहिए, क्योंकि टपकते हुए नल के परिणाम यह होते हैं कि आपका सारा जमा किया हुआ धन पानी की तरह बह जाएगा। इसी तरह अवरुद्ध जलनिकास की भी फौरन मरम्मत करवा लेनी चाहिए। जितनी भी जल्दी हो सके ये रुकावट दूर कर देनी चाहिए।

पवन घंटी

भारतीय वास्तुशास्त्र के द्वारा पवन घंटियां घर में सौभाग्य बढ़ाने का अद्भुत स्रोत हैं। इन पवन घंटियों में लगी हुई छड़ों की संख्या और जिस पदार्थ से पवन घंटी बनी होती है, इन दोनों का काफी महत्त्व होता है।

ये पवन घंटी घर के किसी भी हिस्से में नहीं लटकनी चाहिएं, इनके लटकाने का स्थान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होता है। छः छड़ों वाली पवन घन्टी के लटकने का सबसे अच्छा स्थान आपका ड्राइंगरूम का उत्तर-पश्चिम दिशा का कोना है, क्योंकि इस कोने का रक्षक तत्व धातु होता है और ये पवन घंटियां धातु की प्रतीक होती

हैं। इनका प्रयोग सौभाग्य में वृद्धि करने और दुर्भाग्य के प्रभाव को कम करने के लिए किया जाता है।

अगर आप जहरीले बाणों की दिशा मोड़ना चाहते हैं, तो पांच छड़ों वाली पवन घंटी का उपयोग कीजिए। यह दुर्भाग्य को भी दबा सकती हैं। अपने मकान की पश्चिमी दिशा वाले स्थान पर आप सात छड़ों वाली पवन घंटियां भी लगा सकते हैं।

मालिक का चित्र दक्षिणी क्षेत्र में लगाएं

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार अपना स्वयं का चित्र दक्षिणी दिशा में लगाना चाहिए। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। अगर आपका अपना कोई निजी ऑफिस है तो आप लाल रंग के बॉर्डर में अपना अच्छा-सा फोटो जड़वाइये और इस क्षेत्र में लगवा दीजिए। यह आपकी प्रतिष्ठता तथा साख बढ़ाने का एक बहुत अच्छा उपाय है।

वास्तुशास्त्र के द्वारा आप गुलाबी या हल्के हरे रंग की पृष्ठभूमि में लाल रंग के अक्षरों में अपनी कम्पनी का नाम या उत्पादन का नाम छपवाकर भी अपने ऑफिस के दक्षिणी भाग में चिपका सकते हैं। इससे आपकी कम्पनी का नाम तथा साख दोनों की प्रतिष्ठा बढ़ती है।

इसकी वजह यह है कि दक्षिण दिशा का तत्व अग्नि माना जाता है तथा उससे जुड़ी हुई प्रसिद्धि। एक बात का और ध्यान रखना चाहिए कि लाल रंग अग्नि का प्रतीक है।

सोने के सिक्कों वाले पोत का प्रयोग

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा समुद्री जहाज किसी भी मनुष्य के काम में महान् उपलब्धि तथा कारोबार में सफलता का प्रतीक है। घर या ऑफिस में जहाज का मॉडल रखा जा सकता है। जहाज का मॉडल रखते समय इस बात का ध्यान जरूर रखना चाहिए कि जहाज घर या ऑफिस में अन्दर को आता हुआ रखा होना चाहिए। बाहर की तरफ न हो।

अगर जहाज दरवाजे की तरफ जाता हुआ दिखाई दे तो यह इस बात का प्रतीक है कि आपके सभी मौके बाहर की तरफ जा रहे हैं तथा आपके कारोबार में बहुत अधिक घाटा हो सकता है।

एक बात और ध्यान रखने योग्य है कि आपने किस तरह के जहाज का मॉडल अपने घर या ऑफिस में रख रखा है? अगर आप टाइटैनिक जहाज का प्रतिरूप रखते हैं, तो इसका अन्जाम यह होगा कि आपका कारोबार डूब जायेगा। इसी वजह

से हमेशा भाग्यशाली और सफल जहाज का ही मॉडल रखना चाहिए।

वास्तु के अनुसार ये आपके सौभाग्य के सूचक माने जाते हैं। अगर असली सोने के सिक्कों का प्रबन्ध न हो सके, तो आप जहाज में दूसरे सिक्के और रुपये भी डाल सकते हैं।

उत्तर दिशा में चीनी मिट्टी की वस्तुएं रखें

वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके मकान का उत्तर दिशा का भाग 'जल' तत्व से सम्बन्ध रखता है। तत्वों के विध्वंसक चक्र के अनुसार पृथ्वी तत्व जल तत्व को समाप्त कर देता है।

इसलिए घर के इस भाग में चीनी मिट्टी या मिट्टी से बनी हुई वस्तुएं नहीं रखनी चाहिएं, क्योंकि ये इस भाग की जल ऊर्जा के लिए हानिकारक होती हैं। आपके कैरियर पर भी उसका बुरा प्रभाव पड़ सकता है, इसलिए इस स्थिति से बचें।

वास्तुशास्त्र द्वारा स्फटिक से बनी चीजें और शीशे व स्फटिक से बना झाड़फानूस भी उत्तर दिशा में रखना चाहिए।

इस भाग में असली स्फटिक के गोले भी नहीं लटाकाने चाहिएं। वास्तु द्वारा यह सरल उपाय है।

ग्लोब का उपयोग

वास्तुशास्त्र के अनुसार ग्लोब का उपयोग अच्छा माना जाता है। आप अपने मकान के उत्तर-पूर्व दिशा में समूची पृथ्वी के प्रतीक स्वरूप ग्लोब रखिए। इससे शिक्षा तथा ज्ञान में वृद्धि होती है, क्योंकि इस क्षेत्र का तत्व पृथ्वी को माना जाता है। वास्तुशास्त्र के द्वारा यह एक सरल उपाय है।

सफेद फूलों का उपयोग

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके मकान में उत्तर दिशा का भाग आपके जीवन की प्रगति तथा कैरियर एवं सुअवसरों से सम्बन्धित होता है। इस दिशा वाले भाग में सफेद रंग के कृत्रिम फूलों से भरा हुआ लोहे या स्टील का गुलदस्ता रखें। इस प्रकार यह क्षेत्र समृद्ध होगा। वास्तुशास्त्र के द्वारा ये एक सरल उपाय है, इसलिए इसका उपयोग करें।

म्यूजिक वाली घड़ी का प्रयोग

वास्तुशास्त्र के अनुसार घर में म्यूजिक वाली घड़ी का होना शुभ माना जाता

है। आप बाजार से खरीदकर एक अच्छी-सी म्यूजिक वाली घड़ी ला सकते हैं और उसे अपने घर में लगा सकते हैं।

आपकी घड़ी का संगीत मधुर होना चाहिए। एक बात का ख्याल रखना आवश्यक है कि सन्तुलन वास्तु का आहार माना जाता है, इसलिए अधिक तेज आवाज वाली घड़ी न हो।

वास्तु द्वारा इस घड़ी को किसी दरवाजे के ऊपर या दरवाजे के रास्ते में न लगायें।

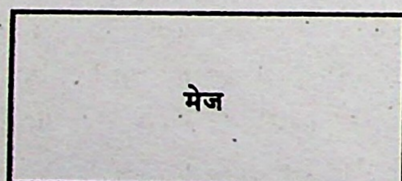
नीले रंग के पानी वाला प्राकृतिक चित्र

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके मकान के दक्षिण दिशा का भाग अग्नि तत्व से सम्बन्ध रखता है। यह जीवन की प्रसिद्धि तथा अभिलाषा से भी सम्बन्धित है। वास्तु द्वारा जल अग्नि को समाप्त कर देता है।

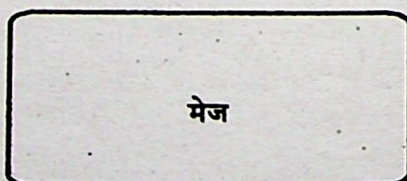
वास्तु द्वारा इस वजह से इस क्षेत्र में पानी वाला चित्र भूलकर भी नहीं लगाना चाहिए, यह स्थिति आपके नाम तथा साख दोनों के लिए हानिकारक है। अगर इस भाग में नीले रंग की कोई वस्तु रखी हो तो इसे हटवा देना चाहिए, क्योंकि नीला रंग जल तत्व का प्रतीक माना जाता है।

फर्नीचर के कोने गोल हों

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार फर्नीचर के कोने गोल होने चाहिएं, क्योंकि ये बुरी ऊर्जा को प्रवाहित करते हैं। जब भी आप अपना फर्नीचर बनवाएं तो इस बात का ख्याल रखें कि फर्नीचर के कोने गोल होने चाहिएं। इसके किनारों को गोल करके चिकना करवा देना बहुत जरूरी होता है। इसी प्रकार अपने घर के खम्भों तथा शहतीरों के कोने भी गोल होने चाहिएं। वास्तुशास्त्र के अनुसार यह एक गम्भीर समस्या है, इससे बचना चाहिए।



दोषपूर्ण



संशोधन

सात छड़ों वाली पवन घंटी

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके मकान का पश्चिमी भाग का सम्बन्ध सर्जनात्मकता तथा सन्तान से होता है, इस स्थान से सम्बन्ध रखने वाली संख्या सात मानी जाती है इस वजह से इस स्थान में सात छड़ वाली पवन घंटी रखने से इसकी ऊर्जा में वृद्धि होती जाती है।

एक बात का ध्यान खास तौर पर रखना चाहिए कि पश्चिम दिशा का तत्व धातु को माना जाता है।

लाल रंग की वस्तु का उपयोग

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके घर का दक्षिण दिशा वाला भाग जीवन की प्रसिद्धि से सम्बन्धित होता है। इस क्षेत्र का तत्व अग्नि को माना जाता है। इस भाग में लाल रंग का चित्र लटकाकर लाल रंग की कोई वस्तु रखकर आप अपनी प्रसिद्धि में बढ़ोत्तरी कर सकते हैं, क्योंकि यह लाल रंग अग्नि का प्रतीक माना जाता है। भारतीय वास्तुशास्त्र के द्वारा यह एक सरल उपाय है, इसे प्रयोग में लाना चाहिए।

धन की पेटी में तीन सिक्के डालें

भारतीय वास्तुशास्त्र के द्वारा आपकी सम्पन्नता तथा सौभाग्य में वृद्धि करने के लिए पुराने सिक्के सबसे ज्यादा प्रभावकारी सिद्ध होते हैं।

आप अपनी सम्पत्ति में वृद्धि करने के लिए लाल रंग के धागे में तीन सिक्के बांधकर अपनी नकदी-पेटी में रख सकते हैं।

वास्तुशास्त्र के अनुसार आपकी दुकान में बिक्री बढ़ाने का यह बहुत अच्छा उपाय है। आप अपनी दुकान में एक ऐसा दर्पण लगवा लीजिए जिसमें आपकी धन की पेटी प्रतिबिंबित हो सके। यह उपाय आपके भाग्य में वृद्धि करेगा। आप इस दर्पण को दुकान में कहीं भी लगा सकते हैं लेकिन एक बात का ख्याल अवश्य रखना चाहिए कि उसमें मुख्य द्वार प्रतिबिंबित न हो, क्योंकि इससे बहुत ज्यादा नुकसान हो सकता है। अगर दर्पण में नकदी-पेटी के बजाय मुख्य दरवाजा प्रतिबिंबित होता है तो दुकान में प्रवेश होने वाली शुद्ध वायु इसमें प्रतिबिंबित होकर सीधे बाहर चली जाएगी और इनके साथ-साथ सभी सौभाग्य भी बाहर की ओर चले जाएंगे।

अगर आपकी दुकान में रखा हुआ सामान आईने में प्रतिबिंबित होता है तो यह स्थिति दुकान में रखे सामान के दोगुना होने की सूचक मानी जाती है। इस प्रकार दुकान हमेशा भरी-भरी लगती है। आईने में नकदी पेटी का प्रतिबिंबित होना

भाग्य में वृद्धि का सूचक माना जाता है। वास्तुशास्त्र द्वारा यह एक सरल उपाय है।

पीले रंग के गुलदस्ते का उपयोग

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके मकान का पश्चिमी भाग धातु तत्व से सम्बन्धित है। वास्तु द्वारा धातु पृथ्वी से उत्पन्न होती है। इसी वजह से अपने मकान के पश्चिम दिशा वाले भाग में पीले रंग के मिट्टी के फूलदान में क्रीम कलर के कृत्रिम फूल लाने से इस हिस्से की धातु ऊर्जा में वृद्धि होती है और सन्तान तथा सर्जनात्मकता का लाभ भी मिलता है।

वास्तुशास्त्र के द्वारा पश्चिमी दिशा वाले भाग का सम्बन्ध सर्जनात्मकता और सन्तान से होता है और इसी क्षेत्र से जीवन की अभिलाषा जुड़ी रहती है। वास्तु द्वारा यह एक सरल उपाय है।

दक्षिण-पश्चिम में हरे पौधे न हों

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके मकान के दक्षिण-पश्चिम दिशा वाले भाग में हरे पौधे ही रखने चाहिएं, क्योंकि यह क्षेत्र पृथ्वी तत्व का क्षेत्र माना जाता है तथा यह रिश्तों और विवाह सम्बन्धी अभिलाषाओं से भी जुड़ा हुआ है और हरे पौधे काष्ठ तत्व से सम्बन्धित होते हैं।

वास्तुशास्त्र द्वारा काष्ठ पृथ्वी को नष्ट कर देता है इसी वजह से इस दिशा में हरे पौधे नहीं लगाने चाहिएं। यह स्थिति इस मकान की ऊर्जा को नष्ट कर देती है। इससे रिश्तों के ऊपर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। वैवाहिक संभावनाएं भी इससे क्षीण हो जाएंगी। अगर आपने अपने घर के इस क्षेत्र में हरे पौधे रखे हों तो उन्हें वहां से हटा दें। वास्तु द्वारा यह एक घातक स्थिति मानी जाती है।

नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने के लिए अगरबत्ती

वास्तुशास्त्र के द्वारा घर में प्रतिदिन धूपबत्ती व अगरबत्ती का प्रयोग करना आवश्यक होता है। वैसे तो हर घर में पूजा-आराधना के समय लोग इनका प्रयोग करते हैं। अगरबत्तियों की मोहक खुशबू से आसपास का वातावरण महक उठता है। ये बेहद उपयोगी होती हैं, क्योंकि इनसे अशुद्ध वायु शुद्ध हो जाती है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार इनके प्रयोग से ऊर्जा का सृजन होता है इससे स्थान पवित्र हो जाता है और लोगों के मन में शान्ति भी बनी रहती है, इसलिए प्रतिदिन अपने घर में अगरबत्तियों और धूपबत्तियों का प्रयोग उत्तम माना जाता है और यह स्थिति शुभ होती है। वास्तु द्वारा यह एक सरल उपाय है।

पवित्र धुन

वास्तुशास्त्र के अनुसार सुबह-सवेरे पूजा-आराधना कर लेने के पश्चात् आप गायत्री मन्त्र का जाप कीजिए या फिर कुछ देर के लिए गायत्री मन्त्र की कैसेट लगा दीजिए।

वास्तु द्वारा इस प्रकार करने से आपका सारा वातावरण इसकी पवित्र धुन से भर जायेगा। हिन्दू लोग यही तरीका अपना सकते हैं और जो लोग दूसरे धर्मों से ताल्लुक रखते हैं वे कोई भी अपने धर्म की कैसेट लगा सकते हैं।

उत्तर-पश्चिम में लाल रंग की वस्तु व तेज प्रकाश न हो

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार उत्तर-पश्चिम दिशा में तेज प्रकाश तथा लाल रंग की वस्तुएं नहीं रखनी चाहिएं। अगर आपके अपने सम्बन्धी आपसे विश्वासघात कर रहे हैं तो आप वास्तुशास्त्र के उपायों को अपनाकर इसका हल ढूंढ सकते हैं।

इनके द्वारा कोई भी व्यक्ति अपने भाग्य में वृद्धि कर सकता है तथा वह अपने जीवन में सहायक सिद्ध होने वाले दोस्तों से सम्बन्धित भाग्य में वृद्धि कर सकता है।

आपके मकान का पश्चिम दिशा वाला कोना आपके जीवन में सहायक सिद्ध होने वाले लोगों से सम्बन्ध रखने वाला भाग्य का कोना माना जाता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार आप इस स्थान पर धातु से बनी छः छड़ों वाली खोखली पवन घंटी लटकाकर इस कोने को शक्तिशाली बना सकते हैं, क्योंकि इस कोने का तत्व धातु माना जाता है। यह एक सरल उपाय है।

मगर एक बात का ख्याल रखें, अपने मकान के उत्तर-पश्चिम दिशा वाले भाग में तेज प्रकाश वाली बत्ती तथा झाड़फानूस आदि नहीं लगाएं। यह स्थिति हानिकारक होती है। लाल रंग की वस्तुएं अग्नि की प्रतीक मानी जाती हैं। उत्तर-पश्चिम दिशा में इनका होना अशुभ माना जाता है। इसमें विश्वासघात की आशंका बनी रहती है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जिस समय आपको सहायता की जरूरत होती है उस समय आपकी सहायता के लिए कोई भी आगे नहीं बढ़ता। वास्तु द्वारा यह एक गम्भीर समस्या है।

दक्षिण-पूर्व दिशा में धातु की वस्तु रखने से बचें

वास्तुशास्त्र के अनुसार दक्षिण-पूर्व दिशा में वस्तुएं नहीं रखनी चाहिएं, क्योंकि दक्षिण-पूर्व दिशा वाला भाग काष्ठ तत्व से सम्बन्ध रखता है—और धातु काष्ठ को नष्ट कर देती है।

वास्तु द्वारा इस वजह से इस भाग में कैंची तथा चाकू जैसी धारदार वस्तुएं नहीं रखनी चाहिएं यह स्थिति इस क्षेत्र के लिए हानिकारक मानी जाती है। इन वस्तुओं का नकारात्मक प्रभाव सम्पन्नता के मार्ग में बाधा उत्पन्न करता है, क्योंकि इस हिस्से से जुड़ी हुई जीवन की अभिलाषाएं सम्पत्ति से ताल्लुक रखती हैं। वास्तुंशास्त्र के द्वारा यह एक सरल उपाय है।

धातु के कछुए का प्रयोग


कछुआ परिवार

वास्तुशास्त्र के अनुसार धातु के कछुए का प्रयोग करना अच्छा माना जाता है। आप पानी से भरे हुए एक कटोरे में धातु का बना हुआ कछुए का प्रतिरूप डालिए तथा उसे अपने मकान के उत्तरी भाग में रखिए।

वास्तुशास्त्र के द्वारा यह धातु से निर्मित कछुआ आपकी आयु में वृद्धि करता है और जीवन में प्रगति के अवसर प्रदान करता है। अगर आपका बैडरूम घर के उत्तरी भाग में हो उसमें आप सिर्फ कछुए का प्रतिरूप ही रखें। उसके साथ कटोरे में पानी भूलकर भी न रखें, क्योंकि बैडरूम में पानी रखना उचित नहीं होगा। वास्तुशास्त्र द्वारा यह भी एक उत्तम उपाय होता है।

अगर आप इस क्षेत्र में पानी से भरे कटोरे के अन्दर असली कछुआ रखें तो आपको और भी ज्यादा इसका लाभ मिल सकता है, लेकिन ऐसा न होने पर धातु का कछुआ भी प्रभावशाली सिद्ध होता है।

परदों का उपयोग

वास्तुशास्त्र के अनुसार भाग्य की वृद्धि के लिए परदों का उपयोग भी किया जा सकता है। वैसे तो आपके घर या ऑफिस के परदे तथा सजावट का सामान आपके व्यक्तिगत तत्व के अनुकूल ही बनाए जाते हैं और इनके द्वारा सौभाग्य की प्राप्ति भी होती है, वास्तु द्वारा यह उत्तम उपाय है।

आपके घर के परदों तथा उनके डिजाइन स्थिति के मुताबिक अलग-अलग होने चाहिएं। वास्तव में परदा दो परत वाला ही होना चाहिए। आपके घर की पश्चिम दिशा के कमरे के परदे सफेद रंग के ही होने चाहिएं, क्योंकि यह क्षेत्र धातु तत्व से सम्बन्धित होता है और सफेद रंग धातु से सम्बन्ध रखता है।

इसी तरह उत्तर दिशा वाले कमरों के लिए नीले रंग के परदे उपयुक्त रहते हैं क्योंकि यह क्षेत्र जल तत्व से सम्बन्धित माना जाता है। मकान के दक्षिणी दिशा वाले कमरों के लिए लाल रंग के परदे तथा त्रिभुजाकार डिजाइन के पर्दे ही उपयुक्त माने जाते हैं क्योंकि लाल रंग अग्नि तत्व से सम्बन्ध रखता है और पूर्व दिशा का भाग काष्ठ तत्व से सम्बन्धित माना जाता है, इसलिए इस दिशा वाले कमरों में

हरे रंग के आयताकार डिजाइन के परदे उत्तम होते हैं।

बन्द पड़ी घड़ियां

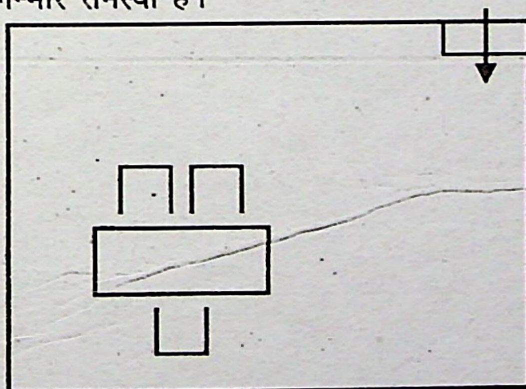
भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार अपने घर में बन्द पड़ी घड़ियां नहीं रखनी चाहिएं। सभी बन्द पड़ी घड़ियों को अपने घर से हटा देना चाहिए, जितनी जल्दी हो सके आप इनसे छुटकारा पा लें तो बहुत अच्छा है, क्योंकि घर में बन्द पड़ी हुई घड़ियां आपको नुकसान पहुंचा सकती हैं।

अनेकों लोगों का पुरानी घड़ियों से लगाव रहता है, इसलिए वह हमेशा उन्हें अपने पास रखते हैं। अगर इन घड़ियों को अपने पास रखना ही है तो फिर उन्हें ठीक करवाकर ही अपने पास रखें, क्योंकि बन्द घड़ी अच्छी नहीं मानी जाती।

दरवाजे की ओर पीठ

वास्तुशास्त्र द्वारा दरवाजे की ओर पीठ करके बैठना अच्छी स्थिति नहीं मानी जाती, इसलिए अपने दरवाजे की तरफ पीठ करके कभी नहीं बैठना चाहिए। चाहे वह आपके लिए कितनी ही महत्त्वपूर्ण दिशा क्यों न हो, उसका फौरन त्याग कर देना ही बेहतर होगा।

वास्तु द्वारा दरवाजे की तरफ पीठ करके बैठने का परिणाम यह होगा कि आपको छल-कपट तथा धोखाधड़ी का शिकार होना पड़ सकता है और आपमें आत्मनियन्त्रण की भी कमी आ जायेगी, क्योंकि आपकी नजर दरवाजे पर नहीं होती है। वास्तु द्वारा यह एक गम्भीर समस्या है।



मालिक के बैठने की सही स्थिति

दरवाजे के ऊपर कैलेण्डर

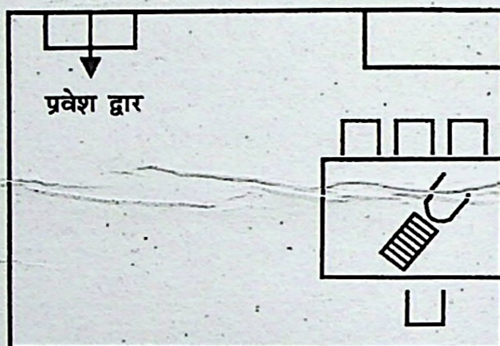
वास्तुशास्त्र के अनुसार किसी भी दरवाजे के ऊपर कैलेण्डर आदि नहीं लगाना

चाहिए। यह स्थिति वास्तु द्वारा अच्छी नहीं होती; क्योंकि दरवाजे के ऊपर, खास तौर से मुख्य दरवाजे के ऊपर कैलेण्डर या घड़ी लटकाना घर के सदस्यों की दीर्घ आयु के लिए हानिकारक होता है।

प्रतीकात्मक रूप से इसका मतलब यह होता है कि आपकी जिन्दगी के कितने दिन बाकी बचे हैं?

खाली दीवार की तरफ मुंह करके न बैठें

इस आधुनिक दौर में लोग कम्प्यूटर तथा इन्टरनेट की वजह से बड़ी-बड़ी कम्पनियों के मालिक दीवार की ओर मुंह करके बैठ जाते हैं, बगल में ही आनेवालों के बैठने के लिए जगह होती है, वास्तु द्वारा यह एक बहुत ही गलत स्थिति समझी जाती है।

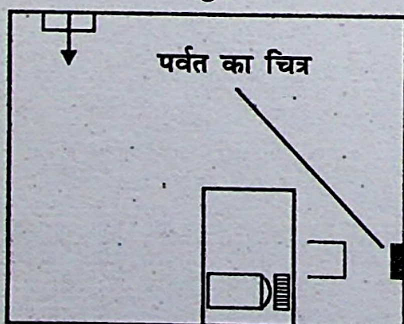


बैठने की सही स्थिति

वास्तुशास्त्र के अनुसार नीति निर्धारित करने वाले व्यक्ति का मुंह दीवार की तरफ होता है। इस स्थिति की वजह से वह धीरे-धीरे अदूरदर्शी होता चला जाएगा। जबकि उसे दूरदर्शी होना चाहिए। इस प्रकार की स्थिति की व्यवस्था किस प्रकार करनी चाहिए, यह आपको चित्र के द्वारा समझ आ जायेगा।

पीठ के पीछे पर्वत का चित्र

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार अपनी पीठ के पीछे पर्वत का चित्र लगाना काफी अच्छा माना जाता है इस स्थिति के कारण आपके पृष्ठ भाग को बल मिलता है। इसके लिए कछुए के आकार से मिलता-जुलता पर्वत का चित्र अधिक उपयुक्त होगा। आपके पीछे पर्वत का चित्र होना पृष्ठ भाग से आपको मजबूत समर्थन मिलने का प्रतीक माना जाता है। इस स्थिति से आपके अन्दर आत्मविश्वास की भावना भी बढ़ेगी। कमजोर इच्छाशक्ति तथा आत्मविश्वास से रहित लोगों को अपने लाभ के लिए इस उपाय का प्रयोग करना चाहिए।



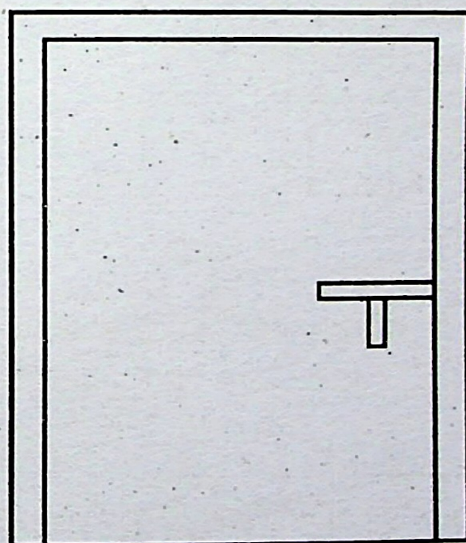
सफलता की सीढ़ी फीनिक्स

वास्तुशास्त्र के अनुसार फीनिक्स को अच्छा माना जाता है। यह इच्छा पूरी होने वाले भाग्य का प्रतीक समझा जाता है। दक्षिण दिशा के कोने को गतिशील बनाने के लिए फीनिक्स बहुत ही प्रभावशाली समझा जाता है।

अगर आप अपने भाग्य को जगाना चाहते हैं तो फीनिक्स के रूप में उसका चित्र या पेन्टिंग अपने ऑफिस के दक्षिणी कोने में लगा दें। दक्षिण दिशा से फिनिक्स की पेन्टिंग का होना दूरदर्शिका की सूचक होती है जो बुद्धिमान व्यवसाय करने वाले व्यक्ति के लिए जरूरी है।

घोड़े की नाल का प्रयोग





मुख्य द्वार

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार घोड़े की नाल को बहुत ही शुभ माना जाता है। घोड़े की नाल के आकार की भूमि वास्तु द्वारा आदर्श आकार वाली भूमि मानी जाती है, क्योंकि फेंगशुई के अनुसार भी भाग्य के लिए यह एक प्रशंसनीय आकार समझा जाता है।

भारतीय वास्तुशास्त्र के द्वारा घोड़े की नाल को पारम्परिक रूप से सौभाग्यवर्धक तथा शुभ माना जाता है। बहुत-से लोग अपनी सुरक्षा तथा सौभाग्य के लिए इसे

अपने घर के मुख्य द्वार के ऊपर दरवाजे के फ्रेम के बाहर लगाते हैं। घर के दरवाजे पर नाल लगाने का सही तरीका होता है कि उसके दोनों सिरों की तरफ होनी चाहिए।

वास्तु द्वारा घोड़े की नाल का सम्बन्ध धातु तत्व से है इसलिए पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व दिशा की तरफ वाले दरवाजे पर इसका प्रयोग नहीं होना चाहिए। विशेष्र तौर पर यह नाल पश्चिम, उत्तर-पश्चिम और उत्तर दिशा की ओर वाले दरवाजे के लिए ज्यादा प्रभावशाली होती है। इसका प्रयोग करना उत्तम होता है।

भाग्य के लिए बाँस

वास्तुशास्त्र के अनुसार बाँस के पौधे बहुत शक्तिशाली प्रतीक माने जाते हैं। बाँस प्रतिकूल हालातों में भी पूर्ण वृद्धि प्रदान करता है—और किसी भी तूफान का सामना करने की सामर्थ्य उनमें होती है, इसलिए इनका उपयोग उत्तम होता है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार बाँस का पौधा लम्बी आयु तथा अच्छे स्वास्थ्य का सूचक माना जाता है, इस वजह से आप अपने ऑफिस तथा मकान में बाँस के पौधे का चित्र लगा सकते हैं इसके द्वारा आपको शक्ति मिलेगी।

अपनी दुकान में भी आप बाँस का तना लटकाकर दुकान की सुदृढ़ सुरक्षा का सृजन कर सकते हैं। ऐसा करने से आपका कारोबार बाँस की तरह संकट में भी स्थिर रहेगा। अगर आप चाहें तो बाँस के दो टुकड़े लेकर उन्हें लाल धागे से बांधकर अपनी दुकान के दरवाजे पर भी टांग सकते हैं। बाँस के टुकड़ों की लम्बाई आठ से छः इंच तक ही हो और इनके दोनों सिरे खुले होने चाहिएं।

टेलीफोन व फैक्स मशीन का उचित स्थान

वास्तुशास्त्र के अनुसार टेलीफोन और फैक्स मशीनें धातु की बनी होती हैं इसलिए इन दोनों कारणों से टेलीफोन और फैक्स मशीन को ऑफिस के उत्तर-पश्चिम दिशा के कोने में ही रखना चाहिए।

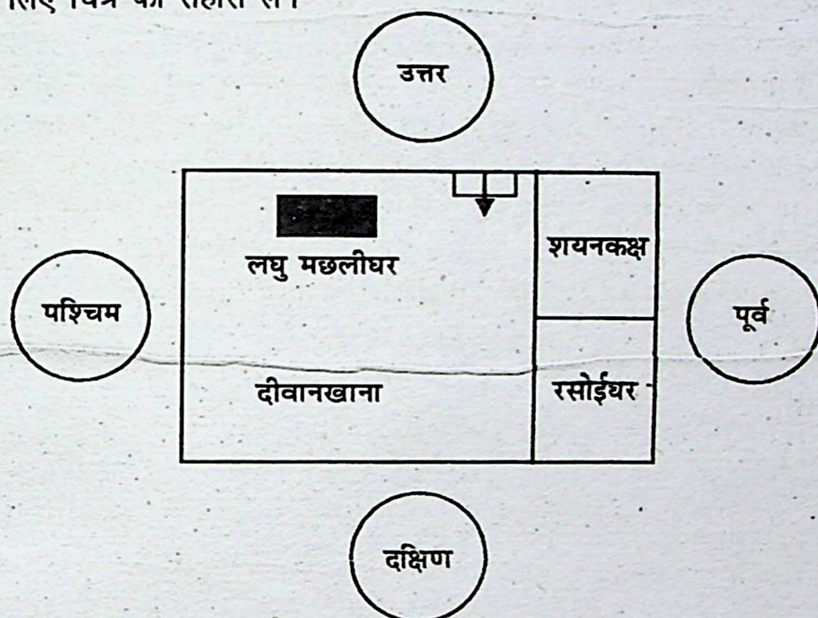
एक बात का ख्याल रखें कि उत्तर-पश्चिम दिशा वाला भाग सहायक लोगों का क्षेत्र होता है और इस क्षेत्र का तत्व धातु माना जाता है।

दरवाजे के पास पानी का उपयोग

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार दरवाजे के पास पानी का होना शुभ व मंगलकारी माना जाता है। खासतौर से यह उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पूर्व दिशा वाले दरवाजे के लिए बहुत उपयोगी होता है।

वास्तु द्वारा पानी का बर्तन बहुत ही सावधानी के साथ रखना चाहिए। इस बर्तन को दरवाजे के पास केवल बाईं तरफ ही रखना चाहिए; यानि जब आप अपने

घर में खड़े हों और बाहर की तरफ देख रहे हों, तो आप बाईं तरफ ज्यादा सुविधा के लिए चित्र का सहारा लें।



ऊपर चित्र में जिस तरह पानी का बर्तन रखा गया है उसे बहुत अच्छा माना जाता है। यह स्थिति काफी लाभदायक भी होती है।

एक बात का खासतौर पर ध्यान रखना आवश्यक है कि पानी का पात्र भूलकर भी बाईं तरफ नहीं होना चाहिए, क्योंकि इसका प्रभाव उल्टा भी हो सकता है। इस स्थिति से घर का पुरुष किसी दूसरी महिला की तरफ आकर्षित हो सकता है। आपके वैवाहिक जीवन में किसी दूसरे व्यक्ति का प्रवेश भी हो सकता है।

अपने मकान के दोनों तरफ भी पानी नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह स्थिति दोनों तरफ पानी रखना दोनों आंखों में आंसू आने के समान होती है इसलिए इस स्थिति से बचना आवश्यक है।

निःसन्तान दम्पति

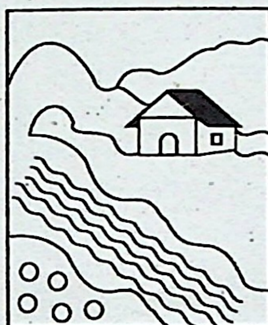
अक्सर पति-पत्नी के बीच कोई समस्या नहीं होती, फिर भी वे निःसन्तान रह जाते हैं, इसकी वजह बड़े-बड़े शहर होते हैं जहां की तेज रफ्तारी और प्रदूषण समस्या बने हुए हैं। तनाव और प्रदूषण के कारण गर्भाशय की ऊष्णता में कमी आ जाती है और गर्भ धारण करना मुश्किल हो जाता है।

वास्तु द्वारा प्रत्येक व्यक्ति की भाग्य की दिशा अलग-अलग होती है। इस

प्रकार के दम्पतियों के गर्भधारण न कर पाने के कारण बहुधा उनके बैडरूम और मुख्य दरवाजे पर एक तरह के विषैले बाणों का प्रहार होना है। इसलिए अपने मुख्य दरवाजे की जांच जरूर करवा लेनी चाहिए कि कहीं बाहर कोई अवरोध या प्रहार करने वाला कोई विषैला बाण तो नहीं है।

कभी-कभी किसी अपार्टमेन्ट के मुख्य दरवाजे पर तीक्ष्ण खम्भे या मुख्य दरवाजे के सामने वाली दीवार की तेज धार के लिए विषैले बाणों का प्रहार हो सकता है। अपने मकान के बीम के नीचे सोना या बैडरूम में खम्भे की कोर का आपकी तरफ होना भी विषैला बाण हो सकता है। गर्भधारण करने के लिए इन सभी स्थितियों से बचिये। सोते समय खास तौर पर जब आप सन्तान के लिए प्रयास कर रहे हों तो उस समय हल्का म्यूजिक सुनिये, ताकि आप रोमान्टिक हो सकें।





26



व्यावसायिक वास्तुशास्त्र क्या है?

व्यावसायिक वास्तुशास्त्र भारतीय वास्तुशास्त्र के अधीन ही भवन-निर्माण के निर्देश देता है, इसलिए प्रत्येक व्यावसायिक निर्माण, दुकान आदि का चयन, भूखण्ड का चयन कॉम्पलैक्स या कारखाने आदि के निर्माण में पूर्ववर्णित वास्तुनियमों का ही महत्त्व सबसे ज्यादा है। फिर भी व्यावसायिक वास्तुशास्त्र के लिए महत्त्वपूर्ण निर्देशों का विवरण यहां दिया जा रहा है।

भूमि

1. आप अपने व्यवसाय के लिए उत्तरमुख के भवन, कॉम्पलैक्स, दुकान आदि सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं। पूर्व की तरफ मुंह होने पर भी वह श्रेष्ठ है। पश्चिम दिशा सामान्य तथा दक्षिण दिशा को नेष्ट समझा जाता है। भूमि से सम्बन्ध रखने वाले सभी गुण-दोषों का परीक्षण वास्तु द्वारा करें।

2. कारोबार के लिए वैश्या भूमि ही सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। ब्राह्मणी भूमि भी उत्तम मानी जाती है। क्षत्रिया भूमि सामान्य तथा शूद्रा भूमि नेष्ट होती है। शूद्रा भूमि में फैक्ट्री, श्रमिक वर्कशाप आदि बनाये जा सकते हैं। लेकिन इसका कार्यालय वायव्य कोण में उत्तरमुख अथवा पूर्वमुख का बनवायें। कार्यालय के दायरे में 4 मिट्टी कटवाकर परिवर्तित करवा दें।

भवन/दुकान/कॉम्पलैक्स/फैक्ट्री

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार व्यावसायिक भवनों में वास्तु के नियम प्रयोग करने चाहिएं। विद्युतीय पावर रूम, जेनरेटर, आदि आग्नेय कोण में, कार्यालय वायव्य कोण में प्रांगण या सामने खुला हुआ भाग और जलस्रोत ईशान कोण में ऊंचे स्तम्भ

शीर्ष आदि नैर्ऋत्य कोण में बनवायें। ब्रह्मस्थान पर खुला हॉल या प्रांगण या बन्द हॉल रखें। यहां निर्माण न करायें तथा मशीनें आदि भी न लगायें।

भवन की मुख दिशा

भारतीय वास्तुशास्त्र के द्वारा दुकानों में इन्हीं नियमों का पालन करना चाहिए। दुकान का मुंह उत्तर दिशा की तरफ रहना चाहिए और काउंटर इस तरह हो कि उस पर बैठने वाले व्यक्ति का मुंह उत्तर दिशा की ओर रहना चाहिए। यह स्थिति उत्तम मानी जाती है। अगर पूर्व की तरफ दुकान का मुंह हो तथा पूर्व में ही व्यापारी मुंह करके बैठता हो तो ये भी श्रेष्ठ स्थिति मानी जाती है। पश्चिम दिशा की तरफ मुखवाली दुकान हो तथा व्यापारी का मुख भी इसी दिशा में हो तो सामान्य स्थिति होती है। अगर दक्षिण दिशा की ओर मुख वाली दुकान हो तो व्यवसायी का मुख पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए, क्योंकि ये दिशा अच्छी नहीं मानी जाती है। अगर मुमकिन हो सके तो उत्तर की ओर मुख करके बैठें, यह स्थिति और भी अच्छी मानी जायेगी। वास्तु द्वारा यह एक सरल उपाय है।

लॉन, पार्किंग आदि

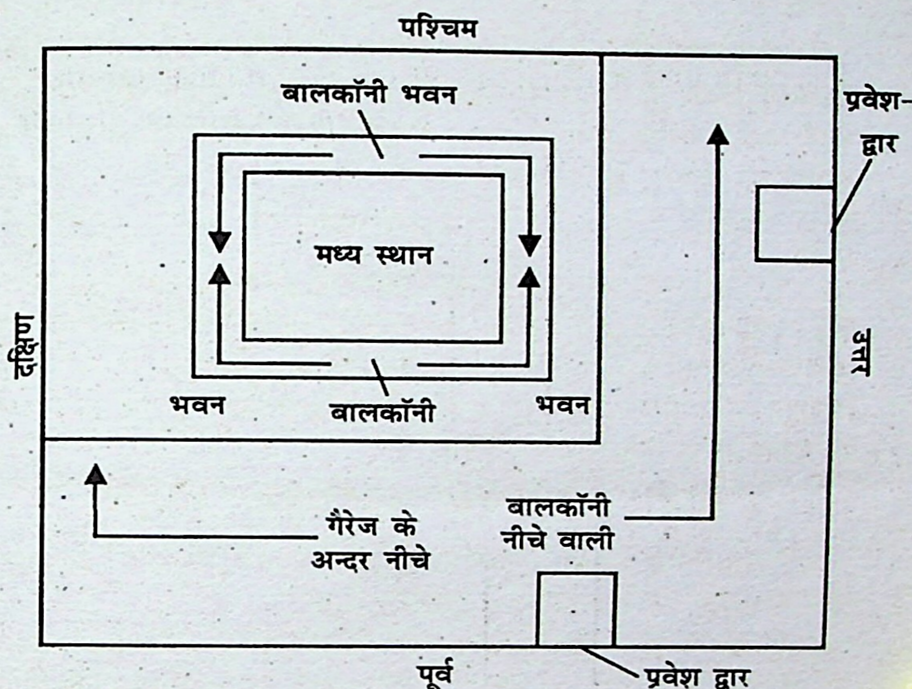
भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार कॉमर्शियल कॉम्पलैक्स में लॉन का स्थान ईशान कोण में होना चाहिए तथा पार्किंग आदि का प्रबन्ध नैर्ऋत्य में होना चाहिए। आपका विद्युत बोर्ड आग्नेय में तथा जलस्रोत ईशान में होना चाहिए। पानी की टंकी ईशान अथवा पश्चिम में आग्नेय की तरफ बनवायें तथा नैर्ऋत्य को इससे ऊंचा रखें।

भवन के दोष

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार कॉमर्शियल कॉम्पलैक्स, दुकानों तथा व्यांवसायिक भवनों के द्वारवेध मार्गवेध, भवनवेध आदि दोष पूर्व में वर्णित नियमों के ही अनुसार होते हैं, इस बात का अवश्य ख्याल रखें।

पानी की निकासी का प्रबन्ध

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार व्यावसायिक मकानों तथा दुकानों का एवं कॉम्पलैक्स में पानी की निकासी का प्रबन्ध ईशान दिशा की ओर होना चाहिए।



प्रवेश द्वार तथा खिड़कियां

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार व्यावसायिक मकानों तथा दुकानों का प्रवेश द्वार उत्तर अथवा पूर्व दिशा में ही रखना शुभ माना जाता है। भूमिखण्ड पर ही नहीं, भवनों एवं कक्षों में प्रवेश करने वाला दरवाजा भी इसी तरह लगायें।

वास्तु द्वारा कॉमर्शियल, कॉम्पलैक्स में प्रवेश द्वार एक से ज्यादा होने चाहिएं।

कॉमर्शियल मकानों की खिड़कियां आदि वास्तुशास्त्र के पहले नियमों के अधीन लगवानी चाहिएं; अर्थात् वायव्य, पूर्व तथा पश्चिम दिशा में।

भवन की मंजिल की ऊंचाई

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार बहुमंजिले भवनों में भी निचली मंजिल की ऊंचाई 1/2 के अनुपात से ज्यादा होनी चाहिए। अगर बहुमंज़िली गणना में ऊपरी मंजिलों की ऊंचाई कम हो रही है तो दीवारों की मोटाई का अनुपात इसी क्रम में ही बढ़वा देना चाहिए।

बीम तथा मशीनों की स्थिति

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार बीम उत्तर-दक्षिण दिशा में ही डलवाना चाहिए—और इसके नीचे मशीनें भूलकर भी न डलवायें।

वास्तु द्वारा मशीनें नैर्ऋत्य कोण में ही लगाना उचित मानी जाती हैं। किसी भी भवन, फैक्ट्री, कक्ष आदि में मशीनों की स्थापना तथा विद्युतीय स्रोत, स्विचबोर्ड, भट्‌टी आदि आग्नेय कोण पर लगायें। नैर्ऋत्य कोण पर हौज आदि न खुदवायें, मशीनों की स्थापना भी फर्श से कुछ ऊपर रखें।

सिनेमाहॉल

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार सिनेमाहॉल आदि में पूर्व-उत्तर में खाली जगह छोड़ें। इसके अन्तर्गत पावर रूम आग्नेय में बनवायें। जलस्रोत ईशान कोण में रखना चाहिए। प्रोजेक्टर रूम भी ईशान कोण में बनवाना चाहिए तथा नैर्ऋत्य दिशा में विज्ञापन का स्थायी कोण इस तरह बनवायें कि वह सभी कोणों से ऊपर हो। दरवाजों को वास्तुचक्र के अनुसार ही लगायें।

सीढ़ी, शौचालय, बालकॉनी, गोदाम

वास्तुशास्त्र के अनुसार शौचालय आदि चाहे भवन के हों या सैट के या कमरे के इन्हें केवल नैर्ऋत्य दिशा में ही स्थापित करवायें।

वास्तुशास्त्र के अनुसार सीढ़ियां दक्षिण अथवा पश्चिम में पूर्व अथवा उत्तर की तरफ मुंह वाली बनवायें। सीढ़ियों में सभी नियमों का पालन भवन की सीढ़ियों वाला ही करें।

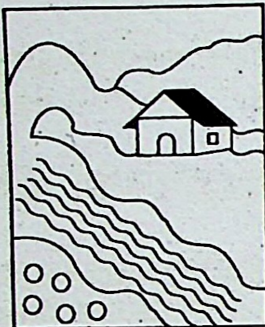
अन्य निर्देश:–

1. व्यावसायिक भवनों के भी दोष वही होते हैं, जो भवनों के विषय में बताये गये हैं। इनका शोधन भी वैसे ही किया जाता है। इस सम्बन्ध में जिस अंग की जानकारी करनी हो, वह भवन के उन्हीं अंगों में ही करनी चाहिए।
2. भवन किसी भी उद्देश्य का हो, वायु की निकासी एवं आगमन का प्रबन्ध उत्तम कोटि का होना चाहिए। यथासम्भव इसकी प्राकृतिक व्यवस्था ही उचित होती है।
3. ऊंचे भवनों में तड़ित परिचालक लगवायें।
4. छत पर रेलिंग पाइप, विज्ञापन, होल्डर, अन्टेना, स्तम्भ आदि में वास्तु नियमों का पालन करना चाहिए। नैर्ऋत्य सबसे ऊंचा तथा ईशान कोण नीचा होना चाहिए अच्छा हो कि ईशान की तरफ कुछ न लगायें। संकेतक स्तम्भ नैर्ऋत्य दिशा में लगायें।
5. प्रशासनिक कार्यालय अर्थात् मुख्य कार्यालय भवन अथवा भूमिखण्ड के उत्तर, ईशान एवं वायव्य कोण के कोने में भूमि अथवा भवन की उस भुजा की लम्बाई का 1/5 भाग छोड़कर उत्तर में किसी भी स्थान पर बनाया जा सकता है।
6. तैयार किया माल का गोदाम वायव्य कोण में बनवाएं।
7. रिसेप्शन तथा पूजागृह अथवा मन्दिर आदि ईशान कोण में बनवाएं। फैक्ट्री आदि

में मन्दिर बनवायें तो यह स्थिति मुख्य भवन से नीची होनी चाहिए और ईशान कोण में इससे पांच गुनी अधिक भूमि खाली होनी चाहिए। मन्दिर दक्षिण अथवा पूर्व मुंह का बनवाना चाहिए।

8. चौकीदार के रहने का आवास अथवा शेड आग्नेय कोण में ही स्थापित करना चाहिए।
9. सामान तौलने की तराजू वायव्य कोण की तरफ बनवाना उचित है लेकिन कच्चा माल आदि आग पकड़ने वाला हो, तो आग्नेय दिशा में ही लगाना उचित होगा।
10. आपका स्वागत कक्ष ईशान कोण में होना उचित है लेकिन उसके उत्तर-पूर्व में खाली भूमि भी पर्याप्त रहनी चाहिए।
11. विक्रय अधिकारी क्लर्क, अस्थायी कर्मचारी आदि के बैठने का स्थान वायव्य कोण में न बनवायें।
12. इससे सटे हुए पश्चिम दिशा से तकनीकी कर्मचारी, लेखाकार आदि के बैठने का स्थान निर्धारित करें।
13. आपके स्थान के सर्वोच्च अधिकारी के बैठने के लिए कार्यालय नैर्ऋत्य कोण में बनवायें।
14. गार्ड अथवा चौकीदार कक्ष आग्नेय कोण में ही बनवाना उचित रहता है, तो उत्तर दिशा वाले दरवाजे में पश्चिम, पूर्वी दरवाजे में दक्षिण, पश्चिमी दरवाजे में उत्तर तथा दक्षिणी दरवाजे में पूर्व दिशा की तरफ बनवायें। ठीक वायव्य कोण अथवा ईशान कोण में यह कक्ष नहीं बनवाना चाहिए।
15. अपना कैशरूम अथवा एकाउन्ट सेक्शन वास्तुचक्र के अनुसार 3-4 वर्ग पर बनवाना चाहिए।
16. आवासीय होटलों में स्वीमिंग पूल पूर्व अथवा पश्चिम में बनवायें। उत्तर-पूर्व दिशा में भवन-निर्माण भूलकर भी न करायें। सेन्ट्रल हॉल वायव्य कोण में ही बनवाना चाहिए तथा इसे दक्षिण की तरफ लम्बोतरा होना चाहिए। कोने पर दोनों तरफ समान दूरी लेकर भी बनवाया जा सकता है। अगर इस हॉल में बीम है तो उत्तर-दक्षिण न दें। अगर देना अनिवार्य है तो इसके नीचे वाला फर्श बीम से पांच गुणा स्थान तक बैठने के उपयोग में न लायें। इस तरह के होटलों का भोजनालय आग्नेय कोण में पूर्व अथवा दक्षिण की तरफ रसोईघर से लगा हुआ बनवायें। या फिर पश्चिम भुजा के बीच में बनवायें। रसोई तथा पावर रूम आग्नेय में ही बनवायें। कारोबारी स्तर पर भवन, दुकान, फैक्ट्री तथा व्यावसायिक कॉम्पलैक्स में इन बातों का खास ख्याल रखना आवश्यक है। ये सभी निर्देश उन्हीं मूलभूत नियमों के फलानुरूप दिये गये हैं।

❑❑❑



27



औद्योगिक संरचनाएं

औद्योगिक संरचनाएं

देश और समाज की उन्नति में उद्योग मुख्य कारक माने जाते हैं। उद्योग जिन देशों और समाजों के अन्तर्गत सही प्रकार से उत्पादन नहीं करते वे देश मजदूरों की समस्या से ग्रस्त रहते हैं और उच्च पदाधिकारियों की अवमानना होती है, तब औद्योगिक उत्पादन की गुणवत्ता व लाभ दोनों ही कम हो जाते हैं।

इस प्रकार देश व हमारा समाज धीरे-धीरे पतन की ओर चले जाते हैं। पूर्वी सोवियत संघ इसका जीता-जागता उदाहरण है, वहां ज्यादा लागत में कम गुणवत्ता का उत्पादन होने से अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में टिक नहीं सका। पूर्वी सोवियत संघ के बिखरने की सबसे बड़ी वजह आर्थिक वजह थी। जो उद्योग से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है।

उद्योगों की स्थापना करने में काफी हद तक धन की आवश्यकता पड़ती है। देश की अर्थव्यवस्था उद्योगों पर ही निर्भर करती है। इसलिए उद्योगों की आर्थिक सफलता के लिए वास्तुशास्त्र के अनुसार निर्माण कराना आवश्यक है। जिससे उत्पादन के लिए अनुकूल वातावरण तैयार हो सके, मशीनें चलते-चलते अचानक खराब न हों, श्रमिकों से सम्बन्धित कोई समस्या उत्पन्न न हो सके। पैसा देना और प्राप्त करने में कोई समस्या खड़ी न हो, मजदूर मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रह सकें और उद्योग से पूरी तरह जुड़े रहें व संतोषजनक रहें।

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुकूल इस आधुनिक दौर में उद्योगों के लिए औद्योगिक परिसर में भूखण्ड लेना अच्छा माना जाता है। भूखण्ड के चयन की प्रक्रिया लगभग आवासीय भवनों के जैसी ही होनी चाहिए। इसकी स्थापना, जिसमें मशीनरी, पानी, बिजली, कच्चा व उत्पादित माल, प्रशासनिक कार्यालय और श्रमिक आवास के लिए वास्तुनियमों का कठोरता से पालन करने से उद्योग सफल रहता है।

सिक्योरिटी आवास और मुख्य द्वार

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा आपके आवास का मुख्य द्वार उत्तरी ईशान, पूर्वी ईशान, दक्षिणी आग्नेय और पश्चिम वायव्य में सही रहता है।

उत्तरी ईशान में मुख्य द्वार हो तो फिर सिक्योरिटी आवास वायव्य में ही रखना सही रहता है। अगर आपका मुख्य द्वार पूर्वी ईशान में बना हो तो आपका सिक्योरिटी केबिन आग्नेय दिशा में उचित रहता है। अगर आपका मुख्य द्वार दक्षिणी आग्नेय या पश्चिमी वायव्य दिशा में स्थित है तो फ़िर आप अपना सिक्योरिटी आवास नैर्ऋत्य में बनायें। आपको अपने मकान की ऊंचाई कम-से-कम 8' रखनी चाहिए।

आपका सिक्योरिटी केबिन मुख्य दरवाजे पर उस जगह पर ठीक रहता है जहां आवागमन बाधित न हो, किन्तु उस जगह से नजर चारों तरफ निर्बाध रहे। आपके केबिन का ढाल उत्तरी या पूर्वी दिशा की तरफ ही होना चाहिए, यह स्थिति अच्छी मानी जाती है।

जल संसाधन

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा जलस्रोत उत्तरी ईशान और पूर्वी ईशान से औद्योगिक परिसर में प्रविष्ट करना चाहिए। अगर आपको कूप अथवा नलकूप स्थापित करना हो तो तब भी वह उत्तरी ईशान और पूर्वी ईशान में ही स्थापित करना चाहिए।

भारतीय वास्तुशास्त्र के द्वारा इन्हीं दिशाओं में ही अण्डरग्राउण्ड वाटर टैंक बनाने चाहिएं। मगर एक बात विशेष रूप से ध्यान रखने योग्य है कि भूखण्ड में नैर्ऋत्य और ईशान को मिलाने वाली रेखा और मकान के ईशान वाला कोना तथा भूखण्ड के ईशान को मिलाने वाली रेखा, इन दोनों के बीच में कोई भी जल संसाधन नहीं रखना चाहिए। अण्डरग्राउण्ड वाटर टैंक अथवा कूप के नीचे चाहे चौकोर हो मगर उसका ऊपरी निर्माण वृत्ताकार करवाना चाहिए। ढक्कन की अवस्थिति चाहे किसी भी जगह पर हो वह भी गोल होनी चाहिए।

अण्डरग्राउण्ड वाटर टैंक, कूप, नलकूप, उत्तरी और पूर्वी दीवारों से कुछ दूर होने चाहिएं।

नैर्ऋत्य दिशा में ओवरहेड को बनवाना विहित है, क्योंकि औद्योगिक परिसर में नैर्ऋत्य सबसे ऊंचा और भारी होना अधिक जरूरी है। प्रसंगवश यहां यह भी बता देना सही होगा कि भूखण्ड का चन्द्रक्षेत्र हमेशा ही सूर्यक्षेत्र से अधिक भारी होना चाहिए।

वास्तुशास्त्र द्वारा मुख्य मशीन का स्थान

मुख्य प्लांट चाहे ऑटोमैटिक हो वास्तुशास्त्रानुसार उसे नैर्ऋत्य में ही स्थापित करना चाहिए। उसके लिए प्लेटफार्म बनवाना सही रहता है। मशीन की Foundation भी प्लेटफार्म पर ही होनी चाहिए। अगर किसी कारणवश आपका प्लांट बहुत भारी है तब भी उसका प्लेटफार्म दूसरे स्थान से ऊंचा होना चाहिए।

वास्तुशास्त्र द्वारा सम्पूर्ण परिसर में निर्माण सबसे ऊंचा नैर्ऋत्य में होना चाहिए, नैर्ऋत्य नीचा होना गलत माना जाता है।

वास्तुशास्त्र द्वारा आग्नेय कोण के निर्माण

वास्तुशास्त्र द्वारा उद्योग के लिए पॉवर विद्युत कनैक्शन, मेन स्विच बोर्ड, विद्युत द्वारा अगर ताप उत्पन्न करने वाले उपकरण हों तब उन्हें आग्नेय कोण में स्थापित करना चाहिए।

हीटिंग एलीमेंट और बॉयलर, ओवन स्थापित करना उचित रहता है, जिससे पॉवर सप्लाई सही बनी रहती है और ये उपकरण जल्दी खराब भी नहीं होते हैं। क्योंकि आग्नेय कोण का अधिष्ठाता देव 'अग्नि' है। धुएं के निकलने के लिए चिमनी भी आग्नेय क्षेत्र में स्थापित करनी चाहिए। जैनरेटर सेट को रखने के लिए उत्तम स्थान आग्नेय कोण है।

आप अपने जैनरेटर सेट, बॉयलर, ओवन, विद्युत और तापीय उपकरण वायव्य ईशान तथा नैर्ऋत्य दिशा में कभी भी स्थापित नहीं करने चाहिएं। इससे आपका रखरखाव का खर्च भी अधिक हो जाएगा और ऐसी स्थिति से दुर्घटना की आशंका भी बनी रहती है।

प्रबन्धक कक्ष या प्रशासक कक्ष

वास्तुशास्त्र के द्वारा औद्योगिक परिसर में प्रशासनिक या प्रबन्धकीय कार्यों के लिए मालिक बैठें या अपने किसी प्रतिनिधि को नियुक्त करें। उसे परिसर में अत्यन्त प्रभावशाली स्थान मिलना अधिक आवश्यक होता है।

वास्तुशास्त्र द्वारा इस महत्त्वपूर्ण कमरे का सबसे उपयुक्त स्थान नैर्ऋत्य कोण है। इस कमरे के लिए मध्य उत्तर अरैर मध्य पूर्व का स्थान भी सही होता है। प्रबन्धक को अपनी कुर्सी इस तरह लगानी चाहिए कि उसका मुंह पूर्व अथवा उत्तर की तरफ रहे और आगन्तुकों का मुंह पश्चिम अथवा दक्षिण की तरफ हो।

औद्योगिक परिसर में प्रशासनिक कार्यालय भवन अलग से हो तब भी इन सिद्धान्तों को अपनाना चाहिए। मगर इस भवन की ऊंचाई मुख्य भवन की ऊंचाई

से कम होनी चाहिए। नैर्ऋत्य दिशा में प्रबन्धक/प्रशासक की उपस्थिति से सारे हालात उसके अनुकूल रहते हैं और कार्य से सम्बन्धित सारे सूत्र उसके हाथ में आ जाते हैं।

आपके ऑफिस में एकाउंट से सम्बन्धित काम मध्य उत्तर, मध्य पूर्व तथा आग्नेय क्षेत्र में होना चाहिए यह स्थिति सही मानी जाती है। फैक्ट्री में काम करने वाले कर्मचारी के बैठने का प्रबन्ध वायव्य कोण में किया जाना चाहिए। जिससे वह ऑफिस में अपना जरूरी काम खत्म करके अपने कार्यक्षेत्र में फौरन वापिस चला जाये।

प्रबन्धक कक्ष इस तरह बना होना चाहिए जिससे वह सम्पूर्ण कार्यालय पर एक नजर रख सके। जिसके द्वारा काम की गम्भीरता और मर्यादा उसी प्रकार बनी रह सके।

अगर आपको इस स्थान पर अपना शौचालय बनाना हो तो उसे वायव्य अथवा आग्नेय कोण में ही बनाना सही माना जाता है, क्योंकि वास्तुशास्त्र द्वारा इस स्थिति को उचित माना गया है, मगर एक बात का ख्याल रखें कि इसे उत्तरी-पूर्वी दिशाओं की दीवारों से हटाकर बनाना चाहिए।

कच्चा माल रखने का स्थान

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा उद्योग की प्रकृति के अनुसार कच्चा माल प्रयोग में लाया जाता है। कच्चे माल का भण्डारण मध्य दक्षिण, नैर्ऋत्य और मध्य पश्चिम में करना विहित माना जाता है। अगर इसकी मात्रा अधिक होती है तो इस स्थिति में वायव्य कोण में भी रख सकते हैं।

वास्तुशास्त्र द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकृति के कार्यों में कच्चे माल की परिभाषा बदल जाती है। जिसे निम्नलिखित उदाहरणों के द्वारा समझाया जा सकता है—

प्लास्टिक पैकेजिंग उद्योग में प्लास्टिक शीट अथवा पेपर कच्चा माल होता है, लेकिन प्लास्टिक शीट बनाने वाले के लिए प्लास्टिक तैयार माल होता है, इस उद्योग के लिए कच्चा माल प्लास्टिक दाना होता है, जिसके द्वारा प्लास्टिक शीट तैयार की जाती है। अब एक उद्योग प्लास्टिक दाना बनाता है उसके लिए यह तैयार माल समझा जायेगा लेकिन कच्चा माल प्लास्टिक का टूटा-फूटा सामान है जिसे वह कबाड़ी के द्वारा प्राप्त करता है या फिर प्लास्टिक दाना बनाने वाला पाउडर है।

उत्पादन क्षमता

वास्तुशास्त्र द्वारा किसी भी औद्योगिक इकाई का एक ध्येय होता है, वह होता

है किसी भी वस्तु की उत्पादन क्षमता उत्पादन को जल्दी-से-जल्दी विपणन के लिए बाजार में जाना चाहिए जिसके द्वारा विनिमय की तरलता बनी रहे। उत्पादित सामग्री को औद्योगिक परिसर अथवा क्षेत्र में वह स्थान देना चाहिए जिससे वह इस स्थान में ज्यादा वक्त तक भण्डार नहीं रखना चाहिए, तैयार माल का ऑर्डर फौरन मिल जाना आवश्यक होता है। अपने तैयार किये गये माल को वायव्य कोण में ही रखना चाहिए। वास्तुशास्त्र द्वारा यह उत्तम है।

तोलने की मशीन का स्थान

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा अपने कच्चा माल और तैयार माल को तौलने का प्रबन्ध मध्य उत्तर और मध्य पूर्व में परिसर से कुछ दूर पर करना चाहिए।

मजदूरों और कर्मचारियों के आवास

वास्तुशास्त्र द्वारा औद्योगिक परिसर में मजदूरों और कर्मचारियों के रहने की व्यवस्था के लिए उचित स्थान पश्चिम वायव्य और दक्षिण आग्नेय माना जाता है। अगर रहने वाले मकानों की संख्या कम है तो यह मकान उत्तरी वायव्य में भी बनाए जा सकते हैं।

इन आवासों की ऊंचाई मुख्य भवन से कम होनी चाहिए। अगर मकान आप बहुमंजिले बनाना चाहते हैं तो फिर आवास की स्थिति परिसर के नैर्ऋत्य में रखनी चाहिए।

पार्किंग के लिए स्थान

वास्तुशास्त्र द्वारा ट्रक आदि के लिए पार्किंग व्यवस्था वायव्य और आग्नेय में रखी जा सकती है। हल्के वाहनों के लिए प्रशासक खण्ड में ईशान कोण में इसका प्रबन्ध किया जा सकता है। वास्तुशास्त्र द्वारा यह उत्तम स्थिति है।

मन्दिर का स्थान

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा मन्दिर का निर्माण उत्तर परिसर में मुख्य भवन के अग्रभाग में किया जाना चाहिए। मकान के पीछे वाले भाग में मन्दिर को कभी नहीं बनवाना चाहिए।

मन्दिर बनाने के लिए सर्वोत्तम स्थान ईशान कोण है, इसका निर्माण मध्य उत्तर और मध्य पूर्व में ही करवाना चाहिए। मन्दिर में लगी प्रतिमा का मुख दक्षिण की तरफ नहीं होना चाहिए। इसके कारण दर्शन करने वालों का मुंह उत्तर की ओर रहेगा। मन्दिर की ऊंचाई भी अधिक नहीं होनी चाहिए। छोटे-छोटे पेड़ और छोटे-छोटे

उद्यान ही लगाने चाहिएं। लताएं और फूल आदि लगाने से वातावरण सुरम्य और ताजगीमय हो जाता है।

परिसर में प्रवेश करते वक्त सामने मन्दिर होने पर आगंतुक और श्रमिकों की मानसिकता कार्य में एकाग्र होने की हो जाती है। वास्तुशास्त्र में यह उत्तम है।

परिसर में वृक्षारोपण कहां करें?

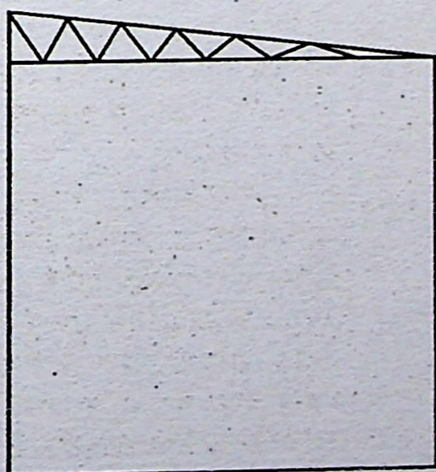
भारतीय वास्तुशास्त्र के द्वारा बड़े-बड़े पेड़-पौधे अपने मुख्य भवन से दूर दक्षिण और पश्चिम की तरफ ही लगाने चाहिएं जिससे उन पेड़ों की छाया सुबह 9 से 3 बजे तक मुख्य भवन पर न पड़े। औद्योगिक परिसर में छायादार पेड़ लगाने चाहिएं। छोटे पेड़ और छोटे फूल आदि पूर्व दिशा तथा उत्तर दिशा की तरफ लगाने चाहिएं। वृक्षों के अन्तर्गत कांटेदार झाड़ियां और पेड़ नहीं लगाने चाहिएं। बेर, कीकर, बबूल, सीताफल और अनार भी नहीं लगाने चाहिएं।

वास्तुशास्त्र द्वारा परिसर में हमेशा ही उत्तर और पूर्व की तरफ ज्यादा खाली जगह छोड़नी चाहिए तथा दक्षिण और पश्चिम की तरफ कम जगह छोड़नी चाहिए। भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा यह सरल उपाय हैं, इनका प्रयोग करें।

उद्योगशाला की छत और उसका ढाल कैसा हो?

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा आपके उद्योगशाला की छत ज्यादातर ट्रस जो कि लोहे के पाईप और एंगल से बनी हुई होती है। जो सी०जी०आई० शीट अथवा एस्बेस्टॉस शीट द्वारा कवर की जाती है।

वास्तुशास्त्र द्वारा छत का ढाल एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह ढाल पूर्व अथवा उत्तर की तरफ रखना चाहिए। अगर ढाल दोनों तरफ हो तब यह इस प्रकार होना चाहिए कि पूर्व और उत्तर की तरफ ज्यादा लम्बाई देकर ढाल रखना उपयुक्त रहता है। भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा यह एक सरल उपाय है, इसलिए इसका प्रयोग करना चाहिए।



जल निस्तारण, अशुद्ध जल शुद्धिकरण संयंत्र

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा आपका प्रयोग किया गया जल अशुद्ध माना जाता है, पर्यावरण में प्रतिकूल प्रभाव न पड़ सके इसके लिए अशुद्ध जल से जहरीले तत्वों को जो जीव जगत और वनस्पति जगत पर अपना बुरा प्रभाव छोड़ते हैं उन्हें अलग करके जल का निस्तारण किया जा सकता है।

वास्तुशास्त्र द्वारा जल शुद्धिकरण संयंत्र मध्य पूर्व अथवा उत्तर में ही स्थापित करवायें और जल निस्तारण भी मध्य उत्तर अथवा मध्य पूर्व में ही स्थापित करना चाहिए। वास्तुशास्त्र द्वारा यह उत्तम स्थिति मानी जाती है, इसे प्रयोग में लाना आवश्यक है।

वास्तु अनुसार उत्पादन इकाइयों के लिए निर्देश

वास्तुशास्त्र द्वारा कुछ जरूरी निर्देश निम्नलिखित हैं–

1. उत्पादन यूनिट के दरवाजे आमने-सामने कभी नहीं होने चाहिएं। जिससे काम में लयात्मकता उत्पन्न रहती है।
2. उत्पादन यूनिट के दरवाजे के सामने कोई वेध नहीं होना चाहिए, इसके द्वारा उत्पादन येन-केन बाधित होता है।
3. भूखण्ड के पीछे वाला भाग आगे वाले भाग से ज्यादा बड़ा नहीं होना चाहिए। अगर आपका भूखण्ड विषम आकार का है तो उसको वास्तुनुकूल सुधार करवाकर ही काम में लेना चाहिए।
4. आप अपना कच्चा माल, उत्पादन वाला माल अथवा स्क्रेप ईशान कोण में कभी न रखें।
5. औद्योगिक परिसर के वायव्य दिशा के कोण में कोई भी निर्माण करवा कर पूर्ण रूप से बन्द नहीं करवाना चाहिए।
6. अपना उत्पादित माल वायव्य दिशा में ही रखना चाहिए। वास्तुशास्त्र के द्वारा ये उत्तम है।
7. आप अपना जैनरेटर, बॉयलर, ओवन, मोटर, मेन स्विच आदि को आग्नेय दिशा से प्रभावित क्षेत्र में स्थान देना चाहिए। इन्हें भूलकर भी ईशान और नैर्ऋत्य दिशा में स्थापित नहीं करना चाहिए।
8. वास्तु द्वारा औद्योगिक भूखण्ड में मुख्य प्रवेश द्वारा पूर्वी ईशान, उत्तरी ईशान, पश्चिमी वायव्य और दक्षिणी आग्नेय में ही होना चाहिए।
9. ईशान कोण में जल भण्डारण का प्रबन्ध करना चाहिए, अगर जल भण्डारण के लिए ओवरहैड टैंक का निर्माण करना हो तो तब इस

ओवरहैड टैंक को नैर्ऋत्य दिशा में बनाना चाहिए।

10. अपने द्वारा तैयार किया गया प्रोडक्ट माल वायव्य दिशा में ही रखें, वास्तुशास्त्र द्वारा यह उत्तम है।
11. पानी वाला स्थान हमेशा ईशान कोण में ही बनाना चाहिए।
12. अपने औद्योगिक भूखण्ड के चयन के लिए आग्नेय कोण से नैर्ऋत्य कोण के मार्ग तक और नैर्ऋत्य से वायव्य दिशा के मार्ग वाले भूखण्ड को ही मान्यता देनी चाहिए। वास्तुशास्त्र द्वारा यह उत्तम है।

रेस्टोरेन्ट व होटल

भारतीय वास्तुशास्त्र द्वारा रेस्टोरेन्ट और आवासीय होटल एक प्रकार से व्यवसाय ही है। इनसे सम्बन्धित वास्तुशास्त्र द्वारा कुछ निर्देश दिए जा रहे हैं जो आपके इस व्यापार को कामयाबी के साथ आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

आवासीय होटल के अन्तर्गत क्रमानुसार रूम सेट बने होते हैं जिनके अन्दर टॉयलेट का प्रबन्ध भी रहता है। किचन, रिसेप्शन व भोजनालय का भी अपना एक अलग ही महत्त्व होता है।

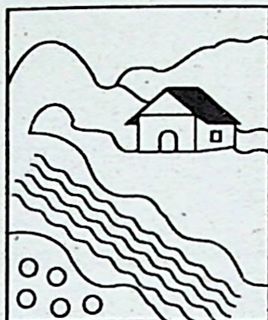
1. वास्तुशास्त्र द्वारा इनका दरवाजा, पूर्वी ईशान, उत्तरी ईशान, दक्षिणी आग्नेय और पश्चिमी वायव्य दिशाओं में ही होना चाहिए।
2. आपके होटल की छत का ढाल ईशानोत्तर दिशा में ही होना आवश्यक है।
3. भोजन कक्ष पश्चिम दिशा में प्रभावित क्षेत्र में या खुली हुई छत पर होना ज्यादा अच्छा है।
4. वास्तुशास्त्र द्वारा बेसमेंट रेखाचित्र संख्या 73, 74, 75 और 76 के अनुसार ही रखना चाहिए।
5. आपकी रसोई का मुख पूर्व की ओर होना चाहिए।
6. वास्तुशास्त्र द्वारा किचन की विद्युतीय नियन्त्रण व्यवस्था, मेन स्विच, गैस सिलेंडर, पानी गर्म करने का स्थान, वाशिंग मशीन, जैनरेटर सैट, ऐंट्रली एयर कंडीशन को आग्नेय दिशा से प्रभावित स्थान में ही रखें।
7. बरामदा, बालकॉनी, टेरेस और पोर्च ईशान दिशा से प्रभावित क्षेत्र में ही बनाना चाहिए। यह स्थिति अच्छी मानी जाती है।
8. अपने होटल का रिसेप्शन काउन्टर ईशान दिशा में ही बनाना चाहिए। रिसेप्शनिस्ट की सिटिंग उत्तरामुखी अथवा पूर्वीमुखी होना ही सही माना जाता है।
9. आपके बैडरूम में सोने वाले का प्रबन्ध इस तरह होना चाहिए जिससे

सोने वाला पूर्व-पश्चिम और दक्षिण-उत्तर धुरी पर ही सोये।

10. वास्तुशास्त्र द्वारा बाथरूम और टॉयलेट साथ-साथ बनाना सही माना जाता है इन्हें हर कमरे के साथ बनाया जायेगा। वास्तुशास्त्र द्वारा टॉयलेट नैर्ऋत्य अथवा वायव्य दिशा में बनाना ज्यादा अच्छा माना जाता है, अगर किसी कारणवश आप इसे इस दिशा में नहीं बना सकते तो इसे आग्नेय में भी बनाया जा सकता है।
11. अगर आप भोजन की व्यवस्था छत पर रखें और ऐसी स्थिति में फूलों से सजा और पल्लवित पौधों के गमले रखने से वातावरण प्राकृतिक सुलभ और ताजगीभरा बन जाता है।
12. आप अपना वॉशबेसिन ईशान दिशा में और दर्पण उत्तरी और पूर्वी दिशा पर ही लगाना उचित है।
13. आग से बचाव करने के लिए फायर एस्केप नैर्ऋत्य दिशा में बनाना आवश्यक है आप इसे मध्य दक्षिण और मध्य पश्चिम में ही बनायें वास्तुशास्त्र द्वारा यह उचित प्रबन्ध है।
14. आपके होटल के भारी-भरकम उपकरण, गैराज, चक्की आदि नैर्ऋत्य दिशा में ही रखना चाहिए।
15. खाने-पीने वाला होटल और जलपान गृह का आंकलन आवासीय भवन कुछ भिन्न होता है। आपको प्रवेश के समीप से ही सीढ़ियां बनानी चाहिएं जिससे आवागमन व्यवस्थित हो सके।

अगर सीढ़ियां भवन के बीच में या फिर अन्दर बनी होंगी तब बेवजह भवन में भीड़भाड़ बनी रहेगी और उससे अव्यवस्था फैलेगी लेकिन सीढ़ियों की धुरी पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक ही रहेगी। आपकी सीढ़ियों का घुमाव दक्षिण में ही होना चाहिए। आपकी छत पर खुलने वाला दरवाजा उत्तरी ईशान, पूर्वी ईशान, दक्षिणी आग्नेय अथवा पश्चिमी वायव्य में ही खुलना चाहिए। यह स्थिति उचित मानी जाती है।

□□□



28



गृह सम्पन्नता के लिए वास्तसूत्र

भारतीय वास्तुशास्त्र एक प्राचीन विज्ञान है, जिसके अन्तर्गत किसी भी भमि पर कुछ सहज सिद्धान्तों का आधार लेकर मकान का निर्माण किया जाता है। इस वास्तु के अनुसार निर्माण करने पर वहां के रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य तथा समृद्धि में पर्याप्त वृद्धि होती देखी गयी है।

वास्तुनियमों के कुछ सूत्र निम्नलिखित हैं–

- मकान के निर्माण के लिए जो भूखण्ड लिया जाए, उसका चौकोर होना वस्तु की दृष्टि से शुभ माना जाता है। इसी तरह एक आयताकार क्षेत्र भी शुभ माना जाता है लेकिन अगर कोई प्लॉट टेढ़ा-मेढ़ा है या वर्गाकार एवं आयताकार न होकर किसी अन्य प्रकार के आकार का है, तो निश्चित ही शुभ फलदायी नहीं रहता है। ऐसी हालत में भवन के अन्य कोणों को वास्तु की दृष्टि से साथ लेना हितकर है इसी तरह एक आवासीय मकान का आगे से थोड़ा-सा संकरा होना और एक व्यावसायिक भवन का आगे से थोड़ा सा चौड़ा होना शुभ माना जाता है इसी प्रकार अगर कोई प्लॉट ईशान की तरफ थोड़ा-सा बढ़ा हुआ होता है तो वह भी शुभ होता है।



- उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम दिशाओं के अतिरिक्त वास्तु में कोणीय दिशाओं का विशेष महत्त्व है। इसीलिए उनकी जानकारी भी होना जरूरी है। ये हैं उत्तर-पूर्वी कोण अर्थात् ईशान कोण, उत्तर-पश्चिमी कोण अर्थात् वायव्य कोण, दक्षिण-पूर्वी कोण अर्थात् अग्निकोण तथा दक्षिण-पश्चिम कोण अर्थात् नैर्ऋत्य कोण है।

- मिट्टी के वर्णों एवं विशेष जाति के लोगों के बीच भी वास्तुशास्त्र में सम्बन्ध है, लेकिन वर्तमान में इस सूत्र को कम-से-कम इस सीमा तक लिया जाए कि जिस भूमि पर रिहायशी भवन-निर्माण हो, उसमें दुर्गन्ध न आये और वह बहुत ज्यादा पथरीली न हो।
- आपके मकान के मुख्य द्वार का पूर्व, ईशान उत्तर तथा वायु कोण में होना शुभ है। दरवाजे न तो बहुत अधिक बड़े हों और न ही बहुत छोटे। रिहायशी मकान में बड़े मुख्य दरवाजे के होने से उस मकान में कई असामान्य घटनाएं होती हैं। मुख्य दरवाजे के होने से उस मकान में कई असामान्य घटनाएं होती हैं। मुख्य दरवाजे पर हमेशा सुन्दर वर्ण पुते हों और वह सुन्दर हो। मुख्य दरवाजे पर शुभ चिह्नों को लगाना भी धनात्मक परिणाम देता है।
- मुख्य दरवाजे के ठीक सामने कोई पेड़, खम्भा, गड्ढ़ा आदि का होना अशुभ फल देता है।
- मकान में कूप या नलकूप का भी बहुत महत्त्व होता है भवन की सीमा में ईशान कोण पूर्व, उत्तर तथा मूल पश्चिम दिशा के नलकूप या कूप शुभ माने जाते हैं।
- भूतल का झुकाव दक्षिण से उत्तर की तरफ शुभ होता है। जल का बहाव भी उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ होना शुभ होता है। इसलिए जल की निकासी इन्हीं दिशाओं में होनी चाहिए। घर के वायुकोण का तल थोड़ा सा नीचा होना और अग्निकोण के क्षेत्र का तल थोड़ा-सा ऊंचा होना शुभ हे। इसी तरह ईशान कोण के क्षेत्र का तल नैर्ऋत्य कोण के क्षेत्र के तल से नीचा होना चाहिए। फ्लैट इत्यादि में इन तलों को इस सूत्र के आधार पर सैट करके लाभान्वित हुआ जा सकता है।
- किसी भी आवासीय मकान के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में रसोईघर का होना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इसके अतिरिक्त वायुकोण में भी रसोईघर शुभ रहता है। रसोईघर कभी भी ईशान कोण में नहीं होना चाहिए।
- घर के ईशान कोण में घर का देवस्थान होना अति शुभ है। देव स्थान पर रहने वालों को उत्तर अथवा पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके पूजा करनी चाहिए।
- घर के नैर्ऋत्य क्षेत्र में मुखिया का बैडरूम शुभ माना जाता है। इसी तरह क्षेत्र में घर के बड़े स्टोर का होना शुभ होता है। सोते समय सिरहाना दक्षिण या पूर्व में होना चाहिए।
- बच्चों का बैडरूम पूर्व अथवा ईशान क्षेत्र में होना शुभ होता है। अध्ययन

भवन, सभा और पठन-पाठन के लिए यह क्षेत्र शुभ है।

- अविवाहित कन्याओं का बैडरूम वायुकोण में होना अच्छा माना गया है। यही क्षेत्र मेहमानों के ठहरने के लिए भी उत्तम है। सिरहाना उसका दक्षिण या पूर्व दिशा में रहना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार उत्तर और पूर्व दिशा में पश्चिम और दक्षिण की तुलना में अधिक खुला हुआ भाग होना चाहिए। फ्लैट्स में इस सूत्र का उपयोग करके लाभ लिया जा सकता है।
- घर के ठीक केन्द्र में कोई 'प्लिट' अथवा 'टॉयलेट' का होना शुभ होता है।
- आपके मकान में शौचालय के लिए ठीक पूर्व दिशा, उत्तरी वायव्य कोण, पश्चिम और नैर्ऋत्य क्षेत्र शुभ हैं। ईशान तथा ब्रह्म स्थान पर तो शौचालय होना ही नहीं चाहिए।
- नैर्ऋत्य दिशा को ज्यादा वजनी रहना श्रेयस्कर है। इसी तरह भवन के ईशान क्षेत्र को हल्का तथा पवित्र रखना धनात्मक परिणाम देता है।
- रसोईघर में नीले, हरे इत्यादि ठण्डे वर्णों के बजाय गुलाबी, पीले, नारंगी इत्यादि गर्म वर्णों का प्रयोग करें।
- बहुत ही छोटी इकाई में उत्तर-पूर्वी कोण को खाली रखें तथा नैर्ऋत्य क्षेत्र पर ज्यादातर भार दें।
- अगर आपका किचन आग्नेय या वायुकोण को छोड़कर किसी अन्य क्षेत्र में हो, तो कम-से-कम वहां पर बर्नर की स्थिति आग्नेय अथवा वायुकोण की तरफ ही हो।
- बिजली की स्विचेस, बिजली का मुख्य मीटर, टी०वी० आदि कमरे में आग्नेय कोण पर अथवा वायुकोण पर रखे जाना हितकर है।
- कमरे में जल भरा बर्तन या किचन में परडा अथवा फिश-एक्वेरियम आदि सम्बन्धित कमरे के ईशान कोण पर रखे जायें।
- शुभ गुण वाले पशु-पक्षियों के चित्र, मूर्ति इत्यादि से कमरे की सजावट करना शुभ होता है। बैडरूम में सारस की जोड़ी से चित्र या प्रतिमाओं का होना शुभ है। लेकिन वीभत्स, उदासीन चेहरे तथा भाव वाले, युद्ध एवं मारकाट के दृश्य वाले फोटो या मूर्तियां न लगायें। जिन चित्रों को देखकर मन में आन्तरिक खुशी होती हो। जो नयनाभिराम हों, अश्लील न हों, ऐसे चित्रों से सजावट सुखदायी होती है।
- सीमेन्ट और कंक्रीट के मकानों में यथासम्भव 'कोल्डंकलर्स' का प्रयोग न ही करना उचित है।

- घर में टूटी मशीनें, टूटी कुर्सियां, टूटे कांच इत्यादि को संजोकर न ही रखना चाहिए।
- मकान के सामने अगर उद्यान है, तो उसके ठीक बीच में जलकुण्ड या फव्वारा न बनायें।

वायव्य	उत्तर	ईशान
मेहमानों के लिए कक्ष कुंआरी कन्याओं के लिए शौचालय, कूप के लिए अशुभ इस क्षेत्र में मध्यम वजन रखें मनोरंजन के लिए इस क्षेत्र में रसोईघर हो सकता है।	कूप आदि के लिए शुभ शौचालय ऊपर टेंक बनाया जा सकता है। मनोरंजन इकाइयां यहां हों।	पूजास्थल जलस्थल जलसंचय अध्ययन कक्ष इस क्षेत्र को हल्का रखें आध्यात्मिक चर्चा में बच्चों के लिए उपयुक्त क्षेत्र कूपादि के लिए अत्यन्त शुभ
पश्चिम शौचालय/लिविंग रूम इस क्षेत्र में ऊपर टैंक बनाया जा सकता है कूप इस क्षेत्र में होना ठीक है। बड़े वृक्ष के लिए शुभ	इस क्षेत्र में चढ़ाव भी हो इस क्षेत्र का खाली रहना शुभ है। इस पर पिलर्स भी न हों	**पूर्व** भोजन कक्ष अल्प विश्राम कूपादि के लिए शुभ छोटे वृक्षों का क्षेत्र चढ़ाव के लिए शुभ द्वार के लिए शुभ
अत्यन्त भारी क्षेत्र/स्टोर मुख्य शयनकक्ष शौचालय के लिए भी उपयुक्त कूप के लिए अशुभ सैप्टिक टैंक के लिए उपयुक्त	कूप के लिए अशुभ डायनिंग हॉल चढ़ाव के लिए सामान्य बैडरूम ड्रेनेज नहीं बड़े पौधों के रोपण के लिए शुभ	सर्वश्रेष्ठ रसोईघर विद्युत हल्का स्टोर गर्भक्षेत्र कूप कतई न हो वृक्षारोपण न हो
नैर्ऋत्य कोण	दक्षिण कोण	आग्नेय कोण

- मकान के किसी भी छोटे-बड़े उद्यान में अगर जलाशय हो तो उसका निर्माण ईशान क्षेत्र में होना शुभ होता है। उद्यान में अथवा घर में सजाये

गये भवनों में कैक्टस के पौधों का पाया जाना वास्तु की दृष्टि से अशुभ माना जाता है। इसी तरह भवन सीमा में बेर, प्लाश एवं कांटेदार वृक्षों का भी न होना शुभ होता है। गुलाबी एवं शमी इसके अपवाद हैं।

- मकान के पूर्व में वट का वृक्ष एवं पश्चिम में पीपल शुभ हैं। इस सूत्र के द्वारा एक पीपल के गमले को घर के पश्चिम में रखने एवं पूजने से शुभत्व प्राप्त होता है। मकान की सीमा में तुलसी, आंवला, अशोक, पुन्नाग, चमेली, अमलतास, नारियल, केला, सुपारी इत्यादि के पेड़ बहुत शुभ माने जाते हैं। बड़े पेड़ों को कभी भी ठीक-ठाक किसी भी कोण पर न लगायें।

वास्तु एवं भारतीय दर्शन

भारतीय दर्शन पर नजर डाली जाये तो मानव-जीवन के चार लक्ष्य बताये जाते हैं। पहला धर्म, दूसरा धर्म, तीसरा काम एवं चौथा मोक्ष। समस्त भारतीय दर्शन शास्त्रों का परम लक्ष्य मानव को इन चारों को प्राप्त करने के मार्ग का ज्ञान कराना है।

मगर इन चारों को हासिल करने के लिए शरीर का स्वस्थ होना, मन का स्थिर होना तथा बुद्धि का निर्मल होना जरूरी है—और ऐसा तभी मुमकिन है जबकि मानव, जिस स्थान अथवा भवन में वास करता है, वह प्राकृतिक अव्यक्त ऊर्जाओं को ध्यान में रखकर निर्मित किया गया हो। समस्त प्राणी प्रकृति में ऋतुओं में परिवर्तन तथा पर्यावरण सन्तुलन के बनने-बिगड़ने से प्रभावित होते हैं। यह एक निश्चित सीमा तक ही सत्य है।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी सुरक्षा के लिए आश्रय का निर्माण करता है। आश्रय से तात्पर्य प्राणी के निवास स्थान से है। जलचर तथा थलचर अपनी सुविधा तथा आवश्यकता अनुसार स्थान में परिवर्तन कर लेते हैं। लेकिन मानव ने अपने समन्वित विकास के लिए भवन के रूप में आश्रय व्यवस्था की, तथा इसके लिए अनुभवों के आधार पर समय-समय पर अनेक सिद्धान्त बनाये गये हैं। उन सिद्धान्तों का उद्देश्य यही था कि मानव अपने रहने के लिए ऐसे मकान का निर्माण कर सके, जो कि विविध आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ मानसिक शान्ति तथा सुख-समृद्धि प्रदान कर सके।

भारतीय वास्तुशास्त्र के भवन हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र के कुछ सूत्र इस प्रकार हैं—

- मकान के बीच में कोई निर्माण न करते हुए वास्तु अनुसार आंगन बनाना शुभ माना जाता है।

- मकान के अन्तर्गत रसोई आग्नेय कोण में बनानी चाहिए। रसोई में खिड़की पूर्व दिशा की ओर होनी चाहिए।
- मुख्य दरवाजा पश्चिमी वायव्य कोण में स्थित होना चाहिए जो कि शुभफलदायक तथा कल्याणमय होता है।
- आयताकार भूखण्ड का मुंह दक्षिण-पश्चिम दिशा में होना चाहिए जो कि शुभ होता है। मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिमी वायव्य कोण में होना शुभता की पहचान है।
- मकान के फर्श का ढाल उत्तर या पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए जिससे धन, यश व उन्नति में वृद्धि हो।
- सीढ़ियों की ऊंचाई उत्तर दिशा से घूमती हुई दक्षिण की ओर जानी चाहिए। जिससे दक्षिणी भाग उत्तरी भाग से ऊंचा रहे यह स्थिति उत्तम मान्नी जाती है।
- मकान के फर्श का ढाल उत्तर तथा पूर्व की तरफ नहीं बनांना चाहिए।
- पूर्वी दिशा में बनाया गया अध्ययन कक्ष मकान के मालिक के ज्ञान और यश में वृद्धि करता है।
- मुख्य द्वार आग्नेय कोण से दक्षिण दिशा की तरफ होना चाहिए। भारी सामान पश्चिम की ओर रखा जाना चाहिए। इस प्रकार आने-जाने वालों का मार्ग पूर्व में रहता है जो कि कल्याणमय है।
- भूखण्ड के पूर्व में ट्यूबवैल का स्थान दिया गया है जो कि घर के मालिक के ऐश्वर्य और समाज में यश, सम्मान तथा धन-धान्य में वृद्धि करता है।
- जल का प्रवाह मकान के अन्दर ईशान की तरफ से तथा भवन से बाहर की तरफ भी ईशान में ही होना शुभ होता है।
- ईशान कोण में पूजास्थल बनाया गया है। इसके सामने बनाया गया बरामदा स्वच्छ तथा शुद्ध रहना चाहिए।
- मकान के बीच ब्रह्मस्थान में कोई निर्माण न करते हुए वास्तु अनुसार आंगन बनाना शुभ होता है।
- स्वागत कक्ष से बाहर जो खाली स्थान हो उसका ढाल पूर्व की ओर होना चाहिए। इस प्रकार धन तथा यश में वृद्धि होती है।
- मकान में रसोई को आग्नेय कोण में ही बनाना चाहिए। रसोई में खिड़की तथा फ्रेश एयरफैन वायव्य कोण की दीवार पर हैं।
- मकान में रसोई आग्नेय कोण में हो तो उसकी खिड़की व फ्रैश एयर फेन उत्तर दिशा में भी लगा सकते हैं।

- स्वागत कक्ष के बाहर जो खाली स्थान छोड़ा जाता है वह मका
फर्श से नीचा बनाया जाए, जिससे उन्नति, धन तथा यश की प्र
होती है।
- मकान के बीच में कोई निर्माण न करते हुए वास्तु के अनुसार आ
बनाना शुभफलदायक होता है।
- भूखण्ड के पूर्वी ईशान कोण में ट्यूबवैल का स्थान होना चाहिए
स्थिति घर के मालिक के ऐश्वर्य तथा समाज में यश और सम्मान
बढ़ाती है।
- मकान में पूजास्थल सीढ़ियों के नीचे बनाया जा सकता है। लेकिन ए
बात का ख्याल रहे कि पूजास्थल की छत और सीढ़ियों के बीच ए
फुट का स्थान खाली रहना चाहिए—और इस स्थान को हमेश
साफ-सुथरा रखें।
- मुख्य दरवाजा उत्तर तथ। वायव्य के मध्य उत्तर की तरफ दें जो वि
पुत्र-लाभ तथा विपुल लक्ष्मी-प्राप्ति का द्योतक है।
- मकान की चाहरदीवारी, उत्तर दिशा की चाहरदीवारी भवन-निर्माण के
उपरान्त ही बनानी चाहिए अन्यथा धन की हानि और अनेक बाधाओं
का सामना करना पड़ेगा।
- आयताकार भूखण्ड का मुख उत्तर दिशा में है जो कि श्रेष्ठ भूखण्ड का
परिचायक है।
- पूर्व दिशा की चाहरदीवारी दक्षिण तथा पश्चिम दिशा की चाहरदीवारी
से नीचे होनी चाहिए।
- बैडरूम नैर्ऋत्य कोण में दिया गया है। यह मकान के मालिक के लिए
स्थायित्व का प्रतीक है।
- भूखण्ड के पूर्वी ईशान में ट्यूबवैल का स्थान होना आवश्यक है जो
कि घर के मालिक के ऐश्वर्य और समाज में वृद्धि का सूचक होता है
- अपना भण्डारगृह पश्चिम वायव्य में सीढ़ियों के नीचे बना सकते हैं
इसका वायव्य कोण की तरफ भाग अन्नादि के लिए प्रयोग करें।
- ईशान कोण में पूजाघर का निर्माण कर सकते हैं लेकिन इसके सामने
का बरामदा साफ-सुथरा रखें।
- आयताकार भूखण्ड का मुंह दक्षिण दिशा में होता है जो कि भवन के
मालिक को सामान्य फल देने वाला होता है, इसलिए मकान में मुख्य
दरवाजा आग्नेय दिशा की तरफ दिया गया है। दक्षिणी आग्नेय कोण
में मुख्य दरवाजा शुभफलदायक होता है। ऐसे मकानों में भारी सामान

पश्चिम में रखा जाता है। इस प्रकार आने-जाने का रास्ता पूर्व में रहता है जो कि कल्याणकारी होता है। फिर भी पूर्व दिशा में दरवाजे का प्रयोग अधिक करने से यह पूर्वमुखी होने का शुभ फल प्रदान करेगा।

- मकान में पश्चिमी वायव्य कोण में बच्चों के लिए बैडरूम का निर्माण कर सकते हैं।
- मकान के वायव्य कोण में अन्न भण्डार बनाना चाहिए। इसमें अन्नादि रखने से उसमें वृद्धि होती है।
- ईशान की ओर मकान में यह खास ख्याल रखें कि मकान के सामने का भाग हमेशा साफ हो, यहां पर कूड़ा-करकट, गन्दगी आदि न डालें। झाड़ू भी इस स्थान पर न रखी जाए। ईशान कोण को साफ, शुद्ध एवं पवित्र रखकर आप अपनी सुख-समृद्धि में वृद्धि कर सकते हैं।
- मुख्य दरवाजे ईशान और पूर्व के बीच की तरफ हों जो कि स्त्री तथा धन-लाभ के द्योतक हैं।
- मकान के बीच में कोई निर्माण न करते हुए वास्तु अनुसार आंगन बनाना शुभ माना जाता है।
- आयताकार भूखण्ड का मुख आग्नेय दिशा में हो तो भवन के मालिक को नुकसान पहुंचाता है। लेकिन दक्षिणी आग्नेय कोण में दरवाजा हो तो मुख्य दरवाजा शुभ माना जाता है, क्योंकि इस मकान में फर्नीचर एवं अन्य भारी सामान पश्चिम की तरफ रखे जाते हैं। इस तरह की व्यवस्था से आने-जाने का मार्ग पूर्व में रहंता है जो कल्याणमय होता है।
- कबाड़घर नैर्ऋत्य दिशा में मकान से बाहर माना गया है जो कि अनुपयोगी वस्तुओं को रखने का उपयुक्त स्थान माना जाता है, ख्याल रहे कि इसमें कोई धार्मिक वस्तुं न हो।
- वास्तु द्वारा भवन में जल तत्व के रूप में जंल व्यवस्था के लिए पूर्व, उत्तर एवं ईशान कोण को महत्त्वपूर्ण माना गया है। इस स्थान पर बोरिंग कराकर सुख-सम्पन्नता में वृद्धि कर सकते हैं।
- जल प्रवाह के रूप में शुद्ध जल एवं अशुभ जल के आवागमन का मार्ग उत्तर तथा ईशान में रखने की कोशिश करें जिससे जलशुद्धि होती रहे और भवन में रहने वाले सुखी रहें।
- आयताकार भूखण्ड का मुंह नैर्ऋत्य दिशा में होना चाहिए जो कि भवन के मालिक को शुभ फल देने वाला नहीं होता है। इसलिए मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिमी नैर्ऋत्य में ही बनायें जो कि सामान्य होता है।

कॉमर्शियल कॉम्पलैक्स हेतु सूत्र

कॉमर्शियल कॉम्पलैक्स के लिए कुछ सूत्र इस प्रकार हैं–

- कॉमर्शिलय कॉम्पलैक्स में अगर दक्षिण तथा उत्तर दिशा की तरफ दुकानें बनाई जाएं तो दुकानों के सामने स्थान कम छोड़ें और उत्तर-पूर्व की बाउण्ड्री से सटाकर दुकानें न बनवाएं पीछे की तरफ स्थान छोड़ें।
- कॉम्पलैक्स में पार्किंग के लिए भूमिगत स्थान की व्यवस्था हो, सामने पार्क आदि सम्भव हो तो उत्तर-पूर्व दिशा में बनाएं। अगर भूमिगत पार्किंग व्यवस्था संभव नहीं तो भवन कॉम्पलैक्स में वास्तुशास्त्र सम्बन्धी ही अन्य नियमों का भी यथासंभव पालन करने से कॉम्पलैक्स की प्रसिद्धि होगी और यह लाभदायक सिद्ध होगी।
- कॉमर्शियल कॉम्पलैक्स के लिए सबसे पहले भूखण्ड का चुनाव करना आवश्यक होता है, और अगर उपलब्ध भूखण्ड में वास्तु के सिद्धान्त अपनाने के लिए गुंजाइश हो तो सुधा कर विकास करना चाहिए। भूखण्ड अगर उत्तर-पूर्व क्षेत्र में बढ़ा हुआ है तो अच्छा रहता है, कोशिश करनी चाहिए कि दुकानों के दरवाजे उत्तर या पूर्व दिशा में रहें।
- कॉमर्शियल कॉम्पलैक्स नलकूप या भूमिगत पानी की टंकी पूर्वी अथवा उत्तरी ईशान कोण में होने से कॉम्पलैक्स में दुकान लेने वाले अच्छा व्यापार करते हैं।
- कॉमर्शियल कॉम्पलैक्स में दुकानों का निर्माण करते समय यह जरूर ख्याल रखना चाहिए कि इसके ईशान कोण में विस्तार है अथवा नहीं? अगर नहीं है तथा ईशान कोण को बढ़ाया जा सकता है तो जरूर बढ़ायें।

दुकान/ऑफिस हेतु सूत्र

दुकान अथवा ऑफिस से सम्बन्धित सूत्र निम्नलिखित हैं–

- दुकान के अन्दर बिजली का मीटर, स्विच बोर्ड आदि आग्नेय कोण में ही रखें।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार दुकान में माल का भण्डारण दक्षिण-पश्चिम या नैर्ऋत्य में करें।
- दुकान में आलमारी, शोकेस, फर्नीचर आदि दक्षिण अथवा पश्चिम या नैर्ऋत्य दिशा में बनवाएं। पूर्व तथा उत्तर क्षेत्र ग्राहकों के आने-जाने के लिए खाली छोड़ देना चाहिए।
- दुकान में तराजू अथवा दक्षिणी दिशा अथवा पश्चिमी या नैर्ऋत्य दिशा

में बनवायें। पूर्व तथा उत्तर क्षेत्र ग्राहकों के आने-जाने के लिए खाली छोड़ देना चाहिए।

- दुकान में तराजू अथवा दक्षिणी दिशा के साथ किसी स्टैण्ड पर रखें।
- भारी सामान के कार्टून अथवा जूते या फिर अन्य प्रकार का भारी सामान ईशान कोण में कभी न रखें। जहां तक हो सके इस तरह का सामान दक्षिण तथा पश्चिम दिशा में रखा जाए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार पूजा करने का स्थान ईशान कोण में अथवा पूर्व में रखें।
- वास्तुशास्त्र के द्वारा जल संसाधन ईशान कोण में अथवा उत्तर या पूर्व दिशा में ही रखें।
- दुकान के लिए चुने गए भवन के ईशान कोण को खाली रखें तथा यहां पर स्वच्छता बनाए रखें।
- दुकान के लिए किसी निर्मित भवन का चयन करना है, तो यह जरूर विचार कर लें कि इसका निर्माण वास्तुशास्त्र के नियमों के अनुसार है या नहीं। अगर वास्तु अनुसार है तो उस पर कारोबार शुरू किया जा सकता है। अगर नहीं तो यह अध्ययन करना चाहिए कि इसमें सुधारों की कितनी गुंजाइश है? अगर काफी उलटफेर करना पड़े या फिर यह मुमकिन न हो तो ऐसे भवन का त्याग कर देना चाहिए। फिर किसी दूसरे भवन का चयन करना चाहिए। कोई भी कारोबार या दुकान अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए की जाती है। अगर वास्तु द्वारा भवन में वास्तु नियमों का पालन करते हुए कारोबार या दुकान करेंगे तो शुभ होगी तथा शुभ फल देगी। नहीं तो आर्थिक व मानसिक कलेश रहेगा।
- दक्षिण मुख वाली दुकान में सड़क से दुकान पर चढ़ने के लिए ये सीढ़ियां दक्षिणी आग्नेय कोण में बनवाएं। बीचो-बीच अर्द्धचन्द्रकार सीढ़ियां भी बनवाई जा सकती हैं। दक्षिण नैर्ऋत्य कोण में सीढ़ियां नहीं बनवाएं, क्योंकि नैर्ऋत्य कोण की तरफ जाना-आना वास्तु के अनुकूल नहीं है।
- पश्चिम मुख वाली दुकान में सड़क से दुकान पर चढ़ने के लिए सीढ़ियां पश्चिमी-वायव्य कोण में बनाएं। बीचो-बीच अर्द्धचन्द्रकार सीढ़ियां भी बनवाई जा सकती हैं। लेकिन नैर्ऋत्य कोण में सीढ़ियां कभी न लगाएं।
- पूर्वोन्मुखी दुकान में सड़क से दुकान पर चढ़ने के लिए सीढ़ियां ईशान कोण में बनवानी चाहिएं या सीढ़ियां इस तरह बनवाएं कि वे पूर्व दिशा में दुकान के सामने पूरी लाइन में आ जाएं।

- अगर दुकान में सीढ़ियां बनानी हैं तो वह ईशान कोण को छोड़कर अन्य स्थान में बनवाएं।
- दुकान के अन्दर दोहरी छत आदि बनवाएं तो दक्षिण अथवा पश्चिमी क्षेत्र में ही बनवाएं, उत्तर-पूर्व क्षेत्र को खाली रखें।
- दुकान दफ्तर घर अथवा फैक्ट्री के सामने द्वार वेध नहीं होना चाहिए यानि खम्भा, सीढ़ी, बिजली-टेलीफोन आदि का खम्भा या पेड़ नहीं होना चाहिए यह स्थिति हानि पहुंचाती है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार पानी का पात्र ईशान कोण में भूलकर भी नहीं बनाना चाहिए।
- दक्षिणोन्मुखी दुकानों में वायव्य की तरफ का शटर खुला रखें और नैर्ऋत्य की तरफ का बन्द रखें, इसका उल्टा कदापि न करें।
- अगर डबल शटर वाली पूर्नोन्मुखी दुकान में दोनों शटरों को खोलकर पाना मुमकिन न हो और सिर्फ एक ही शटर खोल पाना सम्भव हो तो ईशान की तरफ का शटर खुला रखें। आग्नेय कोण की तरफ वाला शटर बन्द कर दें।
- अगर पूर्वान्मुखी दुकान में डबल शटर लगे हैं तो दोनों शटरों को खुला रखें।
- दुकान के मालिक एवं मुख्य व्यवस्थापक को अपने बैठने का स्थान यथासंभव नैर्ऋत्य कोण में बनाना चाहिए तथा उन्हें पूर्व या उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके बैठना चाहिए।
- पूर्व या उत्तर दिशा की तरफ मुंह वाली दुकानों में अर्द्धचन्द्राकार सीढ़ियां नहीं बनवानी चाहिएं।
- उत्तरोन्मुखी दुकान में सड़क से दुकान पर चढ़ने के लिए सीढ़ियां उसके उत्तर ईशान कोण में बनवाएं। सीढ़ियां वायव्य कोण से ईशान कोण तक पूरे भाग में भी बनवाई जा सकती है।
- दुकान में माल का स्टॉक पश्चिम, दक्षिण दिशा अथवा नैर्ऋत्य कोण की तरफ रखा जाना वास्तु के अनुरूप होगा।
- दुकान में सामान रखने की शेल्फ आदि दक्षिण तथा पश्चिम दिशा में बनाकर उसमें रखा जाना चाहिए। अगर आपकी दुकान में पूर्व अथवा उत्तर दिशा में भी शैल्फ हैं, तो इन शैल्फों की अपेक्षा हल्का सामान रखना अच्छा होता है।
- अगर आपकी दुकान में वर्कशाप बनाई जानी है अथवा आप मशीनों का कारोबार कर रहे हैं, तो मशीन आदि दक्षिण अथवा नैर्ऋत्य कोण में ही स्थापित करवायें।

- ऑफिस या दुकान में फ्लोर अथवा दुछत्ती बनवाई जाए तो उसके लिए दक्षिण दिशा अथवा पश्चिम दिशा सही मानी जाती है। साथ ही इसके नीचे ऑफिस या दुकान के मुख्य मालिक को बैठना चाहिए।

दुकान/ऑफिस में बैठने हेतु सूत्र

दुकान अथवा ऑफिस में बैठने के लिए सूत्र निम्नलिखित हैं—

- अगर कोई दुकान पूर्वोन्मुखी है तो उसके फर्श का ढाल पश्चिम दिशा से पूर्व की तरफ और दक्षिण दिशा से उत्तर दिशा की तरफ बनवाएं। व्यापारी को आग्नेय कोण में पूर्व तथा दक्षिण की दीवारों से हटाकर उत्तर की तरफ मुख करके बैठना चाहिए। आलमारी या कैश बॉक्स उसके बाएं तरफ होना चाहिए। अगर वह अपना मुख पूर्व दिशा की तरफ रखना चाहें तो आलमारी अथवा कैश-बॉक्स अपनी दाहिनी तरफ दक्षिण में रखें। कैश-बॉक्स को इस तरह रखना चाहिए कि वह उत्तर दिशा की तरफ खुले या उत्तर दिशा के स्वामी कुबेर की दृष्टि कैश-बॉक्स पर पड़े। अगर मेज-कुर्सी लगानी हो तो उन्हें आग्नेय-कोण में लगाया जा सकता है। मेज-कुर्सी ईशान को या वायव्य कोण में ही लगानी चाहिए। दक्षिण या पश्चिम में भी लगा सकते हैं।
- अगर आपकी दुकान उत्तर की तरफ है तो ये जरूरी है कि कमरे के फर्श का ढाल दक्षिण से उत्तर की तरफ और पश्चिम से पूर्व की तरफ वास्तुशास्त्र के नियमों के अनुसार रहे। व्यापारी को वायव्य में उत्तरी और पश्चिमी दीवारों से कुछ दूरी पर बैठना चाहिए। अगर उत्तर की तरफ मुंह हो तो अपना कैश-बॉक्स दाहिनी तरफ रखें। कैश-बॉक्स को इस तरह रखना चाहिए कि वह उत्तर दिशा की तरफ खुले या उत्तर दिशा के स्वामी कुबेर की पुष्टि कैश-बॉक्स पर पड़े। अगर मेज कुर्सी लगाकर बैठना हो तो दक्षिण-पश्चिम में लगाकर उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके बैठें। मेज-कुर्सी ईशान या आग्नेय कोण में न लगायें। दुकान में उत्तर तथा पूर्व दिशा का भाग खुला रखें। जिसका प्रयोग ग्राहकों के आने-जाने के लिए हो सके। अगर आपकी दुकान में दो शटर लगे हैं तो ईशान कोण की तरफ वाला शटर बन्द रखें।
- अगर दुकान का मालिक या व्यवस्थापक केबिन बनाकर उसमें बैठना चाहते हैं तो ये केबिन भी नैर्ऋत्य कोण में ही होने चाहिएं और इन केबिनों का प्रवेश द्वार आग्नेय या वायव्य कोण में रखें। प्रवेश द्वार ईशान-उत्तर या पूर्व में होना चाहिए।

- अगर कोई दुकान पश्चिममुखी हो तो फर्श का ढाल पश्चिम दिशा से पूर्व दिशा की तरफ या दक्षिण दिशा से उत्तर की तरफ बनवाएं। दफ्तर या दुकान का स्वामी नैर्ऋत्य में उत्तर की तरफ मुख करके बैठे तो कैश बॉक्स अपने बाईं तरफ रखें। अगर पूर्व तरफ मुंह करके बैठें तो कैश बॉक्स अपने बाईं तरफ रखें। अगर पूर्व की तरफ मुंह करके बैठें तो कैश बॉक्स अपने दाहिनी तरफ रखें। कैश-बॉक्स को इस तरह रखना चाहिए कि वह उत्तर दिशा की तरफ खुले या उत्तर दिशा के स्वामी कुबेर की दृष्टि कैश-बॉक्स पर पड़े। पश्चिममुखी दुकान के मालिक को दुकान के ईशान कोण, वायव्य अथवा आग्नेय कोण में कभी नहीं बैठना चाहिए।

अगर आपकी दुकान में ऊपर दिये गये सूत्रों के अनुसार व्यवस्था की गयी है तथा व्यवसायी का आवासीय भवन भी वास्तुशास्त्र के निमयों के अनुसार बना है तो निश्चय ही इस प्रकार की दुकान के मालिक की सब प्रकार से उन्नति होने के रोग बनाते हैं और वह हर तरह से उन्नति, समृद्धि तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

अस्पताल हेतु सूत्र

अस्पताल से सम्बन्धित कुछ सूत्र निम्नलिखित हैं–

- अस्पताल का कैश काउन्टर कक्ष दक्षिण-पश्चिम दिशा में और लेन-देन के लिए खिड़की उत्तर अथवा पूर्व की तरफ खुलनी चाहिए यह स्थिति अच्छी होती है।
- मरीजों को देखने के लिए डॉक्टर का कमरा अस्पताल में उत्तर दिशा वाले भाग में होना चाहिए और डॉक्टर को पूर्व दिशा या उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके रोगियों का निरीक्षण करना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार मरीजों का प्रतीक्षालय दक्षिण दिशा में शुभ रहता है।
- अस्पताल का मुख्य दरवाजा पूर्व अथवा ईशान दिशा के अन्तर्गत ही रहना चाहिए।
- पूर्वाभिमुखी अस्पताल सर्वोत्तम रहता है।
- मरीजों के लिए कमरे, उत्तर-पश्चिम अथवा वायव्य कोण में बनाना ही उत्तम हैं।
- शल्य चिकित्सा कक्ष अस्पताल में पश्चिमी दिशा की तरफ होना चाहिए। इस कमरे में जिस रोगी का ऑपरेशन किया जाना है उसे दक्षिण दिशा

में सिर करके लिटाना चाहिए और डॉक्टर उत्तर अथवा पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके ऑपरेशन करें।

- सीढ़ियां पश्चिमी, नैरूत आग्नेय तथा वायव्य दिशा में सुविधानुसार बनवाई जा सकती हैं।
- इमरजेन्सी कक्ष वायव्य कोण में बनवाना चाहिए।
- अस्पताल के भूखण्ड का ढाल पूर्व दिशा या उत्तर दिशा की तरफ उत्तर फल देता है।
- अस्पताल में मरीजों के बिस्तर सफेद रंग के एवं उनके ओढ़ने का कंबल आदि लाल रंग के होने चाहिएं, क्योंकि यह रंग स्वास्थ्य एवं जीवन्तता के प्रतीक हैं।
- अस्पताल की दीवारों का रंग सफेद या हल्का नीला ही होना चाहिए।
- अस्पताल में दीवारों की पार्किंग व्यवस्था पूर्व अथवा उत्तर दिशा की तरफ की जा सकती है।
- यथासम्भव अस्पताल का मध्य भाग खुला अथवा खाली रखना चाहिए।
- एक्स-रे मशीन का कमरा तथा अन्य वैद्युत उपकरण आग्नेय कोण स्थापित करना चाहिए।
- अस्पताल का शौचालय दक्षिण अथवा पश्चिम में तथा बाथरूम पूर्व या उत्तर बनाना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के द्वारा अस्पताल के पानी की व्यवस्था ईशान कोण में करनी चाहिए।

होटल, रेस्टोरेन्ट तथा जलपान गृह हेतु सूत्र

वास्तु द्वारा होटल रेस्टोरेन्ट हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं–

- आवासीय होटल निर्माण के लिए भूखण्ड का चुनाव वास्तुशास्त्र के अनुसार ही करना चाहिए। भूखण्ड का चुनाव करते समय एक बात का ख्याल रहे कि भूखण्ड के ईशान कोण में विस्तार तथा आग्नेय कोण में ह्रास हो तो शुभ रहता है। अन्य दिशाओं में विस्तार अथवा ह्रास होना अशुभ फल प्रदान करता है।
- भूखण्ड में पानी का बहाव भी पूर्वी दिशा या ईशान कोण की तरफ होना चाहिए।
- होटल की बिल्डिंग के बाहर भूखण्ड में ऊंचे वृक्ष दक्षिण तथा पश्चिम दिशा में लगवाए जाएं। उत्तर एवं पूर्व दिशा में पार्क, फुलवारी तथा लॉन आदि बनाए जा सकते हैं।

- भूखण्ड का ढाल वास्तुशास्त्र के अनुसार पूर्व, ईशान तथा उत्तर की तरफ रहे।
- होटल अथवा रेस्टोरेन्ट में प्रवेश के लिए दरवाजा उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ बनाया जाना शुभ होता है। ईशान कोण में भी मुख्य दरवाजा बनाया जा सकता है। दरवाजे के विषय में पूर्व में बताए गए सिद्धान्तों का अनुपालन करना सही होगा।
- होटल की बिल्डिंग का निर्माण इस तरह कराया जाना चाहिए कि भूखण्ड के पूर्व एवं उत्तर में दक्षिण तथा पश्चिम दिशा की अपेक्षा ज्यादा खाली स्थान रहे।
- होटल की किचन में प्रयोग किये जाने वाले अन्नादि का भण्डारण वायव्य कोण में करें।
- अगर होटल की किचन में लकड़ियों का प्रयोग किया जाना है तो इसका भण्डारण दक्षिण में होना चाहिए।
- होटल के अन्तर्गत जलपान गृह का किचन आग्नेय कोण में होना चाहिए, अगर ऐसा मुमकिन न हो सके तो पश्चिम वायव्य कोण वाले भाग में रख सकते हैं।
- होटल का प्रवेश द्वार अगर दक्षिणी दीवार में रखना ही पड़े तो दक्षिण-पूर्व की तरफ रखें।
- होटल का प्रवेश द्वार अगर पश्चिमी दीवार पर रखना है तो उत्तर-पश्चिम में ही रखें।
- होटल का प्रवेश द्वार वास्तु नियमों के अनुसार पूर्व दिशा अथवा ईशान कोण में ही रखें।
- होटल या रेस्टोरेन्ट के भवन का पूर्व दिशा में पश्चिम दिशा तथा उत्तर दिशा से दक्षिण दिशा वाला भाग ज्यादा ऊंचा बनवाएं।
- होटल में प्रयोग किये जाने वाले जल के लिए नलकूप आदि की व्यवस्था भूखण्ड में ईशान कोण, उत्तर या पूर्व दिशा में की गयी हो। लेकिन भूखण्ड के ईशान कोण से भवन के ईशान कोण मिलाने पर रेखा पर नलकूप की बोरिंग न की गयी है।
- बिजली का मीटर हॉल के मध्य में किसी भी दीवार पर नहीं स्थापित करना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार होटल के दक्षिण-पूर्व में ही जेनरेटर, बिजली का मीटर आदि लगाएं।
- होटल में यात्रियों के प्रयोग के लिए बिस्तर आदि के लिए भण्डार करना दक्षिण अथवा पश्चिम में बनायें।

- वास्तुशास्त्र के द्वारा होटल में शौचालय एवं स्नानघर को ईशान कोण में नहीं बनाना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार होटल की बालकॉनी को ईशान कोण में स्थापित करना चाहिए।
- होटल के कमरों का दरवाजा उत्तर, पूर्व अथवा ईशान की तरफ रहे। कमरे का फर्नीचर पलंग, सोफा आदि दक्षिण तथा पश्चिम दिशा में रखें। वाशबेसिन पश्चिम में हो तो ठीक होती है। दरवाजे उत्तर, पूर्व अथवा ईशान में रखने से कमरों में उत्तर अथवा पूर्व दिशा खाली व हल्की रहेगी और आने-जाने का रास्ता उसी में रहेगा।
- विद्युत उपकरण वास्तुशास्त्र के अनुसार आग्नेय कोण में लगायें, जैनरेटर भी इसी दिशा में रखें।
- होटल का स्वीमिंग पूल, तालाब, फव्वारे आदि उत्तर-पूर्व तथा ईशान कोण में बनवाएं।
- होटल के जलपान गृह का भवन भूखण्ड पर दक्षिण-पश्चिम दिशा में बनवाना चाहिए। उत्तर-पूर्व दिशा वाले हिस्से को हल्का रखें। उत्तर-पूर्व दिशा में बालकॉनी का निर्माण कर सकते हैं और इसी दिशा में ही बरामदा बनाया जा सकता है।
- होटल का रिसेप्शन नैर्ऋत्य कोण में होना चाहिए। इस प्रकार काउन्टर पर खड़े व्यक्ति का मुंह उत्तर अथवा पूर्व दिशा की तरफ रहेगा, जो कि शुभदायक है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार होटल के भूमितल पर रेस्टोरेन्ट एवं स्वागत कक्ष बनाया जा सकता है।
- अगर होटल में स्वीमिंग पूल बनाना है तो इसे होटल के उत्तर-पूर्व हिस्से में बनाएं।
- कैश-काउन्टर दक्षिण-पश्चिम में होना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार होटल का फर्श पश्चिम या दक्षिणी दीवार के सहारे बनाएं।
- होटल के मालिक का कमरा नैर्ऋत्य कोण में बनाना चाहिए। इससे होटल उसके स्वामित्व में स्थायित्व रहेगा। इस कमरे में उसके बैठने का प्रवन्ध इस तरह होना चाहिए कि उसका मुंह पश्चिम तथा दक्षिण दिशा की तरफ रहे। इस कमरे में तिजोरी की व्यवस्था इस तरह होनी चाहिए कि वह उत्तर की ओर रहे।
- नैर्ऋत्य दिशा में इस तरह बने रिसेप्शन काउन्टर तथा कैश काउन्टर

फर्श की सतह से थोड़ा ऊंचा चबूतरा बनाकर उस पर बनाए जा सकते हैं। लेकिन अगर यही काउन्टर अन्य दिशाओं में बनाना हो तो वहां पर चबूतरा या चौकी नहीं बनानी चाहिए। चबूतरा बनाने का मकसद इतना ही होता है कि नैर्ऋत्य कोण का हिस्सा थोड़ा ऊंचा रहना चाहिए।

- वाशबेशिन डायनिंग हॉल के बीचो-बीच कभी न बनाएं। यह अनुचित है वाशवेशिन उत्तर दिशा, पूर्व दिशा अथवा ईशान कोर्ण की तरफ बनाना चाहिए।
- एयर कंडिशनिंग प्लांट को भवन के आग्नेय कोण में स्थापित किया जाना चाहिए।
- भूमिगत पर अगर रसोईघर नहीं बनाया हो तो वहां का कॉन्फ्रेंस हॉल बैंक वेट रूम और दूसरा रेस्टोरेन्ट अथवा डायनिंग हॉल बनाया जा सकता है। यह रेस्टोरेन्ट या डायनिंग हॉल मंजिल के थोड़ा-सा पश्चिमी भाग की तरफ बनाना चाहिए। पूर्वी दिशा का भाग तथा उत्तरी दिशा के भाग में बालकॉनी का निर्माण करना चाहिए।
- होटल में रसोईघर के लिए ज्यादा स्थान की जरूरत होती है। उस रसोईघर में हवा तथा प्रकाश की समुचित व्यवस्था का होना जरूरी है। रसोईघर आग्नेय कोण में ही बनाना चाहिए। खास परिस्थितियों में इसे पश्चिमी दिशा में बनाया जा सकता है। लेकिन इसमें अग्नि सम्बन्धों कार्य इस कमरे के आग्नेय कोण में ही करें।
- अगर आपका होटल बहुमंजिला है, तो इससे ऊपर की मंजिलों में रहने के लिए कमरे तथा रेस्टोरेन्ट बनाए जा सकते हैं। इन कमरों और रेस्टोरेन्ट में स्नानघर एवं शौचालय बनाते समय यह सावधानी बरतनी होगी कि ये ईशान कोण में न बनाएं।

रेस्टोरेन्ट हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र के अनुसार रेस्टोरेन्ट हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- रेस्टोरेन्ट के रसोईघर में पीने का जल ईशान कोण अथवा उत्तर दिशा में रखा जाना चाहिए।
- रेस्टोरेन्ट के रसोईघर में रेफ्रिजरेटर आदि को आग्नेय कोण, दक्षिण-पश्चिम या उत्तर दिशा में रखा जाना चाहिए। रेफ्रिजरेटर को नैर्ऋत्य कोण में कभी नहीं रखना चाहिए। वास्तु द्वारा यह स्थिति वहुत बुरी मानी जाती है।
- रेस्टोरेन्ट के रसोईघर में चूल्हा, ओवन, ग्राउंडर आदि रसोईघर के आग्नेय

में रखना चाहिए। एक बात का ख्याल रहे कि चूल्हे पर खाना बनाते हुए रसोइए का मुंह पूर्व दिशा की ओर रहे।

- रेस्टोरेन्ट का रसोईघर आग्नेय कोण में ही होना चाहिए। विशेष तौर पर वास्तुशास्त्र के अनुसार इसके लिए पश्चिम दिशा की वैकल्पिक दिशा के रूप में बताई गयी है।
- रेस्टोरेन्ट के डायनिंग हॉल में काउंटर पूर्व अथवा दक्षिण दिशा में ही होना चाहिए।
- रेस्टोरेन्ट के रसोईघर में जूठे बर्तन के धोए जाने की व्यवस्था नैर्ऋत्य कोण में होनी चाहिए। साथ ही साफ बर्तनों को तैयार भोजन तथा परोसे जाने के स्थान के बीच ऊपर अथवा परोसे जाने वाले स्थान पर ऊपर रखना चाहिए जो बर्तन प्रयोग में आएं उन्हीं को यहां रखना चाहिए बल्कि बर्तनों की आलमारी में रख देना चाहिए।
- रेस्टोरेन्ट के रसोईघर में तैयार भोजन को वायव्य कोण में ही रखना चाहिए। वायव्य कोण में अन्नादि का भण्डार भी होता है तो इस भोजन को भण्डार कक्ष के समीप की आलमारी में रखना चाहिए और इस स्थान से पूर्व दिशा की तरफ भोजन को परोसे जाने की व्यवस्था होनी चाहिए। यह स्थिति सही मानी जाती है।
- सब्जियां और सलाद आदि काटने का स्थान पूर्व दिशा में होना उचित है इस वजह से यह स्थान परोसे जाने वाले स्थान के निकट होगा जो कि सुविधाजनक है।
- ईंधन अर्थात् गैस सिलेंडर, कोयला तथा लकड़ी आदि का भंडारण दक्षिण या पश्चिम में होना चाहिए।
- रेस्टोरेन्ट के रसोइघर में प्रयोग होने वाले अन्न आदि का भण्डार रसोईघर के वायव्य कोण में एक कक्ष बनाकर करना चाहिए। अगर कक्ष बना पाना मुमकिन नहीं तो इस तरफ आलमारी बनवाकर उसमें रखना चाहिए। अगर कक्ष बना सकते हैं तो इस कक्ष के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में मासिक प्रयोग के लिए खरीदे गये अन्नादि का भण्डार रखें। दैनिक प्रयोग के इसी कमरे के वायव्य कोण में सामान रखें और इसके आग्नेय भाग में घी, तेल आदि का भण्डार रखें।
- रेस्टोरेन्ट के रसोईघर में टांड आदि का निर्माण नैर्ऋत्य कोण, दक्षिण अथवा पश्चिम दिशा में किया जाना चाहिए।
- रेस्टोरेन्ट के डायनिंग हॉल की दीवारों पर मनमोहक रंगों की पुताई कराएं। दीवारों पर मध्यम रंग कराया जा सकता है। यह रंग स्वास्थ्य

तथा जीवन्तता का प्रतीक होता है। इसलिए देखा गया है कि ज्यादातर चिकित्सालय एवं नर्सिंग होम में इसी कलर के कम्बल होते हैं। मध्यम गुलाबी, मध्यम हरा, हल्का नीला और मध्यम पीला रंग भी दीवारों पर कराया जा सकता है।

- रेस्टोरेन्ट के डायनिंग हॉल के ईशान कोण को स्वच्छ एवं शुद्ध रखें, यहां पर पूजास्थल बनाएं। अगर पूजास्थल नहीं बना रहे हैं तो इस स्थान पर कोई धार्मिक चित्र या प्राकृतिक दृश्य जिसमें जल प्रधान हो, लगाएं।
- रेस्टोरेन्ट के डायनिंग हॉल के उत्तर-पूर्व अथवा ईशान कोण में वाश-बेशिन को लगवाएं लेकिन ध्यान रखें कि वाशबेशिन में कोई थूके नहीं।
- रेस्टोरेन्ट के डायनिंग हॉल के अन्दर हिंसक पशुओं तथा युद्ध आदि के चित्र नहीं लगाने चाहिएं। हॉल में सौम्य, लुभावने तथा मन को पुलकित कर देने वाले चित्र जो कि सभी को अच्छे लगें तथा समाज के अनुकूल ही लगाने चाहिएं। समाज के अनुकूल से तात्पर्य है कि अश्लील चित्र न लगायें।
- रेस्टोरेन्ट के डायनिंग हॉल में ज्यादातर मेज-कुर्सियों की व्यवस्था इस तरह होनी चाहिए कि वे हॉल के पश्चिमी भाग में हों।

सिनेमाहॉल हेतु सूत्र

वास्तु द्वारा सिनेमाहॉल हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं–

- सिनेमाहॉल के लिए भूखण्ड या तो आयताकार हो या वर्गाकार, भूखण्ड में बहुत कोने नहीं होने चाहिएं।
- सिनेमाहॉल के लिए जो भूखण्ड खरीदें, उसमें वास्तुनियमों का ध्यान करके तथा अगर वास्तुनिमयों के अन्तर्गत नहीं है तो उसे वास्तुनिमयों के अन्तर्गत करके ही स्थायी निर्माण शुरू करें।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार इसके पानी का ढाल उत्तर-पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए।
- कैन्टीन, साइकिल स्टैण्ड आदि उत्तरी भाग एवं उत्तर-पूर्व दिशा में तथा कैन्टीन दक्षिण-पूर्व दिशा में बनाई जानी चाहिए।
- पूर्व और उत्तर दिशा में दक्षिण तथा पश्चिमी दिशा की अपेक्षा ज्यादा खुली जगह रखें।
- दक्षिण-पश्चिम दिशा के कोने 90 डिग्री में जरूर होने चाहिएं। इसी प्रकार उत्तर-पश्चिम का हिस्सा भी वास्तु अनुसार रहे जैसा कि पूर्व नियमों में बताया गया है।

- भूखण्ड के उत्तर-पूर्व का कोना कम नहीं होना चाहिए, अगर यह हिस्सा बढ़ा हुआ है तो शुभ माना जाएगा।
- सिनेमाहॉल की बालकॉनी आदि की व्यवस्था दक्षिणी या पश्चिमी भाग में करनी चाहिए। सिनेमाहॉल और घर की बालकॉनी में अन्तर है इसीलिए इनकी दिशाएं भी अलग-अलग होती हैं। घर की बालकॉनी घर में शुद्ध हवा आने के लिए पूर्व ईशान अथवा उत्तर दिशा में बनाई जाती है लेकिन सिनेमाहॉल की बालकॉनी में तो दर्शक बैठकर सिनेमा देखते हैं, इसलिए इस स्थान पर हॉल के अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक भार होता है, इस वजह से सिनेमाहॉल की बालकॉनी के लिए दक्षिण या पश्चिम भाग को निश्चित किया है।
- सिनेमाहॉल में बिजली के मेन स्विच, जैनरेटर आदि का स्थान दक्षिण-पूर्व भाग में करें। जैनरेटर को नैर्ऋत्य कोण में रखा जा सकता है, लेकिन जैनरेटर से बिजली पहले आग्नेय कोण में आनी चाहिए। इसके बाद सिनेमाहॉल में जानी चाहिए।
- सिनेमाहॉल में शौचालय तथा मूत्रालय का निर्माण दक्षिण या पश्चिमी भाग में करें।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार उत्तर-पूर्व दिशा वाले स्थान में पूजा का स्थान बनाएं।
- सार्वजनिक पीने के पानी आदि की व्यवस्था उत्तर-पूर्व की तरफ ही होनी चाहिए।
- ऊपर जाने के लिए जीने का प्रवेश पश्चिम की तरफ से दक्षिण की तरफ होना चाहिए—और उनका भार इन्हीं दिशाओं में हो तो अच्छा है। सीढ़ियों में घुमाव बाश के द्वारा होना चाहिए और सीढ़ियों की संख्या ऐसी विषम होनी चाहिए कि अगर तीन से भाग दें तो शेष बचे।
- प्रवेश द्वार उत्तर अथवा पूर्व दिशा में रखा जा सकता है। भूखण्ड की दिशा अनुसार पहले बताई जा चुकी है। रीति के मुताबिक मुख्य दरवाजे को वास्तु सिद्धान्त के अनुसार ही रखें कि वह उत्तर अथवा पूर्व की तरफ खुलती हो, वास्तु द्वारा यह उचित माना जाता है।
- सिनेमाहॉल की टिकट खिड़की उत्तर अथवा ईशान कोण में होनी चाहिए और कैश-बॉक्स भी उसी स्थान पर खिड़की पर टिकट बांटने वाले व्यक्ति के दाएं हाथ की ओर होना चाहिए।
- सिनेमाहॉल की बिल्डिंग के अन्दर या बाहर उत्तर अथवा पूर्व दिशा में या ईशान कोण में फुलवारी अथवा फौहारा लगाएं। कोई भी कारोबार

वह भले ही दुकान हो और कार्यालय हो, कर्मचारियों का आजीविका का साधन होता है। वास्तु अनुसार निर्माण कार्य उन्नति तथा समृद्धि के साथ-साथ मानसिक शान्ति प्रदान करता है इसलिए इनके निर्माण में वास्तु के अनुपम सिद्धान्तों का प्रयोग करके सबसे ज्यादा फायदा उठाना है। अगर कारोबार में अड़चन आ रही है तो एक बार किसी अच्छे व्यावहारिक वास्तुविद् से अपने प्रतिष्ठान का निरीक्षण कर उसके वास्तुदोष का निवारण करा लेना चाहिए।

- सिनेमाहॉल का पर्दा उत्तर-पूर्व दिशा में और प्रोजेक्टर दक्षिण अथवा पश्चिम दिशा में रखा जाता है। कुछ वास्तु सलाहकारों का मत है कि पर्दा दक्षिण में एवं प्रोजेक्टर उत्तर में होना चाहिए। अगर आप खुद विचार करें तो पायेंगे कि प्रोजेक्टर पर जब फिल्म चलती है तो प्रकाश की किरणें पर्दे पर पड़कर उस फिल्म के दृश्यों को दिखाती हैं। इन किरणों का प्रवाह ऊपर सेनीचे की तरफ होता है अतः पर्दा उत्तर या पूर्व दिशा में ही उचित होगा। प्रोजेक्टर एक मशीन होती है और मशीन के लिए सभी वास्तु सलाहंकार दक्षिण एंवं पश्चिमी दिशा निर्धारित करते हैं तो प्रोजेक्टर को भी इसी भाग में रखा जाना वास्तु के अनुसार होगा। अगर किसी सिनेमाहॉल में फिल्म का प्रोजेक्शन नीचे ऊपर की तरफ हो रहा है तो प्रोजेक्टर पूर्वी आग्नेय कोण में रखा जा सकता है और उसका पर्दा इसके विपरीत कोण; अर्थात् पश्चिमी वायव्य कोण में रखा जाना उचित होगा।

धार्मिक चित्र हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र अनुसार धार्मिक चित्र से सम्बन्धित सूत्र निम्नलिखित हैं–

- वास्तुशास्त्र के अनुसार भवन के अन्तर्गत चित्र सुन्दर तथा मनमोहक लगाने चाहिएं।
- मकान में रामायण महाभारत या किसी भी तरह के युद्ध वाले चित्र इन्द्रजनिक चित्र, पत्थर या लकड़ी की बनी राक्षसों जैसी मूर्तियों और लेटे हुए किसी मनुष्य की मूर्ति या चित्र को रखना हमेशा अशुभ फल प्रदान करता है।
- मकान में मुख्य दरवाजे पर धार्मिक या मांगलिक चित्र जैसे ॐ, गणपति, मंगल कलश, मीन, स्वास्तिक, गायत्री मंत्र आदि जरूर लगाने चाहिएं। इनके कारण बुरी आत्माएं, बुरी नजर आदि मकान में प्रवेश नहीं कर पाती हैं। यह शुभता के प्रतीक हैं।

- मकान के मालिक को अपनी अध्ययन मेज पर ईशान कोण में अपने आराध्य देवी-देवता का अत्यन्त आकर्षक चित्र रखना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार अपने स्वर्गवासी पूर्वजों के चित्र दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम में लगाने चाहिएं।
- मकान में दीवार पर लगाए गए धार्मिक चित्रों में यह जरूर ध्यान रखें कि ये एक-दूसरे के सामने हों।
- सूअर, सियार, सांप, गिद्ध, उल्लू, कबूतर, कौए, बाज आदि पशु-पक्षियों के चित्र न लगाएं।
- बच्चों के पढ़ने के कमरे में सरस्वती, प्रेरणादायक महापुरुषों के एवं गुरुजनों के चित्र लगाएं, आजकल के बच्चे फिल्म स्टारों के चित्र लगाने ज्यादा पसन्द करते हैं, यह सही नहीं है। इन फिल्म स्टारों का व्यक्तित्व हमारे महापुरुषों की भांति हमारे बच्चों को अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित नहीं करता है। यह चित्रों का ही दोष होता है। वास्तुशास्त्र द्वारा यह उचित नहीं माना जाता।

सीढ़ियों हेतु सूत्र

वास्तु द्वारा सीढ़ियों हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- अगर सीढ़ियां घुमावदार बनानी हों, तो उनका घुमाव हमेशा पूर्व से दक्षिण, दक्षिण से पश्चिम, पश्चिम से उत्तर और उत्तर से पूर्व की तरफ होना चाहिए। कहने का मतलब यह है कि चढ़ते समय सीढ़ियां हमेशा बाएं से दायीं तरफ मुड़नी चाहिएं। अब चाहे कितने भी घुमाव आते जाएं।
- सीढ़ियां हमेशा विषम संख्या में होनी चाहिएं, सीढ़ियों की संख्या ऐसी हो कि उसे भाग दें तो 2 शेष रहे; जैसे 5, 11, 17, 23, 29 आदि।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार दरवाजा पूर्व अथवा दक्षिण दिशा में होना शुभ होता है।
- अगर किसी पुराने मकान में सीढ़ियां उत्तर-पूर्व दिशा में बनी हों तो इसके वास्तुदोष को समाप्त करने के लिए छत पर दक्षिण-पश्चिम दिशा में एक कमरा बनाना चाहिए।
- सीढ़ियां भवन के पार्श्व में दक्षिणी तथा पश्चिमी भाग के दायीं तरफ हों तो उत्तम होती हैं।
- ईशान कोण में सीढ़ियां नहीं बनवानी चाहिएं।

सेवक कक्ष हेतु सूत्र

सेवक कक्ष हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं–

- सेवक कक्ष अगर किसी कारणवश उत्तर अथवा पूर्व में ही बनाना जरूरी हो तो कक्ष को इन दीवारों से सटाकर नहीं बनाना चाहिए।
- सेवक कक्ष बनाने में कक्ष के अन्दर अन्य सभी वास्तुनियमों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। खासतौर पर दक्षिणी तथा पश्चिमी भाग पूर्वी तथा उत्तरी भाग से ज्यादा भारी होना चाहिए और कमरे का ईशान कोण स्वच्छ तथा शुद्ध होना चाहिए।
- सेवक कक्ष अगर स्थानाभाव न हो तो मुख्य भवन के निकट दक्षिणी अथवा पश्चिमी भाग में चारदीवारी से सटाकर बनाना चाहिए। अगर मुख्य भवन के बाहर बनाना संभव न हो तो भवन के अन्दर इसी भाग में बनाना चाहिए। लेकिन सेवक कक्ष की दीवारें कबाड़ रूम से लगी हुई बिल्कुल नहीं होनी चाहिएं। यह स्थिति अच्छी नहीं मानी जाती।

स्वागत कक्ष हेतु सूत्र

स्वागत कक्ष हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं–

- स्वागत कक्ष में अगर अध्ययन करने की मेज लगानी है तो यह कमरों के पूर्वी ईशान, उत्तर अथवा उत्तरी वायव्य कोण में लगायी जानी चाहिए। इस मेज पर रखा जाने वाला टेबिल लैम्प मेज के आग्नेय कोण की तरफ होना चाहिए।
- दक्षिण दिशा में समय बताने वाला उपकरण कभी नहीं लगाना चाहिए, वास्तु द्वारा यह अच्छा नहीं माना जाता।
- स्वागत कक्ष में बैठने की व्यवस्था इस तरह होनी चाहिए कि परिवार के मुखिया का मुंह पूर्व अथवा उत्तर दिशा की तरफ हो तथा आगंतुक का मुख पश्चिम या दक्षिण दिशा की तरफ।
- स्वागत कक्ष का ईशान कोण खाली नहीं रखना चाहिए।
- स्वागत कक्ष की ईशान कोण की दीवार से पूजास्थल बनाया जा सकता है अथवा कोई धार्मिक चित्र अथवा झरने आदि का चित्र जरूर लगाएं।
- स्वागत कक्ष में एयर-कंडीशनर एवं रूम हीटर आदि विद्युत उपकरण कक्ष के आग्नेय कोण की तरफ रखे जाने चाहिएं।
- अगर आपके स्वागत कक्ष का एक भाग भोजन कक्ष की तरह प्रयोग

किया जाना है, तो यह स्वागत कक्ष में पश्चिम दिशा की तरफ होना चाहिए।

- टेलीफोन भी वायव्य तथा पश्चिम दिशा में रखा जाना उपयुक्त माना जाता है।
- कक्ष के अन्तर्गत पशु-पक्षियों के चित्र, स्त्रियों के चित्र, रोते हुए बच्चे का चित्र तथा युद्ध के चित्र नहीं लगाने चाहिएं।
- स्वागत कक्ष का दरवाजा स्वागत कक्ष के ईशान कोण में बनाएं, तो यह शुभदायक रहेगा।
- स्वागत कक्ष की उत्तरी तथा पूर्वी दीवार की ओर फर्नीचर न रखें, इसका उद्देश्य सिर्फ यही होता है कि इन दिशाओं में भारी सामान भूलकर भी न रखा जाए।
- स्वागत कक्ष में झाड़-फानूस आदि कक्ष के केन्द्र से पश्चिम की तरफ हटाकर लगाना चाहिए।
- स्वागत कक्ष भवन में वायव्य कोण तथा पूर्व ईशान कोण के मध्य बनाना चाहिए।
- स्वागत कक्ष में घड़ी पूर्वी-उत्तरी या पश्चिमी दिशा की दीवार पर लगायी जानी चाहिए।
- स्वागत कक्ष में टी०वी०, वी०सी०आर० आदि मनोरंजन के उपकरण पश्चिम दिशा, वायव्य या आग्नेय कोण में रखें जाने चाहिएं।
- स्वागत कक्ष के प्रवेश द्वार के ऊपर अन्दर की तरफ से किसी देवी-देवता का चित्र नहीं लगाना चाहिए, किन्तु स्वागत कक्ष के प्रवेश द्वार के ऊपर बाहर की तरफ गणेशजी का चित्र लगाया जा सकता है जो कि शुभता का सूचक है।
- कक्ष में रखा जाने वाला फर्नीचर वर्गाकार या आयताकार होना चाहिए किसी अन्य आकार का नहीं। कमरे में फर्नीचर आदि पश्चिम या दक्षिण दिशा में रखा जाना चाहिए। स्थानाभाव की वजह से अगर फर्नीचर पूर्व या उत्तर दिशा में रखा जाना है तो यह फर्नीचर हल्का और पीला होना चाहिए। साथ ही फर्श पर लकड़ी के गुटखे रखकर उस पर फर्नीचर रखना चाहिए।
- स्वागत कक्ष में कूलर को पूर्व दिशा या पश्चिम दिशा में रखा जाना चाहिए। कूलर आग्नेय कोण में कभी न रखें। ऐसा करने पर कूलर बहुधा खराब भी हो सकता है।
- स्वागत कक्ष में म्यूजिक सिस्टम तथा स्पीकार अर्थात् ध्वनि से सम्बंधित

उपकरण को वायव्य कोण या पश्चिम दिशा में रखा जा सक

- स्वागत कक्ष में अगर दीवान रखा जाना है, तो वह पश्चिमी दक्षिणी दीवार को छूता हुआ रखा जाना चाहिए एवं दीवान पर वक्त सिर दक्षिण या पश्चिम में होना उपयुक्त है।

अतिथि कक्ष हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र के द्वारा अतिथि कक्ष हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं–

- अतिथि कक्ष पश्चिमी नैर्ऋत्य कोण, दक्षिणी नैर्ऋत्य कोण एवं द आग्नेय कोण में नहीं बनाना चाहिए। इससे अतिथि भवन में समय तक ठहरता है और घर में कलेश भी रहता है। साथ ही अ के आने का उद्देश्य भी पूर्ण नहीं हो पाता।
- अतिथि कक्ष हमेशा पश्चिमी वायव्य कोण, वायव्य कोण, उत्तरी व कोण अथवा उत्तरी ईशान कोण में बनाया जाना चाहिए। इससे अ भवन में कम समय ठहरता है और घर में सुख-शान्ति रहती है, ही अतिथि के आने का उद्देश्य भी पूरा हो जाता है।
- अतिथि कक्ष में अतिथि की व्यवस्था दूसरे शयन कक्षों की तरह ही चाहिए।

ओवरहैड पानी की टंकी हेतु सूत्र

पानी की टंकी हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं–

- अगर किसी वजह से विवश होकर ईशान कोण में पानी की टंकी ल हो तो इससे अधिक ऊंचा वायव्य कोण में कोई निर्माण कराना चा वायव्य कोण से ज्यादा ऊंचा आग्नेय कोण में और आग्नेय को अधिक ऊंचा नैर्ऋत्य कोण में निर्माण अवश्य करवाना होगा। ऐसा पर ईशान में टैंक के निर्माण का वास्तुदोष दूर हो जाता है।
- मकान की छत पर रखी जाने वाली ओवरहैड पानी की टंकी द पश्चिम अथवा नैर्ऋत्य कोण में बनानी चाहिए। नैर्ऋत्य कोण को र का स्थान माना गया है। इसलिए भारी वजन वाली चीजें उसी में स्थापित करनी चाहिएं।
- भवन की छत पर पानी की टंकी ईशान में वर्जित है, क्योंकि इ किसी भी तरह की ऊंचाई या भार को वहन नहीं कर सकती, जलस्रोत करने से अनेक कठिनाइयां पैदा होंगी।

नलकूप सम्बन्धी सूत्र

वास्तु द्वारा नलकूप व जलस्रोत हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- पश्चिमी नैर्ऋत्य में कूप अथवा गड्ढा हो तो मर्दों को बीमारियां होती हैं और वे चरित्रहीन बन जाते हैं। इस कूप को तुरन्त भरवा देना चाहिए तथा कूप का निर्माण ईशान कोण में किया जाना चाहिए। वास्तु द्वारा यह उत्तम है।
- मध्य भाग में कूप अथवा गढ्डा होने से मकान के मालिक का विनाश होता है। इस कूप को फौरन भरवा देना चाहिए तथा कूप का निर्माण ईशान कोण में होना चाहिएं।
- दक्षिण नैर्ऋत्य कोण में कूप अथवा गढ्डा हो, तो स्त्रियां रुग्ण, चरित्रहीन व कर्जवान होती हैं। इस कूप को तुरन्त भरवाकर कूप का निर्माण ईशान कोण में होना चाहिए।
- कूप के तल में चौकोर अथवा वृत्ताकार वलय बिठाने पर भी कुएं की जगह का निर्माण गोलाकृत्ति में होना चाहिए।
- अगर दक्षिणी आग्नेय कोण में कूप या गड्ढा हो तो उस घर की औरतें अस्वस्थ रहेंगी, बुरे व्यसन तथा डर का शिकार होंगी। ऐसी हालत में नीचे दिये गये उपायों का उपयोग करें।
- कूप या हैंडपम्प के लिए पूर्वी या उत्तरी ईशान कोण सर्वोत्तम स्थान है। उत्तरी ईशान या पूर्वी ईशान में कुआं या गड्ढा हो तो सुख-सम्पन्नता, वंश-वृद्धि व प्रसिद्धि देता है।
- पश्चिमी वायव्य अथवा उत्तरी वायव्य कोण में कूप अथवा गड्ढा होने से मुकदमेबाजी, चोरी, पागलपन आदि अनेक प्रकार के संकट पैदा होते हैं। इस कूप को तुरन्त भरवा देना चाहिए तथा कूप का निर्माण ईशान कोण में किया जाना चाहिए।
- कूप की जगह उत्तर तथा पूर्व की दीवार से सटी हुई बिल्कुल नहीं होनी चाहिए।
- दक्षिण में कूप अथवा गड्ढा स्त्रियों की मृत्यु का कारण होता है। इस कूप को तुरन्त भरवा देना मुनासिब होगा और कूप का निर्माण ईशान कोण में किया जाना चाहिए या इससे गहरा कूप ईशान कोण में बनवा लेना चाहिए। इसके बाद दक्षिण दिशा में स्थित कूप के जल का प्रयोग बंद कर देना चाहिए।

- पश्चिम दिशा में कूप या गड्ढा पुरुषों के लिए अस्वास्थ्यकारी होता है। इस कूप पर ढक्कन लगवाकर इससे जल को एक पाइप-लाइन द्वारा ईशान कोण में बाहर ले जाकर पुनः कोण से पाइप लाइन द्वारा ईशान कोण से भूखण्ड तथा भवन से लाकर उपयोग करना चाहिए।

सैप्टिक टैंक सम्बंधी सूत्र

वास्तुशास्त्र द्वारा सैप्टिक टैंक हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- वास्तु द्वारा सैप्टिक टैंक भूमि तल से नीचे की ओर होना अधिक उत्तम होता है।
- सैप्टिक टैंक हमेशा दीवार से एक अथवा दो फीट की जगह छोड़कर बनाना चाहिए।
- दक्षिण दिशा में स्थापित किया गया सैप्टिक टैंक मकान के मालिक के जीवन साथी के जीवन के लिए हानिकारक होता है।
- वास्तु द्वारा पश्चिम दिशा में बनाया गया सैप्टिक टैंक मानसिक अशान्ति लाता है।
- आग्नेय दिशा में बनाया गया सैप्टिक टैंक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।
- सैप्टिक टैंक की लम्बाई पूर्व-पश्चिम दिशा में तथा चौड़ाई उत्तर-दक्षिण दिशा में होनी चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार उत्तर दिशा में बनाया गया सैप्टिक टैंक मान-सम्मान को समाप्त करता है।
- वास्तु के अनुसार ईशान कोण में स्थापित सैप्टिक टैंक आजीविका के लिए हानिकारक होता है।
- सैप्टिक टैंक का तीन-चौथाई भाग जिसमें कि जल होता है, पूर्व दिशा में स्थापित होना चाहिए तथा मल आदि के लिए स्थान उत्तर दिशा में होना चाहिए।
- शौचकूप या सैप्टिक टैंक मकान के वायव्य कोण तथा उत्तर दिशा के बीच में होना चाहिए।
- नैर्ऋत्य कोण में बनाया गया सैप्टिक टैंक मकान के मालिक के जीवन के लिए कुप्रभावी होता है।
- दक्षिण दिशा में बनाया गया सैप्टिक टैंक भवन के मालिक के जीवन-साथी के जीवन के लिए हानिदायक है।

स्नानगृह हेतु सूत्र

स्नानगृह हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- अगर स्नानगृह बड़ा है उसी के अन्तर्गत वाशिंग मशीन भी रखी जानी चाहिए, तो मशीन को दक्षिण तथा आग्नेय कोण में रखा जा सकता है। यह स्थिति अच्छी मानी जाती है।
- स्नानगृह के अन्तर्गत गीजर, हीटर तथा अन्य विद्युत उपकरण दक्षिण-पूर्व (आग्नेय) कोण में रखे जाने चाहिएं।
- वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत स्नानगृह का दरवाजा रसोईघर के दरवाजे के ठीक सामने नहीं होना चाहिए।
- अगर मकान का मुख्य दरवाजा उत्तर दिशा की तरफ है तो भी स्नानगृह पूर्व या पूर्वी-आग्नेय में बनाना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के द्वारा स्नानगृह में बाथटब पूर्व, उत्तर अथवा ईशान कोण में रखा जाना चाहिए।
- यूं तो शौचालय स्नानगृह में बनवाना नहीं चाहिए, लेकिन अगर बनाना जरूरी है तो यह स्नानगृह में पश्चिम अथवा वायव्य कोण की तरफ बनाया जाना ठीक रहता है।
- स्नानगृह की दीवारों का रंग हल्का तथा मनभावन; जैसे—सफेद, हल्का नीला, आसमानी आदि होना चाहिए।
- अगर मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा की तरफ है तो स्नानगृह पश्चिम नैर्ऋत्य में बनाना चाहिए।
- अगर भवन का मुख्य दरवाजा पूर्व दिशा की तरफ है तो स्नानगृह पश्चिमी नैर्ऋत्य में बनाना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार स्नानगृह के लिए सबसे अधिक उपयुक्त दिशा पूर्व दिशा होती है।
- वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत शॉवर ईशान कोण उत्तर अथवा पूर्व दिशा में होना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के द्वारा स्नानगृह के फर्श का ढाल पूर्व तथा उत्तर दिशा में होना चाहिए।

शौचालय हेतु सूत्र

शौचालय हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- जिन भूखण्डों के पूर्व या उत्तर में मार्ग हों उन पर निर्मित मकानों में ईशान कोण में शौचालय निर्माण करवाना अत्यन्त घातक होता है। मानसिक व पारिवारिक अशान्ति, असाध्य रोग, अनैतिक कार्यों से पतन होता है। यह स्थिति अशुभ है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार शौचालय में एक खिड़की उत्तर-पश्चिम अथवा पूर्व दिशा में होनी चाहिए।
- शौचालय का दरवाजा पूर्व अथवा आग्नेय दिशा की तरफ खुलने वाला होना चाहिए।
- शौचालय में संगमरमर की टाइल्स का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। वास्तु द्वारा यह अच्छी स्थिति नहीं है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार शौचालय में पानी की टोटी पूर्व अथवा उत्तर दिशा में होनी चाहिए।
- शौचालय का निर्माण इस तरह होना चाहिए कि शौचालय में बैठते समय मुंह उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ कभी न हो, शौचालय में सीट इस तरह लगी होनी चाहिए कि बैठते वक्त आपका मुंह दक्षिण या पश्चिम दिशा की तरफ रहे।
- मकान में शौचालय पश्चिम, वायव्य कोण से हटकर उत्तर की तरफ या दक्षिण में होना चाहिए।
- शौचालय का दरवाजा रसोईघर के दरवाजे के सामने भूलकर भी नहीं बनाना चाहिए।
- अगर आपके निर्मित भवन में त्रुटि या अज्ञानवश ईशान कोण में शौचालय का निर्माण हो गया है तो इसके बाहर एक बड़ा आईना इस तरह लगाना चाहिए कि नैर्ऋत्य कोण से देखने पर आईना बिल्कुल सामने दिखाई दे। अथवा यहां पर शिकार करते हुए शेर या मुंह फाड़े हुए शेर का चित्र भी लगाया जा सकता है। इस स्थान पर मिट्टी का पात्र जिस पर कटावदार आलेखन हो, आकार बड़ा व पात्र की आकृति कैसी भी हो सकती है रखा जाना चाहिए, यह अच्छा माना जाता है।

संयुक्त स्नानगृह व शौचालय हेतु सूत्र

वास्तु द्वारा संयुक्त स्नानागार व शौचालय हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- संयुक्त स्नानगृह तथा शौचालय का दरवाजा मध्य पूर्व में रखा जा सकता है।
- संयुक्त स्नानगृह तथा शौचालय पश्चिमी वायव्य का पूर्वी आग्नेय दिशा में बनाना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार रसोईघर के सामने कभी भी स्नानगृह तथा शौचालय नहीं बनाना चाहिए।
- संयुक्त स्नानगृह तथा शौचालय में पश्चिमी अथवा वायव्य कोण की तरफ बनाया जाना चाहिए।
- संयुक्त स्नानगृह तथा शौचालय में पश्चिम की तरफ भी वाशबेसिन लगा सकते हैं।

बैडरूम हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र के द्वारा बैडरूम हेतु सूत्र निम्नालिखित हैं—

- शयनकक्ष में बैड या पलंग इस तरह से हो कि उस पर सोने से सिर पश्चिम या दक्षिण दिशा की तरफ रहे। इस प्रकार सोने से सुबह उठने पर मुंह पूर्व अथवा उत्तर दिशा की तरफ रहेगा। पूर्व दिशा सूर्योदय की दिशा है, यह जीवनदाता और शुभ होती है। उत्तर दिशा धनपति कुबेर की मानी गयी है, इसलिए सुबह-सवेरे उठते ही उस दिशा में मुंह होना भी शुभ है।
- अगर सोते वक्त सिर पश्चिम दिशा की तरफ रखना हो तो पलंग का एक सिरा पश्चिम की दीवार को छूता रहे।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार विद्यार्थियों के लिए पश्चिम में सिरहाना उत्तम माना जाता है।
- बैडरूम का दरवाजा वास्तुशास्त्र के अनुसार एक ही पल्ले का लगवाना सही माना जाता है।
- शयनकक्ष में पलंग के दायीं तरफ छोटी टेबल आवश्यक वस्तु या दूध-पानी रखने के लिए स्थापित कर सकते हैं।
- घड़ी पूर्व दिशा या पश्चिम दिशा की दीवार पर लगाएं। उत्तर की दीवार भी अच्छी मानी जाती है।
- पूर्व की तरफ सिरहाना बूढ़ों के लिए उपयुक्त माना जाता है, यह

आध्यात्मिक चिन्तन, ध्यान-साधना व अच्छी निद्रा के लिए उपयुक्त रहता है।

- जहां तक मुमकिन हो, तिजोरी बैडरूम में न रखें, अगर रखनी ही पड़े तो यह बैडरूम के दक्षिणी भाग में इस तरह रखी जानी चाहिए कि इसे खोलने पर उत्तर दिशा में सीधी नजर पड़े।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार पलंग को बैडरूम की दीवारों से थोड़ा हटाकर रखना चाहिए।
- घर के मालिक का बैडरूम दक्षिण-पश्चिम कोण में या पश्चिम दिशा में होना चाहिए। दक्षिण-पश्चिम अर्थात् नैर्ऋत्य कोण पृथ्वी अर्थात् स्थिरता का प्रतीक है। इसलिए इस स्थान पर बैडरूम होने से भवन में दीर्घकाल तक निवास होता है।
- बैडरूम में टांड आदि पश्चिमी अथवा दक्षिणी दीवार पर बनाना चाहिए, लेकिन उसके नीचे सोने का पलंग नहीं होना चाहिए। अगर पलंग रखना ही पड़े तो टांड के नीचे भी फाल्स सीलिंग जरूर करवा लें।
- कपड़े रखने की आलमारी वायव्य कोण अथवा नैर्ऋत्य कोण अथवा दक्षिण में होनी चाहिए।
- अगर सोते वक्त सिर पश्चिम दिशा की तरफ रखना हो तो पलंग का एक सिरा पश्चिम की दीवार को छूता रहे।
- पलंग के सामने दीवार पर प्रेरक व रमणीय चित्र लगा देने चाहिएं। आदर्शवादी चित्र आत्मबल को बढ़ाते हैं तथा दाम्पत्य जीवन भी आनन्दमय तथा विश्वस्त बना रहता है।
- दक्षिण-पश्चिम दिशा या दक्षिण दिशा में स्थित बैडरूम वयस्क विवाहित बच्चों के लिए भी उपयुक्त है।
- अगर भवन में एक से ज्यादा मंजिलें हैं, तो घर के मालिक का बैडरूम ऊपरी मंजिल पर होना चाहिए।
- उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके नहीं सोना चाहिए। उत्तर दिशा में सिर करके सोने से नींद नहीं आती है और अगर आती भी है तो बुरे स्वप्न अधिक आते हैं।
- अगर आपको सोते वक्त सिर पश्चिम दिशा की तरफ रखना हो तो पलंग का एक हिस्सा दक्षिण की दीवार को छूता रहे।
- पलंग बैडरूम के दरवाजे के पास स्थित नहीं करना चाहिए। अगर ऐसा करेंगे तो आपके मन में अशान्ति और बेचैनी बनी रहेगी, यह स्थिति अच्छी नहीं है।

- अगर पूजास्थल बेडरूम में ही हो तो वह बेडरूम के ईशान कोण में ही बनाना चाहिए। ऐसी स्थिति में पलंग पर सोते वक्त सिर पूर्व की तरफ किया जा सकता है, ताकि पांव पूजास्थल की ओर न रहें।
- अगर घर के मालिक का काम ऐसा है जिसके द्वारा उसे घर से बाहर ही रहना पड़ता हो तो बेडरूम वायव्य कोण में बनाना उपयुक्त होगा, यह स्थिति श्रेष्ठ मानी जाती है।
- बच्चों, मेहमानों तथा अविवाहितों के लिए पूर्व दिशा में बेडरूम होना चाहिए। लेकिन इस कमरे में नवविवाहित जोड़े को नहीं बैठाना चाहिए। या इस कमरे में सम्भोग नहीं करना चाहिए। अगर इस कमरे में ऐसा होता है तो परिवार को आर्थिक तथा सामाजिक संकटों का सामना करना पड़ सकता है, अतः यह स्थिति अच्छी मानी जाएगी।
- टेलीविजन, हीटर तथा अन्य विद्युत उपकरण कमरे के आग्नेय कोण में होने चाहिएं।
- सोते समय पैर मुख्य दरवाजे की तरफ नहीं होने चाहिएं। मृत्यु होने पर श्मशान ले जाने से पहले शरीर को मुख्य दरवाजे की तरफ पैर करके रखा जाता है।
- बेडरूम में प्रकाश की व्यवस्था करते वक्त पलग पर मुंह के सामने प्रकाश नहीं पड़ना चाहिए; अर्थात् लेटते समय आंखों पर बिजली का प्रकाश नहीं पड़ना चाहिए। प्रकाश हमेशा पार्श्व या बायीं तरफ से आना चाहिए।
- बैडरूम में अध्ययन करने के लिए टेबिल, लाइब्रेरी, पुस्तकों की आलमारी आदि बैडरूम के पश्चिम अथवा नैर्ऋत्य में होनी चाहिए। मेज व कुर्सी इस तरह रखी हो कि मुंह पूर्व की तरफ या उत्तर की तरफ हो। इस तरह से अध्ययन करने वाला व्यक्ति प्रतिभासम्पन्न तथा प्रज्ञावान् बनता है।
- ड्रेसिंग टेबल उत्तर दिशा में पूर्व की तरफ रखी जानी चाहिए। ड्रेसिंग टेबल को पश्चिम दिशा में भी रखा जा सकता है।
- ईशान में आग्नेय दिशा वाले कमरों में छोटे बच्चों के लिए शयनकक्ष का प्रबन्ध कर सकते हैं। बड़ों के लिए यह वर्जित है।
- पूर्वी और उत्तर दिशा वाले कमरे का बैडरूम स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहता है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार बायीं तरफ करवट करके लेटने की आदत डालना अत्यन्त हितकारी है।

- उत्तर दिशा में सिरहाना कभी न करें।
- बैडरूम की आलमारियों का मुंह नैर्ऋत्य कोण या दक्षिण दिशा की तरफ नहीं खुलना चाहिए। यह नियम मात्र उन आलमारियों के लिए होता है जिनमें चेक बुक, बैंक या व्यापार सम्बन्धी कागजात, रुपये-पैसे और अन्य कीमती सामान रखा जाता है; अर्थात् तिजोरी आदि। ऐसी आलमारियों में रखा धन धीरे-धीरे घटता जाता है। इन आलमारियों का मुंह दक्षिण दिशा को छोड़कर अन्य दिशाओं में रखा जाना चाहिए।

कबाड़घर हेतु सूत्र

वास्तु अनुसार कबाड़घर हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं–

- कबाड़घर के अन्तर्गत हमेशा दरवाजा एक ही पल्ले वाला बनवाकर लगाएं।
- कबाड़घर का दरवाजा आग्नेय, ईशान अथवा उत्तर दिशा के अलावा किसी अन्य दिशा में होना चाहिए।
- कबाड़घर के फर्श और दीवारों के अन्तर्गत सीलन (नमी) नहीं होनी चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार कबाड़घर के दरवाजे का रंग काला ही करवाना चाहिए।
- कबाड़घर में किसी देवी-देवता आदि का चित्र न रखें।
- कबाड़घर का दरवाजा टिन अथवा लोहे का ही बनवाएं। यह वास्तु द्वारा सही होता है।
- उत्तर, पूर्व, ईशान, वायव्य कोण में कबाड़ आदि का भंडारण करने से अर्थहानि तथा मानसिक अशान्ति में वृद्धि होती है। आग्नेय कोण में कबाड़ का भण्डारण करने से अग्नि से हानि होने की सम्भावना होती है।
- अगर त्रुटिवश अथवा अज्ञानतावश हमें कबाड़ आदि का भंडारण नैर्ऋत्य कोण के अलावा किसी अन्य दिशा में किया हुआ है तो इसे तुरन्त बदल दें।
- कबाड़घर के दरवाजे के निकट कोई गपशप, बातचीत आदि भी नहीं करनी चहिए, न ही जोर से ठहाका लगाना चाहिए और न ही गुस्से में बातचीत करें।

भण्डारगृह हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र के द्वारा भण्डारण हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- अनाज आदि के भण्डारण में पूर्वी दीवार पर लक्ष्मीनारायण का चित्र लगाना चाहिए।
- अनाज के भण्डारण के ईशान कोण में शुद्ध तथा पवित्र जल से भरा हुआ मिट्टी या तांबे का एक बर्तन रखा जाना चाहिए। ख्याल रहे कि यह बर्तन खाली न रहे।
- अनाज आदि का वार्षिक संग्रह दक्षिणी अथवा पश्चिमी दीवार के समीप होना चाहिए।
- अनाज आदि के भण्डारगृह में रखे किसी डिब्बे, कनस्तर आदि को खाली नहीं रहने दें। अनाज आदि के प्रयोग से इनके खाली होने की दशा में उसमें कुछ अन्नादि अवश्य बाकी रहने दें।
- नित्य प्रयोग में आने वाले अनाज को कमरे के उत्तरी-पश्चिमी भाग में रखा जाना चाहिए।
- अन्नादि के भण्डारगृह का दरवाजा नैर्ऋत्य कोण के अलावा किसी दिशा अथवा विदिशा में बनाया जा सकता है।
- अनाज आदि के भण्डारगृह का निर्माण भवन में उत्तर दिशा अथवा वायव्य कोण में कराना चाहिए।
- वायव्य कोण में बनाए गए अनाज आदि भण्डारगृह में अन्नादि की कमी नहीं होगी।

अन्य भण्डारगृह हेतु सूत्र

वास्तु द्वारा अन्य भण्डारगृह हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- इस कमरे का दरवाजा उत्तर अथवा पूर्व दिशा में होना चाहिए, साथ ही एक खिड़की भी इन्हीं दिशाओं में होनी चाहिए।
- अनुपयोगी सामान के लिए मकान से बाहर चारदीवारी के समीप कबाड़घर बनाना चाहिए, लेकिन अगर कबाड़घर बना पाना संभव नहीं है तथा भण्डारगृह में ही यह सामान रखा जाना है, तो इस कमरे का नैर्ऋत्य कोण प्रयोग करना चाहिए।
- भण्डारगृह भवन के अन्दर दक्षिणी अथवा पश्चिमी भाग में बनाया जाना चाहिए।
- इस भण्डारगृह में अनाज आदि का संग्रहण न करे, वास्तु द्वारा यह स्थिति अच्छी नहीं मानी जाती है।

- भारी बक्से आदि दक्षिणी दीवार तथा पश्चिमी दीवार पर दक्षिण दिशा की तरफ रखे जाने चाहिएं।

संयुक्त भण्डारगृह हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र के अनुसार संयुक्त भण्डारगृह हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- संयुक्त भण्डारगृह में अनाज आदि का भण्डारण वायव्य कोण की तरफ किया जाना चाहिए।
- संयुक्त भण्डारगृह मकान के पश्चिम अथवा उत्तरी-पश्चिमी भाग में बनाया जाना चाहिए।
- संयुक्त भण्डारगृह का दरवाजा नैर्ऋत्य कोण के अलावा किसी भी स्थान पर रखा जा सकता है।
- संयुक्त भण्डारगृहं में पूर्व, उत्तर अथवा पश्चिम दिशा अथवा इनके कोणों में कोई एक खिड़की अवश्य होनी चाहिए।
- संयुक्त भण्डारगृह में ईशान कोण में जल का पात्र रखें।
- संयुक्त भण्डारगृह में कबाड़ अर्थात् ऐसी वस्तुओं को नहीं भरा जाना चाहिए जिनका अब हमारे लिए कोई प्रयोग नहीं रह गया है।

डायनिंग रूम हेतु सूत्र

वास्तु के अनुसार डायनिंग रूम हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- अगर आपका डायनिंग रूम पश्चिम दिशा के अलावा किसी अन्य दिशा में बना हुआ है, तो उस कमरे में पश्चिम की तरफ बैठकर भोजन किया जाना चाहिए।
- डायनिंग रूम को रसोईघर के पश्चिम दिशा की तरफ भी बनाया जा सकता है।
- डायनिंग रूम के पश्चिम दिशा में रहने से असीम सुख-शान्ति तथा सन्तोष प्राप्त होता है।
- रसोईघर के अन्दर ही भोजन करने की व्यवस्था होने पर यह रसोईघर में पश्चिम दिशा की तरफ होनी चाहिए।

रसोईघर हेतु सूत्र

वास्तु द्वारा रसोईघर हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- अगर निर्मित भवन में चूल्हा ईशान कोण में ही रखा जाता है, तो इसका स्थान परिवर्तन करके आग्नेय कोण में विस्थापित कर दें।

- ईशान कोण में चूल्हा रखा जाना वर्जित है। ऐसा करने से आर्थिक वृद्धि होती है; वंशवृद्धि रुक जाती है।
- रसोईघर को आठ दिशाओं तथा विदिशाओं में विभाजित करके ऐसी व्यवस्था अवश्य करनी चाहिए कि चूल्हा रसोईघर के आग्नेय कोण में रहे।
- स्थान परिवर्तन संभव नहीं है एवं चूल्हा स्लैप पर रखा है, तो स्लैप के नीचे तांबे का बड़ा जलभरा जलपात्र हमेशा रखें एवं रोजाना सुबह-शाम इसका जल बदलते रहें। भोजन पकाने के बाद इस स्थान को साफ कर दें। आग्नेय कोण में एक बल्ब जलाकर रखें जिस पर लाल रंग की पन्नी चढ़ा दें। अगर चूल्हा फर्श पर रखा है, तो जलपात्र चूल्हे के निकट रखा जाना चाहिए, बाकी नियम वही है।
- अगर रसोईघर में रेफ्रिजरेटर भी रखा जाना है तो इसके लिए आग्नेय, दक्षिण-पश्चिम अथवा उत्तर दिशा में रखा जाना उचित होगा। इसे नैर्ऋत्य कोण में भी न रखें नहीं तो यह अधिक खराब होगा।
- रसोईघर में टांड आदि तथा पश्चिमी दीवार पर ही बनाए जाने चाहिएं, परन्तु जरूरत के अनुसार चारों दीवारों पर भी बनाए जा सकते हैं।
- रसोईघर में पीने का पानी ईशान कोण में अथवा उत्तर दिशा में रख जाना चाहिए।
- वास्तु के अनुसार रसोईघर में भारी सामान, बर्तन आदि दक्षिणी दीवार की तरफ रखें।
- अगर भोजन करने की व्यवस्था भी रसोईघर में ही की जानी है, तो यह रसोईघर में पश्चिम की तरफ होनी चाहिए।
- ईशान कोण व उत्तर दिशा के अलावा किसी अन्य कोण अथवा दिशा में चूल्हा रखने से कोई हानि नहीं होती, परन्तु अगर आग्नेय कोण में जल सम्बंधी कार्य होता है तो हानि जरूर होती है। कहने का मतलब यह है कि आग्नेय कोण में अग्नि सम्बन्धी कार्य न होने से अग्निभय संभव है। इसलिए आग्नेय कोण में अग्नि सम्बन्धी कार्य होना आवश्यक है। अगर आग्नेय कोण में अग्नि सम्बंधी कार्य जैसे विद्युत उपकरणों का संचालन आदि हो रहा है तो चूल्हा ईशान और उत्तर दिशा के अलावा कहीं भी रख सकते हैं।

पूजाघर हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र के अनुसार पूजाघर हेतु सूत्र अग्रलिखित हैं–

- वास्तुशास्त्र के अनुसार पूजाघर में दुर्गा, कुबेर, गणेश का मुख दक्षिण दिशा की तरफ होना चाहिए।
- अगर पूजाघर में आलमारी बनाकर कोर्ट-केस सम्बन्धी कागजात रखे जाएं तो कोर्ट-केस में विजय-प्राप्ति की संभावना ज्यादा रहती है।
- पूजाघर को हमेशा शुद्ध, स्वच्छ तथा पवित्र रखना चाहिए। इसमें कोई भी अपवित्र चीज न रखें; अर्थात् भवन में ईशान कोण सदैव स्वच्छ एवं पवित्र रहना चाहिए।
- पूजाघर को कभी भी बेडरूम में नहीं बनवाना चाहिए। अगर परिस्थिति-वश ऐसा करना ही पड़े, तो वह बेडरूम विवाहितों के लिए नहीं होना चाहिए। अगर परिस्थतिवश विवाहितों को भी उसी बैडरूम में सोना है तो पूजास्थल पर सभी तरफ से पर्दा डालकर रखें और रात को सोने से पहले पूजास्थल को ढक दें या देवशयन करा दें। लेकिन यह व्यवस्था सिर्फ स्थानाभाव के कारण ही होनी चाहिए। अगर आपके पास स्थान है, तो पूजाकक्ष अलग ही बनवाएं।
- कूड़ा तथा झाडू रखने की व्यवस्था पूजाघर तथा ईशान कोण से दूर रखना चाहिए। अगर संभव हो तो पूजाघर को साफ करने का झाडू-पौछा भवन के अन्य कक्षों को साफ करने के झाडू-पौछे से अलग रखना चाहिए, यह वास्तु के द्वारा अच्छा माना जाता है।
- वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत पूजाघर में आग्नेय कोण में हवनादि की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- पूजाघर में विष्णु, इन्द्र, सूर्य, कार्तिकेय और शिव का मुख पूर्व दिशा अथवा पश्चिम दिशा की तरफ होना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार बहुमूल्य वस्तुएं पूजाघर में कभी नहीं छिपानी चाहिएं।
- वास्तुशास्त्र के द्वारा आपके पूजाघर के फर्श का रंग पीला या सफेद होना चाहिए।
- आपके पूजाघर के अन्तर्गत हनुमानजी की मूर्ति का मुख नैर्ऋत्य कोण में रहना चाहिए।
- वास्तु द्वारा पूजास्थल में मूर्तियों को भूलकर भी प्रवेश द्वार के सामने नहीं रखना चाहिए।

खिड़कियों हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र के अनुसार खिड़कियों हेतु सूत्र अग्रलिखित हैं—

- खिड़कियां हमेशा दीवार में ऊपर-नीचे न बनाकर एक ही लाइन में बनानी चाहिएं।
- खिड़कियों की संख्या सम (2, 4, 6) होनी चाहिए। ये वास्तु द्वारा उत्तम होती हैं।
- वास्तु द्वारा खिड़कियां दो पल्लों की ही बनवानी चाहिएं, एक या तीन पल्लों की नहीं।
- पश्चिमी-पूर्वी दिशा और उत्तरी दीवारों पर खिड़कियों का निर्माण शुभ होता है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार खिड़कियों का निर्माण सन्धि भाग में नहीं होना चाहिए।
- खिड़कियां दरवाजे के सामने होनी चाहिएं जिससे चुम्बकीय चक्र पूर्ण हो सके, इससे घर में सुख-शान्ति रहती है।
- उत्तर दिशा में ज्यादा खिड़कियां परिवार में धन-धान्य की वृद्धि करती हैं। लक्ष्मी तथा कुबेर की कृपादृष्टि बनी रहती है।
- खिड़कियां हमेशा दीवार में ऊपर-नीचे न बनाकर एक ही लाइन में बनानी चाहिएं।
- खिड़कियां अन्दर की ओर खुलनी चाहिएं।
- वायु प्रदूषण से बचने के लिए घर में जिन दिशाओं से शुद्ध वायु प्रवेश करती है उसके विपरीत दिशाओं में एग्जास्ट फैन लगाना भी आवश्यक है। खिड़कियां कम होनी चाहिएं।

द्वारवेध हेतु सूत्र

द्वारवेध हेतु मुख्य सूत्र निम्नलिखित हैं–

- मुख्य दरवाजे के सामने किसी देवता का मन्दिर होना भी द्वारवेध माना गया है, इससे घर का मालिक विनाश की तरफ अग्रसित होता है। वास्तु द्वारा यह बुरा माना जाता है।
- मुख्य दरवाजे के सामने हमेशा कीचड़ का होना भी द्वारवेध माना जाता है।
- मुख्य दरवाजे के सामने सदैव पानी का बहता रहना द्वारवेध माना गया है, यह धन का अपव्यय कराने वाला होता है।
- मुख्य दरवाजे के सामने बड़े पेड़ का होना भी द्वारवेध माना गया है, यह बच्चों के लिए दोषकारक होता है।
- मुख्य दरवाजे के सामने कूप होना द्वारवेध माना गया है, इससे मृगी रोग हो सकता है।

- अगर रास्ता सीधा आकर मुख्य दरवाजे पर समाप्त होता है तो यह भी द्वारवेध कहलाता है और यह स्थिति घर के मालिक के लिए अशुभ होती है।

मुख्य द्वार हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र के द्वारा मुख्य दरवाजे हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं–

- भूखण्ड की चारदीवारी का मुख्य दरवाजा अगर उत्तर में है तो उस भवन का मुख्य दरवाजा भवन के सबसे उत्तरी छोर पर बने कमरों में बनवाया जाए। ध्यान रहे कि दरवाजा उस कमरे के पूर्वी अर्द्धभाग में पड़ता हो, यह अत्यन्त शुभ है।
- भूखण्ड की चारदीवारी का मुख्य दरवाजा पश्चिम में है, तो मकान का मुख्य दरवाजा भवन के पश्चिमी तरफ बने कमरे में इस तरह बनाया जाए कि मुख्य दरवाजा कमरे के उत्तरी अर्द्धभाग की तरफ पड़े, इस प्रकार मुख्य दरवाजा और भी ज्यादा प्रभावी स्थिति में होगा तथा धन-धान्य-समृद्धि की वृष्टि होती रहेगी, यह उत्तम स्थिति है।
- घर के अन्दर दरवाजे-खिड़कियां और आलमारियां एक-दूसरे के सामने बनायें।
- जिस मकान में बहुत-से दरवाजे और आलिन्द हों वहां दरवाजे का कोई नियम नहीं होता।
- वास्तु द्वारा दरवाजे के कपाट को खोलने और बन्द करने में कोई आवाज न हो।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार मुख्य दरवाजे का आकार भवन के और कमरों के दरवाजों से बड़ा होना चाहिए।
- एक दरवाजे के ऊपर अगर दूसरा दरवाजा बनवाना हो तो वह नीचे वाले दरवाजे से आकार में छोटा होना चाहिए और एक सीध में होना चाहिए।
- घर में दरवाजा बनवाते वक्त ख्याल रहे कि दरवाजे की चौखटें घर की मुख्य दीवार से लगती हुई नहीं होनी चाहिएं, दीवार तथा दरवाजे के बीच कम-से-कम चार इंच का अन्तर जरूर रहना चाहिए।
- अगर आपके मकान का मुख्य दरवाजा पूर्व में है तो मकान का मुख्य दरवाजा घर के पूर्वी छोर में कमरे में बनवाना चाहिए। ख्याल रहे कि मकान का मुख्य दरवाजा उस कमरे के उत्तरी अर्द्धभाग में पड़ता हो। इस तरह बनाये गये दरवाजे से मुख्य दरवाजा अत्यन्त प्रभावी स्थिति

में आ जाता है—और शुभ तथा कल्याणकारी परिणाम देता है।

- भूखण्ड की चारदीवारी का मुख्य दरवाजा अगर दक्षिण में है तो मकान का मुख्य दरवाजा घर में दक्षिणी तरफ से कमरे में इस तरह बनवाया जाए कि मुख्य दरवाजे के पूर्वी अर्द्धभाग में पड़े। यह स्थिति मकान के लोगों को शुभ फल देती है।
- दरवाजे में लगाए गए दो पल्ले वाले किवाड़ अन्दर की तरफ खुलने चाहिएं।
- आपका दरवाजा अपने आप खुल जाये या बन्द हो जाये तो भयदायक होता है। चौखट एक तरफ छोटा दूसरी तरफ बड़ा हो जाए, तो भी अशुभ फलदायक होता है।
- मकान में दरवाजा बनवाते समय ख्याल रखें कि दरवाजे की चौखटें घर की मुख्य दीवार से लगती हुई न हों, दीवार तथा दरवाजे की चौखट के बीच कम-से-कम चार इंच का अन्तर तो जरूर रहना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र में बाहरी एवं भीतरी द्वारों की दिशाओं में चार तरह का सम्बन्ध माना गया है। जब बाहरी दरवाजे और भीतरी दरवाजे एक ही दिशा में आमने-सामने हों तो यह सम्बन्ध उप-सम्बन्ध माना गया है जो कि सर्वोत्तम है। जब बाहरी दरवाजा भीतरी दरवाजे के बायीं तरफ होता है तथा जब बाहरी दरवाजा भीतरी दरवाजे के दाहिनी तरफ होता है तो सम्बन्ध सत्य सम्बन्ध माना गया है जो कि शुभ होता है। जब बाहरी दरवाजा भीतरी दरवाजे की विपरीत दिशा में होता है तो यह सम्बन्ध पृष्ठभंग सम्बन्ध माना गया है जो कि अशुभ होता है।

द्वारों की संख्या हेतु सूत्र

वास्तु द्वारा द्वारों की संख्या हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- अगर किसी भवन में एक ही प्रवेश द्वार बनाना हो तो शुभ फल प्राप्त करने के लिए पूर्व दिशा, दक्षिण दिशा एवं पूर्व दिशा में ही बनवाना चाहिए। लेकिन अगर भवन दक्षिणमुखी अथवा पश्चिममुखी है तो उसमें कभी एक ही प्रवेश द्वार न बनवाएं।
- अगर मकान में चारों-दिशाओं में दरवाजे बनाने हैं तो इसी अध्याय में पूर्व में बताए गए उच्चकोटि के स्थान पर ही प्रवेश द्वार बनाना चाहिए किसी भी परिस्थिति में नैर्ऋत्य कोण में मुख्य द्वार न बनाएं।
- अगर मकान में दो प्रवेश द्वार बनाने हों, शुभ फल प्राप्त करने के लिए दरवाजे को पूर्व दिशा तथा दक्षिण दिशा, पूर्व दिशा एवं पश्चिम दिशा

या उत्तर दिशा व दक्षिण दिशा में ही बना
में एक प्रवेश द्वार पूर्व दिशा या उत्तर दिश

- अगर मकान में तीन दिशाओं में दरवाजे ब
पूर्व दिशा में तो दरवाजा बनाना जरूरी है, ती
पश्चिम या दक्षिण दिशा में बनाया जा सक

वास्तुशास्त्र के कुछ महत्त्व

वास्तुशास्त्र के कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र इस प्रकार हैं-

- घर का उत्तर-पूर्वी कोना घर के मुंह के सम
हमेशा साफ-सुथरा रखें।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार मुख्य दरवाजे पर मूर्ति
है।
- इमारत की ऊंचाई नैर्ऋत्य कोण से ईशान क
होनी चाहिए।
- वास्तु द्वारा रसोईघर, शौचालय और पूजाघर
बनाएं।
- कूड़ादान, सड़क की बत्ती अथवा खम्भा या ब
सामने न हो।
- जहां तक सम्भव हो शौचालय की सीट उत्तर
सैप्टिक टैंक उत्तर-पश्चिम अथवा दक्षिण-पूर्व
है।
- मकान में सीढ़ी का दरवाजा पूर्व अथवा दक्षि
माना जाता है।
- चौकीदार अथवा गार्ड के लिए घर सीमा के प्रवेश
चाहिए। इसके क्वार्टर्स गृह के अन्तर्गत बा
- मुख्य भवन पर सुबह 9 बजे से मध्याह्न तीन
गिरे तो अशुभ तथा कष्टदायक होती है।
- जीने की सीढ़ियों के नीचे शौचालय तथा पूज
- अपने घर में वर्षा का पानी इस तरह निर्मित क
की छाया न पड़े।
- मकान का मुख्य दरवाजा इस तरह निर्मित क
की छाया न पड़े।

- युद्ध, अपराध, अशान्ति, गुस्सा अथवा कष्ट का चित्रण करती हुई कोई तस्वीर घर के मुख्य कमरे में न टांगें।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार विद्यार्थियों को उत्तर तथा पूर्व दिशा की ओर मुंह करके पढ़ना चाहिए।
- घर में पौधा लगाने के लिए कीटाणुनाशक पानी में सेंधा नमक या समुद्र से प्राप्त नमक मिला लेना चाहिए। इस प्रकार कीड़े-मकोड़ों का प्रभाव जाता रहता है।
- मकान अथवा जमीन का ईशान कोण अन्य कोणों से बढ़ा हुआ हो तो सूर्य सिद्धि एवं सुखों का दाता है, दबा हुआ होना कष्टकारक होता है।
- अगर घर से निकलते समय दक्षिण की तरफ मुंह रहता है तो इससे अनावश्यक परेशानी तथा हानि भी हो सकती है, जहां तक सम्भव हो इस स्थिति से बचें।
- पूजा-अर्चना के वक्त हमेशा अपना मुंह ईशान की उत्तर दिशा अथवा पूर्व दिशा की तरफ रखें। इससे पूजा-अर्चना का पूरा फल मिलता है।
- निर्माण स्थान की भूमि का ढलान उत्तर दिशा में एवं पूर्व दिशा में होना चाहिए जिससे जल का निकास उत्तर-पूर्व दिशा में यानि ईशान कोण में हो।
- पशुशाला मकान में उत्तर-पश्चिम दिशा अर्थात् वायव्य कोण में रख सकते हैं।
- भूमिगत जल भण्डारण उत्तर-पश्चिम दिशा में करने से वंशवृद्धि में रुकावट आएगी। धनहानि के साथ-साथ मानसिक अशान्ति तथा कलेश से उबरा नहीं जा सकता। सही स्थान उत्तर-पूर्व है।
- बैडरूम में मदिरा का सेवन, तेल के डिब्बे, अंगीठी, कीटनाशक आदि दवाएं नहीं होनी चाहिएं। इससे मानसिक उद्वेग बढ़ता है, चिन्ता, परेशानी भुगतनी पड़ती है।
- घर का विस्तार चारों दिशाओं में करना उत्तम माना जाता है। केवल दक्षिण-पश्चिम में अथवा दक्षिण-पूर्व में विस्तार करने से धन-हानि, कलेश, आगजनी, दुर्घटना, चोरी, डकैती, स्वास्थ्य-हानि, अनावश्यक चिन्ता, कलेश आदि होते हैं।
- घर के मालिक का कमरा पश्चिम या दक्षिण दिशा में बनाएं। जहां तक हो सके दक्षिण-पश्चिम नैर्ऋत्य कोण में बनाएं। इससे घर के मालिक का भारी-भरकम सामान भी एक दिशा में रखा जाता है।

● प्रवेश द्वार उत्तर अथवा पूर्व में होना उत्तम है। मध्य में दरवाजा कभी नहीं बनाएं। बीच में दरवाजा होने से कुल-नाश होता है।
● ईशान कोण ईश्वर का स्थान माना जाता है। मकान में ईशान कोण में शौचालय में गन्दगी होना कष्टकारी होता है।
● जिस भूखण्ड पर मकान बनाना है उस स्थान की मिट्टी खोदकर बदलने तथा नई मिट्टी डालने पर भूमिगत किसी तरह का दोष ठीक हो जाता है।
● वास्तुशास्त्र के अनुसार पार्किंग के लिए उत्तर-पश्चिम का स्थान प्रयोग करना चाहिए।

भूमि के ढाल हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र के अनुसार भूमि के ढाल हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं–
● वास्तुशास्त्र के अनुसार भूमि का ढाल अगर अग्निकोण की तरफ हो तो शोक होता है।
● भूमि का ढाल वायव्य कोण की तरफ हो तो परिवार में मृत्यु की संभावना हमेशा बनी रहती है।
● आपकी भूमि का ढाल ईशान कोण में हो तो वास्तुशास्त्र द्वारा धन-लाभ होता है।
● भूमि का ढाल उत्तर दिशा की तरफ़ हो तो वंशवृद्धि, धनागमन योग होता है।
● वास्तुशास्त्र के अनुसार भूमि का ढाल नैर्ऋत्य कोण की तरफ हो तो डर सदा बना रहेगा।
● भूमि आड़ी-तिरछी होने पर, निवास करने वाले का कुल-नाश होने की संभावना रहती है।
● वास्तुशास्त्र के अनुसार अगर आपकी भूमि टेढ़ी हो तो निवास करने वाला दरिद्र हो जाएगा।
● भूमि का ढाल दक्षिण दिशा की तरफ हो तो मरण अथवा मारक योग होता है।
● वास्तुशास्त्र के अनुसार भूमि का ढाल पूर्व दिशा की तरफ हो तो लक्ष्मी का निवास होता है।
● वास्तुशास्त्र के द्वारा भूमि का ढाल पूर्व दिशा की तरफ हो तो धन-ही-धन बरसता है।

भूमि-ढलान के शुभ-अशुभ फल हेतु सूत्र

वास्तु द्वारा भूमि के ढलान के शुभ-अशुभ फल हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- दक्षिण दिशा में भूमि तथा भवन के ढालदार होने पर मृत्यु कारक योग बनता है।
- भूमि अथवा भवन के बीच ढाल अथवा गड्ढा होने पर नाना प्रकार के कष्ट तथा दुःख होते हैं।
- वायव्य कोण में ढाल होने पर प्रवास-पर देशगमन तथा निवासकर्त्ता को अस्थायित्व अस्थिरता प्राप्त होती है।
- अग्निकोण में ढाल होने पर दाह, आगजनी इत्यादि दुर्घटनाओं की संभावना होती है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार उत्तर दिशा में भूमि तथा मकान के ढालदार होने पर धन में वृद्धि होती है।
- नैर्ऋत्य दिशा में भूमि तथा मकान के ढालदार होने पर धन की हानि होती है।
- पूर्व दिशा की तरफ भूमि अथवा मकान का ढाल होने पर धन-प्राप्ति होती है।
- भूमि तथा मकान का निर्माण हमेशा पूर्व अथवा उत्तरी ओर ढालदार रहना चाहिए।
- पश्चिम दिशाओं वाली भूमि तथा भवन का ढाल संतति-हानि तथा नाशकारक होता है।
- ईशान कोण में भूमि और मकान के ढालदार होने पर ज्ञान-प्राप्ति, मानसिक शान्ति तथा धर्म-कर्म में बढ़ोत्तरी होती है।

भूमि अथवा मकान के दक्षिण-पश्चिम भाग में गर्त या गड्ढा होने पर वह भूमि अथवा मकान अपयश, अर्थहानि और उन्नतिकारक नहीं होता है।

महत्त्वपूर्ण सूत्र

वास्तुशास्त्र के अनुसार कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र इस प्रकार हैं—

- मकान के बाहर तुलसी का पौधा लगाएं।
- घर का मुख्य दरवाजा इस तरह निर्मित कराएं जिससे उस पर किसी की छाया न पड़े।
- मकान का उत्तरी-पूर्वी कोना घर के मुख के समान होता है, अतः उसे हमेशा साफ-सुथरा रखना चाहिए।

- मुख्य दरवाजे पर मूर्ति लगाना शुभ होता है।
- दरवाजे और खिड़कियों की संख्या भू-तल पर ज्यादा और प्रथम तल पर अपेक्षाकृत कम होनी चाहिए।
- आपके मकान का मुख्य दरवाजा किसी अन्य मकान के मुख्य दरवाजे के ठीक सामने नहीं होना चाहिए।
- कूड़ादान, सड़क की बत्ती अथवा खम्भा या बड़ा वृक्ष प्रमुख दरवाजे के सामने न हो।
- सेफ का दरवाजा उत्तर अथवा पूर्व की तरफ खुले, इसके लिए सेफ को दक्षिण अथवा पश्चिम की दीवार की तरफ रखो।
- घर अथवा प्लॉट के बीचो-बीच कुआं होना अशुभ समझा जाता है।
- आपके मकान की घड़ियां हमेशा चलती रहनी चाहिएं। बन्द घड़ी अशुभ संकेत करती है।
- मकान की घड़ियों की आवाज मधुर होनी चाहिए।
- वास्तु अनुसार मकान में घड़ियों की आवाज तीव्र व कर्कश नहीं होनी चाहिए।
- मकान में घड़ियां पश्चिम, उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ ही लगानी सही रहती हैं।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार मकान के अन्दर टूटे हुए दर्पण को नहीं रखना चाहिए।
- वास्तु द्वारा बिजली के गर्मी पैदा करने वाले उपकरण कमरे के दक्षिण-पूर्वी कोने में रखें।
- आपके मकान में रसोईघर मुख्य दरवाजे के ठीक सामने नहीं होना चाहिए।
- आपके मकान का रसोईघर, शौचालय और पूजास्थल एक-दूसरे के आस-पास नहीं होने चाहिएं।

पूर्वोन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र

पूर्वोन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- अगर आपके मकान का मुख्य दरवाजा पूर्वोन्मुख अथवा अन्य दरवाजे को पूर्वोन्मुख तथा उत्तरोन्मुख ही रखा जाए तो वास्तुशास्त्र के अनुसार यह उत्तम माना जाता है।
- अगर मकान के सामने पूर्व दिशा में बनाया गया बरामदा तथा पोर्टिको की छत पूर्व दिशा की तरफ झुकी हुई रखी जाए तो भवन में रहने वाले

पुरुषों के स्वास्थ्य तथा यश में वृद्धि होगी।

- अगर भूखण्ड के उत्तर दिशा में स्थित भूखण्ड पर निर्माण कार्य उत्तरी चारदीवारी से लगभग तीन-चार इंच छोड़कर एक तीन-चार इंच मोटी चारदीवारी पुनः अवश्य बनवानी चाहिए।
- अगर भूखण्ड में चारदीवारी पूर्व एवं उत्तर की चारदीवारी दक्षिण तथा पश्चिम की चारदीवारी की अपेक्षा दो-तीन ईंट नीची रखी जाए तो वंशवृद्धि होती है।
- अगर भवन का पूर्वी भाग पश्चिमी अथवा दक्षिणी भाग से अधिक नीचा होगा तो मकान मालिक के यश, मान अथवा प्रतिष्ठा में ज्यादा वृद्धि होगी।
- वास्तु अनुसार भूखण्ड में कूप तथा नलकूप पूर्वी ईशान कोण होना शुभ फल प्रदान करता है।
- अगर मकान को दोमंजिला तथा इससे ज्यादा मंजिल का बनाया जाना है तो प्रत्येक मंजिल में पूर्व तथा उत्तर का स्थान खाली छोड़ा जाना चाहिए। अगर संपूर्ण भवन का ही निर्माण किया जाना है तो भवन के उत्तरी-पूर्वी भाग में कम-से-कम दो फुट की बालकॉनी बनवानी चाहिए। इससे हर मंजिल का पूर्व एवं उत्तर का भाग खाली माना जाएगा। सबसे ऊपरी मंजिल पर निर्माण दक्षिण तथा पश्चिम दिशा में ही करें।
- मकान के जल-निकास का मार्ग पूर्व दिशा में होना चाहिए, इससे मकान के पुरुषों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।
- भूखण्ड और मुख्य भवन के मध्य पूर्वी भाग अन्य दिशाओं में स्थित भागों की अपेक्षा अधिक खाली होना चाहिए। यह धन और वंशवृद्धि के साथ पुत्र के लिए विकास का मार्ग खोलता है। वास्तु द्वारा यह अच्छा माना जाता है।
- मकान का पूर्व दिशा का भाग अन्य दिशाओं तथा विदिशाओं की अपेक्षा ऊंचा हो तो वहां पर रहने वाले को अर्थहानि, सन्तान अस्वस्थ तथा मन्द बुद्धि वाली होगी।
- अगर किसी वजह से आप ये त्रुटि कर चुके हैं तो मकान में दूसरी मंजिल का निर्माण कार्य अति शीघ्र करवाकर उसमें पूर्वी एवं उत्तरी भाग को खाली छोड़ दें।
- वास्तु द्वारा सबसे उत्तम उपाय यही होता है कि चारों तरफ चारदीवारी बनाई जाए।
- चारदीवारी बनाए बिना मकान का निर्माण करने से अर्थात् भवन के

उत्तरी एवं पूर्वी भाग पर खाली जगह छोड़े बिना निर्माण कार्य करने पर या तो पुरुष को सन्तान की कमी रहती है अथवा सन्तान होने पर उसका कोई अंग खराब होगा।

- अगर भवन के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में पूर्व-उत्तर की अपेक्षा ऊंचा निर्माण कार्य करवाएं। अगर तुरन्त निर्माण कार्य करवाना संभव न हो तो टी०वी० का एन्टीना, नैर्ऋत्य कोण में लगा लें तथा उसकी ऊंचाई भवन के पूर्वी तथा उत्तरी भाग से ज्यादा होनी चाहिए। अगर घर में टेलीविजन नहीं है तो एक लोहे का डंडा इस दिशा में एन्टीने के स्थान पर लगाया जा सकता है।
- अगर भवन की दक्षिणी-पश्चिमी चारदीवारी को पूर्व एवं उत्तर की चारदीवारी से ऊंचा कर दें तो ये अशुभ फल दूर हो जाते हैं।
- ऊपर दिये गये दोनों उपायों के साथ मकान के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में कठोर वस्तु अथवा पूर्वी-उत्तरी भाग में खोखली चीज स्थापित करनी चाहिए।
- अगर दरवाजे पर लाल रंग का पर्दा लगा दिया जाए तो इससे भी काफी हद तक बुरे प्रभाव नष्ट होते हैं।
- अगर दरवाजे पर गहरे लाल रंग का पेण्ट करा दिया जाए तो ये कुप्रभाव समाप्त हो सकता है।
- भवन का मुख्य दरवाजा पूर्वी आग्नेय में होने से मकान का मालिक कर्जदार हो जाएगा और मुकदमेबाजी, चोरी तथा अग्नि से हानि होने का डर बना रहता है।
- अगर मकान के पूर्वी तथा उत्तरी भाग को दक्षिणी तथा पश्चिमी भाग की अपेक्षा नीचा और हल्का रखा जाए तो ये त्रुटि दूर हो सकती है।
- अगर दरवाजे के बाहर की ओर सूर्य का चित्र लगाएं तो भी काफी हद तक कुप्रभाव समाप्त हो सकता है।
- पूर्वी भाग में कूड़ा-कंचरा, ढीले, पत्थर आदि के टीले हों तो धन एवं सन्तान की हानि होती है।
- भवन में अगर मुमकिन हो तो पूर्वी ईशान कोण में एक नया द्वार बनाकर उसका प्रयोग वर्तमान में पूर्वी आग्नेय में स्थित द्वार की अपेक्षा ज्यादा-से-ज्यादा करें एवं जहां तक मुमकिन हो पूर्वी आग्नेय कोण में स्थित दरवाजे का प्रयोग कम ही करें अथवा उसे बन्द कर दें।
- उसका तो सबसे सरल उपाय यही होगा कि प्रयत्न करके कूड़ा-कचरा, ढीले, पत्थर आदि को साफ करवा दें। अगर यह भवन-ऊंचाई के दोगुने से ज्यादा दूरी पर है तो वास्तुदोष नहीं है।

ईशानोन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र

वास्तु द्वारा ईशानोन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- भूखण्ड के सामने स्थित मार्ग पर पूर्व दिशा में मार्गवेध होने से भवन स्वामी को प्रसिद्धि प्राप्त होती है।
- मकान के चारों तरफ पश्चिम दिशा की अपेक्षा पूर्व में एवं दक्षिण की अपेक्षा उत्तर में ज्यादा खाली स्थान होने से भवन में सुख-समृद्धि का वास होता है।
- अगर भवन की दक्षिण दिशा में प्रवेश द्वार बनाना पड़े तो यह दरवाजा उत्तर दिशा की अपेक्षा ऊंचा होना चाहिए।
- इशानोन्मुख भूखण्ड के सामने स्थान अगर नीचा होता है तो धन-सम्पत्तिदायक होता है।
- भवन में प्रयोग किया गया जल शौच आदि में प्रयुक्त जल के अलावा अर्थात् भवन को धोने के बाद का जल, वर्षा का जल आदि अगर ईशान कोण से बाहर निकले, तो वंशवृद्धि के साथ-साथ आपको ऐश्वर्य की भी प्राप्ति होती है।
- शुभ फल प्राप्त करने के लिए भवन का मुख्य दरवाजा उत्तरी अथवा पूर्वी ईशान कोण में ही रखना चाहिए।
- शौचालय के बाहर दर्पण आदि लगाने से भी ये वास्तुदोष दूर किया जा सकता है।
- शौचालय के बाहर किसी मिट्टी के पात्र में कटावदार आलेखन को बनाकर रख सकते हैं।
- अगर शौचालय की दीवार पर शिकार करते हुए शेर का चित्र लगा दें तो ये दोष दूर हो जाता है।
- अगर ईशान कोण में स्थित शौचालय का प्रयोग बन्द कर दें तो ये वास्तुदोष दूर हो जाता है।
- ईशान कोण में शौचालय हो तो गृह-कलह, दुश्चरित्र एवं व्याधियों का प्रकोप रहता है।
- पश्चिमी एवं दक्षिणी चारदीवारी से सटाकर पूर्वी एवं उत्तरी भाग से ऊंचा निर्माण कार्य अति शीघ्र कराएं।
- ईशानोन्मुख भूखण्ड पर पूर्व तथा उत्तर दिशा की चारदीवारी से सटाकर तथा पश्चिमी और दक्षिणी दीवार से हटकर भवन बनाने से वंश-विनाश व दारिद्रय भोगना पड़ता है।

- ईशान कोण में रसोईघर होने से गृहकलह और अर्थहानि होती है।
- इसका सबसे सरल उपाय यही है कि ईशान कोण से रसोईघर को कोण में विस्थापित कर दें। अगर यह संभव नहीं है तो रसोईघर में चूल्हे को आग्नेय कोण में रखें और रसोईघर के आग्नेय कोण में जल भरकर रख देना चाहिए।
- ईशान कोण में कूड़ा-कचरा आदि का ढेर हो तो शत्रुवृद्धि और चरित्रहीनता का दोष लग जाता है।
- ईशान कोण में कूड़ा-कचरा न होने दें तुरन्त साफ करवा दें, उस स्थान को सदैव साफ-सुथरा रखें।
- जब तक पश्चिमी एवं दक्षिणी चारदीवारी से सटा निर्माण-कार्य संभव न हो, पूर्व और उत्तर दिशा में किये गये निर्माण-कार्य का कम-से-कम उपयोग करें और इस भाग को हमेशा साफ-सुथरा रखें। साथ ही भूखण्ड के नैर्ऋत्य कोण में अनुपयोगी तथा भारी वस्तुओं का ढेर बनाकर रखें।
- ईशान कोण के भूखण्ड के नैर्ऋत्य कोण में गड्ढे होने अशुभ फलदायक होते हैं।
- जितनी जल्दी हो सके गड्ढ़ों को भरवा दें।
- जल्दी-से-जल्दी पूर्वी और उत्तरी ईशान कोण में गहरा कूप अथवा गहराई तक गया हुआ हैंडपम्प लगवाएं।
- अगर सम्भव हो तो भूखण्ड तथा गड्ढे के मध्य एक सार्वजनिक मार्ग का निर्माण करायें।
- इशानोन्मुख भूखण्ड की पूर्वी दिशा में कोई ऊंचा निर्माण कार्य हो तो घर के मालिक या उसके बड़े पुत्र को कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में इससे पहले के बिन्दु पर बताए गए उपाय ही उपयोगी सिद्ध होंगे।
- इशानोन्मुख भूखण्ड की उत्तरी दिशा में ऊंची इमारत हो तो उस भवन में निवास करने वाली स्त्रियां रोगग्रस्त रहती हैं या जल्दी मृत्यु को प्राप्त होती हैं साथ ही आर्थिक संकटों का सामना भी करना पड़ सकता है, यह स्थिति अच्छी नहीं है। अगर संभव हो सके तो उत्तरी दिशा वाली ऊंची इमारत तथा मकान के बीच एक मार्ग बना देना चाहिए भले ही अपनी भूमि को सार्वजनिक प्रयोग के लिए छोड़ना पड़े। इससे ऊंची इमारत की वजह से जो वेध उत्पन्न हो रहा है, उसके तथा भूखण्ड के मध्य मार्ग होने से वेधदोष अप्रभावी हो जाएगा।
- अगर सम्भव हो तो भवन के नैर्ऋत्य कोण को ऊंची इमारत से ऊंचा कर दें।

उत्तरोन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र

वास्तु द्वारा उत्तरोन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- मकान की चारदीवारी के उत्तर तथा पूर्व दिशा में खाली स्थान अन्य दिशाओं की अपेक्षा ज्यादा हो, तो ऐश्वर्य के साथ-साथ सुख-संपदा तथा सन्तोष प्रदान करेगा।
- इस भूखण्ड के उत्तर एवं पूर्व में खाली स्थान, मकान के अन्दर इन्हीं दिशाओं में खाली स्थान और बरामदे का उत्तरी भाग सभी निम्न हों तो धन में बढ़ोत्तरी और स्त्रियों के लिए शुभ फल प्रदान करने वाला होता है।
- इस भूखण्ड पर बनाए गए मकान का दरवाजा उत्तर दिशा की तरफ हो तो शुभ फल प्राप्त होते हैं।
- इस भूखण्ड में उत्तर दिशा की तरफ ढाल एवं खुला स्थान स्त्रियों के लिए लाभदायक होता है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार उत्तर तथा पूर्व दिशा में बालकॉनी जरूर बनवानी चाहिए।
- इस भूखण्ड पर बनाए गए मकान का दरवाजा उत्तरी ईशान कोण में हो तो सन्तान मेधावी होगी तथा मकान में सुख-शान्ति का वास रहता है।
- इस भूखण्ड के उत्तरी भाग से होकर घर में प्रयोग किये गये जल और वर्षा जल की निकासी ईशान कोण की तरफ शुभ फलदायक सिद्ध होती है। वास्तुशास्त्र में यह उत्तम स्थिति है।
- उत्तरोन्मुख भूखण्ड के पूर्व दिशा में खाली स्थान को खरीदकर अपने भूखण्ड में पूर्व दिशा की चारदीवारी को तोड़कर मिला लें, तो समस्त प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त होंगे।
- अगर मकान के पूर्व दिशा में टीले अथवा ऊंचे मकान स्थित हों तो मकान को ज्यादातर अर्थहानि का सामना करना पड़ सकता है।
- अगर आप उत्तर दिशा में स्थित इन वेधों एवं भूखण्ड के बीच एक सार्वजनिक मार्ग बना दें तो ये दोष दूर हो जायेगा। भले ही इस काम के लिए आपको अपनी भूमि का प्रयोग क्यों न करना पड़े, लेकिन ध्यान रखें कि ऐसा करने में आपके मकान तथा भूखण्ड के बीच खाली स्थान पश्चिम दिशा में पूर्व दिशा की अपेक्षा ज्यादा न हो जाए।
- अगर ऊपर दिये गये उपाय को करना मुमकिन न हो तो पश्चिम तथा

दक्षिण दिशा को ऊंचा करना ही एक मात्र उपाय तथा आवश्यक वास्तु सिद्धान्त है।

- भूखण्ड के सामने वाले भाग में खाली स्थान न हो तथा चारदीवारी से मिलाकर भवन का निर्माण किया गया हो और दक्षिण दिशा में खाली स्थान हो, तो शीघ्र ही वह भवन दूसरों की संपत्ति बन जायेगा अथवा वह वहां से उजड़ जाएगा।
- इसके लिए आपको दक्षिण दिशा में छोड़े गए खाली स्थान पर निर्माण कार्य जल्दी ही करना होगा और इस दिशा में किया गया निर्माण कार्य उत्तर दिशा में किए गए निर्माण कार्य से ज्यादा ऊंचा होना चाहिए और उत्तर दिशा में किए निर्माण को दक्षिण दिशा में किए गए निर्माण कार्य से हल्का रखें।
- इस भूखण्ड पर बनाए गए भवन का उत्तरी भाग उन्नत हो तो आर्थिक हानि होगी तथा भवन की स्त्रियां अस्वस्थ रहेंगी।
- मकान के दक्षिणी भाग को ऊंचा करा दें, दक्षिणी भाग ऊंचा हो तो इस भाग में निर्माण कार्य करने से ही होगा, लेकिन जब तक आप निर्माण न करा पायें तब तक टी०वी० का एन्टिना इसी दिशा में लगा दें। इसके द्वारा भी दक्षिण भाग ऊंचा हो जायेगा। साथ ही ज्यादातर भारी सामान भवन के दक्षिणी भाग में रखें। छत के ऊपर रखी जाने वाली पानी की टंकी को भी दक्षिणी भाग में स्थापित रखें।

वायव्योन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र के अनुसार वायव्योन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- इस भूखण्ड के सामने मार्ग में पश्चिमी-वायव्य कोण की तरफ से मार्गवेध होना शुभफलदायक होता है।
- अगर भूखण्ड का सामने वायव्य कोण, प्राकृतिक रूप से कुछ कटा हुआ हो तो, शुभ फल प्राप्त होते हैं।
- इस भूखण्ड के सामने का भाग नैर्ऋत्य तथा आग्नेय कोण की अपेक्षा नीचा और ईशान कोण की अपेक्षा ऊंचा हो, तो उत्तम फल प्राप्त होगा।
- इस भूखण्ड में मुख्य दरवाजे का पश्चिमी वायव्य की तरफ होना शुभ फल प्रदान करेगा। इस तरह के मुख्य दरवाजे वाले मकान के पश्चिम दिशा की अपेक्षा पूर्व दिशा में ज्यादा खाली स्थान हो, पूर्वी तथा उत्तर दिशा की चारदीवारी पर किसी प्रकार का निर्माण किये बिना ईशान कोण में कूप तथा आग्नेय कोण में रसोईघर होने से उस भवन के निवासी

मेधावी, सम्पन्न तथा न्यायशील रहेंगे।

- वायव्योन्मुख भूखण्ड के मकान में मुख्य दरवाजे उत्तरी वायव्य कोण की तरफ हो तथा भूखण्ड की चारदीवारी में मुख्य दरवाजा नीचे स्थान पर हो तो अशुभ परिणाम निकलते हैं। इसका सरल उपाय है कि चारदीवारी के मुख्य द्वार को ऊंचे स्थान पर बनवा लें।
- अगर इस भूखण्ड पर बने मकान में मुख्य दरवाजा उत्तर दिशा में हो, आग्नेय कोण तथा वायव्य कोण में विस्तार हो और दक्षिण तथा पश्चिम दिशा में दरवाजे हों तो पारिवारिक वैर, गृहकलह, अभिनय तथा मृत्युभय की संभावना होती है। इस स्थिति से बचने के लिए वायव्य कोण व आग्नेय कोण में विस्तार की भूमि को अनुपयोगी छोड़ दें और दक्षिण दिशा के दरवाजे का प्रयोग तुरन्त बन्द कर दें।
- वायव्य कोण में रसोईघर होने पर भवन में अतिथियों का आवागमन काफी हद तक होगा। इससे खर्च में वृद्धि होगी।
- इस हालत में वायव्य कोण में स्थित रसोईघर के आग्नेय कोण में ही चूल्हा अथवा गैस बर्नर रखा जाना उचित होगा। साथ ही रसोईघर में अन्नादि के पात्र वायव्य कोण में रखे जाने चाहिएं।
- वायव्य कोण ईशान की अपेक्षा निम्न हो और साथ ही कूप अथवा गड्ढे भी हों तो बीमारियां तथा मुकदमेबाजी चलती रहती हैं।
- ईशान को किसी भी तरह नीचा करें। अगर कूप इसी दिशा में बना हुआ है तो इससे जल को पाइप लाइन से भूखण्ड से बाहर ले जाएं तथा पूर्वी अथवा ईशान कोण से भूखण्ड में लाकर प्रयोग करें।

पश्चिमोन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र

पश्चिमोन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं–

- इस तरह के भूखण्ड पर निर्माण कार्य पश्चिम दिशा की तरफ से आरम्भ करना आवश्यक है।
- इस तरह के भूखण्ड के सामने वाले भाग में चबूतरा, भूखण्ड के पिछवाड़े से ऊंचा होना शुभ फल प्रदान करता है।
- इस तरह के भूखण्ड के सामने के भाग की चारदीवारी पूर्व दिशा की चारदीवारी की अपेक्षा ऊंची हो, तो शुभदायक होगी।
- इस तरह के भूखण्ड के सामने के भाग में कूड़ा-कचरा, पत्थर आदि के होने से सत्य परिणाम प्राप्त होता है।
- इस तरह के भूखण्ड के सामने के भाग में ऊंचे तथा भारी लकड़ी वाले

पेड़ लगाने शुभदायक हैं।

- इस तरह के भूखण्ड तथा मकान के मुख्य दरवाजें तथा दूसरे दरवाजे पश्चिमोन्मुख बनाए गए हों तो शुभदायक है।
- इस तरह के भूखण्ड के सामने के भाग में बनाए गए कमरों के फर्श का स्तर पूर्व दिशा में बनाए गए कमरों की अपेक्षा ऊंचा होने से यश तथा प्रतिफल प्राप्त होता है।
- इस तरह के भूखण्ड में बरामदों का ढाल पश्चिम दिशा की तरफ न हो साथ ही सामने भाग में ऊंची दीवार के साथ भवन-निर्माण किया जाए तो शुभदायक होगा।
- घर में प्रयोग किया गया जल या वर्षा का जल पश्चिम में होकर बाहर निकले। सबसे आसान उपाय ये ही है कि जल की निकासी का प्रबन्ध उत्तरी या पूर्वी ईशान कोण से कर दें। अन्यथा बीमारियों का शिकार होना पड़ सकता है। इसलिए इस स्थिति से बचें।
- इस भूखण्ड की पश्चिम भाग की झोपड़ियां, कमरे, पर्णशालाएं आदि के फर्श मकान के फर्श से नीचे होंगे तो अपयश तथा अर्थहानि होगी। इस स्थिति से बचने के लिए भूखण्ड के पश्चिमी भाग की झोंपड़ियां, कमरे, पर्णशालाएं इत्यादि के फर्शों को भवन के फर्श से ऊंचा कराना उचित होगा। इस स्थिति से बचें।
- इस भूखण्ड के पश्चिम दिशा के दरवाजे का मुख नैर्ऋत्य कोण में होने पर दीर्घ रोग व अर्थहानि हो सकती है।
- दरवाजे के सामने एक आदमकद आईना इस तरह लगवाएं कि प्रवेश करने वाले लोगों को उसका प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई दे।
- इस दरवाजे पर काले रंग का पेंट करवाने और ईशान कोण में एक नया दरवाजा लगाने से ये दोष दूर हो जाएंगे।
- इस भूखण्ड के सामने शाम से पूर्व दिशा की अपेक्षा अधिक खाली होने पर पुत्रों को हानि होती है।
- इस हालत में भूखण्ड के सामने के भाग में निर्माण कार्य इस तरह करवाएं कि सामने के भाग में खाली स्थान पूर्व दिशा में स्थित खाली स्थान की अपेक्षा कम हो जाए।

नैर्ऋत्योन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र

नैर्ऋत्योन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- मकान के नैर्ऋत्य कोण में सीढ़ियां शुभ फल प्रदान करती हैं, लेकिन

सीढ़ियां दक्षिण अथवा पश्चिम की तरफ चढ़ती हुई बनाई जानी चाहिएं। यह स्थिति उत्तम है।

- मकान के सामने खाली स्थान जो कि मकान के पीछे के खाली स्थान से कम होना चाहिए, परटीले एवं वृक्षादि का लैंडस्कैप बनाया जाए, शुभ फल प्रदान करता है।
- इस तरह के भूखण्ड पर बनाए जा रहे मकान के सभी कमरों के कोण समकोण होने चाहिएं।
- इस भूखण्ड के सामने के भाग में स्थिति कमरे को बैडरूम या भंडारघर के रूप में प्रयोग करने से शुभ फल प्राप्त होते हैं।
- भूखण्ड के नैर्ऋत्य कोण में अगर ऊंचे भवन अथवा गोल झोंपड़ी हो तो शुभ फल प्राप्त होंगे।
- मकान के नैर्ऋत्य कोण में मकान के मालिक का बैडरूम बनाया जाना शुभ फल प्रदान करता है लेकिन अगर मकान के मालिक का कारोबार या नौकरी यात्रा सम्बन्धी है, तो मकान के नैर्ऋत्य कोण में स्वामी का बैडरूम कभी नहीं बनाना चाहिए। इन हालातों में बैडरूम हमेशा वायव्य कोण में बनवाना उचित होता है। नैर्ऋत्य कोण पृथ्वी तत्व का प्रतिनिधित्व करता है; अर्थात् गति का, अतः यात्रा सम्बन्धी कारोबार वालों को अपना बैडरूम भवन के वायव्य कोण में ही बनवाना चाहिए। इस स्थिति से बचें और इस उपयोग को प्रयोग में लायें।
- इस तरह के भूखण्ड के सामने भाग में निर्माण कार्य तीव्र गति से करवाना चाहिए अन्यथा कोई भी दुर्घटना घट सकती है।
- नैर्ऋत्य कोण में गोबर का ढेर, पत्थर के टीले आदि भारी चीजें हों तो धन-लाभ तथा स्वास्थ्य-लाभ होगा। घर का अनुपयोगी सामान भी यहां रख सकते हैं।
- मकान के नैर्ऋत्य कोण में स्थित भाग ऊंचा हो या भवन के नैर्ऋत्य कोण में ऊंचे पेड़ या ऊंचे टीले हों तो वह शुभ फल प्रदान करता है, वास्तु द्वारा यह स्थिति अच्छी है।
- इस प्रकार के भूखण्ड पर बनाए जाने वाले मकान के सभी कक्षों के कोण समकोण होने चाहिएं।
- अगर इस भूखण्ड में बनाए गए भवन में कक्षों तथा बरामदों में नैर्ऋत्य कोण नीचा होगा, तो धन, प्राणों की हानि अथवा भयंकर बीमारियों के शिकार होंगे।
- इन कमरों एवं बरामदों के फर्श का पुनर्निर्माण इस तरह कराना होगा

कि नैर्ऋत्य कोण ऊंचा तथा ईशान कोण नीचा हो जाए। जब तक फर्शों का पुनर्निर्माण संभव न हो तब तक कमरों तथा बरामदों के नैर्ऋत्य भाग में ठोस भारी वस्तुओं को रखें, साथ ही कमरों को धोते समय जल को नैर्ऋत्य से ईशान की तरफ लाएं एवं पूर्व-उत्तर अथवा ईशान में स्थित दरवाजे से बाहर निकलें।

- नैर्ऋत्य कोण में खिड़की हो तो अशुभ मानी जाती है। इस दिशा में अगर खिड़की बनाना आवश्यक ही है तो एक अन्य खिड़की ईशान कोण में इससे बड़ी बनवाएं।
- दक्षिणी नैर्ऋत्य या पश्चिमी नैर्ऋत्य कोण में चारदीवारी या भवन का मुख्य दरवाजा होने से अपयश, कारागार, यात्रा, दुर्घटना तथा आत्महत्याओं के शिकार होंगे। ये दरवाजे शत्रु-स्थान होते हैं। इनसे हार्टअटैक, सर्जरी, लकवा व आकस्मिक मौत के शिकार होते हैं।
- जब हमारा भूखण्ड ही नैर्ऋत्योन्मुख है तो उपर्युक्त दिशाओं में मुख्य द्वार आना लाजिमी ही है। इस हालत में चारदीवारी के मुख्य दरवाजे का फर्श मकान के फर्श से ऊंचा रखें। लेकिन मार्ग के स्तर से कुछ नीचा या बराबर रखें। जहां तक मुमकिन हो मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिमी वायव्य कोण की तरफ बनवाएं। अगर वर्तमान में ऐसा नहीं है तो एक दरवाजा पश्चिमी वायव्य कोण में बनवाकर उसको ही मुख्य द्वार की संज्ञा दें एवं प्रयोग करें।

दक्षिणोन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र

वास्तु द्वारा दक्षिणोन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं–

- इस भूखण्ड के सामने दक्षिणी भाग में बने कमरों की छत की ऊंचाई उत्तरी भाग में बने हुए कमरों से ज्यादा हो तो ऐश्वर्य, धन-सम्पदा में वृद्धि होती है।
- इस भूखण्ड में बने मकान के दक्षिणी भाग में बने कमरों की छत की ऊंचाई उत्तरी भाग में बने कमरों से ज्यादा हो तो सम्पन्नता की प्राप्ति होती है।
- दक्षिणोन्मुख भूखण्ड का सामने का भाग अर्थात् दक्षिण दिशा में स्थित भाग पीछे अर्थात् उत्तर दिशा में स्थित भाग से ऊंचा होने से भवन में निवास करने वालों को आरोग्य तथा धन की प्राप्ति होगी। यह एक उत्तम स्थिति है।
- इस भूखण्ड में बने मकान का मुख्य दरवाजा दक्षिण दिशा में हो तो

सम्पन्नता प्राप्त होती है।

- अगर जल की निकासी उत्तर दिशा से हो पानां मुमकिन हो तो जल की निकासी पूर्व दिशा से होनी चाहिए। इस प्रकार मकान में रहने वाले लोग खासकर पुरुष स्वस्थ रहते हैं और यश को प्राप्त करते हैं।
- वास्तु द्वारा दक्षिणोन्मुख भूखण्ड पर निर्माण कार्य दक्षिण दिशा में आरम्भ करना चाहिए।
- इस भूखण्ड से जल की निकासी उत्तर दिशा में हो तो, अर्थ-लाभ होता है और स्त्रियां स्वस्थ रहती हैं।
- कुछ लोगों का मत है कि दक्षिणी दिशा पिशाच का निवास स्थान है इसलिए इस दिशा में थोड़ा खाली स्थान छोड़कर मकान का निर्माण करवाना चाहिए।
- अगर आपके निर्मित भवन में इस प्रकार की स्थिति है और उत्तर दिशा में दक्षिण दिशा से कम खाली स्थान है, दक्षिण दिशा में एक कमरे का निर्माण इस तरह करें कि उत्तर दिशा में दक्षिण दिशा की अपेक्षा अधिक खाली स्थान हो जाये, भले ही निर्माण कार्य चारदीवारी से मिलाकर ही करना पड़े।
- दक्षिण दिशा में पोर्टिको का निर्माण बिना स्तंभों के करवाना चाहिए, क्योंकि स्तम्भों के निर्माण के कारण वे भूमि को स्पर्श करते हैं, ऐसी स्थिति घर के निर्माण की अपेक्षा स्तम्भों का निर्माण निम्न हो जाता है और दक्षिण भाग का नीचा होना वास्तुशास्त्र के अनुसार अनर्थों का मूल कारण है।
- अगर आपके भवन में पोर्टिको दक्षिण भाग में है तथा पोर्टिको के निर्माण में स्तम्भों का प्रयोग किया है तो इस पोर्टिको का फर्श भवन के फर्श से ऊंचा करवा दें तथा इस फर्श का ढाल पूर्व, उत्तर या ईशान कोण की ओर रखें।
- इस भूखण्ड के सामने भाग में कूप हो तो अर्थहानि और दुर्घटनाओं द्वारा मृत्यु संभव है।
- अगर पूर्वी अथवा ईशान में कूप निर्माण मुमकिन नहीं है तो इस कूप पर मोटी तथा भारी स्लैब निकलवाकर इसे बन्द करवा दें। इस कूप के ईशान कोण में एक वर्ग फुट का भाग खुला छोड़ दें। इस कूप के जल को पाइप लाइन द्वारा भूखण्ड के बाहर ले जाकर पुनः भूखण्ड के अन्दर पूर्वी अथवा उत्तरी ईशान से अन्दर लाएं। साथ ही कूप के स्लैब वाले भाग पर छोटा-सा कमरा बनाकर इस दिशा में भारी अनुपयोगी

सामान अथवा जैनरेटर रखा जा सकता है।

- अगर ऐसा है तो इस कूप को बन्द करवाकर पूर्वी अथवा उत्तरी ईशान में कूप निर्माण कराना श्रेष्ठ होगा।
- इस भूखण्ड का मुख्य दरवाजा ठीक दक्षिण दिशा में न होकर अगर आग्नेय कोण की तरफ है तो चोरभय, अग्निभय तथा अदालती कार्यवाहियों के होने की संभावना रहती है।
- इसका सबसे सरल उपाय यह है कि एक दरवाजे को ठीक दक्षिण दिशा में बनाकर उसका अधिक उपयोग करें।
- कुछ लोगों का मानना है कि दक्षिण दिशा पिशाच का निवास स्थान है इसलिए इस दिशा में थोड़ा खाली स्थान छोड़कर भवन का निर्माण करवाना चाहिए।
- ऐसा कभी न करें। अगर आपके बनाये हुए मकान में ऐसा है और उत्तर दिशा में एक कमरे का निर्माण इस तरह करें कि उत्तर दिशा में दक्षिण दिशा की अपेक्षा ज्यादा खाली स्थान हो जाए भले ही निर्माण कार्य चारदीवारी से मिलाकर करना पड़े।

आग्नेयोन्मुख भूखण्ड हेतु सूत्र

वास्तु द्वारा आग्नेयोन्मुख हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- इस भूखण्ड की उत्तर दिशा में स्थित रिक्त स्थान की अपेक्षा पश्चिम दिशा में स्थित स्थान कम तथा ऊंचा होना शुभदायक होता है।
- वास्तुशास्त्र के द्वारा आग्नेय दिशा में निर्मित रसोईघर समस्त प्रकार से सुख प्रदान करेगा।
- इस तरह के भूखण्ड के दक्षिण दिशा में प्रवेश द्वार हो, पश्चिम दिशा में रिक्त स्थान न हो और उत्तर तथा पूर्वी दिशाओं में खाली स्थान हो। ईशान में कुआं हो तथा पश्चिम की अपेक्षा पूर्वी दिशा का स्थल नीचा हो। दक्षिण की अपेक्षा उत्तरी दिशा की ज़गह नीची हो तो, ऐसे ग्रह के स्वामी सुख-वैभंवपूर्ण जीवन बिताएं।
- इस तरह के भूखण्ड में उच्च स्थान पर दरवाजों का निर्माण किया जाना शुभदायक होता है।
- इस तरह के भूखण्ड में एक दरवाजा वास्तुशास्त्र के अनुसार जरूर बनवाना चाहिए।
- इस तरह के भूखण्ड के दक्षिणी आग्नेय कोण में दरवाजा होने पर भयंकर व्याधियां भवन में वास करने लगती हैं।

- ज्यादातर इस प्रकार के दरवाजों को बन्द ही रखना चाहिए, साथ ही इस दरवाजे पर काले रंग का पेंट करवा देने से यह वास्तुदोष अलग प्रभावी हो जाता है।
- इस दरवाजे की विपरीत दिशा अर्थात् उत्तरी वायव्य में एक दरवाजा इस दरवाजे से अधिक चौड़ा बनवाएं।
- इस तरह के भूखण्ड के पूर्वी आग्नेय कोण में दरवाजा होने पर अग्नि-भय तथा चोरों के भय में वृद्धि होगी।
- इस दरवाजे का प्रयोग कम-से-कम करना चाहिए, इसके साथ-साथ इस दरवाजे पर गहरे लाल रंग का पेन्ट करवा देने से यह वास्तुदोष अल्पप्रभावी हो जाएगा।
- इस तरह के भूखण्ड के दक्षिणी भाग में बरामदा अथवा पोर्टिको का होना अशुभ परिणाम प्रदान करता है।
- पोर्टिको आदि को बिना स्तम्भ का बनवाना चाहिए। अगर पोर्टिको पहले से ही स्तंभ वाला बना हुआ है तो पोर्टिको को फर्श से ऊंचा कर देना ही उचित होगा।
- मकान के दक्षिणी भाग में बरामदा हो तो उसमें लोहे की ग्रिल लगवानी चाहिए, साथ ही बरामदे का फर्श मकान के फर्श से ऊंचा होना चाहिए।

दिशाओं के वेध हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र द्वारा दिशाओं के वेध हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं—

- पश्चिम तथा उत्तर दिशाओं में मार्गवेध हो तो ऐसा भूखण्ड वास्तुशास्त्र के अनुसार दोषपूर्ण माना जाता है तथा इसे रहने के लिए अनुपयुक्त माना जाता है।
- पश्चिम तथा दक्षिण दोनों दिशाओं में अगर मार्गवेध हो तो ऐसा भूखण्ड दोषपूर्ण होता है।
- पूर्व तथा दक्षिण दोनों दिशाओं में मार्गवेध हो तो भूखण्ड दोषपूर्ण हो जाता है।
- उत्तर तथा पूर्व दोनों दिशाओं में मार्गवेध हो तो ऐसा भूखण्ड दोषपूर्ण हो जाता है।
- पश्चिम, पूर्व तथा उत्तर—इन तीन दिशाओं के मार्गवेध वाला भूखण्ड भी दोषपूर्ण गिना गया है।
- पूर्व, दक्षिण तथा पश्चिम—इन तीन दिशाओं के मार्गवेध वाला भूखण्ड भी दोषपूर्ण गिना गया है।

- उत्तर, पूर्व तथा दक्षिण—तीन दिशाओं में मार्गवेध वाला स्थान भी दोषपूर्ण होता है।
- उत्तर तथा दक्षिण दो विपरीत दिशाओं से अगर मार्गवेध हो तो ऐसा भूखण्ड भी दोषपूर्ण की श्रेणी में आता है।
- पूर्व और पश्चिम दो विपरीत दिशाओं से अगर मार्गवेध हो तो ऐसा भूखण्ड दोषपूर्ण कहा जाता है।

भूखण्डों के आकार हेतु सूत्र

वास्तु द्वारा भवनों के आकार हेतु कुछ सूत्र निम्नलिखित हैं—

- धनुषाकार की भूमि भी उत्तम श्रेणी में नहीं आती है। ऐसे भूखण्ड शत्रुभय कारक तथा धननाशक और नाना प्रकार के कष्ट प्रदान करने वाले भूखण्डों की श्रेणी में आते हैं।
- सूपाकार भूमि छाजले के आकार की होती है; यानि सर्प आकार की होती है। ऐसी भूमि धन-यश-संपदा नाशकारक कही गयी है।
- गोमुखाकार भूमि आगे की तरफ से कम तथा पीछे की तरफ अधिक गाय के मुख के समान होती है, ऐसा भूखण्ड आवास के लिए शुभदायक कहा गया है। इसके विपरीत ऐसा भूखण्ड कारोबार वाणिज्य के स्थान के रूप में उत्तम नहीं कहा गया है।
- सिंह मुखाकार की भूमि का आगे का भाग अधिक चौड़ा और पीछे का भाग कम चौड़ा होता हैं, ऐसा भूखण्ड सिंहमुखाकार कहा गया है, ऐसा भूखण्ड व्यवसाय वाणिज्य के लिए उत्तम कहा जाता है इस प्रकार के भूखण्ड पर निर्मित कारोबारी स्थल धनागम की दृष्टि में उत्तम होते हैं। ऐसे भूखण्डों का प्रयोग अच्छा होता है।
- मृदंगाकार भूखण्ड ढलान की आकृति के समान उत्तम नहीं माने जाते हैं। ऐसी भूमि स्त्री धन के अमंगल और भव्यदायक समझी जाती है। इसका उपयोग अशुभ है।
- पंखाकार भूखण्ड पंखों के आकार के होते हैं, इस प्रकार के भूखण्ड त्यागने योग्य होते हैं, यह भूखण्ड धन का नाश और कुल का नाश करने वाले होते हैं।
- छः कोनों वाला भूखण्ड जिसे षट्कोणाकार भूखण्ड भी कहा जाता है। यह भूमि उपयुक्त की श्रेणी में आती है और वास करने वालों को उत्तरोत्तर वृद्धि प्रदान करती है।
- चक्राकार भूखण्ड आवास के लिए सर्वथा उपयुक्त कहा गया है, अतः

इसे त्याग देना चाहिए।

- शकटाकार बैलगाड़ी के आकार का भूखण्ड यानि आगे से कम चौड़ी तथा पीछे से ज्यादा चौड़ी—ऐसी भूमि रोग-शोक-हानि प्रदान करने वाली होती है इसलिए त्याज्य समझी जाती है। मगर यह गोमुख आकार की भूमि से भिन्न कही गयी है।
- वृत्ताकार भूखण्ड गोलाकार के होते हैं, इन्हें वस्तु की दृष्टि से अच्छा माना जाता है। इस प्रकार के भूखण्ड में वास करने वालों को धन और ज्ञान का लाभ होता है। ऐसा भूखण्ड रहने वालों को उत्तम फल प्रदान करता है खासकर लेखक-चिंतक-कलाकारों के लिए ऐसे भूखण्ड अधिक उपयुक्त होते हैं।
- चिमटाकार भूखण्ड एक तरफ से संकरे और दूसरी तरफ से फैले हुए हों—ऐसे भूखण्ड आवास के लिए अयोग्य होते हैं इसलिए ऐसे भूखण्ड पर घर का निर्माण कभी नहीं करना चाहिए इससे अनिष्ट फलों की प्राप्ति होती है।
- नलाकार भूखण्ड ऐसे होते हैं जिनके चारों कोण तो समान हों लेकिन चौड़ाई कम और लम्बाई दोगुनी से भी ज्यादा यानि नाले की आकृति की हो तो वह आवास के लिए अनुपयोगी कही गयी है—ऐसे भूखण्ड मानसिक, आर्थिक और सामाजिक मानहानिदायक होते हैं और अनेक कष्ट इस किस्म के भूखण्ड में वास करने वालों को झेलने पड़ते हैं।
- मूसलाकार भूखण्ड नेष्ट श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। इस प्रकार के भूखण्ड मूसली के आकार के होते हैं—ऐसे भूखण्ड को आवास के लिए अनुपयुक्त कहा गया है।
- चतुष्कोणात्मक भूखण्ड चारों तरफ से कोणाकार के होते हैं—इस प्रकार के भूखण्ड सुखदायक, धनऐश्वर्य प्रदायक माने जाते हैं। वास्तु में ऐसे भूखण्ड शुभ होते हैं।
- विषमाकार भूखण्ड टेढ़ी भुजाओं वाली भूमि को कहा जाता है—ऐसी भूमि पर वास करने वालों को उत्तम फल की प्राप्ति नहीं होती है।
- अर्द्धवृत्ताकार भूखण्ड आधे चन्द्रमा के समान भूमि को कहते हैं। यह भूखण्ड अनेक दुःखों और कष्टों को देने वाला, चोरों का भय और राजभय वाला खंड कहा गया है।
- अण्डाकार भूमि का आकार अण्डे के समान होता है—ऐसी भूमि त्यागने योग्य होती है। धन-जनहानि का दोष इसमें होता है, इसलिए यह आवास में उपयुक्त है।

- कुम्भाकार भूखण्ड घड़े के आकार वाली भूमि को कहते हैं—यह भूमि नष्ट फल प्रद होती है। यह रोगदायक, शोकदायक और कष्टकारी मानी जाती है।
- भद्रासन भूखण्ड उसे कहते हैं जिस भूमि की लम्बाई तथा चौड़ाई दोनों ही समान हों और जिसका बीच का भाग एकदम समतल हो। कहीं से किसी कोण से कटी-फटी नहीं होनी चाहिए। इस प्रकार की भूमि को भद्रासन कहते हैं। इस प्रकार के भूखण्ड में निर्मित आवासीय भवन अथवा वाणिज्य स्थल सभी प्रकार से उत्तम व श्रेष्ठतम् फलदायक होते हैं।
- आयताकार भूखण्ड उसे कहते हैं जिस भूखण्ड की लम्बाई चौड़ाई से अधिक होती है लेकिन दुगने से ज्यादा नहीं होनी चाहिए—और जिस भूमि के चारों कोण समान होते हैं उसे आयताकार भूमि कहते हैं—ऐसे भूखण्ड को उत्तम माना जाता है और सभी तरह के गुणों से शुभ फलदायक भूखण्ड के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है, वास्तु द्वारा यह उत्तम माना गया है।
- त्रिभुजाकार भूखण्ड उसे कहते हैं जिन भूखण्डों की तीनों भुजाएं एक-समान होती हैं—ऐसी त्रिभुजाकार भूमि में रहने वाले को राजभय तथा अशान्ति मिलती है।
- वर्गाकार भूखण्ड उसे कहते हैं जिसकी लम्बाई-चौड़ाई बराबर होती है—इस प्रकार के भूखण्ड धनऐश्वर्य प्रदान करने वाले होते हैं और उत्तम श्रेणी में गिने जाते हैं।

विभिन्न द्वार व उनके फल हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र के अनुसार द्वार से सम्बन्धित सूत्र निम्नलिखित हैं—

- घर के मध्यम भाग में अर्थात् ब्रह्मस्थल में अगर स्तंभ हो तो ब्रह्मा का वेध होता है।
- जो दरवाजा बीच भाग में हीन होता है वह अनेकानेक शोक संवाद एवं दुःखपूर्ण फलदायक होता है।
- त्रिकोणात्मक दरवाजा नारी को पीड़ा देने वाले, शकटाकार दरवाजे स्वामी को भय प्रदान करने वाले, सूप के समान द्वार धन का नाश करने वाले, धनुषाकार दरवाजा कलहकारक, वृत्ताकार दरवाजा अधिक कन्याओं के जन्म का सूचक होता है।
- तिकोना शक्ल की आकृति वाले दरवाजे भी त्यागने योग्य होते हैं और

प्रमाण से अधिक अथवा न्यून दरवाजे भी अशुभ फलदायक होते हैं।

- अगर दरवाजे से स्तंभ यानि चौखट में से शब्द हो तो वेध से घर के मालिक का वंश-नाश होता है।
- दरवाजे के पल्लों में छेद हो तो उसे कपाट वेध में गिना गया है जो अशुभ फलदायक होता है। अगर यन्त्र से विद्ध द्वार हो तो आवास के लिए धन का नाश करने वाला कहा गया है।
- दरवाजे हमेशा शास्त्रों के उल्लेख के अनुरूप बनाने चाहिएं। अपनी इच्छा से दरवाजा न बनायें। दरवाजे का माप शास्त्रोक्त नहीं होने से अशुभप्रद होता है। दरवाजे नाप में न्यून होने से भी अशुभ फलदायक कहा जाता है, अगर दरवाजा आधा खंडित हो तो भी द्वारवेध कहा जायेगा। वास्तु द्वारा इन्हें अच्छा नहीं समझा जाता।
- दरवाजे की चौखट एक तरफ छोटी एवं दूसरी तरफ बड़ी हो, अगर यह अनुपातानुसार न हो तो अशुभ होगी।
- अगर दरवाजे में जोड़ लगा हो तो घर के मालिक के दुःख का कारण बनता है एवं दरवाजे घर के अन्दर लटकते हों तो घर के मालिक के मरने के कारण बनते हैं। अगर दरवाजा बाहर की तरफ झुका हो तो घर के मालिक को विदेश जाना पड़ता है। दरवाजे को अगर दिशा के ठीक-ठाक ज्ञान के बिना स्थापित किया गया है तो चोर-लुटेरों का डर रहता है।
- दरवाजे के कपाटों की अगर मोटाई कम होती है अथवा कपाटों की मोटाई ज्यादा हो तो भूख (क्षुधा) का दुःख भोगना पड़ता है। अगर दरवाजा टेढ़ा हो तो विनाशकारक होता है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार दरवाजे के ऊपर दरवाजा बनाया जाए तो वह अमंगलकारी होता है।
- दरवाजा अगर नीचे हो तो दुःखदायी होता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार यह स्थिति अच्छी नहीं होती।
- दरवाजे का प्रमाण से अधिक होना राजभय एवं प्रमाण से कम होना चोर-लुटेरों का भयकारक है।
- अगर दरवाजे के कपाट अपने आप खुलते हों तो पागलपन के सूचक होते हैं। अगर दरवाजे अपने आप बन्द हों तो कुल का नाश हो जाता है।
- घर के प्रवेश द्वार के सामने किसी दूसरे घर का प्रवेश द्वार हो तो उसे भी द्वारवेध कहा जाता है। आजकल तो बहुमंजिले आवासीय भवन

बनते हैं, उनमें हर मंजिल में कई-कई आवास होते हैं। उन आवासों में मुख्य द्वार दूसरे आवास के सामने होता है। इन बहुमंजिले आवासीय भवनों के मुख्य द्वार के सामने अगर किसी अन्य भवन का मुख्य द्वार हो तो वह द्वारवेध की सीमा में आता है और हर मुमकिन कोशिश करके इस स्थिति से बचें।

- तेल निकालने के लिए कोल्हू अगर दरवाजे के सामने हो तो उससे भी द्वारवेध होता है।
- अगर दरवाजे के एकदम सामने ब्राह्मण का वास हो—उसको द्वार की संज्ञा में गिना गया है। ब्राह्मण बेधित द्वार कुल का नाश करवाता है यह सिद्धान्त सिर्फ कर्मकांडी ब्राह्मण के निवास के लिए है, अन्य दूसरों के लिए नहीं है।
- देवमूर्ति से बेधित दरवाजा विनाशकारी होता है।
- घर के मुख्य दरवाजे के सामने किसी नाले का होना जल निकास व नाली का होना अनर्थक व्ययकारक तथा अशान्ति प्रदान करने वाला माना जाता है।
- मुख्य दरवाजे के सामने किसी स्तंभ-पिलर अथवा बिजली का खम्भा होना भी द्वारवेध की परिधि है तथा इसकी वजह से स्त्रियों में बालिकाओं में दोष देखने को मिलता है।
- मुख्य दरवाजे के सामने जल से भरा गड्ढ़ा अथवा कीचड़ का होना अशान्ति एवं दुःखों का कारण कहा गया है।
- किसी दूसरे के मकान का कोना मुख्य दरवाजे के सामने होने से मानसिक उद्वेग का कारण बनता है।
- मुख्य दरवाजे के सामने किसी पेड़ का होना सन्तान के लिए कष्टकारी होता है।
- मुख्य दरवाजे के सामने मन्दिर का होना जीवन की अवनति का कारण बनता है।
- मुख्य दरवाजे के सामने अगर कुआं हो, उससे मानसिक उद्वेग तथा स्वास्थ्य की हानि होती है।
- मुख्य दरवाजे के सामने अगर कोई सड़क या गली आकर खत्म होती हो और घर के सामने से समानान्तर जाने वाली सड़क पर अंग्रेजी के टी अक्षर की आकृति बनती है, तो वह द्वारवेध की संज्ञा में गिना जाता है—ऐसा दरवाजा-वेध आयु का सर्वनाश करता तथा अनिष्टकारक होता है।

वास्तुनियमों के अनुसार भूखण्ड हेतु सूत्र

वास्तुशास्त्र के अनुसार भूखण्ड हेतु सूत्र निम्नलिखित हैं–

- जिस भूखण्ड की तीन दिशाओं में उत्तर-दक्षिण एवं पश्चिम दिशा में सड़क मार्ग हो उसे निम्न श्रेणी का भूखण्ड कहा जाता है।
- जिस भूखण्ड की पूर्व तथा दक्षिण दिशा में सड़क मार्ग हो तो उसे निम्न श्रेणी में गिनना चाहिए।
- जिस भूखण्ड की उत्तर तथा दक्षिण दिशाओं में सड़क मार्ग हो तो उसे भी मध्यम श्रेणी का माना जायेगा।
- जिस भूखण्ड की पश्चिम तथा उत्तर दिशा में सड़क मार्ग हो तो ऐसे भूखण्ड को भी मध्यम श्रेणी में गिना जायेगा।
- जिस भूखण्ड की दक्षिण तथा पश्चिम दिशा में सड़क मार्ग हो उस भूखण्ड को भी मध्यम श्रेणी में गिना जाता है।
- जिस भूखण्ड की सिर्फ पूर्व दिशा में सड़क मार्ग हो तो उसे भी मध्यम श्रेणी में गिना जायेगा।
- जिस भूखण्ड की दक्षिण दिशा में सड़क हो उसे भी मध्यम श्रेणी का माना जाएगा।
- जिस भूखण्ड की सिर्फ पूर्व दिशा में सड़क मार्ग हो तो उसे भी अच्छी श्रेणी का भूखण्ड समझना चाहिए।
- जिस भूखण्ड की सिर्फ उत्तर दिशा में सड़क मार्ग हो तो उसे अच्छी श्रेणी का भूखण्ड समझा जाएगा।
- जिस भूखण्ड के उत्तर तथा पूर्व दिशा में सड़क मार्ग हो तो उस भूखण्ड को उत्तम श्रेणी में गिना जाता है।
- जो भूखण्ड सड़क के अन्तिम भाग पर स्थित है तथा मात्र वहां तक जाकर बन्द हो गया है ऐसा मार्ग वाला भूखण्ड निम्न स्तर श्रेणी में आता है। वास्तुशास्त्र में इसे सही नहीं माना जाता।
- जिस भूखण्ड के दक्षिण-पूर्व एवं पश्चिम–इन तीन दिशाओं में सड़क मार्ग हो तो ऐसे भूखण्ड को भी निम्नकोटि का माना जाएगा।
- जिस भूखण्ड की तीन दिशाओं, उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व में सड़क मार्ग हो उसे निम्न श्रेणी का कहा जाता है।
- जिस भूखण्ड के पूर्व में तथा पश्चिम में दो दिशाओं के अन्तर्गत सड़क मार्ग हो उसे निम्न श्रेणी का कहा जायेगा।
- जिस भूखण्ड के पूर्व, उत्तर एवं पश्चिम–इन तीन दिशाओं में सड़क

मार्ग हो उसे भी निम्न श्रेणी में गिना जाएगा।

- भूखण्ड के दक्षिण में किसी नदी अथवा बड़ी नहर आदि का होना एवं पश्चिम में भी नदी-नहर अथवा बड़े जलाशय का होना उत्तम फलदायक नहीं समझा गया है।
- जिस भूखण्ड के दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम तथा पश्चिम दिशा में पहाड़ अथवा बड़ी चट्टानों वाला पठारी प्रदेश हो तो उसका प्रभाव उस भूखण्ड पर अच्छा पड़ता है। इसके अलावा अन्य किसी दिशा में पर्वत-पठार हो तो उसका प्रभाव प्रगति में बाधक होता है।
- चार सड़क मार्गों के मिलने के स्थल वाले चौराहे तीन तरफ से सड़क मार्ग आकर जिस भूखण्ड पर खत्म हो ऐसे भूखण्ड दो दिशाओं के सड़क मार्ग आकर अगर भूखण्ड पर खत्म हो एवं सिर्फ एक दिशा से आकर सड़क मार्ग भूखण्ड के मार्ग पर खत्म हो जैसे अंग्रेजी का अक्षर है तो ऐसे भूखण्ड निम्न श्रेणी में आते हैं।
- चारों दिशाओं के सड़क मार्ग को उत्तम एवं श्रेष्ठ श्रेणी का गिना गया है उसमें भी अगर ये सड़क मार्ग बन्द नहीं होते हैं और सीधे अपनी-अपनी दिशाओं में आगे की तरफ चले गए हों तो ऐसा भूखण्ड और भी उत्तम श्रेणी में आता है। सड़क मार्ग का दूसरे सड़क मार्ग पर 'टी' आकार में आकर अशुभ हो जाता है।
- आवास गृह के करीब, पिछवाड़े या सम्मुख श्मशान, कब्रिस्तान अथवा अन्य कोई शवदाह स्थल अथवा मुर्दे गाड़ने का स्थल नहीं होना चाहिए। ऐसा स्थान वास भवन के लिए अशुभ कहा गया है। भवन के आस-पास मकबरा मृतक की स्मृति में निर्मित छतरी आदि भी अशुभ माने जाते हैं।
- पश्चिम से पूर्व की तरफ बहती हुई नदी अथवा नहर भूखण्ड के उत्तर में दक्षिण से उत्तर की तरफ बहने वाली नदी या नहर भूखण्ड की पूर्व दिशा में उत्तम फलदायक कही गयी है।
- विष्णु, ब्रह्मा, शिव आदि देवताओं के मन्दिर आवास गृह के सामने दुर्गा आदि शक्तियों के मन्दिर आवास गृह के दाएं अथवा बाएं एवं विभिन्न धर्मों के तीर्थंकरों के मन्दिर अथवा मठ आवास-भवन के पीछे की तरफ नहीं होना ही उत्तम कहा गया है। ऐसा हम पहले बतला चुके हैं। आवास-भवन के ऊपर मन्दिरों-देवालयों-पूजास्थलों की छाया आवास-भवन पर सुबह नौ बजे से लेकर मध्याह्न 4 बजे तक नहीं पड़नी चाहिए।

स्वामी रामसुख दास जी के प्रमुख सूत्र

स्वामी राम सुखदास जी के प्रमुख सूत्र निम्नलिखित हैं–

- ईशान दिशा की जगह शुद्ध रखनी चाहिए। इस दिशा में अशुद्धि होने से अनेकानेक कष्ट आते हैं।
- सिंहमुखी आगे से ज्यादा चौड़ा मकान शुभ नहीं होता है। गोमुखी पीछे से ज्यादा चौड़ा मकान शुभ होता है।
- जुड़वा मकान अर्थात् दो मकानों के बीच की एक ही दीवार कभी नहीं बनानी चाहिए।
- घर के अन्दर युद्ध के चित्र रोते हुए स्त्री-पुरुषों के चित्र, कामुक चित्र, क्रुद्ध मुद्रा वाले चित्र और कौवा, कबूतर, बाज, उल्लू आदि के चित्र लगाना लाभदायक हैं।
- मकान की उत्तर, पूर्व और ईशान दिशा अधिक खुली होनी चाहिए। अधिक निर्माण दक्षिण, पश्चिम तथा नैर्ऋत्य दिशा में होना चाहिए; अर्थात् आवास गृह एवं उसके अन्दर के साजो-सामान आदि को ज्यादा भार दक्षिण, पश्चिम तथा नैर्ऋत्य दिशा में होने चाहिए।
- मकान में वायु का प्रवेश दरवाजे-खिड़कियों आदि के दरवाजे उत्तर-पूर्व तथा ईशान दिशा में होने चाहिएं।
- मकान में निकलने वाला सारा जल ईशान कोण की तरफ जाना चाहिए।
- मकान की भूमि पूर्व और उत्तर की तरफ नीची और दक्षिण तथा पश्चिम की तरफ ऊंची होनी चाहिए।
- अगर दूसरे और तीसरे प्रहर 9 से 3 बजे तक किसी पेड़, देवालय आदि की छाया मकान पर पड़ती है तो वह दुःख देने वाली होती है इसका विशेष ध्यान रहे।
- जहां मार्ग बन्द होता हो अर्थात् सड़क आगे की तरफ नहीं जाती हो, वहां मकान का होना दोषपूर्ण होता है।
- मकान के दरवाजे अन्दर की तरफ खुलने चाहिएं, दरवाजे का आगे अथवा पीछे की तरफ झुका होना अशुभ होता है। दरवाजा खुलने या बन्द होने के समय आवाज नहीं होनी चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत नकदी, धन उत्तर दिशा में और गहने आदि दक्षिण में रखने चाहिएं।
- घर के कुल दरवाजे-खिड़कियां सम संख्या में होने चाहिएं, जिसे दो से दिभाजित किया जा सके: जैसे 2, 4, 6, 8, 12 आदि, परन्तु अन्त में

शून्य वाली संख्या नहीं होनी चाहिए; जैसे 10, 20, 30 आदि।

सीढ़ियां दक्षिणावर्ती घड़ी की सुई की तरह बाएं से दाएं और घूमने वाली होनी चाहिए। सीढ़ियों के पगों की संख्या इतनी होनी चाहिए कि तीन का भाग देने पर शेष दो रहे; जैसे 5, 11, 17, 23, 29 आदि।

अगर आपका भवन वास्तुशास्त्र के अनुसार नहीं बना है तो आपको मानसिक तनाव, आर्थिक हानि, अस्वस्थता आदि जैसी अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

वास्तुशास्त्र की कुछ विशेष बातें–

ईशान	पूर्व	आग्नेय
उत्तर,	ब्रह्मस्थान	दक्षिण
वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य

मकान के विभिन्न स्थान तथा उनकी उपयुक्त दिशाएं–

1. शौचालय — दक्षिण और नैर्ऋत्य के बीच में वायव्य
2. स्नानघर — पूर्व-वायव्य
3. सीढ़ियां — उत्तर-पश्चिम
4. मुख्य द्वार — पूर्व-उत्तर-ईशान
5. बैडरूम — (कन्याओं का) वायव्य
6. बैडरूम — (बालकों) उत्तर-पूर्व
7. बैडरूम — (मुख्य व्यक्ति) पश्चिम-दक्षिण।
8. कुआं ट्यूबवेल — पूर्व ईशान। उत्तर-पश्चिम।
9. गौशाला — वायव्य
10. अध्ययन कक्ष — ईशान
11. स्टोर यानि भंडारगृह — नैर्ऋत्य
12. मन्दिर पूजागृह — ईशान
13. अतिथि गृह — वायव्य
14. भोजन गृह — पश्चिम-आग्नेय, नैर्ऋत्य
15. रसोईघर — आग्नेय
16. गैरेज — आग्नेय-वायव्य

वास्तुशास्त्र के अनुसार भूखण्ड में किस देवता का कौन-सा स्थान है और कहां ख़ाली जगह छोड़नी है तथा निर्माण कहां और कैसे करना है, इसे रेखाचित्र से दर्शाया जा रहा है।

उत्तर-पूर्व (वायव्य) उत्तर दिशा (अधिक खुला स्थान) उत्तर-पूर्व (ईशान)

पश्चिम दिशा कम खुला स्थान				पूर्व दिशा अधिक स्थान
	वायु	कुबेर	ऐश्वर्य	
	वरुण (जल)	ब्रह्मा	इन्द्र	
	निरूथी दैत्य	यम (मृत्युदेव)	अग्नि	

दक्षिण-पूर्व (नैर्ऋत्य) दक्षिण दिशा (कम खुला स्थान) दक्षिण-पूर्व (आग्नेय)

वास्तु के 9 खंड

	वायु	उत्तर	ईशान	
	खर धनागार	गज शयनकक्ष कोषागार	काक देवस्थान	
पश्चिम	वृष शयनकक्ष भोजन	ध्वज	शयनकक्ष स्नानागार	पूर्व
	श्वान शौच-स्नानघर वजनी सामान	सिंह शयनकक्ष	धूम पाकशाला	
	नैर्ऋत्य	दक्षिण	आग्नेय	

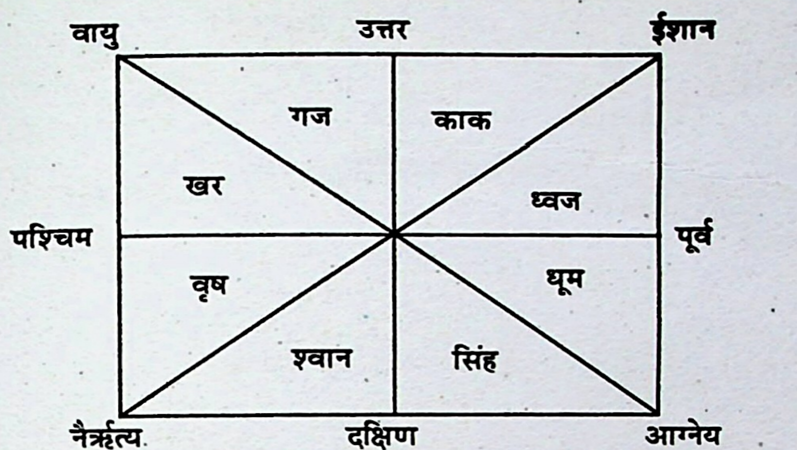
वायु उत्तर ईशान

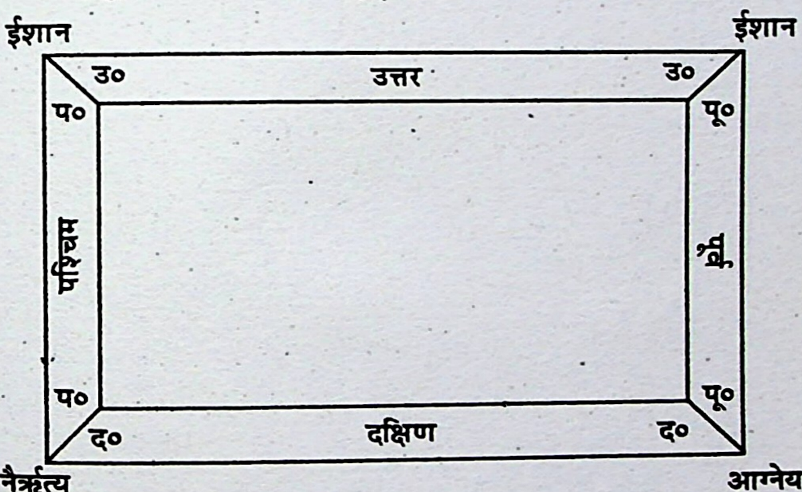
पश्चिम पूर्व

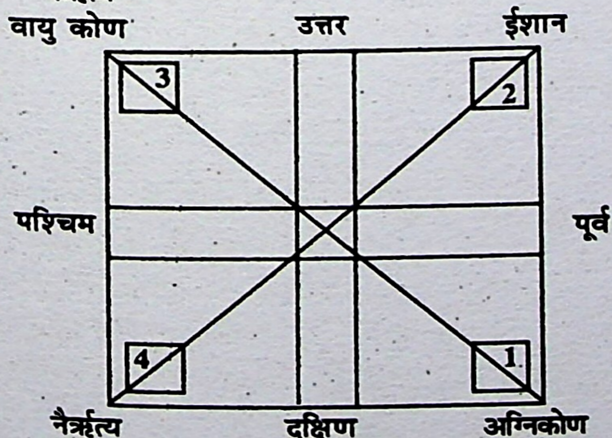
गज काक खर ध्वज वृष धूम श्वान सिंह

नैर्ऋत्य दक्षिण आग्नेय

स्वामी राम सुखदास जी के अनुसार मुख्य बातें—







1. पाकशाला
2. देवस्थान
3. कोषागार
4. शौचालय

आठ दिशाएं—दिशाओं के स्वामी तथा देवताओं का निवास था। निर्माण कार्य में किस दिशा में कैसा होना चाहिए, उसका विवरण—

दिशा	स्वामी	निवास	निर्माण
उत्तर	कुबेर	स्कन्द भगवान कुबेर और सोम	खुली जगह, दरवाजे, खिड़कियां, बरामदा, पोर्टिको, बेशिन आदि।
दक्षिण	यमराज	गणेश भूत-प्रेत मातृभक्ति, यम	कम खुली जगह, दुछत्ती, पेड़, भारी सामान, गृह-स्वामी का निवास।
पूर्व	इन्द्र	विष्णु, सूर्य एवं इन्द्रादि देवता	ज्यादा खुली जगह, दरवाजे, खिड़कियां, बरामदा-बालकॉनी, पोर्टिको
पश्चिम	वरूण देवता	विश्वकर्मा सागर नदिया, वरूण देवता	कम खुली जगह, दुछत्ती, पानी की ओवरहेड टंकी, शौचालय, स्नानघर, पेड़-पौधे, भोजनालय।
उत्तर-पूर्व दिशा (ईशान कोण)	महेश्वर	लक्ष्मी-अग्नि शंकर भगवान	पूजाकक्ष, योगाध्यान और अध्ययन कक्ष जल भंडारण, बोरबेल या जलकूप, बेसमेन्ट दरवाजे, मुख्य द्वार, खुला स्थान पोर्टिको, कोर्टयार्ड, टेरेस, बरामदा।
उत्तर-पश्चिम दिशा (वायव्य कोण)		शनि	देवियों का स्थान शनि एवं शक्ति की गौशाला, शयनकक्ष, वाहन रखने का स्थान, ओवर हेड टंकी, बच्चों का कक्ष, मनोरंजन कक्ष, अन्य कक्ष, अतिथि कक्ष, दुछत्ती, अध्ययन कक्ष, जल भंडारण आदि।

दिशा	स्वामी	निवास	निर्माण
दक्षिण-पूर्व दिशा (आग्नेय)	हनुमान	हनुमान, सनक सनकादि, ऋषि देवीशक्ति आदि	रसोईघर, अग्नि का स्थान नौकरों का कक्ष, मल निकासन, टंकी, स्नानागार, शयनकक्ष, भंडारघर, गैरेज, मेनस्विच, सेवक कक्ष, बर्तन धोने का स्थान।
दक्षिण-पश्चिम दिशा (नैर्ऋत्य कोण)		राक्षस एवं देवीशक्ति	पितृगण, काली गृहस्वामी का शयन कक्ष, सीढ़ियां, भारी सामान, रत्न-आभूषण आदि तिजोरी, वस्त्र धोने एवं स्नानघर, भण्डारघर।

ध्यान देने योग्य विशेष सूत्र

वास्तुशास्त्र के द्वारा इन सूत्रों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए–

- ईशान कोण ईश्वर का क्षेत्र माना जाता है। इसलिए गृह देवालय अथवा पूजास्थल ईशान कोण में ही बनाएं। ये कोण हर समय साफ स्वच्छ रहना चाहिए।
- ईशान कोण में ही पूजा-आराधना करनी चाहिए। ध्यान एवं आध्यात्मिक उन्नति साधन के लिए यह कोण सर्वोत्तम है। जल-स्रोत-कुआं, अंडरग्राउंड जलभंडारण के लिए यह कोण सर्वोत्तम है। इस कोण में बाग-बगीचा भी लगाया जा सकता है।
- मकान का ज्यादा-से-ज्यादा निर्माण दक्षिण-पश्चिम अर्थात् नैर्ऋत्य दिशा में होना चाहिए। यह कोण नैर्ऋत्य पूतना राक्षसी का स्थान है और इस कोण की भार वहन क्षमता अधिक है। भवन-निर्माण के बाद ज्यादा भारी सामान इसी दिशा में रहना चाहिए।
- निर्माण स्थल की भूमि का ढलान उत्तर दिशा में तथा पूर्व दिशा में होना चाहिए, जिससे जल का निकास उत्तर-पूर्व दिशा में हो यानि ईशान कोण में है। निर्माण हो जाने पर मकान का जल पूर्व दिशा उत्तर दिशा में हो।
- मकान के पूर्व में तथा उत्तर में खाली स्थान जरूरी छोड़ें। पूर्वोत्तर कोण

ईशान का अभाव खाली रखें, क्योंकि यह ईश्वर का स्थान माना जाता है। इस कोने को साफ-सुथरा रखें।

- इस कोने में कोई भारी-भरकम सामान न रखें। वैसे अगर निर्माण के चारों तरफ खाली स्थान छोड़ा जाए तो वह उत्तम होता है लेकिन उसे कम से कम होना चाहिए; अर्थात् पूर्व की तरफ पश्चिम की अपेक्षा ज्यादा एवं उत्तर में दक्षिण की अपेक्षा अधिक स्थान छोड़ना चाहिए।
- पूर्व अथवा उत्तर दिशा में गृह की खिड़कियां तथा दरवाजे ज्यादा-से-ज्यादा होने चाहिएं, इसके विपरीत दक्षिण-पश्चिम की तरफ कम। पूर्व और उत्तर की तरफ के दरवाजे खिड़कियों से सूर्य का प्रकाश एवं स्वच्छ वायु का अबाध आवागमन होता है। जिससे घर में निवास करने वालों को सुख-शान्ति मिलती है।
- पूर्व की तरफ अधिक खुलापन रहने से प्रातःकालीन सूर्य की रश्मियों का पूरा लाभ मिलता है तथा इस भाग से भवन में वायु के प्रवेश से भवन में व्याप्त वायु प्रदूषण कम होता है।
- घर में भोजन प्रबन्ध के लिए रसोईघर का निर्माण होता है—रसोईघर में अग्नि के द्वारा भोजन बनाया जाता है। अग्नि के लिए आग्नेय कोण जो दक्षिण-पूर्व कोण है ही उत्तम। इस कोण में अग्नि देवता का वास है। इस क्षेत्र में किचन बनाने से अग्निदेव की कृपादृष्टि हमें प्राप्त होती है, इस कोण की भूमि ऊंची होनी चाहिए।
- पूर्व दिशा में किचन होने से सूर्य की रश्मियों के प्रवेश से किचन में छिपे कीटाणु नष्ट हो जाते हैं इस प्रकार सीलन, दुर्गन्ध दूर हो जाती हैं। वातावरण स्वच्छ बनता है।
- उत्तर-पूर्व में दरवाजे-खिड़कियां ज्यादा होने चाहिएं। उसके विपरीत दक्षिण-पश्चिम की तरफ कम होने चाहिएं। ऐसा करने से गर्मी के मौसम में दक्षिण और पश्चिम में स्थित कमरे ठण्डे रहेंगे और सर्दियों में गर्म रहेंगे जिससे इन कमरों में रहने वालों को आराम मिलेगा इसलिए यहां खिड़की-दरवाजे कम होने चाहिएं।
- अपनी वाटिका में कब्रिस्तान, शमशान सड़कों के किनारों या मृत व्यक्तियों द्वारा दिये गये या फिर नदियों के कटाव स्थल के आस-पास से लाए गए पौधे न लगाएं।
- मुख्य दरवाजे की ऊंचाई तथा चौड़ाई से घर के अन्दर के दूसरे दरवाजों की लम्बाई-चौड़ाई कुछ कम रखनी चाहिए। वास्तु द्वारा इन्हें एक-समान न बनाएं।

- अगर आप उत्तर तथा पूर्व में दरवाजे बना रहे हैं तो इन्हें मध्य में न बनाएं। उत्तर का दरवाजा पूर्व दिशा की तरफ तथा पूर्व का दरवाजा उत्तर की तरफ बनायें।
- अगर मकान में दोनों दिशाओं में दरवाजे हों तो दरवाजा एकदम आमने-सामने न लगाएं। उनमें थोड़ा अन्तर रखें। आमने-सामने के दो दरवाजों के लिए पूर्व व पश्चिम की दिशाएं उत्तम हैं, इस प्रकार वायु आगमन का संतुलन बना रहेगा।
- मकान अथवा कार्यालय या वाणिज्य स्थल तथा कारखाने का मुख्य दरवाजा कभी जमीन की सतह के नीचे की तरफ न लगाएं; अर्थात् प्रवेश द्वार जमीन की सतह के बराबर रहे।
- मकान के निर्माण में जहां ईशान कोण को खाली-खाली और साफ-सुथरा रखने का निर्देश दिया गया है उसी के अनुसार मकान के अन्दर के प्रत्येक कमरे का भी ईशान कोण खाली तथा साफ-सुथरा रखें। कमरे में कचरे का डिब्बा कभी ईशान कोण में न रखें।
- अगर भूखण्ड का पूर्वी भाग तथा उत्तरी भाग नीचा है एवं छोटी चट्टानें पहाड़ या पठार अथवा कोई ऊंची इमारत दक्षिण अथवा पश्चिम दिशायें हैं तो ऐसा भूखण्ड उत्तम श्रेणी में गिना जाएगा।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार उत्तर-पूर्व दिशा की तरफ पहाड़-पठार आदि शुभदायक नहीं होते।
- भूमि का उत्तर-पश्चिम कोण अगर बढ़ा हुआ हो तो वह घर के मालिक के लिए अधिक खर्च का कारण बनता है जबकि उत्तर-पूर्व कोना अगर बढ़ा हुआ है तो वास्तुशास्त्र के अनुसार वह आपकी धन-धान्य व उत्साहवृद्धि करता है।
- वास भूमि के दक्षिण-पश्चिम कोण में पहाड़-पठार आदि का कोना धन-धान्य में वृद्धि करेगा।
- गायें बांधने वाली भूमि भवन के लिए पूरी तरह उपयुक्त होती है और उस आवास में वास्तुदोष नहीं होते जिसे भूमिगत वास्तुदोष कहते हैं, वह गायों के वास से मिट जाता है। जिस भूमि पर अन्न आदि के बीज डालने पर वे अच्छी तरह फलते-फूलते हैं तो वह भूमि भी भूमिगत वास्तुदोषों से रहित समझें, जिस भूमि पर पेड़-पौधे जल्द बढ़ें उसे वास्तुशास्त्र के द्वारा उत्तम भूमि कहा गया है।
- सोते समय उत्तर की तरफ सिर, दक्षिण की तरफ पैर करके सोने का निषेध है, उसका सकारण तथा उसके वैज्ञानिक आधार की चर्चा हो चुकी है। पूर्व की तरफ सिर करके सोने से बल-बुद्धि का विकास होता है।
- दक्षिण की तरफ सिर करके सोने से धन-धान्य-सम्पदा में वृद्धि होती है।

- पश्चिम दिशा की तरफ सिर करके सोने से अनावश्यक चिन्ता व हानि होती है।
- घर के अन्दर जहां बीम हो उसके नीचे न सोयें। बीम के नीचे बैठकर पूजा-पाठ भी न करें।
- व्यापारी लोगों को भी बीम के नीचे बैठकर वाणिज्य नहीं करना चाहिए, न ही ग्राहक आकर बीम के नीचे खड़ा हो, तिजोरी गल्ला आदि भी बीम के नीचे न रखें।
- बीम के नीचे बैठने या सोने से मानसिक उद्वेग पैदा होता है और आया हुआ ग्राहक भी बीम के नीचे खड़ा होकर यह सोचता है कि लूं अथवा न लूं—और वह बिना कुछ लिये वापस लौट जाता है।
- घर के नीचे की मंजिल से ऊपर की मंजिल में दरवाजे तथा खिड़कियों की संख्या कम होनी चाहिए।
- भूमिगत जल भंडारण अगर आप उत्तर-पश्चिम दिशा में बनाते हैं तो उससे वंशवृद्धि में रुकावट आएगी—धनहानि के साथ-साथ मानसिक अशान्ति तथा कलेश से आप उबर नहीं सकते हैं, इसका बिल्कुल सही स्थान उत्तर-पूर्व है।
- अगर आपको मकान का विस्तार करना है तो चारों दिशाओं में करना ही उत्तम माना जाता है। सिर्फ दक्षिण-पश्चिम में अथवा दक्षिण-पूर्व में विस्तार करने से धन-हानि, कलेश, आगजनी, दुर्घटना, चोरी-डकैती, स्वास्थ्य-हानि अनावश्यक चिन्ता, क्लेश आदि होती हैं।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार रसोईघर मकान के प्रवेश द्वार के सामने कभी नहीं होना चाहिए।
- रसोईघर अथवा शौचालय कभी भी ईशान कोण में न बनायें यह पूरी तरह दुःखदायी है तथा इससे परिवार के लोगों में अशान्ति-कलह तथा जीवन-स्तर में उत्तरोत्तर गिरावट आएगी तथा मानसिक असन्तुलन और पागलपन की स्थिति हो जाएगी।
- बैडरूम में मदिरा का सेवन, तेल के डिब्बे, मूसल, अंगीठी, कीटनाशक आदि वस्तुएं नहीं रखनी चाहिएं। इससे मानसिक उद्वेग बढ़ता है और चिन्ता तथा परेशानी भोगनी पड़ती है। झाड़ू को भी बैडरूम में कभी न रखें, यह स्थिति हानिकारक होती है।
- बैडरूम में सुगन्धित फूलों का गुलदस्ता लगाया जा सकता है लेकिन उसका स्थान बैडरूम के बीच में नहीं अपितु सोने वाले के सिरहाने अथवा बैडरूम के कोने में रखना उत्तम है। गुलदस्ते के सूखने तथा फूलों के मुर्झा जाने पर उसे बदल देना चाहिए। सूखे गुलदस्ते को शयनकक्ष में नहीं रहने देना चाहिए।
- पुस्तकालय एवं अध्ययन का स्थान ईशान कोण ही है, इस ईश्वरीय कोण में

बैठकर विद्याभ्यास करने से छात्र-छात्राएं ज्यादा उन्नति करते हैं—स्वाध्याय तथा भगवत चिंतन के लिए केवल यही दिशा है वैसे उत्तर तथा पूर्व दिशा में बैठकर भी अध्ययन-अध्यापन किया जा सकता है—विद्यार्थी का मुंह अध्ययन के समय ईशान की तरफ होना उत्तम है।

- पुस्तकालय का स्थान नैर्ऋत्य कोण में है, जो दक्षिण तथा पश्चिम दिशा का संगम है। अगर इस कोण में संभव न हो तो पुस्तकों को दक्षिण या फिर पश्चिम में रखें। ईशान या उत्तर में या फिर पूर्व दिशा में कभी न रखें।
- घर की दीवार पर घड़ी लगानी हो तो उत्तर-पूर्व एवं पश्चिम की दीवार पर लगाएं, दक्षिण की दीवार पर घड़ी न लगाएं, तो उत्तम रहता है, वास्तु द्वारा यह स्थिति अच्छी मानी जाती है।
- बैंक की पास बुक जमा बही खाते, मुकदमे आदि के कागजात आदि को ईशान कोण अथवा पूर्व दिशा में रखें इससे धनवृद्धि और मामलों में विजय मिलती है।
- टेलीफोन तथा टेलीविजन दोनों ही उपकरण हमारे दैनिक जीवन के लिए जरूरी हैं और दोनों उपकरण विद्युत ऊर्जा से चलते हैं और ऊर्जा का स्थान अग्निकोण है। इसलिए इन दोनों उपकरणों का अग्निकोण में होना श्रेष्ठ माना जाता है।
- कपड़ों पर प्रेस करने का स्थान आग्नेय कोण ही है जहां तक मुमकिन हो आग्नेय कोण अथवा इसके आस-पास के स्थान पर इसकी व्यवस्था करनी चाहिए। लेकिन चूंकि यह काम हर समय नहीं होते, इसलिये यथा अवस्था और व्यवस्था करने से दोषपूर्ण नहीं है।
- अध्ययन कक्ष तथा पुस्तकालय अध्ययन का स्वाध्याय स्थान ईशान कोण ही है, इस ईश्वरीय कोण में बैठकर विद्याभ्यास करने से छात्र-छात्राएं ज्यादा उन्नति करते हैं।
- आवास भवन की ऊंचाई दक्षिण-पश्चिम अधिक तथा उत्तर-पूर्व से कम होनी चाहिए तथा दक्षिण-पश्चिम की दीवारें उत्तर-पूर्व की दीवारों की अपेक्षा मोटी और भारी होनी चाहिएं।
- घर के बीच में जल भण्डारण कभी नहीं बनाना चाहिए। यह हमेशा कष्टकारी होता है और नुकसान करता है तथा अशुभ सूचक है इससे घर में अशान्ति तथा परिवार में कलह होती है तथा वंश नष्ट होता है।
- घर में टूटे हुए शीशे की पेन्टिंग अथवा चित्र आदि न रखें। टूटे हुए शीशे को फौरन बदलवा दें या फिर उसे फेंक देना चाहिए। दर्पण चाहे छोटा हो या बड़ा अगर टूट गया है, तो उसे हटा दें, टूटा दर्पण कभी नहीं रखना चाहिए।
- दर्पण लगाने के लिए घर की उत्तर तथा पूर्व की दिशा शुभ है अन्य दिशाओं में दर्पण न लगायें।
- घर की सीढ़ियों के नीचे चाहें तो छोटा-सा कमरा बना सकते हैं, पर उस कमरे

में पूजास्थल नहीं बन सकता है और उस कमरे में शौचालय या चौकीदार का बैडरूम नहीं बनाना चाहिए। नहीं तो उसमें रहने वालों को अशान्ति से गुजरना पड़ सकता है।

- पूजाघर के ऊपर से तो चलना-फिरना निषेध है एवं शौचालय के ऊपर से यातायात अशुभ चिंतादायक और कष्टदायक है।
- घर के अन्दर आलमारी और तिजोरी के कपाट उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ खुलने चाहिएं। इस प्रकार धनागमन उत्तम होगा और उसका ठहराव भी रहेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि तिजोरी, आलमारी आदि को हमेशा दक्षिण तथा पश्चिम की दीवारों से लगा हुआ रखें।
- हमेशा भारी-भरकम तिजोरियों को या आलमारी को दक्षिण-पश्चिम कोण दिशा में ही रखें। दक्षिण की तरफ खुलने वाली आलमारी हमेशा खाली रहती है।
- मकान अथवा वाणिज्य परिसर के उत्तर-पूर्व की दिशा में कोई भी टूटा-फूटा स्थान, भग्नावशेष, कोई अन्य दोष, कोई खाई झाड़-झंकाड़, अशुद्धि अगर होगी तो धनहानि के साथ-साथ अपंग सन्तान उत्पन्न होगी और घर के मालिक को भी कष्ट उठाना पड़ेगा।
- घर-कार्यालय, कारोबार स्थल-दुकान, होटल या अन्य कोई भी प्रतिष्ठान हो पूजास्थल यानि लक्ष्मीजी गणेशजी की स्थापना उत्तर-पूर्व कोण या उत्तर या पूर्व में ही करें, अन्य किसी दिशा में न करें।
- रसोईघर के पास शौचालय तथा शौचालय के पास पूजागृह अथवा रसोई के अन्दर पूजास्थल न बनायें इससे नुकसान के अलावा कोई लाभ नहीं हो सकता।
- अपने घर के सामने, वाणिज्य स्थल के दरवाजे के सामने बिजली अथवा टेलीफोन या कोई भी अन्य स्तम्भ न लगाने दें न ही घर के दरवाजे के सामने कूड़ा जमा करने की कचरापेटी लगाने दें।
- अपने घर का कूड़ादान भी मुख्य दरवाजे के सामने न रखें और मुख्य दरवाजे के सामने घर के अनुपयोगी सामानों की कतार न लगाएं। झाडू को मुख्य दरवाजे के सामने न रखें।
- सोते समय बैडरूम में या अन्य समय में भी झाडू या जूठे बर्तन न रहने दें। बैडरूम की साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखें। बैडरूम में वन्य प्राणियों के तथा अन्य डरावने चित्र न लगाएं। जिस तरफ आप पैर करके सोते हैं उस दिशा में देवी-देवता के चित्र न लगाएं।
- मकान में स्थापित पूजास्थल में देवी-देवताओं की मूर्तियों तथा चित्रों का मुख पूर्व-उत्तर तथा पश्चिम की तरफ रखें। पूजा-अर्चना के समय व्यक्ति का पूर्व या ईशान की तरफ मुख करके खड़े होना अथवा बैठना उत्तम है।
- घर के मालिक का कमरा जहां तक संभव हो सके पश्चिम दिशा में ही

बनाएं—यह सब भांति श्रेष्ठ है—जहां तक सम्भव हो सके दक्षिण-पश्चिम नैर्ऋत्य कोण में बनाने का प्रयत्न करें। इस प्रकार घर के मालिक का भारी-भरकम सामान भी आप इस दिशा में रखें।

- भवन-निर्माण में अगर भवन में उत्तर दिशा की तरफ बरामदा बनाया जाता है तो दक्षिण में भी बरामदा अवश्य बनाएं। लेकिन दक्षिण की तरफ के बरामदे को कांच की खिड़कियों या पर्दों से ढककर रखें जिससे दक्षिण दिशा में कम खुलेपन वाला सिद्धान्त पहले दिया गया है उसी का पालन करें।
- अगर घर में कोई व्यक्ति बीमार चल रहा है तो उसे दक्षिण-पश्चिम के कोने में रखें। इस प्रकार उसके जल्दी ठीक होने की संभावना बनी रहती है। इस दिशा में गर्मियों में कम गर्मी तथा सर्दियों में कम सर्दी रहती है इस वजह से प्राकृतिक ऊर्जा का लाभ रोगी को पूरा-पूरा मिलता है—और रोगी रोग से जल्दी-से-जल्दी छुटकारा पा जाता है।

कुछ आवश्यक सूत्र

वास्तुशास्त्र के अनुसार कुछ आवश्यक सूत्र निम्नलिखित हैं—

- भूखण्ड-निर्माण वास्तुदोष तथा भूमिदोष दूर कर ही प्रारम्भ करना चाहिए अन्यथा शुभता नहीं रहती है।
- चास्तुशास्त्र के अनुसार भवन और मुख्य दरवाजे के बीच कोई भी निर्माण या रुकावट नहीं होनी चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार मुख्य दरवाजा किसी कोणात्मक स्थिति में भी न हो।
- आपके मुख्य दरवाजे के ठीक सामने ऊंचे टीले, पहाड़ या इमारतें नहीं होनी चाहिएं।
- भूमि के आस-पास कोई भी ऐतिहासिक खण्डहर, भवन, उजड़े हुए बगीचे सांप, छछूंदर, चूहों के बिल नहीं होने चाहिएं।
- किसी भो कॉलोनी या अन्य स्थान गली में स्थित मार्ग के आखिरी में जहां मार्ग खत्म हो गया हो मकान नहीं लेना चाहिए और ऐसी कॉलोनी में जहां अन्य मकान नहीं बने हैं समय से उसका विकास नहीं हो रहा है।
- किसी भी मकान, दुकान, औद्योगिक संस्थान, भूखण्ड को खरीदने के पहले उस सम्पत्ति के चारों तरफ के ढांचों का अवलोकन कर उसकी समीक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है, उस स्थान पर शराब का अड्डा, शोर, जुआ का अड्डा, अपराध जन्य लोग, कचरा या अन्दरूनी गन्दगी या कोई रिपेयरिंग या मैकेनिकल शॉप या वाहन, रख-रखाव, दुकान लाभदायक नहीं होते और भविष्य में स्वास्थ्य, धन, मानसिक शान्ति पर इसका बुरा असर पड़ता है।

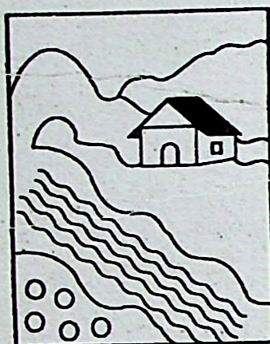
- भूखण्ड के सामने या ऊपर हाईटेंशियल लाईन, खम्भा, ट्रांसफार्मर का होना उचित नहीं है।
- वास्तुशास्त्र के द्वारा जहां अपराधी लोग रहते हों, उसके आस-पास भूखण्ड नहीं लेना चाहिए।
- भूखण्ड की मुख्य आठों दिशाओं में कोई अवरोध न हो तो बहुत ही अच्छा है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार मुख्य दरवाजे के आगे बाउन्ड्री वाल भी नहीं होनी चाहिए।
- मुख्य दरवाजा और मार्ग के बीच कोई रुकावट; जैसे—अवैध निर्माण किचन गार्डन, बिजली का खम्भा आदि न हो।
- त्रिकोणी भूमि भूलकर भी नहीं खरीदनी चाहिए, वास्तुशास्त्र के अनुसार यह अच्छी नहीं मानी जाती।
- जिस भूखण्ड पर बरसात का या अन्य कोई पानी ठहरता है वह भूखण्ड उपयुक्त नहीं है।
- भवन-निर्माण से पहले आपकी कुण्डली के चौथे घर पर किसी-किसी जानकार से विचार जरूर करें यह आपकी संपत्ति से सम्बन्धित रहता है। विचार आप घर के अन्य सदस्यों के लिए भी करें तो ज्यादा अच्छा है।
- मुख्य दरवाजे पर पिरामिड स्वास्तिक यन्त्र, सिद्ध गणपति की स्थापना, त्रिशूल वाले घोड़े की नाल भी लगा सकते हैं, वास्तु द्वारा ये उत्तम है।
- मुख्य दरवाजे के दोनों तरफ अन्दर या बाहर सुविधानुसार तुलसी के पौधे जरूर लगाने चाहिएं, अगर मनीप्लांट लगाना चाहें तो ये और भी उत्तम है।
- अगर भूखण्ड में वास्तुदोष रह जाते हैं तो भूखण्ड के ईशान में भूखण्ड-स्वामी के ऊंचाई के बराबर गड्ढ़ा खोदकर उसकी पूरी मिट्टी भूखण्ड परिसर से बाहर फेंक दें। अगर भूखण्ड एक से ज्यादा लोगों के नाम है तो उन सबकी ऊंचाई लेकर उसके औसत ऊंचाई के बराबर गड्ढा खोदना चाहिए। गड्ढा पुनः बाहर से लाई गयी मिट्टी से भर देना चाहिए। इस बात का पूरा ध्यान रखें कि भरी गयी मिट्टी रेत या काली मिट्टी न हो।
- मकान बनाते समय धूप का पूरा ध्यान रखें कि सर्दी में थोड़ी अधिक गर्मी में थोड़ी हल्की, ऐसा नहीं कि सर्दी में धूप आये ही नहीं।
- भोजनालय पश्चिम में होना चाहिए।
- कर्णात्मक भूखण्ड भी शुभ होते हैं, जिसके दो कोण ज्यादा हों व एक समकोण व एक न्यूनकोण हो।
- घर का सारा सामान घर के नैरूत में ही रखना चाहिए।

- वास्तुशास्त्र के अनुसार ड्राइंगरूम में अगर आप भोजन करना चाहते हैं तो पश्चिम दिशा में करें।
- घर में गीता-ज्ञान वाला अर्जुन का चित्र न लगायें, इससे आपस में विचार नहीं मिलते।
- घर में अशुभ चित्र न लगायें; जैसे—युद्ध, राक्षस, क्रोधी, गन्दगी, सूखे पेड़, उजड़े बगीचे आदि।
- जो अंक आपको सही नहीं लगता है आप चाहें तो उसके आगे "क" या "ख" या "ए" या "बी" का प्रयोग कर सकते हैं।
- मकान का स्वागत कक्ष, ड्राइंगरूम उत्तर-पूर्व या पूर्व में ही बनाना ज्यादा अच्छा है।
- बाहरी दीवार के ठीक ऊपर से नीचे या ऊपर वाली टंकी नहीं होनी चाहिए, थोड़ा-सा हटाकर बनाना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार बैडरूम में पलंग कभी भी दरवाजे के सामने न रखें।
- बैडरूम में आईना नहीं रखना चाहिए, अगर सोते समय आपका प्रतिबिम्ब उसमें दिखता है तो स्वास्थ्य खराब हो जाता है। यहां तक कि बहुत ज्यादा लम्बे समय तक के लिए सोने से आदमी गम्भीर रूप से बीमार हो सकता है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके रसोईघर के सामने शौचालय नहीं होना चाहिए।
- शुभ माप में इकाई 4.3 सेमी० व 9 सेमी० इंच फीट भीतर आदि है। पहले चीनी पद्धति फेंगशुई तथा दूसरे सौर मण्डल का शुभ अंक है, इसमें फेंगशुई में अनुपात 1 : 2, 3 : 5, 6 : 7, 8 : 10 शुभ है व 0 : 1, 2 : 3, 5 : 6, 7 : 8 अशुभ है व 9 अंक ये लम्बाई-चौड़ाई का अनुपात 2 : 1 से ज्यादा नहीं होना चाहिए। अगर यह अनुपात 1 : 1 : 6 है तो उत्तम है।
- निर्माण का शिलान्यास पहला दरवाजा रखना, छत डालना व गृह प्रवेश के समय वास्तुपूजा जरूर करानी चाहिए।
- वास्तु द्वारा पहली मंजिल से अन्य मंजिलों की ऊंचाई कम करते जाना शुभ होता है।
- विशाल मकान हमेशा अच्छा माना जाता है लेकिन यह ईशान या नैरूत में कटा या फटा न हो।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार नए मकान में कभी भी पुराने सामान का उपयोग न करें।
- वास्तुशास्त्र के द्वारा खिड़की व दरवाजे को एक ही स्तर पर रखना सही होता है।
- वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत घर में दीवार घड़ी का बन्द रहना भी अशुभ रहता है।

- घर में टूटी कुर्सी, टूटे सामान, खराब मशीनें, टूटे कांच इत्यादि रखना शुभ नहीं होता।
- इतवार के दिन तुलसी का पौधा लगाना, तुलसी के पत्ते तोड़ना, तुलसी का पौधा खरीदना शुभ नहीं होता।
- घर में मकड़ी के जाले या अन्य प्रकार के जाले होना उचित नहीं है इनको तुरन्त निकाल देना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार घर की मुख्य पूजा में गणपति जी की मूर्ति अवश्य रखें।
- सबसे ऊंचा नैरूत, उससे नीचा आग्नेय, आग्नेय से नीचा वायव्य व सबसे नीचा ईशान होना शुभ होता है।
- वास्तु द्वारा घर अथवा स्थान पर मधुमक्खियों का छत्ता होना काफी अशुभ स्थिति मानी जाती है।
- अपने मकान में पेंन्ट आदि वास्तु के अनुसार करना चाहिए, यह शुभ होता है।
- वास्तुशास्त्र के द्वारा घर के मुख्य व्यक्ति का बैडरूमं हमेशा नैरूत में होना उचित है।
- वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत कार्यालय में टेबल कभी भी दरवाजे के सामने होना उचित नहीं है।
- गृहप्रवेश, शादी या अन्य शुभ कार्य के निमन्त्रण-पत्र हर परिवार को प्राप्त होते हैं। निमन्त्रण-पत्रों पर भगवान के चित्र तथा शुभ चिह्न अंकित रहते हैं, जिनको कई परिवार रद्दी की टोकरी या किसी अन्य कचरे में डाल देते हैं ये ठीक नहीं है। ऐसे निमन्त्रण-पत्रों को स्वच्छ जल में प्रवाह करना ठीक रहता है।
- मकान के निकट बड़े पेड़ जिससे प्रातः सूर्य की किरणों के प्रवेश में बाधा होती है। उन्हें कटवा दें।
- निर्मित भवन के ऊंचाई के दुगनी दूरी तक कोई भी सार्वजनिक मन्दिर या मस्जिद नहीं होनी चाहिए।
- स्वास्तिक यन्त्र का उपयोग किसी दूषित स्थान पर नहीं करना चाहिए, यह हानिकारक होता है।
- घर के मुख्य प्रवेश पर सिद्ध गणपति अवश्य स्थापित करना चाहिए, यह आगंतुक दोष के निवारण के लिए आवश्यक है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार ईशान कोण में कभी भी शौचालय क निर्माण न करायें।
- किसी भी निर्मित मकान को खरीदते समय उसमें रहने वालों की आर्थिक स्वास्थ्य व अन्य स्थितियों की ठीक से समीक्षा कर लेनी बहुत जरूरी कार्य है।

- वास्तुशास्त्र के अनुसार घर के ईशान को हमेशा स्वच्छ व खाली रखें।
- निर्माण कार्य में ईशान का कोना थोड़ा अग्रेत रखना लाभदायक सिद्ध होता है।
- निर्माण कार्य नैरूत से आग्नेय, वायव्य तत्पश्चात् आग्नेय से ईशान व वायव्य से ईशान करना शुभदायक होता है।
- खुदाई का काम ईशान से वायव्य, आग्नेय, इसके बाद वायव्य से नैरूत एवं आग्नेय से नैरूत करना उचित है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार निर्माण सामग्री हमेशा नैरूत दक्षिण या पश्चिम में ही रखें।
- किसी भी निर्माण के पूर्व उसकी कम्पाउंड वाल पहले बनाना ज्यादा शुभदायक होता है।
- घर के किसी भी कोने में आलमारी या अन्य सामान रखना उचित नहीं है। इसे कोने से थोड़ी जगह छोड़कर रखना ठीक रहता है। वास्तु द्वारा यह उत्तम है।
- भूमि की ढलान का बहुत महत्त्व रहता है। इसके शुभ व अशुभ पर विचार कर इसका निर्माण करना चाहिए।
- घर के स्थान, शौच व अन्य किसी प्रकार से दूषित कमरों के दरवाजों को छोड़कर अन्य दरवाजों पर शुभ चिह्न लगाना उचित है।
- किसी भी निर्माण कार्य करने से पहले भूमि की तह के बारे में ज्यादा सोचना उचित नहीं है।
- पूजाघर में दक्षिणावर्त शंख, बांसुरी बांस की बनी हुई तथा घंटी रखना लाभदायक होता है।
- वास्तु द्वारा आन्तरिक साज-सज्जा व चलित वस्तुओं को यथायोग्य स्थान पर रखें।
- टूटे-फूटे विकृत या अशुभ भाप के दर्पण का उपयोग न करें। वास्तु द्वारा यह अशुभ है।
- पिरामिड या स्वास्तिक यन्त्र को एक फीट छः इंच गहरा दिशाओं के समानान्तर गाड़ें।
- तिजोरी को हमेशा उत्तर में, उत्तर की तरफ मुंह खुले ऐसा रखें, नहीं तो दक्षिण की तरफ रखकर उत्तर की तरफ खुले।
- ब्रह्म स्थल पर कभी शौचालय न बनायें।
- अपने पूर्वजों के चित्र कभी भी पूजाघर में भगवान के साथ न लगायें, इन्हें अतिरिक्त स्थान पर कहीं भी लगा सकते हैं।

□□□



29



दिशाओं के दोष व उनका निवारण

वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत अनेक दोषों का निवारण दिया गया है जो काफी उपयोगी हैं। उन्हें उपयोग में लाकर आप लाभ उठा सकते हैं। यहां कुछ दोषों का निवारण इस प्रकार है–

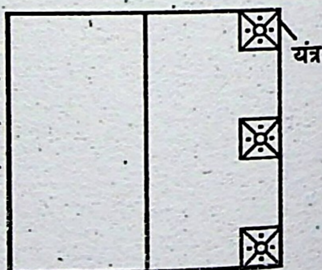
पूर्व दिशा

दोष–अगर पूर्वी दिशा का स्थान ऊंचा हो।

निवारण–ऊंचे स्थान में पिरामिड अथवा स्वास्तिक यंत्र गाड़ें और तुलसी के पौधे का भी उपयोग करें।

दोष–दरवाजे और खिड़कियां न हों।

निवारण–ईशान कोण से पूर्व दिशा की ओर नौ भाग करते अन्दर की तरफ स्वास्तिक या पिरामिड यन्त्र स्थापित करना चाहिए और खिड़की के लिए इसी दिशा में अन्यत्र भी यन्त्र स्थापित किये जा सकते हैं।



दोष–आपके मकान की पूर्वी दिशा खुली न हो।

निवारण–इसके लिए पूर्वी दिशा की ओर स्वास्तिक अथवा पिरामिड यन्त्र दीवार पर इतना ऊंचा लगायें कि फर्श धोते या पौछा लगाते समय उस पर छींटे न आयें।

दोष–पूर्वी दिशा में कूड़ा-कचरा रखना।

निवारण–ठीक कूड़े-कचरे के सम्मुख दीवार पर नौ पिरामिड यन्त्र लगायें और उसके आस-पास हरे पौधे भी रखें। लेकिन एक बात का ख्याल रहे यहां तुलसी का पौधा नहीं होना चाहिए।

दोष–आग्नेय कोण में द्वार का होना।

निवारण–दरवाजे के दोनों तरफ सिद्ध गणपति की मूर्ति ठीक एक-दूसरे के पीछे लगायें। ये ज्यादा शुभकारक होती है, अगर आप चाहें तो शुभ चिह्न का प्रयोग भी कर सकते हैं।

दोष—मकान का पूर्वी दरवाजा सड़क से दिखाई देता रहे—चारदीवारी उतनी ही ऊंची हो।

निवारण—दरवाजे पर स्वास्तिक यन्त्र लगायें। इसके अलावा पूर्वी दिशा में सूर्य यन्त्र जरूर लगायें।

दोष—पूर्वी दिशा में साझा दीवार होना।

निवारण—दीवार के अपनी ओर वाले भाग में एक यन्त्र की स्थापना अवश्य करें।

दोष—पूर्व दिशा में शौचालय का होना।

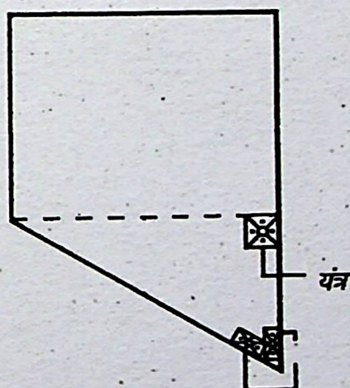
निवारण—शौचालय के द्वार के भीतर की ओर शिकार करते हुए या शिकार के लिए दौड़ते हुए शेर का चित्र लगायें। चित्र दरवाजे के बाहर की तरफ नहीं होना चाहिए नहीं तो हानि हो सकती है।

दोष—पूर्व दिशा की तरफ सड़क का ऊंचा होना।

निवारण—इस दिशा में सूर्य यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

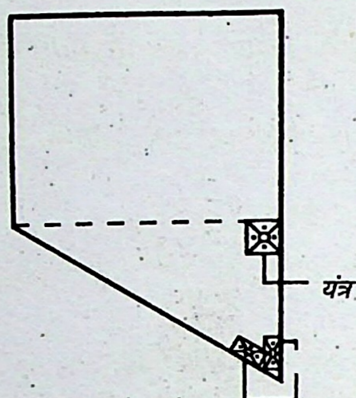
दोष—अगर पूर्वी दिशा की चारदीवारी पश्चिम से ज्यादा ऊंची है।

निवारण—अगर मुमकिन हो तो पश्चिम की चारदीवारी ऊंची कर लें वरना पूर्व की चारदीवारी के अन्दर क्यारी बनाकर तुलसी के पौधे लगायें, अगर संभव हो तो दीवार पर यन्त्र भी लगा सकते हैं।



दोष—आग्नेय दिशा आगे की ओर बढ़ी हुई हो या फिर पूर्वी आग्नेय या दक्षिणी आग्नेय कोण अग्रेत हो।

निवारण—अग्रेत हिस्से के दोष दूर करने के लिए पिरामिड या स्वास्तिक यन्त्र स्थापित कर सकते हैं। चित्र के अनुसार व भूमि को चित्र में डॉटेड लाईन द्वारा बताये गये आयताकार करना चाहिए। अगर संभव हो तो बाकी त्रिकोण भाग में पेड़-पौधे लगा सकते हैं, यह उचित होगा।

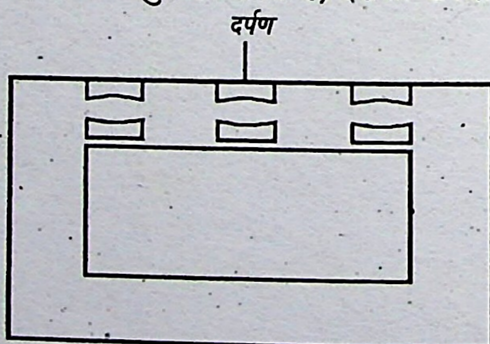


दोष–कुएं और गड्ढ़े हों।

निवारण–कुएं तथा गड्ढ़ों को भर देना चाहिए, अगर ऐसा करना मुमकिन न हो तो उसके पास तुलसी के पौधे रखने चाहिएं और इस बात का पूरा ख्याल रहे कि पौधे के पांच से दस फीट के घेरे में कोई भी अशुभ वातावरण न हो। कुएं अथवा गड्ढे में पानी भरा हो तो उसमें जिन्दा या प्लास्टिक की छोटी-छोटी चार लाल व एक काली मछली डाल देनी चाहिए। इस प्रकार दोष को कम किया जा सकता है।

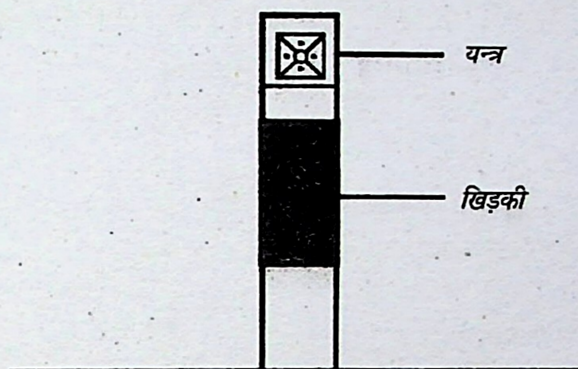
दोष–आपके मकान की उत्तरी दक्षिणी दिशा में अधिक खाली जगह हो।

निवारण–इस प्रकार के स्थान में उत्तरी दिशा में चित्र के अनुसार दर्पण प्रिलिंथ लेवल पर या फिर जमीन से छः इंच ऊपर आमने-सामने लगायें, इस बात का पूरा ध्यान रहे कि दर्पण खण्डित, धब्बेदार या फिर देखने में विकृत स्थिति न दर्शाता हो। वास्तु द्वारा यह उपाय बहुत ही सरल है, इसका उपयोग करें।



दूसरा सरल उपाय यह है कि दक्षिणी दिशा में हरे पौधे रखने चाहिएं, इनमें अगर दो-तीन तुलसी के पौधे हों तो बहुत ही लाभकारी सिद्ध होते हैं। यह भी एक सरल उपाय है।

तीसरा उपाय यह है कि दक्षिणी दिशा की तरफ वाली दीवार पर यन्त्र लगाये जायें और इस यन्त्र को दीवार से इतना ऊंचा लगाना चाहिए कि फर्श धोते या पौछा लगाते समय उस पर छींटे न पड़ें, जैसा कि निम्न चित्र में दिखाया जा रहा है–



दाष–आपकी चाrदीवारी के नैरूत भाग में दरवाजा होना।

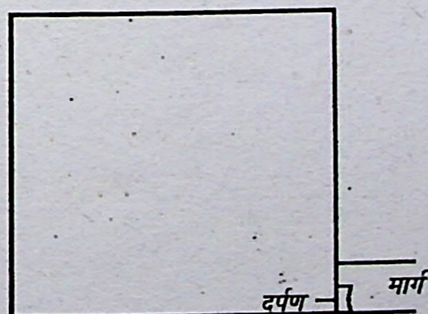
निवारण–इस दोष के निवारण के लिए बाहरी दरवाजों के पिलरों पर बाहर की तरफ ऊपर स्वास्तिक आठ दिशाओं वाला दोनों पिलर पर लगाना चाहिए तथा दरवाजे के भीतर की तरफ दोनों पिलरों के पास तुलसी के दो पौधे रख दें।

दोष–आपका दक्षिण परिसर उत्तर से नीचा हो।

निवारण–अगर मुमकिन हो सके तो उसको भरकर ऊपर करना उचित है अगर आप इस तरह न कर पायें तो ठीक दक्षिण दिशा में हरे पौधे जिसके अन्तर्गत तुलसी के पौधो का होना जरूरी होता है रख देना चाहिए। घर की पूजा में गणपति जी की मूर्ति को जरूर रखना चाहिए, ये वास्तु द्वारा उत्तम है।

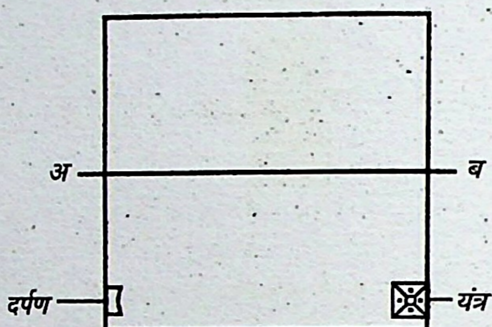
दोष–आपकी आग्नेय पूर्वी दिशा का मार्ग प्रहार।

निवारण–इस प्रकार के दोष निवारण के लिए मार्ग के बीच से दाहिनी ओर दर्पण इस प्रकार स्थापित करें कि रास्ता उसमें दिखाई देने लगे।



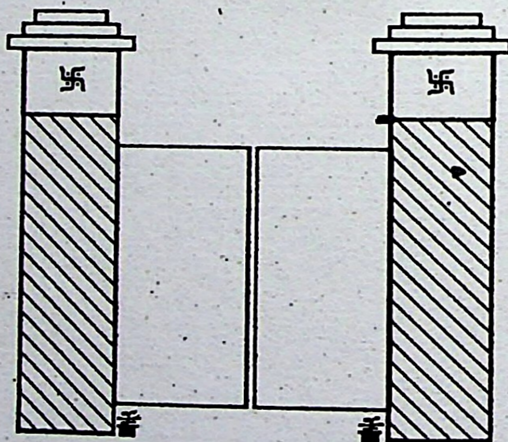
दोष—आग्नेय भाग नैरूत भाग से ऊंचा हो।

निवारण—अगर आपका इस प्रकार का मकान है तो नैरूत क्षेत्र में दर्पण लगाने से आग्नेय क्षेत्र वहां से दिखने लगता है तो ये काफी अच्छा माना जाता है। दर्पण का उपयोग चित्र के द्वारा करना उत्तम है। अगर ऐसा मुमकिन न हो तो आग्नेय में यन्त्र गाड़ दें।



दोष—दक्षिण दिशा में प्रवेश और पूर्व आग्नेय में निर्गम हो।

निवारण—दोनों गेट के पिलरों पर स्वास्तिक आठ दिशाओं वाला बाहर की तरफ लगाना जरूरी है और तुलसी के पौधे अन्दर की तरफ रखना लाभदायक होता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार यह एक सरल उपाय है।



दोष—आपके पूर्वी तथा उत्तरी दिशा में निर्माण हो।

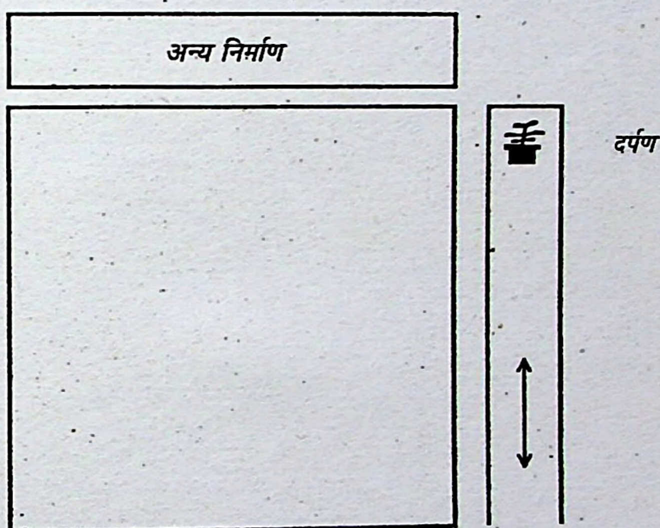
निवारण—दर्पण के द्वारा निर्माण को नैरूत में प्रतिबिम्बित करना चाहिए तथा निर्माण के चारों तरफ हरे पौधे जिसमें तुलसी के पौधे भी रखने चाहिएं। निर्माण से ज्यादा बड़े निर्माण का चित्र नैरूत कोण में लगाना चाहिए, यह एक सरल उपाय है।

दोष–नलकूप अथवा कुआं हो।

निवारण–पूर्व दिशा में बताये गये अनुरूप छोटी-छोटी चार व एक काली जिन्दा या प्लास्टिक की मछली डालना चाहिए तथा नलकूप व कुएं के ऊपर हरा या तुलसी का पौधा जरूर लगायें।

दोष–सड़क पूर्व दिशा की ओर सीधी उत्तर की ओर न बढ़कर वहीं पर समाप्त हो जाए।

निवारण–जिस स्थान पर जाकर रास्ता समाप्त हो जाता है वहां पर दर्पण लगा देना चाहिए, यन्त्र गाड़ना अथवा तुलसी के पौधे को उस स्थान पर रखना उचित होगा।



दोष–आपका आग्नेय कोण तथा वायव्य, नैरूत, ईशान नीचा हो।

निवारण–पूजा में वास्तुदोष नाशक यन्त्र प्रयोग करना चाहिए। वास्तु द्वारा यह एक सरल उपाय है।

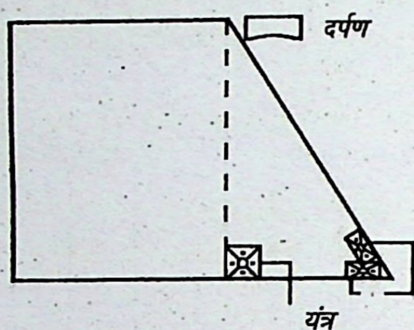
दोष–खाली स्थान कमरे अथवा घर के अहाते में भी निम्न हो।

निवारण–मुमकिन हो सके तो उस स्थान पर तुलसी अथवा हरे पौधों का उपयोग करें और घर के अन्दर कृत्रिम हरे पौधों को रखना चाहिए और निम्न स्थानों पर यन्त्र गाड़कर लाभ उठायें। यह एक बेहद सरल उपाय है।

दोष–अगर आपकी आग्नेय पूर्व दिशा में अग्रेत हो।

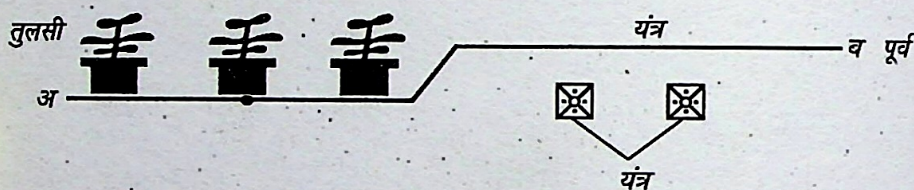
निवारण–भूखण्ड सही न हो तो आप चित्र में बतायें अनुसार भूखण्ड सही करके निर्माण कार्य करें, अगर पहले से ही दक्षिण-पूर्व अग्रेत निर्माण कार्य हो गया

है तो ईशान में दर्पण से आग्नेय स्थान को प्रतिबिम्बित करें नहीं तो यन्त्र को गाड़ने का उपयोग करें। यन्त्र को दीवार पर लगाकर भी दोष कम कर सकते हैं।



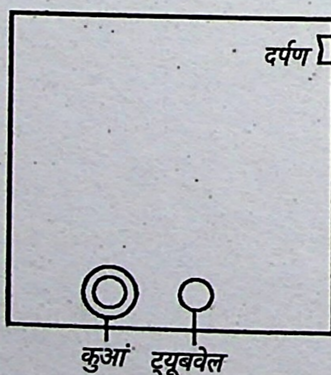
दोष—दक्षिण भाग में स्थान उत्तर दिशा के स्थान से नीचा हो।

निवारण—नीचे स्थान में यन्त्र गाड़ना चाहिए। हरे पौधे रखना चाहिए और अगर मुमकिन हो तो दर्पण द्वारा उत्तर दिशा में ऊंचा स्थान प्रतिबिम्बत करना चाहिएं।



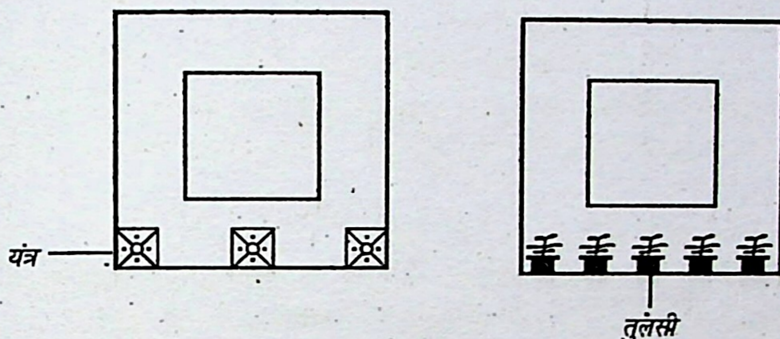
दोष—दक्षिणी दिशा में कुआं अथवा नलकूप होना।

निवारण—उसके निकट तुलसी का पौधा जरूर रखना चाहिए। नलकूप अथवा कुओं में चार मछली लाल और एक काली जिन्दा या प्लास्टिक की जो पानी पर तैरें, इतनी हल्की हों, डाल देनी चाहिएं। कुएं को मुमकिन हो सके तो दर्पण द्वारा ईशान में प्रतिबिम्बित करें। यह एक सरल उपाय है।



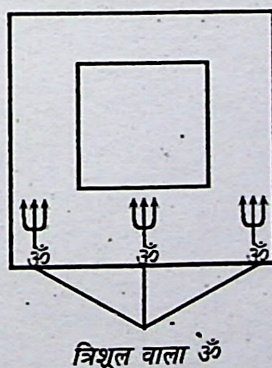
दोष–उत्तर दिशा की अपेक्षा अधिक खाली स्थान।

निवारण–चित्र में बताये गये दर्पण लगायें अगर खाली जगह आधे से कम हो तो एक ओर दर्पण तथा आधे से ज्यादा हो तो दोनों तरफ दर्पण लगायें। चित्र में दर्शाये गये दक्षिण दिशा में यन्त्र गाड़ना चाहिए और दक्षिण दिशा में तुलसी के पौधे जरूर रखने चाहिएं। वास्तु द्वारा यह उत्तम है।



दोष–आपकी चारदीवारी उत्तर से नीची होना।

निवारण–अगर मुमकिन हो तो चारदीवारी को उत्तर से ऊंची तथा मोटी करें। नीची चारदीवारी के ऊपर से छः इंच नीचे स्वास्तिक अथवा पिरामिड यन्त्र का प्रयोग करें। चित्र के द्वारा दर्शाये गये त्रिशूल वाला ॐ छः इंच नीचे दोनों कानों पर आग्नेय तथा नैरूत व मध्य दक्षिण में लगायें।



त्रिशूल वाला ॐ

दोष–नैरूतमुखी दरवाजे का होना।

निवारण–अगर दरवाजे बाहरी हों तो उसके बाहरी दोनों पिलरों पर स्वास्तिक तथा अन्दर की ओर तुलसी के पौधे तथा अगर दरवाजा भीतर की ओर हो तो दरवाजे पर एक स्वास्तिक लगायें और तुलसी का पौधा वहां स्थापित कर दें।

दोष–दरवाजे अगर आग्नेयमुखी हों।

निवारण–दरवाजे के दोनों ओर शुभ चिह्न का प्रयोग करें और उसके बाहर दोनों ओर तुलसी का गमला लगायें।

दोष–दक्षिणी दरवाजे का सही स्थान नहीं होना।

निवारण–दरवाजे के दोनों तरफ गणपति की मूर्ति की स्थापना करनी बड़ी जरूरी है, वास्तु द्वारा यह उत्तम है।

दोष–दक्षिण दिशा में अध्ययन कक्ष अथवा लाइब्रेरी का स्थापित होना।

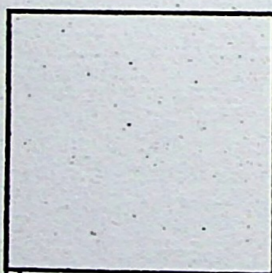
निवारण–अपने मकान के इस अध्ययन कक्ष के ईशान में पूर्वी दिशा की ओर मुख करके अध्ययन करें। कमरे के बाहर अथवा अन्दर यन्त्र की स्थापना करें।

दोष–शयनकक्ष तथा पूजाघर का होना।

निवारण–तुरन्त पूजाघर को ईशान कोण में स्थापित करें तथा कमरे के दक्षिण-पश्चिम में पलंग रखकर दक्षिण दिशा में सर रखकर सो जाएं।

दोष–कूड़ा-कचरा अथवा पुराना सामान।

निवारण–इसको शीघ्र नैरूत दिशा में स्थापित कर देना आवश्यक होता है, अगर किसी कारणवश स्थान नहीं मिल रहा हो तो पुराना सामान छत पर नैरूत दिशा में रखें। अगर छत भी नहीं हो तो दर्पण के द्वारा नैरूत दिशा में प्रतिबिम्बित करें। नहीं तो कचरे के पास कुछ हरे पौधे लगा दें या रख दें। यह उपाय सरल है।



दोष–दक्षिणी दिशा के सम्मुख गड्ढ़ा, अंधेरा अथवा मैदान हो।

निवारण–दरवाजे के दोनों ओर द्वार सिद्ध गणपति की स्थापना करनी चाहिए तथा यन्त्र की भी स्थापना की जा सकती है। अपने दरवाजे पर शुभ चिह्न का प्रयोग करें।

दोष–दक्षिणी दिशा की दीवार का मजबूत न होना।

निवारण–जहां तक सम्भव हो सके इस दीवार को मजबूती से बनवा लेना चाहिए वरना उस पर त्रिशूल वाला ॐ लगा दें।

दोष—कमरे से सटा हुआ ढलवा बरामदा।

निवारण—इसके अन्तर्गत तुलसी के पौधे रखें, जमीन में यन्त्र गाड़ दें। पूजा में गणपति की मूर्ति रखें।

दोष—दक्षिण के चबूतरे घर से निम्न हों।

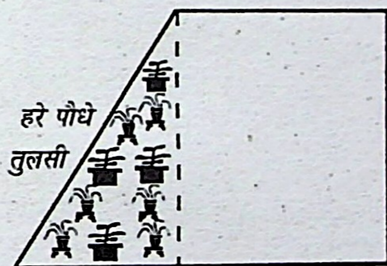
निवारण—अगर मुमकिन हो सके तो उसको घर से हटा दें, अगर आप इसको न कर पायें तो उपरोक्त नियम का प्रयोग करें।

दोष—खाली अहाते अथवा कमरों का नीचा होना।

निवारण—उसमें तुलसी के पौधे रखें, जमीन में यन्त्र आदि गाड़ें, पूजाघर में गणपति की मूर्ति का प्रयोग करें।

दोष—नैरूत कोण का ठीक न होना।

निवारण—अगर मुमकिन हो तो बताये अनुसार भूखण्ड को सही कर लें, त्रिकोण भाग में हरे पौधे तथा तुलसी के पौधे लगा दें। अगर निर्माण किया जा चुका है और ठीक करना संभव न हो तो अग्रेत भाग में यन्त्र गाड़ दें।



दोष—नैरूत ईशान से नीचा हो।

निवारण—नैरूत दिशा वाले स्थान में तुलसी का पौधा लगायें और यन्त्र गाड़ दें। घर की पूजा में राहू यन्त्र को रखें।

दोष—ईशान कोण से नैरूत हल्का हो।

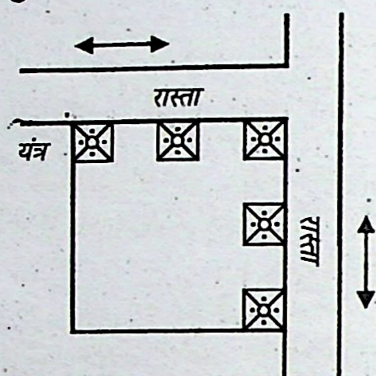
निवारण—अगर मुमकिन हो तो नैरूत कोण को भारी कर दें और नैरूत कोण में कुछ निर्माण कार्य अवश्य करायें।

दोष—नैरूत में कुआं तथा गड्ढे हों।

निवारण—उसके पास तुलसी का एक पौधा रखना चाहिए, अगर गड्ढ़े भरे जा सकते हों तो बहुत अच्छा होगा, पानी है तो चार लाल और एक काली मछली डाल दें। अगर कुआं सूखा है तो उसके चारों तरफ तुलसी के पौधे रख दें और बीच में स्वास्तिक यन्त्र गाड़ दें।

दोष—पूर्व तथा उत्तर की सड़क घर से ऊंची होनी चाहिए।

निवारण—मकान के बाहर सड़क के समानान्तर हरे पौधे रखने चाहिएं और चित्र में बताये गये अनुसार यन्त्र स्थापित करवायें।



दोष—ईशान में शौचालय होना।

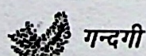
निवारण—इस स्थान पर रोशनी का प्रबन्ध और दरवाजे के भीतर की तरफ शिकार करते हुए शेर की तस्वीर लगायें।

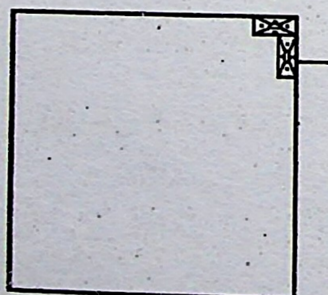
दोष—ईशान कोण में रसोईघर का निर्माण।

निवारण—इस पर रोशनी डालें तथा दर्पण के उपयोग से आग्नेय कोणं मे प्रतिबिम्बित कर सकें तो करें। रसोई के दरवाजे के अन्दर और बाहर एक-दूसरे के पीछे बाधा नामक गणपति की मूर्ति को स्थापित करें।

दोष—आपके ईशान कोण में गन्दगी का होना।

निवारण—मुमकिन हो तो गन्दगी को बिल्कुल हटा दें, वरना आसपास के स्थान पर हरे पौधे लगा दें तथा भूखण्ड अथवा मकान की तरफ यन्त्र लगा दें।





दोष—ईशान दोष किसी भी रूप में विकृत हो।

निवारण—अगर मुमकिन हो तो विकृत स्थिति को सही कर लेना चाहिए वरना ईशान में नदी, नलकूप या अन्य जलस्रोत के चित्र लगा दें और ईशान में रोशनी

जरूर डालें। विकृत दिशा में यन्त्रों को गाड़ या लगाकर भी ठीक किया जा सकता है।

दोष—पूर्व दिशा और उत्तर दिशा के फाटक ऊंचे होने चाहिएं।

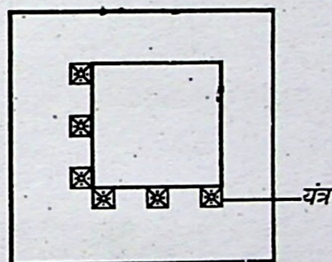
निवारण—बाहरी परिसर फाटक हो तो उसके पिलरों के दोनों तरफ बाहर की ओर आठ दिशाओं वाला स्वास्तिक और अन्दर की तरफ तुलसी के पौधे लगा दें। अगर भीतरी दरवाजा है तो दरवाजे पर उपरोक्तानुसार विधि का प्रयोग करें।

दोष—दक्षिण के दरवाजे की अपेक्षा उत्तरी दरवाजा ऊंचा हो।

निवारण—दरवाजे पर सिद्ध गणपति की स्थापना व चाहें तो यन्त्र, काले घोड़े की नाल तथा अन्य शुभ चिह्न लगा सकते हैं।

दोष—ईशान में मकान और नैरूत खाली होना चाहिए।

निवारण—यथायोग्य दर्पण का उपयोग कर उसको नैरूत में प्रतिबिम्बित करना चाहिए। दीवारों पर चित्र में बताये अनुसार यन्त्र लगाना चाहिए।



दोष—अगर आपकी उत्तरी सीमा ऊंची हो।

निवारण—ऊंची जगह पर यन्त्र गाड़ना चाहिए।

दोष—अगर आपका ईशान कोण कटा हुआ हो।

निवारण—ईशान दिशा में दूधिया रोशनी करनी चाहिए और तुलसी के पौधे जरूर रखने चाहिएं।

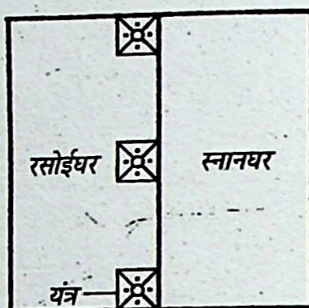
दोष—आपकी उत्तर दिशा में पुरानी चीजों का संग्रह।

निवारण—इनको नैरूत क्षेत्र में स्थानान्तरित करें और अगर पुरानी चीजें खण्डित हैं, वह मूर्ति हो या अन्य कोई संग्रह तो घर में न रखें यह बहुत हानिकारक होती है।

दोष—आपके रसोईघर के साथ स्नानघर का होना।

निवारण—इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि रसोईघर के साथ स्नान-घर व शौचघर नहीं होना चाहिए। अगर ऐसा है तो स्नानघर और शौचालय के दरवाजे के अन्दर की तरफ शिकार करते हुए शेर का चित्र लगाना उचित होता

है और दीवार पर यन्त्र भी स्थापित करना चाहिए। एक बात का ख्याल रहे कि वह पिरामिड यन्त्र ही होना चाहिएं।

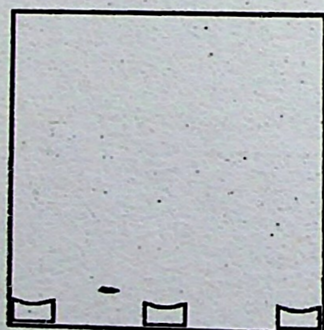


दोष–आपकी उत्तर दिशा में रसोईघर है।

निवारण–उत्तर दिशा का स्वामी कुबेर होता है इसलिए इस तरफ रसोईघर होना ठीक नहीं है इससे आर्थिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। दर्पण की सहायता से रसोई को मुमकिन हो तो कहीं अन्यत्र स्थान पर प्रतिबिम्ब कर दें। रसोईघर के दरवाजे पर तुलसी का पौधा लगायें और अगर मुमकिन न हो तो दीवार पर और अन्दर यन्त्र की स्थापना करें।

दोष–उत्तरी ईशान में कम्पाउन्ड की दीवार ऊंची हो।

निवारण–दीवार को तोड़कर नीचा करें वरना चित्र में बताये गये अनुसार शुभ चिह्न दीवार जितनी ऊंची हो, उसके बीच में लगा दें एवं अगर निर्माण नहीं हो तो दक्षिणी कम्पाउण्ड पर शीशा लगा दें।



उत्तरी





दक्षिणी

दोष–उत्तर दिशा का द्वारा वायव्यमुखी हो।

निवारण–दरवाजे पर सिद्ध गणपति की स्थापना, काले घोड़े की नाल, पिरामिड यन्त्र, स्वास्तिक यन्त्र, घंटियों की झालर लगाने चाहिएं।

दोष—आपकी उत्तर दिशा के भाग में कूड़ा-कचरा होना।

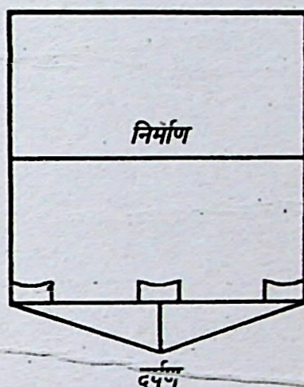
निवारण—कचरे के पास तुलसी के पौधे को छोड़कर हरे पौधे को लगाना अथवा रख देना चाहिए।

दोष—आपके अहाते से लगकर मकान हो।

निवारण—पीछे वाली दीवार के बाहर या अन्दर की तरफ यन्त्र की स्थापना कर दें। घर की पूजा में बुद्ध यन्त्र को जरूर रखें और दक्षिण दीवार पर यन्त्र भी स्थापित करें।

दोष—आपकी उत्तरी दिशा नें खाली स्थान न हो।

निवारण—अपने मकान की उत्तरी दीवार के बाहर या अन्दर की ओर यन्त्र की स्थापना करनी चाहिए। घर की पूजा में बुद्ध यन्त्र को जरूर रखें और दक्षिण दीवार पर यन्त्र की स्थापना करें।



दोष—उत्तरी दिशा बाकी दिशाओं से ऊंची होनी चाहिए।

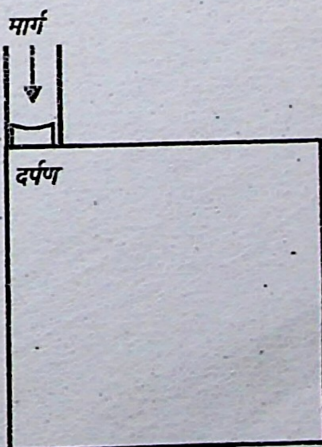
निवारण—ऊंची जगह पर यन्त्र गाड़ना चाहिए। वास्तुशास्त्र के अनुसार यह एक सरल उपाय है।

दोष—पश्चिम दिशा में बरामदा हो और उत्तर-पूर्वी दिशा नीची हो।

निवारण—आप बरामदे में हरे पौधे लगायें अथवा रखें और मध्य में यन्त्र गाड़ दें तथा पूजाघर में चन्द्र यन्त्र की स्थापना करें।

दोष—उत्तरी-वायव्य कोण में मार्गशूल।

निवारण—अपने मार्ग के बीच में सामने वाली दीवार पर बाईं तरफ एक दर्पण लगाना चाहिए।



दोष–नैरूत कोण आग्नेय कोण की अपेक्षा ऊंचा हो।

निवारण–अपने मकान के ऊंचे हिस्से में यन्त्र गाड़ दें और ऊपर तुलसी का पौधा रख दें। यह एक उत्तम उपाय है।

दोष–पश्चिम दरवाजे पूर्वी और उत्तरी दरवाजे हद बनाकर निर्माण किया गया हो।

निवारण–आप अपने दरवाजों पर शुभ चिह्न का प्रयोग करें और दरवाजों के दोनों तरफ सिद्ध गणपति की स्थापना करें।

दोष–अगर गर्भस्थल की अपेक्षा ऊंचे चबूतरे हों।

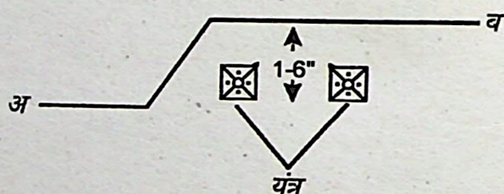
निवारण–चबूतरों में यन्त्र गाड़ दें। यह उत्तम उपाय है।

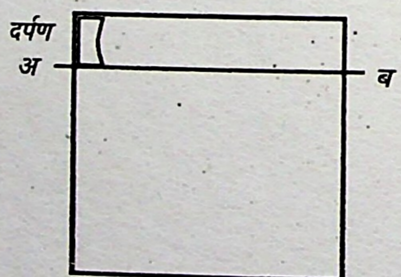
दोष–अगर वायव्य कोण से आग्नेय कोण की तरफ आना-जाना हो।

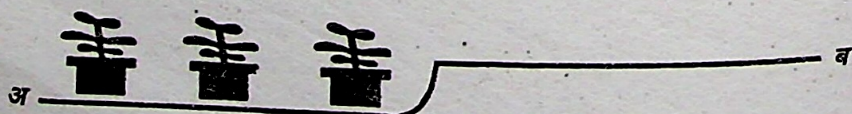
निवारण–अगर मुमकिन हो तो जाने वाले रास्ते पर दीवार के ऊपर शुभ चिह्न लगायें और बीच-बीच में तुलसी के पौधे रख दें। वास्तुशास्त्र के अनुसार यह एक सरल उपाय है।

दोष–ईशान कोण नीचा हो।

निवारण–यन्त्र चित्र में बताये अनुसार गाड़ें, अथवा दर्पण लगा दें और नीचे वाले भाग में तुलसी के पौधे लगायें।







दोष—पश्चिमी दिशा की सड़क उत्तरी सड़क से नीची हो।

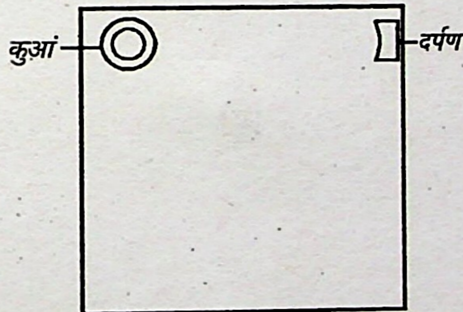
निवारण—पश्चिमी दिशा की सड़क के सामने आने वाली दीवार के सहारे एक क्यारी बनाकर हरे पौधे लगा दें और इस दीवार पर शुभ चिह्न अथवा यन्त्र स्थापित करें।

दोष—मकान अथवा बारिश का जल उत्तरी वायव्य से होकर नहीं निकलना चाहिए।

निवारण—अपने मकान के जल के बहाव को ईशान कोण की तरफ कर दें वरना पूजाघर में चन्द्र यन्त्र की स्थापना करें। वास्तुशास्त्र के अनुसार यह एक सरल उपाय है।

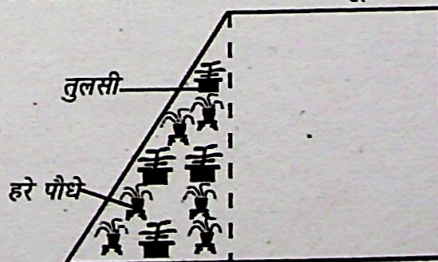
दोष—कुआं अथवा गड्ढा होना।

निवारण—दर्पण के द्वारा इसको ईशान कोण में प्रतिबिम्ब करें। अगर ऐसा करना मुमकिन न हो तो ईशान कोण में एक ऐसे कुएं का चित्र लगायें जो वास्तविक स्थिति में जहां पर हो उस भूखण्ड के ईशान में हो और इस कुएं से उसकी गहराई अधिक हो, चाहें तो बहती हुई नदी अथवा ट्यूबवेल का चित्र भी ईशान कोण में लगा सकते हैं।



दोष—अगर आपका उत्तरी-वायव्य कोण अग्रेत हो।

निवारण—चित्र में डॉट लाईन बताये अनुसार भूखण्ड को सीधा कर लें और त्रिकोण भाग में हरे पौधे लगायें। अगर निर्माण करा दिया गया है तो त्रिकोण भाग में यन्त्र गाड़ दें अथवा दीवार पर लगायें और पूजाघर में चन्द्र यन्त्र की स्थापना करें।



दोष–आपकी दीवार काली व गहरे रंग की हो।

निवारण–इस स्थिति में दीवारों का रंग हल्का हरा, आसमानी अथवा हल्का गुलाबी होना चाहिए।

दोष–आग्नेय कोण का स्थूल होना।

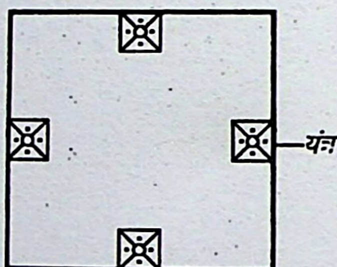
निवारण–यह बहुत ही नुकसानदायक है, इसलिए अग्नि के पास एक हरा पौधा रख दें, यह कृत्रिम ही होगा।

दोष–पश्चिमी दिशा में रसोईघर का होना।

निवारण–अगर मुमकिन हो सके तो इसको आग्नेय कोण में ले जायें वरना कमरे के आग्नेय में चूल्हा जरूर रखें। कमरे की दीवार पर शुभ चिह्नों का प्रयोग करना चाहिए।

दोष–पश्चिमी दिशा में मालिक का कमरा।

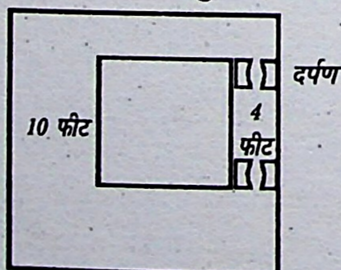
निवारण–अगर मुमकिन हो सके तो कमरा नैरूत दिशा में बदलें वरना कमरे के नैरूत में सोने का प्रबन्ध करें और कमरे में चारों दीवारों पर यन्त्र लगायें। यह उत्तम उपाय है।



दोष–पूर्व दिशा की अपेक्षा नीचा होना।

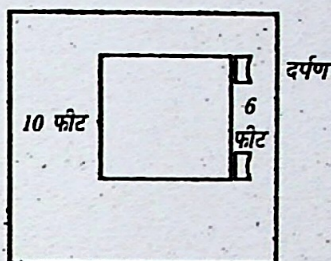
निवारण–अपने मकान में यन्त्र की स्थापना करें। कमरे तथा बरामदे में तुलसी का पौधा जरूर लगायें। अगर कोई कठिनाई हो तो नीचे वाले भाग में यन्त्र भी गाड़ा जा सकता है।

दोष–पूर्व दिशा की अपेक्षा अधिक खुला क्षेत्र होना।



चित्र-1

निवारण—चित्र-1 में बताये गये अनुसार दो दर्पण लगा दें और चित्र-2 में सिर्फ एक दर्पण। इसका कारण चित्र-1 में खुला क्षेत्र दुगने से ज्यादा है और चित्र-2 में दुगने से कम है।



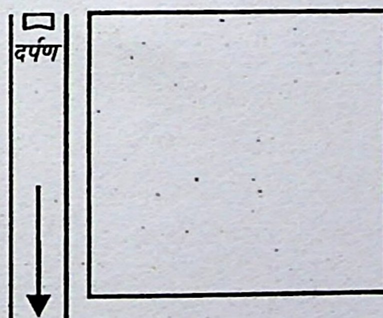
चित्र-2

दोष—दरवाजा वायव्य कोण की तरफ हो।

निवारण—दरवाजे के दोनों तरफ स्वास्तिक की स्थापना करें और दरवाजे के पास तुलसी का पौधा रखें।

दोष—पश्चिमी भाग से जल अथवा वर्षा का जल होकर निकलना।

निवारण—पूर्व दिशा में एक नाव का चित्र लगायें और दर्पण से अगर प्रतिबिम्बित करना संभव हो तो करें तथा आस-पास में हरे पौधे जरूर रखें।



दोष—पश्चिम दिशा का नैरूतमुखी होना।

निवारण—दरवाजे के दोनों ओर स्वास्तिक का प्रयोग करना चाहिए और दरवाजे के निकट तुलसी का पौधा रखना चाहिए।

दोष—पश्चिमी भाग का स्थान गर्भस्थल में नीचा हो।

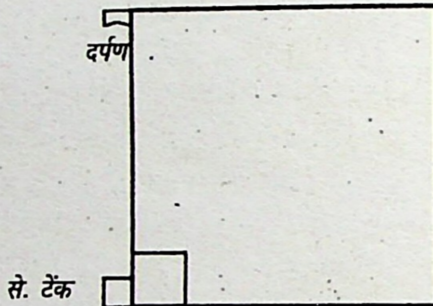
निवारण—मकान के पूजास्थल में वरुण यन्त्र की स्थापना करें, कमरे तथा बरामदे के निकट तुलसी का पौधा जरूर लगायें। अगर कोई परेशानी हो तो नीचे वाले स्थान में यन्त्र भी गाड़ सकते हैं।

दोष–घर में बरामदों तथा कमरों का पश्चिमी भाग नीचा हो।

निवारण–इसके लिए घर के पूजाघर में वरुण यन्त्र की स्थापना करें। कमरे तथा बरामदे के निकट तुलसी का पौधा जरूर रखना चाहिए। समस्या हो तो नीचे वाले भाग में यन्त्र भी गाड़ सकते हैं।

दोष–नैरूत दिशा में शौचालय हो और उसका गड्ढ़ा जमीन में हो।

निवारण–इसको भी दर्पण के द्वारा वायव्य कोण में प्रतिबिम्बित करना उचित होता है। अगर ऐसा करना मुमकिन नहीं तो सैप्टिक टैंक के ऊपर हरे पौधे रखें। इस बात का पूरा ख्याल रखें कि इसमें तुलसी का पौधा नहीं होना चाहिए।



दोष–ढलावदार बरामदे का सामान्य होना।

निवारण–पूर्व दिशा में नैरूत ईशान से नीचा हो, ये बताये गये निदान के अनुसार।

दोष–नैरूत कोण में ज्यादा खिड़कियों का होना।

निवारण–हो सके तो उसको बन्द रखें, अधिक न खोलें और खिड़कियों पर बाहर की तरफ स्वास्तिक, ॐ अथवा कोई अन्य शुभ चिह्न लगा दें। वास्तुशास्त्र द्वारा यह उत्तम उपाय है।

दोष–घर के मालिक का कमरा नैरूत दिशा में न होना।

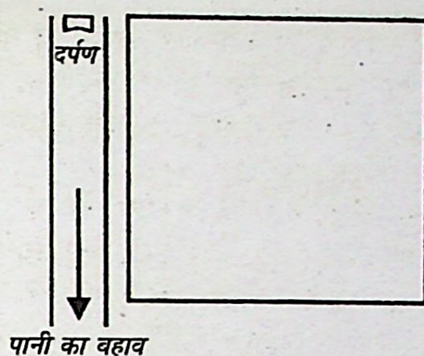
निवारण–मुमकिन हो तो नैरूत वाले कमरे में अपना सोने का कमरा बना लें वरना जिस भी कमरे में सो रहे हैं उसके नैरूत में सोयें। कोशिश यह पूरी तरह करनी चाहिए कि आपका बैडरूम ईशान में न हो वरना स्वास्थ्य में हमेशा समस्या रहेगी। अगर आपका मकान दो या अधिक मंजिला है तो घर के मालिक ऊपरी मंजिल के नैरूत वाले कमरे में ही सोयें। जो सही और लाभदायक है। वास्तुशास्त्र के द्वारा यह उत्तम उपाय है।

दोष–नैरूत कोण से आग्नेय, वायव्य, ईशान का ऊंचा होना।

निवारण–अपने मकान के पूजाघर में राहू यन्त्र की स्थापना करें।

दोष–आपके घर का पानी नैरूत दिशा से बहता हो।

निवारण—ईशान कोण में बहती हुई नदी का चित्र पश्चिम से पूर्व, दक्षिण से उत्तर वाला लगा दें। अगर दर्पण द्वारा प्रतिबिम्बित करना मुमकिन हो तो कर लें, चित्र में बताये गये अनुसार।



दोष—चारदीवारी अगर ईशान से नीचीं हो।

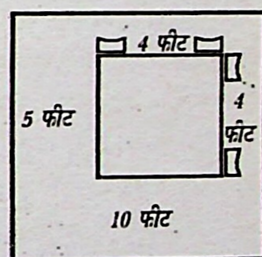
निवारण—अगर मुमकिन हो तो चारदीवारी को ईशान कोण से ऊंचा अथवा मोटा कर लें। अगर आपके लिए मुमकिन न हो सके तो नैरूत दिशा में एक टी०वी० का एन्टीना अथवा झंडा लगा दें। जो ईशान कोण की चारदीवारी से ऊंचा ो। झण्डे अथवा त्रिशूल को भी गाड़ सकते हैं तथा उसकी भी ऊंचाई ईशान कोण से अधिक हो तो लाभदायक सिद्ध होगी। वास्तुशास्त्र के अनुसार यह एक सरल उपाय है।

दोष—आपकी नैरूत दिशा का कमरा ऊंचा न होना।

निवारण—पूर्व दिशा में नैरूत ईशान दिशा से नीचा हो, ये बताये गये निदान के अनुसार।

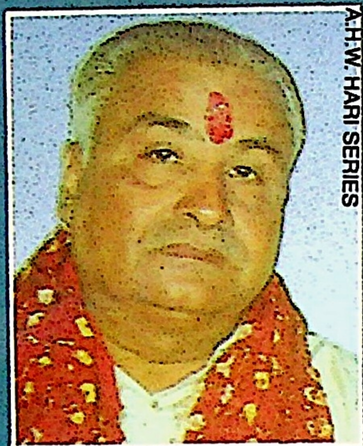
दोष—नैरूत दिशा वाले भाग का खुला रहना।

निवारण—चित्र की तरह स्थिति है तो राहू यन्त्र की स्थापना करें और चित्र में बताये गये अनुसार यन्त्र स्थापित कर दें। चित्र की तरह स्थिति होने पर दर्पण का प्रयोग करें।



अंत में वास्तु-निर्माण वर्तमान समय में अति मूल्यवान हो गया है और निर्माण के पश्चात् अगर वास्तुदोष निकले और मकान में तोड़-फोड़ करनी पड़े तो वह अत्यन्त कष्टकारक होता है। आर्थिक बोझ भी बढ़ जाता है। अतः उसको ध्यान में रखकर वास्तु-निर्माण के पूर्व वास्तुकार से परामर्श लेकर अगर भवन का निर्माण करें तो वास्तुदोष से बच सकते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में यही सूत्र एवं सिद्धान्त प्रस्तुत किए गये हैं। इसी के साथ ही यह पुस्तक सम्पूर्ण होती है।

—सम्पूर्णम—



पं० शशि मोहन बहल

भारतीय वास्तुशास्त्र

सूत्र एवं सिद्धांत

प्रायः यह प्रश्न पूछा जाता है कि आखिर यह वास्तुशास्त्र क्या है? वास्तुशास्त्र धरती (भूखण्ड) का शुद्धिकरण है। वास्तुविद् भूखण्ड की चुम्बकीय शक्ति और कोणों का नाप जोख करते हैं, यही वास्तुशास्त्र कहलाता है।

भूखण्ड में पांच पत्थरों को निश्चित दिशा में वास्तु पूजन के उपरान्त रखा जाता है यही वास्तु पूजा और नींव पूजन है। भवन निर्माण के प्रथम चरण से लेकर भवन सम्पूर्ण होने तक वास्तु की उपयोगिता दृष्टिगोचर होती है।

दुकान, भवन, कार्यालय, फैक्टरी दिशाओं और पांच तत्वों पर आधारित है। इन्हीं पांच तत्वों का ज्ञान ही वास्तु विज्ञान है। अगर आपको सुखी समृद्ध जीवन की चाह है तो वास्तु विज्ञान की शरण में जाना ही होगा।

प्रस्तुत पुस्तक में पं० शशि मोहन बहल ने वास्तुशास्त्र के प्रभावशाली सूत्रों और सिद्धांतों के साथ आधुनिक वास्तुशास्त्र की नवीन विधाओं को भी सम्मिलित किया है। इस पुस्तक की सहायता से आप अपने घर को न केवल शुभ प्रभावकारी वरन् दोष रहित भी बना सकते हैं।

आज के सर्वाधिक पढ़े जाने वाले विद्वान पं० शशि मोहन बहल की एक और जनोपयोगी व लाभकारी पुस्तक जिसकी आपको वर्षों से खोज थी।

राधा पॉकेट बुक्स

120/-